स्वयंबोध

श्रीप्रभा की कविताओं का संग्रह 'स्वयं-बोध' मुझे प्रतीति हुई जैसे अध्यात्मिक साहित्य के सरोवर में एक नया कमल खिला है। और उसकी सुरभि शान्तिदायिनी है। श्री की कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्रत्येक कविता का आवरण उनके मानस लोक में अत्यन्त सहजता से अन्तर्प्रेरणा से अनायास हुआ है—'अनायास' अर्थात् बिना आयास या परिश्रम के। संग्रह के अनेक कविताएं अपने शीर्षक द्वारा दर्शाती है कि उनका उत्स आन्तरिक है, सत्-चित्-आनन्द की अनुभूति का पुलक है —अन्तर्ध्वनि, अन्तर्ज्योति, निर्मल मन, अन्तर शुचिता, पवन मन, मन चंचल मन, का दर्पण, नीरव मन मन्दिर अन्तर्यात्रा, स्वयं की समीपता, अपने भीतर, शीशे सा निर्मल यह चेतन आदि।

प्रश्न हैं कि यह सहजता, यहआनन्द, अध्यात्म का यह पुलक श्री को कहाँ प्राप्त हुआ? शास्त्रीय भाषा में कहे तो, कह सकते हैं कि ऐसी शुचिता, पवित्रता और भक्ति की तन्मयता अनेक जन्मो के पुण्य से प्राप्त होती है। आज की भाषा में कहूँ तो कहूँगा कि यह मूलत: संस्कारों की देन है। श्री का यह सौभाग्य रहा है कि उसका जन्म ऐसे कुल में हुआ और उनका पालन, शिक्षा-दीक्षा ऐसे अभिभावकों के हाथों हुई जो शास्त्र-ज्ञान धार्मिक आचरण और संयम के संपोषक थे। यह बात भी है कि संस्कार स्वयं क्रियाशील नहीं हो जाते, उन्हें व्यक्तिगत साधना सुरक्षित और संपुष्ठ करना होता है। 'स्वयं-बोध' की कविताओं से बोध अंश स्वयं की साधना का बोधक है।

(श्री प्रभा का परिचय एवं 'स्वयंबोध में छपी पहली कविता कवर पृष्ठ ३ तथा १४ अगस्त ९४ के लोकार्पण समारोह का संक्षिप्त विवरण देखें पृष्ठ-४)

लक्ष्मी चन्द्र जैन
पूर्व निदेशक
भारतीय ज्ञान पीठ

To

The Secretary

Sri Deokumar Jain Oriental Research Institute

Sri Jain Sidhant Bhawan,

ARRAH-802 301

Sir,

I acknowledge the receipt of the Life Member's Complimentary/ Exchange / Subscriber / Contributor's Copy of the Journal Shri Jain Sidhant Bhaskar / The Jaina Antiquary - Volume—Nos.________

Station ____________ Signature____________

Date ____________ Designation____________

Address ____________

THE JAINA ANTIQUARY

YEARLY JAINOLOGICAL RESEARCH JOURNAL

V N.S -2521-22 1994 & 1995 V.S. 2051-52
Vol. 47 & 48 Joint Special Issue No. 1-2 Joint

MANUSCRIPTS SPECIAL ISSUE

[DISCRIPTIVE CATALOGUE OF OLD RARE SANS, PRAK, APABH, HINDI MSS PRESERVED IN JAIN SIDDHANT BHAWAN] NO. 1 TO 997

Published by
Ajay Kumar Jain, Secretary
Shri Devkumar Jain Oriental Research Institute
SHRI JAIN SIDDHANT BHAWAN
ARRAH, BIHAR (INDIA)

Inland Rs. 100/-] [Foreign Rs. 150

जैन सिद्धान्त भास्कर

जैन पुरातत्व संबन्धी वार्षिक शोधपत्र

वी० नि० सं०—२५२१—२२ वि० सं० २०५१—५२

भाग—४७-४८ १९९४ एवं १९९५ अंक—१-२

प्राच्य दुर्लभ पाण्डुलिपि विशेषांक

[जै० सि० भ० में सुरक्षित संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूची]

संख्या १ से ११७ तक

संपादक मण्डल

डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल डॉ० गोकुल चन्द्र जैन

डॉ० शशिकान्त डॉ० आदित्य प्रचण्डिया

डॉ० ऋषभचन्द फौजदार

प्र० सम्पादक

प्रो० डॉ० राजाराम जैन

प्रकाशक

अजय कुमार जैन

श्री देव कुमार जैन ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट

श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा (बिहार)

शुल्क भारत में—100/- विदेश में—150/-

INDEX

(विषय सूची)

पृष्ठ संख्या

●

प्रधान सम्पादकीय

जैन सिद्धान्त भवन अपने स्थापना काल से ही प्राच्य विद्या सम्बन्धी जैन एवं जैनेतर दुर्लभ पान्डुलिपियों के संग्रह एवं उनकी सुरक्षा के लिए देश विदेश में विख्यात रहा है। इसके संस्थापक महामान्य श्रीमान् राजर्षि देवकुमार जी तथा उनके यशस्वी पुत्र श्रीमान् निर्मल कुमार जी जैन के दीर्घकालीन प्रयत्नों के कारण यहाँ वर्तमान में ऐतिहासिक मूल्य की लगभग १७०६ ताडपत्रीय तथा ६६०० कर्गलीय पाण्डुलिपियाँ संग्रहीत हैं। अधिकांश मध्यकालीन पाण्डुलिपियों में आदि एवं अन्त में रचनाकार-प्रशस्तियाँ तथा प्रत्येक अध्याय अथवा सन्धि के अन्त में पुष्पिकाएँ एवं ग्रन्थान्त में प्रतिलिपिकार प्रशस्तियाँ अंकित है, जो समकालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं साहित्यिक कार्यकलापों के जीवन्त प्रामाणिक इतिहास को प्रस्तुत करती है। "भवन" के नाम से सुप्रसिद्ध उक्त जैन सि० भवन अपनी इन्हीं अमूल्य कन्नड़ एवं नागरी-लिपि की पाण्डुलिपियों के कारण शोधार्थियों के लिए विशिष्ट आकर्षण का केन्द्र बना रहा। दक्षिण भारत के अनेक विश्वविद्यालयों के शोधार्थीगण यहाँ आकर उनका लाभ उठाते रहे है और उनके प्रयत्नों से कुछ ग्रन्थ प्रकाशित भी हुए हैं। नागरी लिपि के संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की अनेक पाण्डुलिपियाँ भी प्रकाशित हो चुकी हैं, फिर भी सैकड़ों ऐसे ग्रन्थ अभी भी अप्रकाशित है, जो प्रकाशन की वोट जोह रहे है।

अभी हाल में जैन सिद्धान्त भवन ने मुनिकेशराज कृत सचित्र रामयशोरसायन रास (अपरनाम जैन रामायण) का प्रकाशन किया है, जो उतरमध्यकालीन गुजराती भाषा में लिखित है। विषयवस्तु की दृष्टि से तो वह महत्वपूर्ण है ही, किन्तु उसके चित्र अत्यन्त भव्य, भद्र, शास्त्रीय पद्धति के शिल्प-सौन्दर्य से समृद्ध एवं नेत्रों को अमृतसिंचित शीतलता प्रदान करने वाले है। वर्तमानकाल के कलागुरु माने जाने वाले श्री फिदा हुसैन ने उनकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

अपभ्रंश की भी कुछ पाण्डुलिपियाँ यहाँ सुरक्षित हैं। इस दिशा में महाकवि रइधू जो कि साहित्यकार होने के साथ-साथ महान् इतिहासकार के रूप में भी प्रसिद्ध हैं और जिन्होंने अपनी ग्रन्थ-प्रशस्तियों में समकालीन इतिहास के विविध पक्षों को प्रस्तुत किया है, उनकी तीन पाण्डुलिपियाँ यहां भी सुरक्षित हैं, जिनके प्रकाशन की व्यग्र प्रतीक्षा है। यह ध्यातव्य हैं कि रइधू की पाण्डुलिपियाँ पेरिस, लन्दन एवं जर्मनी में भी सुरक्षित होने के सम्भावना है।

जैन सिद्धान्त भवन की प्रारम्भ से ही यह आकांक्षा रही है कि इन ऐतिहासिक मूल्य की पाण्डुलिपियों की जानकारी सार्वजनिन हो तथा वे शोधार्थियों, लेखकों तथा स्वाध्यायार्थियों के लिए सहज रूप में उपलब्ध हो सकें, इसके लिए जैन सिद्धांत भवन

के उदारमना प्रबन्ध संचालक श्री बाबू सुबोध कुमार जी जैन ने, जो कि स्वयं प्रौढ़ चिन्तक एवं लेखक है, सद्य: प्रकाशित जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली प्र० भा०, जिसमें कि 997 पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूची प्रकाशित की गई है, सर्वसुलभ बनाने का संकल्प लिया है। अत: उनकी प्रेरणा से उसे जैन सिद्धान्त भास्कर के विशेषांक के रूप में अपने साहित्यरसिक पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

यहाँ यह ध्यातव्य है कि जैन सिद्धान्त भवन अपने एक मेजर प्रोजेक्ट के अन्तर्गत भवन की समस्त पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूचियाँ (Discriptive Catalogue of old Manuscripts presetved in Jain Siddhant Bhawan Libiary, Arrah) 6 खण्डों में तैयार कर रहा है, जिसमें से अभी दो खण्ड तैयार हो चुके है। उसीका प्रथम खण्ड जैन सिद्धान्त भास्कर के प्रस्तुत विशेषांक के रूप में अपने सहृदय पाठको तक भेजने में प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आगे भी अवसर मिलने पर उसके सभी खण्ड जै० सि० भ० के विशेषांक के रूप में इसी प्रकार से प्रस्तुत किए जाने का विचार किया जा रहा है। आशा है सभी प्राच्य-विद्या प्रेमी इस योजना से लाभान्वित हो सकेंगे।

प्रो० (डा०) राजाराम जैन
प्र० सम्पादक

Foreword

Bihar has played a great role in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his massage of peace and ahimsa. It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period. And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of of Jainism burning. It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture. This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning.

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution. Some of the manuscripts contain rare Jain paintings. These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India.

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes. Each volume contains two parts First parts consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc. Part second which is named as Parisista (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part.

The author has taken great pains in preparing the present Catologue and deserves congratulations for the commendable job, This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture, particularly Jainism.

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar, Patna.

February 29, 1988,
Vikas Bhavan, Patna

प्रकाशकीय नम्र निवेदन

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का प्रथम भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। एक पंचवर्षीय योजना के रूप में इसके छः भाग प्रकाशित करने में सफलता मिलेगी ऐसी पूरी आशा है।

'जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली' का यह पहला भाग जैन सिद्धांत भवन, आरा के ग्रन्थागार में संग्रहीत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, कन्नड एवं हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की विस्तृत सूची है। इसमें लगभग एक हजार ग्रन्थों का विवरण है। हर भाग मे इसका विभाजन दो खण्डों में किया गया है। पहले खण्ड में अंग्रेजी (रोमन) में ग्यारह शीर्षको द्वारा पांडुलिपियों के आकार, पृष्ठ संख्या आदि की जानकारी दी गई है। 'भवन' के ग्रथागार मे लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रथो का संग्रह है। इनमे अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित है। अप्रकाशित ग्रन्थों को सम्पादित कराकर प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान मे जैन सिद्धांत भवन, आरा में उपलब्ध 'राम यशोरसायन रास (सचित्र जैन रामायण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठकों के हाथ में होगा। इसमें २१३ दुर्लभ चित्र है।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' के कार्य को प्रारम्भ कराने मे काफी कठिनाइयों का सामना करना पडा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की असीम कृपा से सभी संयोग जुड़ते गए जिससे मै यह ऐतिहासिक एवं महत्व पूर्ण कार्य आरम्भ कराने में सफल हुआ हूँ। भविष्य में भी अपने सभी सहयोगियों से यही अपेक्षा रखता हूँ कि हमें उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एव रामयशोरसायन रास के प्रकाशन के सबसे बड़े प्रेरणा-स्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एव मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नही किया जा सकता। अपने कार्यकर्ताओं की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय से निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य में लगे हैं।

बिहार सरकार एवं भारत सरकार के शिक्षा विभाग एवं संस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एवं आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एवं निदेशक संग्रहालय बिहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी संबंधित

अधिकारियों के कृतज्ञ है और उनसे अपेक्षा रखेंगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रंथों के प्रकाशन में उनका सहयोग देश की सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य में भी हमें प्राप्त होगा।

डा० गोकुलचन्द जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आंग्ल भाषा में लिखी है। बिहार म्यूजियम के विद्वान एवं कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अख्तर साहब ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, संस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निदेशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसंस्थान, आरा ने आवश्यकता पड़ने पर हमें इस प्रकाशन के सम्बन्ध में बराबर महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है। हम तीनोंही जाने माने विद्वानों का आभार मानते हैं।

श्री ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार', जैनदर्शनाचार्य परिश्रम और लगन से ग्रन्थावली का संपादन कर रहे हैं। श्री ऋषभ जी हमारे संस्थान में मानद शोधा-कारी के रूप में भी कार्यरत हैं। ग्रन्थावली के दोनों खण्डो के संकलन के सपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा मे एक हजार ग्रथो की ग्यारह कालमों में विस्तृत सूची तथा प्राकृत एवं सस्कृत आदि भाषाओं मे परिषिष्ट के रूप में सभी ग्रंथों के आरम्भ की तथा अंत के पदों का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शत्रुध्न प्रसाद सिन्हा, बी० ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है। डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद वर्मा ने पुस्तक के अत में 'वर्ण-क्रम के आधार पर ग्रन्थकारों एवं टीकाकारों की नामावली और उनके ग्रन्थों की क्रम सख्या का संकलन तैयार किया है।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रन्थों का रखरखाव होता है। प्रेस मैनेजर श्री मुकेश कुमार वर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक संभाल रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगो से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से अभारी हूँ।

अजय कुमार जैन
मंत्री
श्री देवकुमार जैन ओरिएन्टल लाईब्रेरी

देवाश्रम,
आरा

ABBREVIATION

V. S.	—	Vikrama Saṁvata
D.	—	Devanāgarī
Stk.	—	Sanskrit
Pkt.	—	Prakrit
Apb,	—	Apabhraṁśa
C.	—	Complete
Inc.	—	Incomplete

Catg. of Skt. Ms. - Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg. by Lewis Rice. M. R. A. S,, Mysore Government Press, Bangalore, 1884.

Catg. of Skt. & Pkt Ms - Catalogue of Sankrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar. by. Rai Bahadur Hiralal B.A. Nagpur, 1926.

(१) आ० सू० — आमेर सूची—डा० कस्तूरचन्द, कासलीवाल।

(२) जि० र० को० — जिनरत्नकोश –डा० वेलणकर, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना।

(३) जै० ग्र० प्र० सं० — जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह—पं० जुगलकिशोर मुख्तार।

(४) दि० जि० ग्र० र० — दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली—श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।

(५) प्र० जै० सा० — प्रकाशित जैन साहित्य—बा० पन्नालाल अग्रवाल।

(६) प्र० स० — प्रशस्ति संग्रह डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल।

(७) भ सं० — भट्टारक सम्प्रदाय विद्याधर जोहरापुरकर।

(८) रा० सू० — राजस्थान के शास्त्र भंडारो की सूची—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान)।

समर्पण

देवाश्रम परिवार में

पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,

राजर्षि बाबू देवकुमार जी,

ब्र० पं० चन्दा माँश्री,

और

बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी

यशस्वी तथा गुणीजन हुए हैं।

उन सभी को पावन

स्मृति को यह

श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली

सादर समर्पित है।

देवाश्रम आरा —सुबोधकुमार जैन

१४-३-८७

INTRODUCTION

I have great pleasure in introducing Śrī *Jaina Siddhānta Bhavan Granthāvalī* – a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Sidhānta Bhavan, Arrah. The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as *a* and *b*. Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library.

The Catalogue, devided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately. In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon. The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India. The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz. 1. Serial number, 2. Library accession or collection number, 3. Titleof the work, 4. Name of the author, 5. Name of the commentator. 6. Material, 7. Script and language, 8. Size and number of folio, lines per page and letters per line. 9. Extent, 10. Condition and age, 11. Additional particulars. These details provide adequate informations about the MSS. For instance thirteen MSS of *Drvyasamgraha* have been recorded (S. Nos. 213 to 224). It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicanda Siddhānti and has had attracted attention of Sanskrit ond other commentators. Each Ms. preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number. Its justification could be observed in the details provided.

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text. All are paper, written in *Devanāgarī* Script, their language being natured in poetry. Each Ms has different size and number of folios. Lines per page and letters per line are also different. All are complete and in good condition. Only one Ms (216) is a Hindi verson in poetry by some unknown

writer and is incomplete. Two MSS (218, 222) are with exposition in *Bhāṣā* (Hindi) prose and poetry by Dyānatarāya and three are in Bhāsā poetry by Bhagavatidas. Ms No. 223 dated 1721 v. s., is with Sanskrit commentary in Prose. Ms No. 229 is a *Bhāṣā vacanikā* by Jayacanda. These details could be seen at a glance as they are presented scientifically.

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads :

1.	Purāṇa, Carita, Kathā	1 to 155
2.	Dharma, Darśana, Ācāra	156 to 453
3.	Nyāyaśāstra	454 to 480
4.	Vyākaraṇa	481 to 492
5.	Kośa	493 to 501
6.	Rasa. chanda, Alaṅkāra & Kāvya	502 to 531
7.	Jyotiṣa	532 to 550
8.	Mantra, Karmakāṇḍa	551 to 588
9.	Āyurveda	589 to 600
10.	Stotra	601 to 800
11.	Pūjā, Pāṭha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order. The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue. However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories (see MSS 295, 511, 512).

The Second Part of the volume is entitled as *Pariśiṣṭa* or Appendix. This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part. Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in *Devanāgarī* script. The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is currupt. The cross references of more than ten other works deserve special mention. Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour-

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as importnt informations. A few of them are noted below :—

(1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as *Navaratnaparīkṣā* (295) which deals with Gemeology. The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a *Ratna śāstra* by Buddhabhatt. Similarly, *Nītivākyāmṛtam* (511. 512) is the famous work on Polity by Somadeva Suri (10th cent.). *Trepanakriyākośa* (498, 499) is not a work on Lexicon. It deals with rituals and hence falls under *Ācāraśāstra*. These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not by pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him.

(2) Some of the MSS of *Āptamīmāṁsā* contain *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda (455) *Āptamīmāṁsāvṛtti* of Vasunandi (456) and *Āptamīmāṁsābhāṣya* of Akalaṅka (457). These three famous commentaries are popularly known as *Aṣṭasahasrī*, *Aṣṭaśatī* and *Devāgamavṛtti*. Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions.

(3) In the colophon of some of the MSS the parential MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been copied, have been given These informations are of manifold importance. For instance the information regarding parential Ms is very important. If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same. It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts then that of the original one. Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in *Kannada* scripts. When these are rendered into *Devanāgarī* scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on. It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms. The difference of alphabets in different languages is obvious. Thus the reference of parential Ms is of great importance (373).

(4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS. Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in *Kannaḍa* scripts (7, 318, 373) whereas some in Northen India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi.

5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana. Arrah itself. MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars.

(6) The study of colophon reveals many more inportant references of *Saṁgh s, Gaṇas, Gacchas, Bhaṭṭārakas.* and presentation of *Śāstras* by pious men and women to ascetics. copying the Ms for personal study—*svā hyāya*, and getting the work prepared for his son or relative etc. Such references denote the continuity of religious practice of *śāstradāna* which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,

(7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout *śrāvakas* and desciples of *Bhaṭṭārakas* or other ascetics.

(8) In most of the MSS counting of alphabets, words, *ślokas*, or *gāthās* have been given as *granthaparimāṇa* at the end of the MSS. This reference is very important from the point of the extent of the Text. Many times the author himself indicates the *grantha-parimāṇa*. Even the prose works are counted in the form of ślokas (32 alphabets each). The *Āptamimāṁsā Bhāṣya* of Akalaṅka is more popularly known as *Aṣṭaśatī* and *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda is famous as *Aṣṭasahasrī*. Both works are the commentaries on the *Āptamimāṁsā* (in verse) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyānanda himself says about his work :—

"*Śrotavy – aṣṭasahasrī śrutaiḥ kimanyaih sahasrasamkhyānaih.*"

Counting in the form of ślokas seems a later development. When the teachings of Vardhamāna Mahāvīra were reduced to writing counting was done in the form of *Padas*. For instance the *Āyāramga* is said to contain eighteen thousand *Padas*.

" Āyāraṁgamatthāraha—pada - sahassehi "

(Dhavalā p. 100)

Such references are more useful for critical study of the text.

(9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio-cultural importance as well. The copying work was done by Brāhmins, Vaiśyas, Agarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others. There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS. The remuneration of writing was decided per hundred words. For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation. In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned. Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important.

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research.

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other. Thus, the *Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a highly useful reference work which undoubtedly contributes to the advancement of oriental learning. With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Centuty.

Shri Jaina Siddhant Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz. 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka, and paper MSS from Northern India. However the copying work was done on the spot if the Ms was not lent by the owner or otherwise was not transferable. The earliest Śauraseni Prakrit *Siddhānta Śāstra Saṭkhaṇḍāgama*

with its famous commentaries *Davalā*, *Jayadavalā*, and *Mahādavlā* was copied from the only surviving palm leaf Ms in old *Kannaḍa* scripts, preserved in the *Siddhānta Basadi* of Moodbidri.

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment. In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of Śrī *Syādvāda Mahāvidyālava*. A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt. Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr. Satish Chandra Vidyabhusan, Prof. Heraman Jacobi of Germany, Prof. Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahmachari Shital Prasad. A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915. Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John woodruf and Sarat Chandra Ghosal.

The other activity of the publication of *Biblothica Jainica—The Sacred Books of the Jainas* began with the publication of *Dravya Saṁgraha* as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc. In this series important ancient Prakrit texts like *Samayasāra*, *Gommatasāra*, *Ātmānuśāsana* and *Puruṣārtha Siddhyupāya* were published. Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jaina tenets by eminent scholars were also published. *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*, a bilingual Research Journal was published with the objectiveto bring into light recent researches and findings in the field of Jainalogical learning.

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jainas in particular. The palm leaf MSS in *Kannada* scripts or rendered into *Devanāgarī* on paper are valuable assets of the collection. It is undoubtedly accepted that a manuscipt is more valuable than an icon or Architectural set-up. An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever. It is how plenty of ancient works have been lost. It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve

the MSS which is included in their religious practice. A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a *Śāstra-Bhandāra*, because the *Jina*, *Jinavāni* and *Jinaguru* were considered the objects of worship. Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the *Śāstra-Bhandāras*. During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznai (1025 A.D.) and Aurangzeb (1661-1669 A.D.) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and *Śāstra* started and much interior places were choosen for the purpose. A new sect of the Bhattārakas and Caityavāsīs emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the *Śāstra Bhandāras*. As a result, many MSS collections came up all over India. The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Rajasthan, Kolhapur in Maharastra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known. A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different *Śāstra Bhandāras*. One can imagine how the copies of a works composed in South India could travel to North and West. And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India. A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works were rendered into Kannada, Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf. It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shāntammā, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of *Śāntipurāna* and distributed them among religious people. At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance.

The above efforts saved hundreds thousands MSS. But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties. This resulted into two unwanted developments viz. 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessiblity. Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars. The story of the *Siddhānta Śāstra Satkhandāgama* is now well known. It is only one example.

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out

with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries. This continued during the first quarter of 20th century- In such Institution, Eelak Pannalal Sarasvati Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top. More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world. Almost all the eminent Joinologist of the present century studing the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan. It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited.

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published. Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study.

In the series of the publications of catalogues relating to Jainalogy, *Jinaratnakośa* by Velankar deserves special mention. It is quite a different type of reference work relating to MSS. Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the *Kannalaprāntiya Tādapatriya Grantha* Sūchi in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS. The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr. Kastoor Chand Kasliwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahaviraji, Jaipur also deserve mention. L. D. Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes. Among the publication of new catalogues mention may be made of *Dilli Jina-Grantha-Ratnāvāli* published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi and the catalogue of *Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra* published by Rajasthan University.

In the above range of catalogues, the present volume of *Śri Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvali* is a valuable addition. As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah. It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS. I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications.

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Sriman Devakumarji and his worthy successors. I sincerely thank Shriman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight. His associates also deserve applause for their due assistance. I also thank my esteem friend Dr. Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute.

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible.

Dr. Gokul Chandra Jain
Head of Department of Prakrit
and Jaināgam, Sampurnanand
Sanskrit Vishvavidyalay,
VARANASI

सम्पादकीय

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएन्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश में विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) पर स्थित है। वर्तमान में इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एवं विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत बड़ा संगमरमर का हॉल है, जिसमें सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रन्थों का संग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान में श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन कला दीर्घा' है। इस कला दीर्घा में शताधिक दुर्लभ हस्तनिर्मित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एवं अन्य पुरातत्त्व सामग्री प्रदर्शित है। यहीं ८४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा में श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्घाटन (जन्म) हुआ था।

सन् १९०३ में भट्टारक हर्षकीर्ति जी महाराज सम्मेद शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे। आते ही उन्होंने स्थानीय जैन पंचायत की एक सभा में बाबू देवकुमार जी द्वारा संगृहीत उनके पितामह पं० प्रभुदास जी के ग्रन्थ संग्रह के दर्शन किये तथा उन्हें स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेरणा दी। बाबू देवकुमार जी धर्म एवं संस्कृति के प्रेमी थे, उन्होंने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वहीं कर दी। भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसंग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेंट कर दिया।

जैन सिद्धान्त भवन के संवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यशस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १९०६ में दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमें विभिन्न नगरों एवं गांवों में सभाओं का आयोजन करके जैन संस्कृति की सुरक्षा एवं समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गांवों और नगरों से हस्तलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानों पर शास्त्रभंडारों को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एवं निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएँ पैदल या बैलगाड़ियों पर हुआ करती थीं। किन्तु काल की गति को कौन जानता है ? १९०८ ई० मे ३१ वर्ष की अल्पायु में ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिससे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धांत भवन के कार्य-कलाप भी प्रभावित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोड़ीचन्द्र ने भवन का कार्य संभाला और उन्होंने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तों की यात्रा करके हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और बनारस में बड़े पैमाने पर जैन प्रदर्शिनियों और सभाओं का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न संग्रह को देखकर डा० हर्मन जैकोबी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान प्रभावित हुए तथा उन्होंने बाबू देवकुमार की स्मृति में प्रशस्तियाँ लिखीं एवं भवन की सुरक्षा एवं समृद्धि की प्रेरणाएँ दीं।

सन् १९१९ में स्व० बाबू देवकुमार जी के पुत्र बाबू निर्मलकुमार जी भवन के मंत्री निर्वाचित हुए। मंत्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के कार्य-कलापों में गति भर दी। १९२४ मई में जैन सिद्धांत भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष में भव्य एवं विशाल भवन तैयार करा दिया। *तत्पश्चात् धार्मिक अनुष्ठान के साथ सन् १९२६ में श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन* सिद्धांत भवन ग्रन्थागार को नये भवन में प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होंने अपने कार्यकाल मे ग्रन्थागार में प्रचुर मात्रा में हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रंथों का संग्रह किया।

जैन सिद्धांत भवन आरा में प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपि करने के लिए लेखक (प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थों को बाहर के ग्रन्थागारो से मंगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने संग्रह में रखते थे। यहाँ नये ग्रन्थो की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने संग्रह के जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थो की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थों में प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एवं इन्दौर भेजे गये हैं।

सन् १९४९ में बाबू निर्मलकुमार जैन के लघुभ्राता चक्रेश्वरकुमार जैन भवन के मंत्री चुने गये। ग्यारह वर्षों तक उन्होंने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १९५७ से बाबू सुबोधकुमार जैन को मंत्री पद का भार दिया गया, जिसे वे अभी तक पूरी लगन एवं जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे हैं। बाबू सुबोधकुमार जैन भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है। इनके कार्यकाल मे भवन के क्रिया-कलापों मे कई नये अध्याय जुड़ गये है, जिनसे बाबू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों उभर-कर सामने आये है।

जैन सिद्धांत भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धांत भास्कर एवं जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन १९१३ से हो रहा है। पत्रिका द्वैभाषिक, हिन्दी-अंग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका में जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओं के लेख प्रकाशित होते हैं। शोध-पत्रिका अपनी उच्चकोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर मे सुविख्यात है। इसके अंक जून और दिसम्बर में प्रकट होते हैं।

जैन सिद्धांत भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान है। इसमें प्राकृत एवं जैनविद्या की विभिन्न विधाओं पर शोधार्थी शोधकार्य करते हैं। संस्थान में शोध सामग्री प्रचुर मात्रा में भरी पड़ी है। संस्थान सन् १९७२ से मगध विश्व विद्यालय, बोधगया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में इसके मानद् निदेशक, डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, प्राकृत–संस्कृत विभाग, हरप्रसाद दास जैन कालेज, (मगध विश्व विद्यालय) आरा हैं। इस समय संस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं तथा अनेक पी० एच० डी० की उपाधियां प्राप्त कर चुके हैं।

इस संस्था द्वारा अब तक अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस समय छह भागों में भवन के हस्तलिखित ग्रन्थों की विस्तृत सूची श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली तथा सचित्र जैन रामायण (रामयशोरसायनरास–मुनि केशराजकृत) का प्रकाशन कार्य चल रहा है।

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का पहला भाग पाठकों के हाथ में है। इसमें जैन सिद्धांत भवन, आरा में संरक्षित ९९७ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी के हस्त-लिखित ग्रन्थों की विस्तृत सूची है। वास्तव में यह संख्या एक हजार से अधिक है। यह सूची दो खण्डों में विभक्त है तथा दोनों खण्डों की पृष्ठ संख्या भी पृथक्–पृथक् है। प्रथम खण्ड मे पाण्डुलिपियों का विवरण तथा दूसरे खण्ड में प्रत्येक ग्रन्थ का प्रारंभिक अंश, अन्तिम अंश एवं प्रशस्तियां दी गई हैं। सूची में ग्रन्थो का वैज्ञानिक ढंग से विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह विवरण निम्न ग्यारह शीर्षको में है:–– (१) क्रम-संख्या (२) ग्रन्थ संख्या (३) ग्रन्थ का नाम (४) लेखक का नाम (५) टीकाकार का नाम (६) कागज या ताडपत्र (७) लिपि और भाषा (८) आकार सेमी० मे, पत्रसख्या, प्रत्येक पत्र की पंक्ति संख्या एवं प्रत्येक पंक्ति की अक्षर संख्या (९) पूर्ण-अपूर्ण (१०) स्थिति तथा समय (११) विशेष जानकारी यदि कोई है। यह सभी विवरण रोमन लिपि मे दिया गया है।

१	पुराण, चरित, कथा	१ से १५५.
२	धर्म, दर्शन, आचार	१५६ से ४५३
३.	न्यायशास्त्र	४५४ से ४८०.
४.	व्याकरण	४८१ से ४९२.
५.	कोष	४९३ से ५०१.
६.	रस, छन्द, अलंकार और काव्य	५०२ से ५३१.
७	ज्योतिष	५३२ से ५४९.

अन्तिम शीर्षक के अन्त में आठ ग्रन्थ ऐसे है, जिन्हें विविध-विषय के रूप में रखा गया है। यह विषय विभाजन सामान्य कोटि का है, क्योंकि सभी ग्रन्थों का विषय निर्धारित करने हेतु उसका आद्योपान्त सूक्ष्म परीक्षण आवश्यक है।

ग्रन्थावली का दूसरा खण्ड 'परिशिष्ट' नाम से अभिहित है। इसका यह खण्ड बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रशस्तियों में अनेक महत्वपूर्ण तथ्य लिपिबद्ध हैं। अनेक काफी प्राचीन पाण्डुलिपिलाँ भी हैं,जिनका समय प्रथम खण्ड में दिया गया है। प्रशस्तियों के अध्ययन से विभिन्न संघों, गांवों, गच्छों तथा भट्टारकों के सन्दर्भ सामने आये हैं। यह ग्रन्थ कुछ लोग अपने स्वाध्याय के लिए लिखवाते थे तथा कुछ लोग शास्त्रदान के लिए। ग्रन्थ श्रावकों, साधुओं तथा भट्टारकों द्वारा लिखवाये गये है। पाण्डुलिपियो का लेखन भारत के विभिन्न देशों (वर्तमान राज्यों में) हुआ है। जैन सिद्धान्त भवन, आरा में भी पर्याप्त लेखन कार्य हुआ है। जो पाण्डुलिपियाँ अन्य संग्रहों से स्थानान्तरित नही की जा सकती थी, उनकी प्रतिलिपियाँ वहीं से कराकर मंगाई गई है। अधिकांश पाण्डुलिपियों में पूरे ग्रन्थ की श्लोक सख्या या गाथा संख्या भी दी हुई है, जिससे पूरे ग्रन्थ का परिमाण भी निश्चित हो जाता है। इस ग्रन्थावली का यह खण्ड एक ऐसा दस्तावेज है, जिससे अनेक नवीन सूचनाएँ दृष्टिगोचर हुई है।

क्र० १०३/१ में उल्लिखित 'राम-यशोरमायनरास' सचित्र ग्रन्थ है। इसके कर्त्ता श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के केशराज मुनि हैं। कर्ता ने रचना में स्वयं के लिए ऋषि, ऋषिराज, ऋषिराय, मुनि, मुनीन्द्र, पंडितराज आदि विशेषण प्रयुक्त किये है। ग्रन्थकी कुल पत्रसंख्या २२४ है, जिसमें से वर्तमान में १३१ पत्र उपलब्ध है। इन पत्रो में २१३ रंगीन चित्र है। चित्र राजपूत शैली के हैं। यह रचना राजस्थानी हिन्दी में है तथा आचार्य हेमचन्द्र रचित 'त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित' की रामकथा पर आधारित है। इसका प्रकाशन देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान से किया जा रहा है। क्र० २२३ द्रव्यसंग्रह टीका (अवचूरि) है, जो अद्यावधि अप्रकाशित है। टीका संक्षिप्त एवं सरल संस्कृत भाषा में है। किन्तु पाण्डुलिपि मे टीकाकार के नाम, समयादि का उल्लेख नही है।

परिशिष्ट तैयार करने में 'यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया' का अक्षरशः पालन किया गया है। अनुसन्धित्सुओ की सुविधा के लिए विभिन्न हस्तलिखित ग्रन्थों की सूचियों के क्रास सन्दर्भ दिये गये हैं, जिनमें राजस्थान के शास्त्र भंडारों की सूची भाग–१ से ५, जिनरत्नकोष, आमेर सूची, दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली, कैटलॉग आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्टस्, कैटलॉग आफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मैन्युस्क्रिप्टस् प्रमुख हैं।

'इन्ट्रोडक्शन' में डॉ० गोकुलचन्द्र जी जैन, अध्यक्ष प्राकृत एवं जैनागम विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली के पूरे परिचय के साथ उसका महत्व भी स्पष्ट किया है। तथा अनेक मौकों पर उनका मार्गदर्शन भी मिलता रहा है, जिसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। संस्थान के निदेशक के रूप में डॉ० राजाराम जैन के मार्गदर्शन के लिए उनका भी आभारी हूँ। श्री बाबू सुबोधकुमार जी जैन तथा श्री अजयकुमार जी जैन का तो निरन्तर ही मार्गदर्शन तथा निर्देशन रहा है। यही दोनों व्यक्ति प्रेरणा स्रोत भी रहे, अतः उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ। अपने ग्रन्थागार सहयोगी श्री जिनेशकुमार जैन तथा प्रेस सहयोगी श्री मुकेशकुमार वर्मा का भी आभारी हूँ, जिन्होंने समय-असमय कार्य पूरा करने में निरन्तर मदद की। इनके अतिरिक्त जिन अन्य व्यक्तियों से परोक्ष-अपरोक्ष रूप में सहयोग मिला है, उन सबका हृदय से आभार मानते हुए आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हमें उनका सहयोग मिलता रहेगा।

—ऋषभचन्द्र जैन फौजदार
शोधाधिकारी,
देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान
आरा (बिहार)

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

SHRI DEVAKUMAR JAIN ORIENTAL LIBRARY.

JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH (BIHAR)

S. No.	Library accession or Collection No. if any	Title of work	Name of Author	Name of Commentat
1	2	3	4	5
1	Kha/38/1	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
2	Jha/4	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
3	Kha/14	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
4	Kha/5	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
5	Ga/105	Ādipurāna	—	—
6	Jha/138/1	Ādipurāṇa Tippaṇa	—	—
7	Jha/138/2	Ādinātha purāna	Hastimalla ?	—
8	Ga/44	Ādipurāṇa Vacanikā	—	—
9	Kha/69	Ādinātha Purāṇa	Sakalakriti	—
10	Kha/282	Ārādhnā-Kathā Kośa	Brahma-Nemidatta	—
11	Kha/155	Ārādhanā-Kathā Kośa	Brahmanemidatta	—

Mat. or Subt.	Script	Size in cms. No. of folios or leaves lines per page & No. of letters per line	Extent	Condition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt. Poetry	31.4×16.2 258.15.52	C	Old 1904 V. S.	Published.
P.	D;Skt. Poetry	30.7×15.6 367.10.52	C	Old 1851 V. S.	Copied Uderāma. Published.
P.	D;Skt. Poetry	35.5×15.4 305.15.53	C	Good 1773 V. S.	Published,
P.	D;Skt. Poetry	37×16 305.13.56	C	Old 1735 V. S.	12000 Slokas. Published.
P.	D;H. Poetry	43.8×16.9 688.11.52	C	Good 1889 V. S.	Copied by Jugarāja.
P.	D;Skt, Prose	34.4×21.3 123.15.45	C	Good	
P.	D;Skt. Poetry	22.1×17.5 95.10.18	C	Good 1943 A. D.	Copied by Lokanātha Sastri, Unpublished.
P.	D; H. Prose	35.8×17.9 544.14.48	C	Good 1961 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	29.8×19.2 177.12.53	C	Good 1797 V. S.	Published. 5500 Slokas. Copied by Gulajārilāla.
P.	D;Skt. Poetry	32.5×16.5 196.14.48	C	Old 1848 V. S.	Published.
P.	D;Skt. Poetry	28.8×11.6 244.10.47	C	Good 1807 V. S.	Published.

1	2	3	4	5
12	Ga/21/2	ĀrādhanāSāra		—
13	Kha/147/2	Bhadrabāhu-Caritra	Ācārya Ratnanandi	—
14	Kha/115	Bhadrabāhu-Caritra	Ācārya Ratnanandi	—
15	Jha/98	Bhagavatpurāṇa	Kesavasena	—
16	Ga/68	Bhaktāmara Kathā	Vinodilāla	—
17	Ga/7	Bhak mara Kathā	Vinodilāla	—
18	Ga/132	Bhaktāmara Kathā	Vinodilāla	—
19	Kha/195	Candraprabha Caritra	Viranandin	—
20	Ga/170	CandraPrabha Purāṇa	Pt. Th thirāma ?	—
21	Nga/2/49	Caturviṁsati Jina Bhavāvali		—
22	Ga/129	Cārudatta-Caritra	Bhārāmala	—
23	Ga/85/3	Ceṭana-Caritra	Bhagavati Dāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;H. Poetry	37.1×23.1 46.18.66	C	Good	Published by Manikachandra Series.
P.	D;Skt. Poetry	29.2×12.5 28.9.50	C	Old	Published.
P	D;Skt. Poetry	22.2×14.4 57.8.24	C	Good	Published. copied by Nīlakaṇṭhā Dāsa.
P.	D;Skt. poetry	35.3×16.5 98.11.54	C	Good 1698 V. S.	Coped by Uddhava Jośī, Unpublished.
P.	D;H. Poetry	33.4×21.2 138.17.37	C	Good 1939 V. S.	
P.	D;H. Poetry	30.6×19.2 214.12.35	C	Good 1954 V. S.	Baladevadatta Pandita seems to be copier.
P.	D;H Poetry	33.4×15.4 183 12.40	C	Good 1954 V. S.	Slokas No. 5400, Copied. by Cunımālī
P.	D;Skt. Poetry	34.1×21.5 306.20.26	C	Good. 1761 Saka Saṁavata	Written on register size paper. Copied by Pand.ta cārukīrti. Published.
P.	D;H. Poetry	32.4×17.4 180.13.38	C	Good 1978 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	19.4×15.5 3.13.14	C	Good	Unpublished
P.	D;H. Poetry	35.2×16.1 69.10.37	C	Good 1960 V. S.	Copied by Guljārī Lāla,
P.	D;H. Poetry	25.8×17.9 15.15.35	C	Good 1958 V. S.	

1	2	3	4	5
24	Ga/167	Cetana-Caritra Nāṭaka		—
25	Ga/33	Darśana-Kathā	Bhārāmalla	—
26	Ga/85/1	Daśrana-Kathā	Bhārāmalla	—
27	Kha/176/4	Daśalākṣaṇī-Kathā	Śrutasāgara	—
28	Nga/6/11	Daśa-lākṣaṇī Kathā	Bhairondāsa	—
29	Ga/41/2	Dāna-Kathā	Bhārāmalla	—
30	Kha/12	Dhrma-Śarmābhyubaya	Mahākavi Haricandra	—
31	Jha/103	Dharma-Śarmábhyudaya Saṭika	Mahākavi Haricandra	Yaśa-Kīrti
32	Kha/188/5	Dhanya-Kumāra Caritra	Brahamanemidatta	—
33	Ga/9	Dhanyakumāra-Caritra	Brahmanemidatta	—
34	Ga/38	Dhanya-Kumāra-Caritra		—
35	Nga/2/6	Dudhārasa Dvādasí Kathā	Prabhūdasa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.9×15.9 13.11.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	26.9×17.5 34.13.30	C	Good 1961 V. S.	
P.	D; H Poetry	26.3×17.9 40.12.29	C	Good 1940 V. S.	
.	D;Skt. Poety	24.4×11.3 3.11.44	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.8×18.1 6.17.18	C	Good 1751 V S,	
P.	D; H. Poetry	27.8.×18.5 23.14.35	C	Good 1962 V. S.	Copied by Pandit RāmaNāth.
P.	D;Skt. Poetry	29.4×13.7 158.9.45	C	Good 1889 V. S.	Published. Good hand.
P.	D;Skt. Poetry Prose	35.5×16.1 170.12.54	C	Good 1990 V. S.	Copied by Rośanalāla.
P	D;Skt. Poetry	23.1×9.8 27.8.36	Inc.	Old.	Published. Last pages are missing.
P	D; H. Poetry	36.6×21.4 19.17.65	C	Old 1932 V. S.	
P.	D; H. Poet ry	26.6×17 3 44.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.8×13.5 12.10.21	C	Old 1918 V. S.	

1	2	3	4	5
36	Ga/158	Gajasingh Guṇamālā Caritra	Khemacandra	—
37	Ga/176	Gajasingh Guṇamālā Caritra	Khemacandra	—
38	Kha/160/1	Hanumāna-Caritra	Brahmajita	—
39	Kha/11	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
40	Kha/198	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
41	Jha/64	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
42	Ga/83	Hanumāna Caritra	Ananta-Kīrti	—
43	Ga/102	Hanumāna Caritra	Ananta-Kīrti	—
44	Jha/83	Harivaṁśa Purāṇa	Raidhū	—
45	Jha/63	Harivaṁśa Purāṇa	Jasakīrti	—
46	Jha/87	Harivaṁśa Purāṇa	Brahma Jinadāsa	—
47	Kha/2	Harivaṁśa Purāṇa	Jinasenācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	25 3 ×11.2 108.13.44	C	Old 1788 V. S.	
P.	D. H. Poetry	33.4×20.8 87.13.43	C	Good 1984 V. S.	
P.	D. Skt Poetry	27.8×12.4 85.14.86	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	31.2×15.4 81.11.45	Inc	Old	Published. 9th'10th & 11th Sargas are missing.
P.	D;Skt. Poetry	29 2×17.9 67.13.48	C	recent 1978 V. S.	It is also called Añjani Caritra
P.	D;Skt. Poetry	33 5×20.7 67.12.40	C	Good	Copied by Bhujawala Prasāda Jaini.
P.	D. H, Poetry	28.9×15.4 54.11.35	C	Good 1901 V. S.	
.	D H. Poetry	32.2×20.1 43.13.35	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Apb. Poetry	34.3×21.1 10.213.50	Inc	Good 1987 V. S.	Copied by Pt, Śivadayāla Caubay.
P.	D, Apb. Poetry	33.9×21.5 121.12.45	C	Good	Unpublished,
P,	D;Skt, Poetry	33.4×20.7 201.14.42	C	Good 1988	Unpublished. Copied by Pt, Śivadayāla Caubay.
P.	D;Skt. Poetry	35.5×16 435.10.32	C	Good	Published,

1	2	3	4	5
48	Ga/2	Harivaṁśa Purāna Vacanikā	Daulata Rāma	
49	Ga/117	Harivaṁśa-Purāṇa		—
50	Kha/126	Jaṁbūswāmī-Carıtra	Brahma Jınadāsa	—
51	Jha/94	Jambūswāmī Caritra	Sakala-Kīrtı	—
52	Jha/114	Jambūswāmī Caritra	Rājamalla	—
53	Ga/62	Jambūswāmī-Kathā	Jınadāsa	—
54	Kha/27	Jayakumāra Carıtra	Brahma Kāmarāja	—
55	Ga/60	Jinadatta-Carıta Vacanıkā	PannāLāla	—
56	Jha/121	Jinendra Māhātmya Purāna	Bhaṭṭārak Jinendra Bhūṣana	—
57	Kha/166/2	Jınamukhāvalokana Kathā	Sakalakīrtı.	—
58	Ga/39	Jīvandhara Caritra	Nathamalı Vılālā	—
59	Kha/116/1	Kathāvalī		—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H, Prose Poetry	33.2×17.3 512.12.54	C	Good 1884 V. S.	21,000 Anustup Chhandas are in the ms.
P.	D; H. Poetry	26.2×11.5 128.12.44	Inc	Old	
P.	D;Skt, Poetry	29.?×18.7 83 12.42	C	Good 1608 V. S.	published, Copied by Gulajārī Lāla Śarmā.
P.	D;Skt, Poetry	27 8×12 5 117.10.32	C	Good 1664 V. S.	Capied by saha Rāmānkena, It is same to Last one.
P.	D;Skt, Potry	35.1×16,4 69.12.51	C	Good 1992 V. S.	Copied by Raśana Lāla.
P	D; H, Poetry	31.5×14 3 28.9.37	C	Good 1883 A. D.	Copied by Duragāprasāda Jaini.
P.	D;Skt Poetry	26 9×11 5 86.11 40	C	Old 1842 V. S.	It is also called Jayapurāṇa.
P.	D; H, Prose	32.1×12 1 113.7.38	C	Old 1931 V. S.	
P.	D;Skt, Poetry	45.8×22.1 776.16.60		Good 1992 V. S.	Copied by Raśanalāla Jain Unpub. Slockas No, 76000 Nesten two and one book.
P.	D;Skt, Poetry	25.2×11.7 14.12.52	C	Old 1932 V. S.	Copied by Pt. Paramānanda.
P.	D; H, Poetry	27.9×18.2 106,14,45	C	Good 1961	
P.	D;Skt, Poetry	24.8×11.2 103.10.42	Inc	Old 1679 V. S.	Copied by Brahmbeṇi Dāsa.

1	2	3	4	5
60	Ga/110/4	Kudeva Caritra		—
61/1	Jha/85	Madanaparājaya	Jinadeva	—
61/2	Jha/132	Mahipāla Caritra	Cāritra-Bhūṣaṇa Muni	—
62	Ga/171	Mahipāla Caritra	Nathamala	—
63	Kha/183	Maithalī Kalyāṇa Nāṭaka	Hastimalla Kavi	—
64	Kha/264	Megheśvara Caritra	Mahā Kavi Raidhū	—
65	Kha/62/3	Nandīśvara Vrata-Kathā	Śubhacandrācārya	—
66	Ga/85/2 (Kha)	Nemi Candrikā		—
67	Ga/85/2 (Ka)	Nemiāntha Candrikā	Munnālāla	—
68	Ga/165	Neminatha Caritra	Vikrama Kavi	—
69	Jha/111	Nemipurāṇa	Brahma Nemidatta	—
70	Jha/(6	Nemi-Purāṇa	Brahma Nemidatta	—

6	7	8	9	10	
P.	D; H; Prose	21.3×15.6 36.11.26	C	Good	Durgāprasada seems to b copier.
P.	D;Skt. Prose	35.3×16.3 35.10.52	C	Good 1987 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	35.5×16.6 24.13.46	C	Good 1993 V. S.	Unpub. Slokas No. 995. copieda by Rośanalāla Ja n
P.	D; H. Prose	26.7×16.8 56.15.30	C	Good 1918 V. S.	
P.	D;Skt. Prose Poetry	28.3×17.7 46.27.26	C	Good 1972 V. S.	Published.
P.	D;Abb. Poetry	35.5×17.4 93.12.52	C	Cood 1976 V. S.	It is also called—Ādipurāṇa 4000 Gāthas. Copied by Rajadhara Lal Jain.
P.	D;Skt. Prose	29.8×14.6 6.10.47	Inc.	Old	It is also called Nandiśvarā tāhnikā kathā. or Siddhaca rakathā. Unpublished. Or l. page No.-14 to 19th availa le
P.	D; H. Poetry	26.5×17.6 10.13.38	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; H. Poetry	15.5×16.1 39.12.20	C	Old 1895 V. S.	
P.	D;Skt/H. Poetry Prose	27.6×18.2 37.13.33	C	Old	
P.	D;Skt. Poetry	35.1×16.1 104.13.50	C	Good 1990 V. S.	Copied by Rośanalāla in Arrah.
P.	D;Skt. Poetry	22.8×1.38 133.15.33	C	Old	First page is mising. Last Page is Damaged.

1	2	3	4	5
71	Kha/ 111	Nemi-Purāṇa	Brahma Nemidatta	—
72	Ga/ 4	Nemi-Purāṇa		—
73	Nga/ 1'7/1	Neminātha Ristā	Hemarāja	—
74	Kha/ 146/2	Neminirvāna-Kāvya	Vagbhaṭṭa	—
75	Jha/ 130	Neminirvāna Kvāya Panjikā	Bhaṭṭaraka Jnana-bhūṣaṇa	—
76	Ga/ 41/1	Niṣi Bhojana Kathā	Bhārāmalla	—
77	Ga/ 99/3	Niṣi Bhojana Kathā	Bhārāmalla	—
78	Kha/ 179/3	Nirdoṣa Saptamī Kathā		—
79	Kha/ 266	Padma Carita ṭippaṇa	Candramuni	—
80	Kha/ 1	Padma-Purāṇa	Raviṣeṇācārya	—
81	Kha/ 107	Padma-Purāṇa	Raviṣeṇācārya	—
82	Ga/ 147	Padma-Purāṇa		—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt. Poetry	22.6×14.8 84.13.37	Inc.	Old 1665 V. S.	Published. From page No. 2 to 43 are missing in begining and last pages are also missing.
P.	D; H. Prose Poetry	35.5×18.1 145.14.46	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.4×13.8 11.12.11	C	Good	First page is missing.
P.	D; Skt. Poetry	31.3×15.4 45.11.38	C	Old 1727 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	35.5×17.3 48.15.45	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.6×17.4 20.13.44	C	Good 1962 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	32.6×16.9 13.11.37	C	Good 1955 V. S.	Published. Copied by DurgāLala.
P.	D;Hindi Poetry	25.5×11.7 6.6.33	C	Good	Published.
P.	D;Skt. Prose	35.4×17.5 34.12.55	C	Good 1894 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	40×19 487.13.46	C	Good 1885 V. S.	Published. Copied by Brahanana Gour Tiwary.
P.	D;Skt. Poetry	25×11 65.9.44	Inc.	Old	Published. First 17 pages and last pages are missing.
P.	D; H. Prose	32.2×15.8 311.12.47	Inc.	Good 1890 V. S.	First 301 Pages are missing Raghunath Sharma seems to be copier.

1	2	3	4	5
83.	Ga/69	Padma Purāṇa Vacanikā	—	—
84.	Ga/8	Padma-Purāṇa Vacanikā	Daulatarāma	—
85.	Ga/116	Padma-Purāṇa Bhāṣā	Daulata-Rāma	—
86.	Kha/3	Pāṇḍava-Purāṇa	Subhacandra Bhaṭṭāraka	—
87.	Ga/40	Pāṇḍava-Purāṇa	Bulākīdāsa	—
88.	Jha/129	Pārśva Purāṇa	Raidhū	—
89.	Jha/79	Pārśva Purāṇa	Sakalakīrti	—
90.	Kha/108	Pārśva-Purāṇa	Sakalakīrti	—
91.	Ga/30/2	Pārśva-Purāṇa	Bhūdharadāsa	—
92.	Ga/131	Pārśva-Purāṇa	Bhūdharadāsa	—
93.	Kha/8	Pradyumna-Carita	Somakīrti-Sūri	—
94.	Kha/9	Pradyumna-Car	Somakīrti Sūri	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	34.8×15.8 749.11.43	C	Good 1953 V. S.	Colour panting by commentator on the wooden cover.
P.	D; H. Poetry	32.8×17.2 327.17.51	C	Good 1845 V. S.	....
P.	D; H. Poetry	34.3×19.6 1246.12.45	C	Old	
P.	D;Skt. Poetry	32.5×17.6 143.14.58	C	Good 1820 V. S.	Publisheed. copied by Pandit Māyā Rāma.
P.	D; H. Poetry	26.7×17.7 195.13.37	Inc	Good	Last pages are missing
P,	D; Aph Poetry	35.5×16.7 38.13.52	C	Good 1993 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	32.8×17.8 96.11,83	C	Good	
P.	D;Skt. poetry	24.3×15.2 179.10.32	C	Old 1891 V. S.	Published.
P.	D, H. Poe.ry	33.5×16.1 55.14.53	C	Good 1856 V. S.	Copied by Rāmasukhadāsa.
P.	D; H. Poetry	33.1×20.3 80.12.45	C	Good 1953 V. S.	Copied by cunnimāti.
P.	D;Skt. Poetry	28.5×13.6 241.9.45	C	Good 1943 V. S.	Published. Natwarlāla Sharmā. copied it.
P.	D;Skt. Poetry	27.7×14.4 271.10.30	C	Old 1777 V. S.	Published. Capied by Sri Rai Singh.

1	2	3	4	5
95	Kha/167	Pradyumncaaritra	Somakirti Sūri	—
96	Kha/147/1	Pradyumncaaritra	Somakirti Sūri	—
97	Ga/133	Puṇyāśrava Kathā	Daulatarāma	—
98	Jha/11	Puṇyāśrava Kathā	—	—
99	Jha/82	Panyāśrava kathā Koṣa	Bhāvasingh	—
100	Ga/90	Panyāśrava kathā Kosa	Bhāvasinha	—
101	Jha/107	Purāṇasāra Saṁgraha	Dāmanandi	—
102	Jha/12	Pūjyapāda Caritra	Padmarāja Kavi	—
103/1	Ga/155	Rāmayaśorasāyana Rāsa	Keṣarāja Ṛṣi	—
103/2	Nga/6/10	Ratnatraya Kathā	—	—
104	Nga/5/6	Ratnatrayavrata Pūjā Kathā	Jinendrasena	—
105	Nga/6/8	Ravivrata Kathā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt. Poetry	24.7×11.3 151.15.40	C	Old 1752 V. S.	Published.
P.	D;Skt. Poetry	30.2×14.1 126.13.46	C	Old 1769 V. S.	Published.
P.	D. H. Prose Poetry	32.5×19.6 178.14.34	C	Good 1874 V. S.	
P.	D H. Prose/ Poetry	27.2×14.6 50.13.36	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	31.1×12.5 347.10.43	C	Good	
P.	D; H, Poetry	35.6×21.3 167.16.47	C	Good 1962 V. S.	Copied by Pandita Sita Ram Sastri.
P.	D;Skt. Poetry	34.9×16.3 55.13.50	C	Good 1990 V. S.	Copied by Rośanalal, Jain It, also called caturviṁśatipurāna.
P.	D; K. Poetry	33.5×17.2 105.10.44	C	Good 1932	
P.	D; H, Poetry	25.5×11,00 224.15,44	Inc	Good	Ninty three pages are missing
P.	D; H. Poetry	22.8×18.1 4.17.20	C	Good	
P.	D;Skt.H Poetry	21.2×16.9 15.17.20	C	Good	
	D; H. Poetry	22.8+18.1 2.17.19	C	Good	

1	2	3	4	5
106	Nga/1/6/2	Ravivrata Kathā	Bhānukriti	—
107	Jha/109	Rājāvali Kathā	Devacandra	—
108	Ga/168	Rāmapamāropama Purāṇa		—
109	Kha/257	Rāma Purāṇa	Somasena	—
110	Jha/35/7	Rohiṇí Kathā	Hemarāja	—
111	Kha/185/2	Roṭatíjavrata Kathā	Jainendra Kishora	—
112	Ga/72	Roṭatíjavrata Kathā	Jainendra Kishora	—
113	Jha/104	Rṣabha Purāṇa	Sakalakírti	—
114	Ga/98/1	Samyaktva Kaumudí	Jodharāja Godíkā	—
115	Ga/98/2	Samyaktva Kaumudí	,,	—
116	Ga/130	Samyaktva Kaumudí	,,	—
117	Ga8/39/	Samyaktava Kaumudí	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.2×13.8 3.16.18	C	Good	
P.	D;K. Prose	34.6×16.5 298.10.50	C	Good	
P	D;H. Poetry	26.2×14.2 40.11.34	C	Good	
P	D;Skt. Poetry	32.7×17.9 246.11.48	C	Good 1986 V. S.	It is also called padma-purāṇa.
P.	D;H. poetry	16.1×16.1 9.13.19	C	Good	
P.	D;H. Poetry	23.0×14 0 17.6.38	C	Good 1950 V. S.	
P.	D;H. Poetry	23.2×14 1 10 8 21	C	Good	
P.	D,Skt. Poetry	30.5×14.3 167.13.43	C	Old	It is also called Ṛṣabha-deva caritra. unPublished
P.	D;H. Poetry	28.3×13.9 69.11.32	C	Good.	
P.	D;H. Poetry	28.1×16.3 93.10.33	C	Good 1913 V. S.	Slokas 1700.
P.	D;Skt. Poetry	30 1×14.8 32.13.24	Inc	Good	
P	D;H. Poetry	38.2×20.8 35.14.53	C	Good 1970 V. S.	Copied by Bheliārā.

1	2	3	4	5
118	Ga/136/1	Samyaktva-Kaumudí	Jodharāja Godíkā	—
119	Nga/5/3	Saṅkaṭa caturthí Kathā	Devendrabhūṣaṇa	—
120	Nga/1/2/4	Saṅkaṭa catuthí Kathā	Devendrabhūṣana	—
121	Ga/161	Saptavyasana caritra	Bhārāmalla	—
122	Jha/95/1	Saptavyasana Kathā	Somakírti	—
123	Jha/95/2	Saptavyasana Kathā	Somakírti	—
124	Jha/96	Śayyādāna Vaṅka Cūlí Kathā		—
125	Kha/66	Śāntināthā Purāṇa	Sakalakīti	—
126	Ga/45	Śāntināthā Purāṇa	Sevārāma	—
127	Ga/43	Śāntināthā Purāṇa	Sevārāma	—
128	Ga/41/3	Śílakathā	Bhārāmalla	—
129	Ga/101/2	Śílakathā	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	29.8×18.8 46.16.34	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.1×17.3 4.11.26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.8×13.5 5.10.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.2×18.5 95.13.45	C	Good 1977 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	29.8×13.5 163.10 20	C	Good 1829 V. S.	
P.	D; H. Poetry	38.3×25.5 163.26 20	C	Good 1626 V. S.	
P.	D; Skt Poetry	20.2.×11.3 5.18.61	C	Good	5672 Ślokas; Published. Copied by Guljāri Lāla Sharmā
P.	D;Skt. Poetry	30.0×19.0 172.12.47	C	Old 1621 V. S.	
P	D; H. Poetry	32.5×18.6 189.17.36	C	Old	Damaged.
P	D; H. Poetry	31.6×16.5 247.12.42	C	Good. 1943 V. S.	
P.	D; H. Poetry	27.6×16.7 24.14.36	Inc	Good	24, 25 and Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	33.1×18.5 27.12.41	C	Old	

1	2	3	4	5
130	Ga/99/2	Śílakathā	Bhārāmalla	—
131	Ga/101/1	Śílakathā	”	—
132	Ga/138/2	Śílakathā	”	—
133	Ga/91	Śrenikacaritra	Śubhacandra	—
134	Jha/125	Śreṇikacaritra	Śubhacandra	—
135	Jha/128	Śrenikacaritra	Jayamitra	—
136	Kha/96	Śreṇikacaritra	Jayamitra	—
137	Ga/82	Śrenikapurāṇa	Vijayakírti	—
138	Ga/150	Srípālacaritra	—	—
139	Kha/88	Śrípālacaritra	Brahmanemidatta D/o Bhaṭṭāraka Mallibhūṣaṇa.	—
140	Ga/16/1	Śrípālacaritra	—	—
141	Ga/16,	Śrípālacaritra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	33.1×16.8 31.11.33	C	Good 1905 V. S.	
P.	D; H. Poetry	33.1×14.1 39.10.36	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.2×16.1 49.10.24	C	Old	
P.	D; H. Poetry	35.3×20.3 93.16.57	C	Good 1962 V. S.	Copied by Pt. Sitārāma.
P.	D; Skt. Poetry	35.1×16.3 64.13.48	C	Good 1993 V. S.	
P.	D;Apb, Poetry	35.6×16.5 35.13.51	C	Good 1993 V. S.	This another title of Vardhamānakāvya. unpublished. Copied by Rośanalāla Jain.
P.	D;Apb. Poetry	25.8×11.5 75.13.37	C	Old	Unpublished.
P.	D; H. Poetry	28.8×16.7 116.11.32	C	Good 1929 V. S	
P.	D; H. Poetry	30.5×14.3 175.9.28	C	Good 1895 V. S.	Hariprasad seems to be copier. Author's name is not mantioned.
P.	D;Skt. Poetry	35.2×15.3 51.11.57	C	Old 1837 V. S.	Unpublished.
P.	D; H. Poetry	30.1×14.8 154.10.35	Inc.	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	34.5×16.7 112.12.42	C	Old 1891 V. S.	First and Third pages are missing.

1	2	3	4	5
142	Kha/252	Śrīpurāṇa	Hastimalla	—
143	Kha/150/1	Śruta-Pañcamī-Vrata Kathā [Bhaviṣyadatta Caritra]	Padmasundara	—
144/1	Kha/127/1	Sudarśana Caritra	Sakalakīrti	—
144/2	Kha/73/2	Sudarśana Seṭha Kathā		—
145	Nga/1,2/5	Sugandhadaśamī Kathā	Jñānasāgara	—
146	Jha/87	Sukośala Caritra	Raidhū	—
147	Kha/6	Uttara Purāna	Guṇabhadrācārya	—
148	Ga/11	Uttara Purāṇa		—
149	Kha/157/1	Vardhamāṇa Caritra	Sakalakīrti	—
150	Ga/46	Vardhamâna Purāṇa	Khuśācanda	—
151	Ga/57	Viṣṇu kumāra Kathā	Vinodī Lāla	—
152	Kha/77	Vratakathā Kośa	Śrutásāgara	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt. Poetry	33.5×20.7 38.13.39	C	Good	Unpublished.
P.	D;Skt, Poetry	31.3×12.4 42.11.56	C	Old 1800 V. S.	Last page is damaged.
P.	D;Skt. Poetry	27.3×18.1 42.12.40	C	Old 1737 Saka-Samvita	900 Ślokas. published,.
P	D;Skt. Poetry	22.5×16.5 4.3.26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.8×13.5 6.10.18	C	Good	
P.	D;Apb. Poetry	33.7×19.5 17.16 49	C	Good 1987 V. S.	Unpublished.
P.	D;Skt. Poetry	32.5×14.6 309.12.46	C	Good 1800 V. S.	Published. contains 20,000 ślokas.
P.	D; H. Poetry	32 6×16.5 262.12.46	C	Good	First page is missing.
P.	D;Skt. Poetry	26.5×12.8 122.10.42	C	Old 1886 V. S.	Published. It is also called varddhamānapurāṇa.
P.	D; H. Poetry	33.3×17.1 92.12.45	C	Good 1884 V. S. Śaka 1749	
P.	D; H. Poetry	28.3×14.7 27.7.25	C	Good 1947 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	29.5×13.5 71.14.47	C	Good 1937 V. S.	

1	2	3	4	5
153	Kha/92	Yaśodhara caritra	Vāsavasena	—
154	Jha/93	Yaśodhara caritra	,,	—
155	Kha/82	Yaśodhara caritra	Vādirājasūri	—
156	Kha/133	Adhyātma kalpa druma	Muni Sundarsūri	—
157	Ga/86	Adhyātma Bārakharī	—	—
158	Ga/163	Anyamatasāra	Vericandra	—
159	Jha/6	Arthaprakāśikā Tīkā	—	—
160	Ga/49/1	Aṣṭapāhuda Vacanikā	Kundakanda	Jayacanda
161	Ga/49/1	,, ,,	,,	,,
162	Kha/101	Ācārasāra	Vīranandi	—
163	Nga/2/23	Ālāpapaddhati	Devasena	—
164	Kha/173/4	Ālāpapaddhati	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt. Poetry	27.4×12.5 44.9.14	C	Old 1732 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	26.6×11.3 28.12.48	Inc	Old 1501 V, S.	Page No. 4 and 5 are missing.
P.	D;Skt. Poetry	29.7×15.4 23.10.38	C	Good 2440 Vīra S.	Uppublished.
P.	D;Skt, Poetry	26.3×11.2 24.11.53	C	Old 1800 V. S.	Published.
P.	D; H Poetry	24.1×17.2 42 21.19	C	Old	First two pages are missing.
P.	D; H, Poetry/ Prose	28.3×11.1 67.6.43	C	Old 1936 V. S.	
P.	D; H. Poetry	29.1×20 4 51.14.35	Inc.	Good	It is commentary on Tattvārthasūtra. Last pages are missing.
P.	D; H, Prose	34 8×21.3 194.13.38	C	Good	
P.	D; H. Poetry	35.7×21.3 156.14.44	C	Good 1946 V. S.	Copied by Gan śarāma.
P.	D;Skt, Poetry	20.8×11.2 72.10.38	C	Old 1932 Śaka Sm	
P.	D;Skt. Prose	19.4×15.5 18.13.15	C	Good	Published.
P.	D;Skt, Prose	27 2×17.5 8.13.35	C	Old 1949 V. S.	It is also called Nayacakra.

1	2	3	4	5
165	Nga/2/31	Ārādhanāsāra mūla	Devasena	—
166	Ga/151/1	Ārādhanāsāra	Pann ilala	—
167	Kha/275	Ārādhanāsāra	Ravicandra	—
168	Kha/177/12	Āṣāḍha Bhūti caupāi	Āṣādha Bhūti Muni	--
169	Ga/86/2	Ātmabodha-Nāmamālā	—	—
170	Jha/113	Ātmatattva-Parikṣana	Devarājarāja	—
171	Jha/112	Ātmānusār	--	-
172	Kha/14?/2	Ātmānuśāsana	Guṇabhadra D o Jinasena	—
173	Kha/105/3	Ātmānuśāsana	Gunabhadra	—
174	Ga/145/2	Ātmānuśāsan ṭīkā	Gunabhadra	—
175	Kha/165/7	Āvśyakavidhi Sūtra	—	—
176	Ga/108	Banārasī-Vilāsa	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt. Poetry	19.4×15.5 13.13.16	C	Good	Published.
P.	D;Pkt/H. Prose/ Poetry	32.3×12.5 45.7.35	C	Good 1931 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	20.4×17.4 46.12.23	C	Good 1944 A. D.	Contains 247 Slokas. Copied by N. Chandra Rajendra.
P.	D; H. Poetry	24.6×11.1 12.13.36	C	Old 1767 V. S.	
P	D; H. Poetry	24.1×17.2 32.21.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	35.2×16.5 14.8.32	C	Good	
P.	D;Skt. Poetry	35.2×16 2 2.8.34	C	Good	
P.	D;Skt. poetry	31.8×14.1 33.9.44	C	Old 1940 V. S.	Published.
P.	D,Skt. Poetry	29.5×15.5 20.9.52	C	Good	
P.	D;Skt/H. Prose/ Poetry	28.5×14.7 156.10 36	C	Old 1858 V. S.	
P.	D;Pkt. Poetry	25.8×10.8 7.7.59	C	Old 1642 V. S.	
P.	D; H. P· try	23.9×15.8 109.19.20	Inc	Old	Opeming and closing pages are missing.

1	2	3	4	5
177	Ga/1	Bhagavai Ārādhanā	Śivācārya (Śivakoṭi)	Sadāsukha dasa
178	Ga/111/1	Bāisa Pariṣaha	—	—
179	Kha/215	Bhavyakaṇṭhābharaṇa pañjiká	Arhaddāsa	—
180	Kha/216	Bhavyānanda Śāstra	Pāndeya Bhūpati	—
181	Kha/199	Bhāvasaṁgraha	Śrutamuni	—
182	Kha/124	Bhāvasaṁgraha	Vāmadeva	—
183	Kha/189	Bhāvanāsara Saṁgraha	Cāmunda Rāya	—
184	Kha/136/1	Brahmacaryāṣṭaka	Padmanandi	—
185	Ga/6	Brahma-Vilāsa	Bhagawati-Dasa	—
186	Ga/95	,,	,,	—
187	Ga/110/3	Bramhā Brama-Nirūpaṇa	—	—
188	Ga/169	Buddhi-Prakāśa	Dipacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt/H. Prose/ Poetry	35.5×18.1 410.13.54	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.7×16.6 08.11.28	C	Old 1749 V. S.	
P.	D,Skt. Poetry	16.9×15.3 23.11.27	C	Good 2451 Vira S.	Copied by Nemiràja.
P.	D; Skt. Poetry	16.3×15.2 12.11.30	C	Good 2451 Vira S.	Copied by Nemiràja and Sketched of Bahubali on first page.
P.	D;Pkt. Poetry	29.8×19.6 19.9.35	C	Good	It is also called Bhāvatribhaṅgi.
P.	D,Skt. Poetry	28.4×11.5 48.8.40	C	Old 1900 V. S.	Published.
P	D; Skt Poetry	26.3.×10.6 69.10.57	C	Old 1598 V. S.	It is also called cāritrasāra.
P,	D;Skt. Prose/ Poetry	34.5×20.6 111.15.52	C	Good 1939 V. S.	Copied by Suganachanda.
P	D; H. Poetry	31.8×14.3 129.9.48	C	Good 1755 V. S.	
P	D; H. Prose	37.6×19.9 198.12.37	C	Good. 1954 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.7×16.1 16.14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	31.8×19.1 99.14.50	C	Good 1978 V. S.	Copied by Pt. Dubay Rūpanārayaṇa.

1	2	3	4	5
189	Ga/172	Buddhi-Vilâsa	Bakhatarâma	—
190	Ga/106/7	Candraśataka	—	—
191	Kha/175/1	Carcā Nâmâvalī	—	—
192	Ga/135/3	Carcâśataka Vacanikā	Dyānatarâya	—
193	Ga/48/1	,, ,,	,,	—
194	Ga/48/2	,, ,,	,,	—
195	Ga/146	Carcā Saṁgraha	—	—
196	Ga/152/1	Carcā Samâdhāna	Bhūdharadāsa	—
197	Ga/13	,, ,,	Durgâlâla	—
198	Ga/135	Carcāsāgara Vacanikā	Swarūpa	—
199	Ga/67	Caritrasāra Vacanikā	—	—
200	Ga/121	,, ,,	Cāmuṇḍarāya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.3×17.5 68.13.46	C	Old 1982 V. S.	
P.	D; H. Poetry	23.9×16.8 10.25.26	C	Old	
P.	D; H. Poetry	26.1×16.8 49.12.28	C	Old 1942 V. S.	Copied by Pt. Chobey Mathurā Prasāda.
P.	D; H. Prose	31.8×16.1 83 10.40	C	Good 1914 V. S.	Copied by Nandarāma.
P.	D; H. Prose Poetry	25.1×14.3 41.10.26	Inc.	Old	Last pages are missing.
P.	D; H, Prose Poetry	33.3×21.7 91.16.23	C	Good 1929 V. S.	
P.	D; H. Prose/ Poetry	32.8×15.8 353.12.35	C	Good 1854 V. S.	Fatecanda sanghai seems to be copier.
P.	D; H. Prose/ Poetry	27.9×12.9 80 13.37	C	Old	
P.	D; H, Poetry	27.7×16.2 133.10.32	C	Good 1959 V. S.	
P.	D; H. Prose/ Poetry	29.2×19.2 242.19.32	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.5×19.6 103.14.26	Inc.	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. Prose	30.3×15.8 212.9.36	"	Good	Last pages are missing.

1	2	3	4	5
201	Kha/177,1	Caubisa ṭhāṇā	—	—
202	Kha/210 (K)	Caubisagaṇagāthā	—	—
203	Kha/177,9	Caudasaguṇa Niyam	—	—
204	Ga/80/4	Caudaha Guṇasthāna	—	—
205	Kha/188/1	Causaraṇa Painna	—	—
206	Ga/86/3	Calagana	—	—
207	Kha/171/3	Chahadhālā	Doulatarāma	—
208	Kha/170/4	Chiyalīsa doṣa rahita ahāra Śuddhi	—	—
209	Kha/161/1	Darśanasāra	Devasena	—
210	Ga/32	Darśanasāra Vacanikā	—	—
211	Ga/164	Dasalakṣaṇa Dharma	Sumati Bhadra ?	Sadāsukadāsa
212	Kha/214	Dānaśāsana	Vāsupujya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt Poetry	30 4×15.3 18.11.39	C	Old 1725 V. S.	
P.	D;Pkt/H Prose/ Poetry	26 8×15 8 24.14.30	C	Good 1967 V. S.	Capied by Karam canda Rāmaji.
P.	D; H. Prose	26.6×11.9 1.10.35	C	Good 1810 V. S.	Only on page is available.
P.	D; H Prose	23.2×15.3 57 22.22	C	Old 1890 V. S.	
P.	D; Pkt Poetry	25 2×10 8 11.14 28	C	Old 1682 V. S.	
P	D; H Poetry	24 1×17 2 13.18.19	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 6×17 8 11 12 29	C	Good 1950 V. S.	
P.	D; H Poetry	27.3×17.6 2.12.27	C	Old	
P.	D;Pkt. Poetry	26.6×13.1 4.10.44	C	Old 1886 V. S.	Published.
P.	D; H. Prose	33.1×15.1 105.11.58	C	Good 1923 V. S.	
P.	D; H. Prose	22.8×15.1 42.12.30	C	Good 1978 V. S	
P.	D; Skt. Poetry	34.8×14.5 59.10.55	C	Good	

1	2	3	4	5
213	Nga/2/21	Dravyasamgraha	Nemicandra	—
214	Kha/173/1	,,	,,	—
215/1	Nga/6/19	,,	,,	—
215/2	Kha/73/1	,,	,,	—
216	Ga/111/5	,,	,,	—
217	Ga/111/3	,,	,,	—
18	Ga/79/2	,,	,,	Dyanāta Rāya
219	Ga/134/7	,,	,,	Bhagavatī Dāsa
220	Jha/50	,,	,,	,,
221	Jha/30	,,	,,	Bhagavatī āsa
222	Jha/25/1	,,	,,	Dyānata rāya
223	Kha/165/2	Dravyasamgraha saṭika	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt. Poetry	19.4×5.5 6.13.15	C	Good	
P.	D;Pkt, Poetry	27.2×17.6 6.8.42	C	Old 1948 V. S.	Published. copied by Munindra Kīrti.
P.	D;Pkt. Poetry	22.8×18.1 6.13.16	C	Old 1273 Sana	
P.	D;Pkt. Poetry	16.7×12.8 12.10.13	C	Good	published.
P.	D; H. Poetry	21.2×15.8 10.15.18	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D;Pkt/H Poetry	21.3×16 7 18.16.15	C	Old	
P.	D;Pkt./H. Prose/ Poetry	25.3×16.2 30.11.27	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; H. Poetry	30.3×16.3 10.14.40	C	Good 1731 V. S.	
P.	P;Pkt./H. Poetry	21.2×16,7 15.15.20	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.2×10.8 33.7.23	C	Good 1731 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22.9×15.4 9.23.19	C	Good	
P.	D;Pkt/ Skt. Prose	24.8×11.3 24.10.30		Old 1721 V. S.	Unpublished.

1	2	3	4	5
224	Ga/65	Dravyasaṁgraha Vacanikā	Nemicandra	Jayacanda
225	Kha/125	Dharma Parīkṣā	Amitagati D/o Mādhavasena	—
226	Kha/102	,,	Amitagati	—
227	Ga/24	,,	Manoharadása	—
228	Ga/25	,,	,,	—
229	Ga/71	,,	,,	—
230	Jha/65	Dharma Ratnākara	Jayasena	—
231	Kha/157	,,	,,	—
232	Ga/113	Dharm Ratnodhyota	Jagamohandāsa	—
233	Ga/100	,,	,,	—
234	Ga/159	Dharmrasāyana	Padmanandi Muni	Devídāsa
235	Kha/45	,,	,, ,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry Prose	28.1×20.5 39.14.33	C	Good	First page is missing.
P.	D;Skt. Poetry	27.2×13.4 110.9.34	C	Old 1681 V. S.	Published.
P.	D;Skt. Poetry	25.8×11.4 72.11.41	C	Old 1776 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	33.6×14.6 174.8.36	C	Good	Contains 3300 chandās.
P.	D; H. Poetry	30.5×15.1 130.12.28	C	Old	Copied by Dharmadāsa.
P.	D; H, Poetry	23.4×12.6 242.9.20	C	Good 1860 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	33.7×20.8 80.12.43	C	Good 1985 V. S.	Published.
P.	D;Skt, Poetry	26.4×12.5 144.9.46	C	Old 1910 V. S.	Published. From page 69th to 84rth are missing.
P.	D; H. Poetry	28.3×14.3 232.9.21		Good 1945 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	27.5×16.3 164.12.21	C	Good 1948 V. S.	Published, Copied by Nīlakaṇṭhadāsa.
P.	D;Pkt/H. Poetry	33.1×16.5 19.14.42	C	Good	Published.
P.	D;Pkt/H. Poetry	30.6×16.5 18.5.45		Old	

1	2	3	4	5
236	Ga/153	Dharma Vilāsa	Dyānatarāya	—
237	Ga/14	,,	,,	—
238	Ga/112/1	,,	,,	—
239	Kha/188/3	Dharmopadeśa Kāvya Tīkā	Lakṣmīvallabha	—
240	Jha/40/1	Dhālagaṇa	—	—
241	Jha/35/6	,,	—	—
242	Kha/19/2	Gommaṭasāra (Jīvakāṇḍa)	Nemicandra D/o Abhayanandi	—
243	Kha/274	Gommaṭasāra-Vṛtti (Jīvakāṇḍa)	Nemicandra	—
244	Ga/128/1	Gommatasāra (Jīvakānda)	Toḍaramala	—
245	Ga/128/2	Gommaṭasāra (Karmakāṅd)	Nemicanda	—
246	Nga/2/22	,,	,,	—
247	Kha/173/2	,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	27.8×13.1 249 11.36	C	Good	
P.	D; H. Poetry	33.1×19 3 166.14.48	C	Good 1941 V. S.	
P.	D; H. Poetry	21.9×15.5 165.18.17	C	Good	
P.	D;Skt. Prose	24.3×10 6 28.17.71	C	Old	With svopajña vṛtti.
P.	D; H. Poetry	15.4×11.9 14.10 20	C	Good	It is collected in a Gutakā.
P.	D; H. Poetry	16.1×16 1 10.14 20	C	Good	
P.	D;Pkt. Poetry	34×16 8 48.14 65	C	Old	Published.
P.	D;Skt./ Pkt. Prose/ poetry	34.5×12.9 218.12.60	C	Good	Published.
P.	D; H. Prose	46.5×22.5 635.16.72	C	Good 1848 V. S.	
P.	D;Pkt. Poetry	32.2×18.9 14.7.35	C	Good	
P.	D;Pkt. Poetry	19.4×15.5 22.13.16	Inc	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	27.2×17.5 9.11.38	Inc	Old	Last pages are missing.

1	2	3	4	5
248	Jha/3	Gommaṭasāra (Karmakāṇḍa)	Nemicandra	Hemarāja
249	Kha/134/4	,,	,,	,,
250	Kha/192	Gotrapravara nirṇaya	—	—
251	Ga/106/5	Guṇasthāna carcā	—	—
252	Ga/174	Guropadeśa Śrāvakācāra	Dalūrāma	—
253	Ga/34	Guru Śiṣya Bodha	—	—
254	Kha/227/1	Hitopadeśa	—	—
255	Jha/90	Indranandisaṅhitā	Indranandi	—
256	Ga/93/4	Iṣṭopadeśa	Pūjyapāda	Dharma-dāsa
257	Ga/151/3	Jala Gālani	Megha kīrti	—
258	Jha/97	Jambūdvipa-prajnapti Vyākhyāna	Padmanandi	—
259	Kha/259	Jainācāra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt/H. Prose/ Poetry	31.2×15.7 41.15.48	Inc	Good 1888 V. S.	
P.	D; H. Prose	31.9×16.6 60.12.40	C	Cood 1845 V. S.	
P.	D;Skt. Prose	34.1×21.5 4.21.29	C	Good	Written on register size paper.
P.	D; H. Prose	23.9×16.8 36 25. 26	C	Old 1736 V. S.	
P.	D; H. Poetry	32.4×17.5 183.12.40	C	Good 1982 V. S.	Copied by Pt. Bacculāl Coubay.
P.	D; H. Prose	27.1×16.6 130.8 23	Inc'	Old	129 Page is missing.
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 4.11.56	C	Good 1987 V. S.	Copied by Batuka Prasāda.
P,	D;Pkt. Poetry	35.2×21.6 23.11.52	C	Good 1987	
P	D; H. Prose/ Poetry	27 7×17 1 4.11 32	Inc	Good	
P	D; H. Poetry	26.2×12.2 3.13.29	C	Old	Meghakirti seems to be Auther and copier.
P.	D;Skt. Prose	35.3×16.4 21.11.52	C	Good 1979 V. S.	Copied by Baṭuka Prasad.
P.	D; H. Poetry	21.2×16.8 109.12.32	C	Good	

1	2	3	4	5
260	Kha/225	Jinasaṁhitā	Eakasandhi Bhaṭṭāraka	—
261	Kha/127/2	Jīvasamāsa	—	—
262	Ga/127	Jnānasūryodaya Nāṭaka	Vādicandra Sūri	Bhāga-canda
263	Ga/52	Jñānasūryodaya Nāṭaka Vacanikā	,,	,,
264	Ga/78	Jñāna Sūryodaya Nāṭaka Vacanikā	,,	,,
265	Ga/87	,, ,,	,,	,,
266	Kha/164	Jñānārṇava	Śubhacandra	—
267	Kha/71	,,	,,	—
268	Ga/58/2	,,	,	—
269	Ga/58/1	,,	Vimalagaṇi	—
270	Kha/163/3-4	Jñānārṇava Tikā (Tatvatraya Prākaśinī)	—	—
271	Kha/276	Karma Prakṛti	Abhayacandra Siddhānta Cakravartī	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	35.8×21.3 44 13.54	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24.4×15.2 2.10.32	Inc	Old	Only last two pages are available
P.	D;Skt /H. Prose/ Poetry	27.4×12 8 62.10 38	C	Good 1961 V. S.	Copied by Sitārama Śāstri
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	32.7×21 8 49.15 38	C	Good 1945 V. S	
P.	P; H. Poetry	21.2×11 3 109 8 29	C	Good 1869 V. S	
P.	D; H, Poetry	43.5×26 8 56 24 34	C	Good 1946 V. S.	
P.	D; Skt Poetry	27.1×11 4 105.11 38	C	Old 1521 V. S.	Published
P.	D; Skt. Poetry	30.0×16.5 85 14 43	C	Old 1780 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Poetry	32.2×16 3 245.14.42	C	Old 1870 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	29.5×13.4 111 10.40	C	Good 1869 V. S. Sakes 1734	Copied by Shivalala.
P.	D; Skt. Prose	25.4×11.6 10.10.36	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	20.4×17.4 42.12.29	C	Good 1944 A. D.	Copied by N. Chandra Rajendra.

1	2	3	4	5
272	Kha/109	Karmprakṛti grantha	Nemicandrācārya	—
273	Jha/43	Karmavipāka	—	—
274	Jha/58	Kaṣāyajaya Bhāvanā	Kanakakīrti	—
275	Kha/139	Kārtikeyānuprekṣā Satika	Swāmi Kārtikeya	Subhacandra
276	Kha/142	,, ,,	,, ,,	,,
276	Kha/85	,, ,,	,, ,,	—
277	Ga/17	Kārtikeyānuprekṣā Vacanikā	Jayacandra	—
278	Kha/163/1	Kriyākalāpa-tikā	Prabhācandra	—
279	Ga/56	Kriyākalāpa Bhāṣā	—	—
280	Jha/7 Kha	Laghu Tattvārtha	—	—
281	Nga/7 Ga/11	,, ,,	—	—
282	Ga/157/9	Loka Varṇana	—	—

1	2	3	4	5
295	Kha/211	Navaratna Parīkṣā	Buddha-Bhaṭṭa	—
296	Ga/119	Nayacakra Satika	Hemarāja	—
297	Kha/201	Nītisāra (Samaya Bhūṣaṇa)	Indranandi	—
298	Kha/105/1	Nītisāra	,,	—
299	Kha/34	Nyāyakumuda candrodaya	Prabhācandra	—
300	Kha/21	Padmanandi Pañcaviṁśatikā	Padmanandi	—
301	Kha/30	,,	,,	—
302	Kha/160/3	Pañcamithyātva Varṇana	—	—
303	Ga/70	Pañcāsitakāya Bhāṣā	—	—
304	Jha/18	,,	Kundakunda	Hemarāja
305	Kha/265	Pañca Saṁgraha	—	—
306	Jha/119	Paramārthopadeśa	Jñānabhūṣaṇa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt./ Skt Poetry	32.2×20.6 70.13.43	C	Good	Copied by Muni Sarvanandi.
P.	D;Pkt,/H. Poetry	23.8×16.3 26.16.17	C	Old 1887 V. S.	
P.	D; H. Poetry	33.4×13.8 88.8.39	C	Good 1935 V. S	It is writen on thin paper.
P.	D; H. Poetry	22.3×13.8 260.20.24	C	Old 1871 V. S.	
P.	D; H. Poetry	25.5×16.4 335.14.14	C	Old	Totel No. of chhanda's 1353.
P.	D; H Prose	35.2×20.6 172.15.48	C	Good	
P.	D; H. Prose	34.5×17.8 239.12.36	C	Good	
P.	D; H. Prose	30.9×16.8 9.13.43	C	Good 1944 V. S.	Siyārām seems to be copier.
P.	D;Skt./H. Poetry/ Prose	19.9×15.4 27.12.16	C	Old 1918 V. S.	First two pages are missing.
P.	D; Pkt. Poetry	20.7×16.7 108.11.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.7×21.2 61.19.66	C	Old	published.
P.	D; Skt. Poetry	31.6×14.3 156.12.39	C	Old 1874 V. S.	Published. copied by Dayachandra.

1	2	3	4	5
283	Kha/251	Lokavibhāga	—	—
284	Kha/70/1	Maraṇa Kaṇḍikā	—	Samanlal
285	Ga/23	Mithyātvakhaṇḍan	—	—
286	Ga/75	„	—	—
287	Ga/42	„ Nāṭaka	—	—
288	Ga/5	Mokṣmārga Prakāśaka	Todaramala	—
289	Ga/142	„	„	—
290	Ga/134/6	Mṛtyu Mahotsava Vacanikā	—	—
291	Ga/157/4	„	—	—
292	Kha/254	Mūlācāra	Kundakundācārya ?	—
293	Kha/135/2	Mūlācāra Pradīpa	Sakalakīrti Bhaṭṭāraka	—
294	Kha/143/1	„	„	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt. oetry	27 7×15.2 10.12.34	C	Old 1669 V S.	
P.	D; Pkt. Poetry	26.2×13.1 50.6 27	C	Good 1966 V S	
P.	D; Skt Poetry	21.1×17 3 ?.7.21	C	Good 1926 A. D.	Published in Jaina Siddhanta Bhaskara, Arrah.
P.	D; Pkt / Skt. Poetry	31.8×15 0 200.13.46	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	32.7×16 2 228.13.43	C	Good 1858 V. S.	Published. Copied by Khemchandra.
P.	D; Pkt. Skt. Poetry	25.5×16 4 56.12 42	C	Good 1890 V. S	Published.
P.	D; H. Poetry	35 1×17 8 189.10.33	C	Good 1914 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	26.9×11 8 102.13.52	C	Old 1570 V. S	
P.	D; H. Poetry	29.6×13.8 109.12.34	C	Good 1940 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	28.3×14 2 2 9.27	C	Good	It is also named Arhatpravacana.
P.	D; Skt. Prose	21.1×13.3 2.18.12	C	Good	It is also named Arhatpravacana.
P.	D;Pkt./H. Prose/ Poetry	16.6×11.1 22.7.13	Inc	Good	Last pages are missing.

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt. oetry	27.7×15.2 10.12.34	C	Old 1669 V. S.	
P.	D; Pkt. Poetry	26.2×13.1 50.6.27	C	Good 1966 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×17.3 9.7.21	C	Good 1926 A. D.	Published in Jaina Siddhanta Bhaskara, Arah.
P.	D; Pkt / Skt. Poetry	31.8×15.0 200.13.46	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	32.7×16 2 228.13.43	C	Good 1858 V. S.	Published. Copied by Khemchandra.
P.	D; Pkt. Skt. Poetry	25 5×16 4 56.12 42	C	Good 1890 V. S	Published.
P.	D; H. Poetry	35.1×17 8 189.10.33	C	Good 1914 V. S	
P.	D; Skt. Prose	26.9×11 8 102.13 52	C	Old 1570 V. S	
P.	D; H. Poetry	29.6×13.8 109.12.34	C	Good 1940 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	28.3×14 2 2 9.27	C	Good	It is also named Arhatpravacana.
P.	D; Skt. Prose	21.1×13.3 2.18.12	C	Good	It is also named Arhatpravacana.
P.	D;Pkt./H. Prose/ Poetry	16.6×11.1 22.7.13	Inc	Good	Last pages are missing.

1	2	3	4	5
283	Kha/251	Lokavibhāga	—	—
284	Kha/70/1	Maraṇa Kaṇḍikā	—	Samanlal
285	Ga/23	Mithyātvakhaṇḍan	—	—
286	Ga/75	,,	—	—
287	Ga/42	,, Nāṭaka	—	—
288	Ga/5	Mokṣmārga Prakāṣaka	Todaramala	—
289	Ga/142	,,	,,	—
290	Ga/134/6	Mṛtyu Mahotsava Vacanikā	—	—
291	Ga/157/4	,,	—	—
292	Kha/254	Mūlācāra	Kundakundācārya ?	—
293	Kha/135/2	Mūlācāra Pradīpa	Sakalakīrti Baṭṭāraka	—
294	Kha/143/1	,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt./ Skt Poetry	32.2×20.6 70.13.43	C	Good	Copied by Muni Sarvanandi.
P.	D;Pkt,/H. Poetry	23.8×16.3 26.16.17	C	Old 1887 V. S.	
P.	D; H. Poetry	33.4×13.8 88.8.39	C	Good 1935 V. S	It is writen on thin paper.
P.	D; H. Poetry	22.3×13.8 260.20.24	C	Old 1871 V. S.	
P.	D; H. Poetry	25.5×16.4 335.14.14	C	Old	Totel No. of chhanda's 1353.
P.	D; H Prose	35.2×20.6 172.15.48	C	Good	
P.	D; H. Prose	34.5×17.8 239.12.36	C	Good	
P.	D; H. Prose	30.9×16.8 9.13.43	C	Good 1944 V. S.	Siyārām seems to be copier.
P.	D;Skt./H. Poetry/ Prose	19.9×15.4 27.12.16	C	Old 1918 V. S.	First two pages are missing.
P.	D; Pkt. Poetry	20.7×16.7 108.11.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.7×21.2 61.19.66	C	Old	published.
P.	D; Skt. Poetry	31.6×14.3 156.12.39	C	Old 1874 V. S.	Published. copied by Dayachandra.

1	2	3	4	5
295	Kha/211	Navaratna Parikṣā	Buddha-Bhaṭṭa	—
296	Ga/119	Nayacakra Saṭikā	Hemarāja	—
297	Kha/201	Nitisāra (Samaya Bhūṣana)	Indranandi	—
298	Kha/105/1	Nitisāra	,,	—
299	Kha/34	Nyāyakumuda candrodaya	Prabhācandra	—
300	Kha/21	Padmanandi Pañcaviṁśatikā	Padmanandi	—
301	Kha/30	,,	,,	—
302	Kha/160/3	Pañcamithyātva Varnana	—	—
303	Ga/70	Pañcāsitakāya Bhāṣā	—	—
304	Jha/18	,,	Kundakunda	Hemarāja
305	Kha/265	Pañca Saṁgraha	—	—
306	Jha/119	Paramārthopadeśa	Jñānabhūṣana	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry Prose	21.1×11.5 25.8.31	C	Recent 1925 V. S.	
P.	D; H. Prose	25.6×13.4 18.9.43	C	Good 1956 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	29.8×19.4 9.7.36	C	Good	Published. Samaya Bhūṣaṇa is written as title of this work in last line.
P.	D; Skt. Poetry	29.5×15.5 6.9.40	C	Good	Published.
P.	D; Skt Prose	32.2×20.1 333.16.54	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 ×16.5 59.10.60	C	Old	
P.	D;Skt. Poetry	24. ×12.5 198.5.30	C	Old 1839 V. S.	First page rottan.
P.	D;Skt, Poetry	28.0×11.9 14.11.40	C	Good 1803 V. S.	Unpublished.
P.	D; H. Prose	27.1×11.8 225.9.36	Inc	Old	First two and closing pages missing.
P.	D;Pkt/H. Poetry/ Prose	24.1×15.1 88.18.17	Inc	Old	Total pages are damaged.
P.	D; Pkt. Poetry	35.5×17.4 73.12.47	C	Good 1527 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	35.3×16.4 8.13.53		Good 1992 V. S.	Unpublished.

1	2	3	4	5
307	Kha/170/3	Paramātma Prakāśa	Yogīndradeva	—
308	Ga/29	Paramātma Prakāśa Vacanikā	Doulata Rāma	—
309	Ga/81	,, ,,	—	—
310	Jha/57	Parasamaya-grantha	—	—
311	Ga/175	Praśnamālā bhāṣā	—	—
312	Kha/227/2	Prabodhasāra	Yaśah kīrti	Brahma-deva
313	Kha/67	Praśnottaropāsakācāra	Bhaṭṭāraka Sakalakīrti	—
314	Kha/158	,,	,,	—
315	Ga/31	Praśnottara Śrāvakācāra	Bulākīdāsa	—
316	Kha/165/6	Pratikramaṇa Sūtra	—	—
317	Kha/246	Pravacana Parīkṣā	Nemicandra	—
318	Kha/279	Pravacana-Praveśa	Bhaṭṭākalaṅka	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Apb. Poetry	29.4×16.5 30.14.49	C	Old 1829 V. S.	Published.
P.	D; H. Prose	31.5×16.3 224 11.37	C	Good 1861 V. S.	
P.	D; H. Prose	27.9×16.3 47 9.25	C	Good	
P.	D;Skt Poetry	21.1×16 9 20 12.17	C	Good	
P.	D; H. Prose	32 5×17.6 34 12.38	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	35.2×16.3 2.11.60	C	Good	Published
P.	D; Skt. Poetry	30.2×19 5 108.12.47	C	Good 1875 V. S.	Published. 3300 Ślokas, copied by Guljārilāla.
P.	D; Skt. poetry	28.3×11.8 155 10.38	Inc	Old	Published. Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	32.1×16.3 77.13 56	C	Good 1821 V. S.	
P.	D;Pkt. Prose/ Poetry	26.7×11.4 4.11 43	C	Old	
P.	D;Skt. Prose/ Poetry	—	—	—	—
P.	D; Skt. Poetry	20.9×11.4 8.8.27	C	Good 1925 A. D.	Copied by Nemi Raja.

1	2	3	4	5
319	Kha/152	Pravacanasāra Vṛtti	Kundakunda	Amṛtaca-ndra Sūri
320	Ga/35	Pravacana-Sāra	„	Vṛndāvana
321	Kha/285	Prāyaṣcitta	Akalanka	—
322	Ga/134 Ka/7	Puṇya Paccisi	Bhagavatidāsa	—
323	Ga/73	Puruṣārtha-Siddhupāya	Amṛtacandra	Todara-mala
324	Ga/54	„ „	„	„
325	Kha/141/3	Ratnakaraṇḍa-Śrāvakā-cāra Mūla	Samantabhadra	—
326	Ga/89	Ratna-karaṅda Śrāvakācāra Vcanikā	„	—
327	Ga/50	„ „	„	Camparā-ma Sahāya
328	Kha/59	Ratnakaraṅda Viṣamapada	Samantabhadrācārya	—
329	Nga/2/36	Ratnamālā	Śivakoti	—
330	Kha/200/1	„	„	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	28.2×14.1 116.11.45	C	Old 1705 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	28 8×18.3 171·12.29	C	Good 1966 V. S.	Pu hed.
P.	D; Skt. Poetry	22.2×17.1 19.7.25	C	Good 1976 V. S.	Copied by Pt. Mūlacandra It is also called Śravakācāra, published,
P.	D; H. Poetry	30 3×16 3 4 14 45	C	Good 1733 V. S.	
P.	D; H. Prose	23.6×12.9 181.9 24	C	Good 1927 V. S.	
P.	D; H, Poetry	28.1×16.2 200.9.26	C	Good 1947 V. S.	Copied by Haracanda Rāya
P.	D; Skt. Poetry	33.4×15.6 8.10.46	C	Old	Publish .
P.	D; H. Prose/ Poetry	34.5×25.3 325 17.42	C	Old 1929 V. S.	
P.	D; H. Prose/ Poetry	33.1×20.2 128.16.45	C	Good 1951 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	35.5×15.1 15.11.41	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 7.13.16	C	Good	Published. by MD. G. Series, Bombay
P.	D; Skt. Poetry	29.8×19.4 6.8.37	C	Good	Published. by MDG. Series No. 21, Bombay

1	2	3	4	5
331	Kha/43	Rājavārtika	Akalaṅka	—
332	Ga/106/6	Rūpacandra-Śataka	Rūpacandra	—
333	Nga/2/37	Sadbodha-Cand odaya	Padmanandı	—
334	Jha/59	,, ,,	,,	—
335	Nga/2/38	Sajjanacitta-Vallabha	Malliṣena	—
336	Jha/17	,, ,,	,,	Haragulāla
337	Nga/2/33	Sambodha-Pañcāstikā	Gautamaswāmi	—
338	Jha/120	Sambodha pañcāsikā Satika	,,	—
339	Kha/151	Samayasāra (Ātmakhyāti Tika)	Kundakunda	Amṛtaca-ndra Sūri
340	Kha/130	,, ,,	,,	Amṛtacan-drācārya
341	Kha/28	Samayasāra Satika	,,	Amṛtaca-ndra Sūri
342	Ga/106/2	Samayasāra Nāṭaka	—	Banārasi-dāsa

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	29.3×19.8 576.13.45	C	Good	Published by B. J. Delhi.
P.	D; H. Poetry	23.9×16.8 3.25.30	C	Old'	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 7.13.14	C	Good	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	21.2×17.1 10.7.20	C	Good	Unpublished
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 6.13.15	C	Good	Published.
P.	D;Skt./H. Poetry/ Prose	24.5×17.4 25.14.30	C	Good 1953 V. S.	
P.	D; Pkt. Poetry	19.4×15.5 6.13.15	C	Good	
P.	D; Pkt. Skt. Poetry/ Prose	35.4×16.3 7.13.52	C	Good 1992 V. S.	Copied by Rośanalāla.
P.	D;Pkt./ Skt. Poetry/ Prose	29.4×13.5 165.10.52	C	Old	Published by Digambar Jain Grantha Bhandar Series, Kāśī.
P.	D; Pkt. Skt. Poetry	27.8×11.8 124.11.56	C	Old 1900 V. S.	Published.
P.	D;Pkt./ Skt. Poetry/ Prose	25.9×11.5 194.9.46	Inc	Old	Published. last pages are missing
P.	D; H. Poetry	23.9×16.8 45.26.29	C	Old 1735 V. S.	

1	2	3	4	5
343	Ga/107	Samayasāra Nāṭaka	Banārasidāsa	—
344	a /80/1	,, ,,	,,	—
345	Ga/115	,, ,,	,,	—
346	Ga/126	,, ,, Sārtha	,,	—
347	Ga/152/5	,, ,,	,,	—
348	Ga/111/4	,, ,,	,,	—
349	Ga/30/1	,, ,,	,,	—
350	Ga/149	,, ,,	,,	—
351	Ga/152/4	,, ,,	,,	—
352	Kha/35	Samyakatva Kaumudi	—	—
353	Ga/59/1	Samādhi-Maraṇa	Bakasa Rāma	—
354	Jha/2	Samādhi-Tantra	Kundakundācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	23.6×15.8 87.23.24	C	Old	
P.	D; H. Poetry	23.2×15.3 75.21.22	C	Old 1890 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22.8×13.5 122 14.20	C	Old 1745 V. S.	
P.	D Poetry	27.9×13.6 200.14.36	C	Good	
P.	D; H. Poetry	26.3×11.1 68.10.35	C	Old	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	20.4×16.5 110.11.27	C	Good 1886 A. D.	Copied by Durga Prasad.
P.	D; H. Poetry	32.5×16.2 54.12.48	C	Old 1862 V. S.	
P.	D; H. Poetry	29.1×13.8 75.11.38	C	Old 1725 V. S.	
P	D; H. Poetry	22.5×12.3 108.10.31	C	Old 1876 V. S.	Copied by Nityānand Brahman. 1st page is missing.
P.	D; Skt. Poetry	29.4×20.2 105.12.33	C	Good	
P.	D; H. Prose	28.5×12 8 15.10.48	C	Good 1862 V. S.	
P.	D;Skt/H. Prose/ Poetry	31.3×15.7 107.13.51	C	Good 1874 V. S.	Copied by Raghunātha Sharma.

1	2	3	4	5
355	Ga/53	Samâdhi-tantra Satika	—	—
356	Kha/26	Samâdhi- tantra	—	—
57	Ga/64/1	Samädhi-tantra Vacanikā	Māṇikacand	—
358	Kha/46/1	Samâdhi-Śataka	Pūjyapâda	—
359	Ga/134/2	Sammeda-Śikhara Mâhâtmya	Lālacanda	—
360	Kha/194	Saptapañcâsadaśtravikā	—	—
361	Kha/106	Satvatribhangi	—	—
362	Jha/135	Satyaśāsana Parikṣhâ	Vidyânandi	—
363	Kha/57	,, ,,	,,	—
364	Kha/161/3	Sāgâradharmâmṛita (Svopajna tika)	Âśâdhara	—
365	Nga/2/3	Sâmâyika	—	—
366	Nga/7/11 Kha/	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt.H Poetry	32.1×14.4 152.13.3		Old 1788 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	26.3×12.7 26.8.27	C	Old 1848 V. S.	
P.	D; H. Poetry Prose	32.2×12.3 31.7.40	C	Good 1938 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	25.4×10.8 14.4.42	C	Old 1814 V. S.	Published. It is also called samādhi tantra.
P.	D; H. Poetry	32.2×17.5 34.13.43	C	Good 1933 V. S.	Copied by Gulalcand. Slokas No. 1260.
P.	D; Skt, Prose/ Poetry	34 1×21.5 65.21.30	C	Good	Written on register size paper.
P.	D;Pkt. Poetry	34. ×14.4 11.12.48	C	Good	Copied by Rangnātha Bhaṭṭāraka.
P.	D;Skt, Prose	20.8×16.8 78.20.25	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Prose	34.6×14.2 29.12.53	C	Good	Published.
P.	D; Skt Poetry	25.6×12.7 154.12.40	C	Old 1900 V. S.	Published. by M. D. G. Bombay.
P.	D; Pkt. Prose/ Poetry	19.4×15.5 22.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×13.3 1.18.14	C	Good	

1	2	3	4	5
367	Nga/7/9	Sāmāyika	—	—
368	Nga/2/17	,,	—	—
369	Ga/22	,, Vacanikā	Jayacanda	—
370	Ga/76	,, ,,	,,	—
371	Kha/150/3	Śāsna Prabhāvanā	Vasunandi	—
372	Kha/53	Śāstrasāra Samuccaya	—	,,
373	Kha/110	Sidhāntāgama Praśasti	—	—
374	Kha/81	Siddhāntasāra	Jinendra ?	—
375	Kha/46/3	,,	Sakalakīrti Bhaṭṭarka	—
376	Kha/40/3	Siddhāntasāra Dīpaka	,,	—
377	Kha/280	Siddhiviniścaya Ṭīkā	Ananta-Vīrya	—
378	Kha/170/1	Ślokavārttika	Vidyanandi	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt/ H. Poetry Prose	21 1×16.2 5 16.13	C	Old	
P.	D; H. Prose	19.4×15.5 3.12.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.4×14.6 38.12.35	C	Good 1870 V. S.	
P.	D; H Poetry	21.4×11 3 94.6.23	C	Good	
P.	D;Skt. Prose	30.8×12.2 31.11.79	C	Old	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	38.2×20.6 144.14.36	Inc	Old 1968 V. S.	Last pages are missing.
P.	D; Pkt. Poetry	23.2×17 5 11.12.27	C	Good 1912 A. D.	Copied by Tātyā Nemināth Pāngal.
P.	D; Pkt. poetry	29.6×15.3 6 10.35	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32.8×17 1 148.13.44	C	Old 1830 V. S.	Unpublished.
P.	D;Skt. Poetry	31. ×20.2 103.13.48	Inc	Old	Opening and closing are missing.
P.	D;Skt. Prose/ Poetry	34.6×21.7 76.14.46	C	Good	It is first prastāwa (chap ter) only.
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	28.3×18.7 62.14.70	Inc	Good	Published, Last pages are missing.

1	2	3	4	5
379	Nga/2/2	Śrāvaka Pratikramaṇa	—	—
380	Jha/118	Śrāvakācāra	Guṇa-Bhūṣaṇa	—
381	Kha/203	,,	Pūjyapāda	—
382	Ga/28	,,	—	—
383	Ga/63	,,	—	—
384	Kha/160/5	Śrutaskandha	Brahma Hemacandra	—
385	Kha/41	Śrutasāgarī Tīkā	Śrutasāgara Sūrī	—
386	Ga/92/2	Sudṛiṣṭi Taraṅgiṇi	—	—
387	Ga/92/1	,, ,,	—	—
388	Jha/115	Sukhbodha-Tīkā	Yogadeva	—
389	Ga/47	Svaswarūpa Swānubhava Sūcaka (Sacitra)	Dharmadāsa	—
390	Ga/93/1	Svarūpa-Swānubhava Samyaka Jhāna (Sacitra)	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Pkt. Prose Poetry	19.4×15.5 17.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	33.8×16.4 8.13.55	C	Good 1992 V. S.	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	22.7×17.3 18.8.35	C	Good 1976 V. S.	
P.	D; H. Prose	29.8×13.8 219.10.37	C	Good 1888 V. S.	Copied by Pt. Shivalāl
P.	D; H. Prose Poetry	28.6×11.7 136 11.60	C	Old 1858 V. S.	
P.	D; Pkt, Poetry	27.8×12.3 8.12.44	C	Good	Published, by M.D.G. Bombay
P.	D; Skt. Prose	35.2×20. 173.15.58	C	Old	Tatvārtha Sūtra's commentary.
P.	D; H. Prose	34.2×17.8 522.13.41	C	Good 1961 V. S.	First page is missing. Page No. 301 to 329 are extra.
P.	D; H. Prose/ Poetry	35.6×21.2 94.13.36	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	35.2×16.3 69.12.44	C	Good 1992 V. S.	It is commentary of the Tatvārtha sūtra, (o' Umāswāmi) First two pages are missing.
P.	D; H. Prose	34.3×21.4 16.13.47		Old 1946 V. S.	Unpublished.
P.	D; H. Prose	33.1×18.5 14.12.39	Inc	Old 1946 V. S.	Last pages are missing.

1	2	3	4	5
391	Jha/60	Svarūpa Sambodhana	Akalanka	—
392	Kha/52	Tatvaratna Pradīpa	Dharmakīrti	—
393	Nga/2/32	Tattvasāra	Devasena	—
394	Ga/111/2	,, Bhāṣā	—	—
395	Ga/61	,, Vacanikā	Pannā Lāla	—
396	Kha/181	Tattvānuśāsana	—	—
397	Jha/7 (Ka)	Tatvārthasāra	Amṛitacandra Sūri	—
398	Jha/29	,,	,,	—
399	Kha/141/1	,,	,,	—
400	Kha/149	Tatvārtha Sūtra (with Śrutasāgari Tikā)	Umāsvāmi	Śrutasāg-ara Sūri
401	Kha/186/2	Tatvārtha Sūtra Mūla	,,	—
402	Kha/112/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	21 2×17.1 5.6.20	C	Good	
P.	D;Skt. Prose	38 1×20.3 272.13.41	C	Old 1970 V. S.	
P.	D; Pkt. Poetry	19 4×15 5 8.13.14	C	Good	Published.
P.	D; H. Poetry	20 2×16.3 9.9.23	C	Good	
P.	D; H. Prose	32.3×12 3 35.7.38	C	Good 1938 V. S	
P.	D; Skt Poetry	29 7×15 3 15.10.38	C	Good	Copied by Keśava Sharmā.
P.	D; Skt. Poetry	28 3×14 2 47.10.33	C	Good	Published by Sanātana Jaina Granthamālā, Bombay.
P.	D; Skt. Poetry	20.1×13 9 72.8.20	C	Good	Published copied by Balāmokundalāla.
P.	D; Skt. Poetry	33.6×15.3 31.10.43	C	Old 1553 V. S.	Published. 724 Ślokas.
P.	D; Skt. Prose	28.3×13.6 205.16.60	C	Old 1770 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	23.1×13.9 19.8.28	C	Old 1946 V. S.	published. First page is missing.
P.	D; Skt. Prose	19.8×15.5 17.12.23	C	Old	Published copied by Pandit Kisancanda Savāi

1	2	3	4	5
403	Nga/7/2	Tatvārtha Sūt a	Umāsvāmī	—
404	Nga/7/3	,, ,,	,,	—
405	Nga/7/6	,, ,, Vacanikā	—	—
406	Nga/7/4	,, ,,	Umāsvāmi	—
407	Nga/6/3	,, ,,	,,	—
408	Nga/1/2	,, ,, (Mūla)	,,	—
409	Jha/31/6	,, ,, ,,	,,	—
410	Ga/138/1	,, ,,	,,	—
411	Ga/120	,, ,, Tippaṇa	—	—
412	Jha/62	,, Vṛtti	Bhāskara Nandi	—
413	Ga/173	,, Bodha	Budhajana	—
414	Ga/10	,, Sūtra Tīkā	Umāswāmi	Pāṇḍe Jaivanta

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	20 4×16.5 15.14.18	Inc	Old	Page No. 1 and 2 are missing.
P.	D; Skt. Prose	21.1×16.9 14.15.15	C	Good 1955 V. S.	
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	23.1×18.5 40.17.15	Inc	Good	
P.	D; Skt. Prose	21.1×16.7 14.14.15	C	Old 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	22 8×18.1 11 17.19	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	17.8×13.5 17.10.21	C	Good 1908 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	18.2×11.8 18.9.24	C	Good	
P,	D; H. Prose	26.7×15.9 92.14.38	C	Good	Last page is missing.
P	D; H. Prose	28.8×13.4 122.8.30	C	Good 1910 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	33.8×21.8 154.19.30	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.4×17.4 93.12.45	C	Good 1982 V. S.	Copied by Pt. Coubey Laxmi Narayaṇa.
P.	D;Skt/H. Prose	27.1×14.1 154.13.37	C	Good 1904 V. S.	

1	2	3	4	5
415	Ga/27	Tatvārthasūtra Vacanikā	Daulat Rāma	—
416	Ga/139	Tatvārthsūtra Tīkā	Cetana	—
417	Kha/135/1	Tatvārthādhigama-Sūtra	Umāswāmī	—
418	Kha/51	Tatvārtharājavārtika	Akalaṅkadeva	—
419	Ga/157/10	Traikālika dravya	—	—
420	Kha/260	Trailokya Prajnapti	Pt. Medhāvī D/o Jinacandra	,,
421	Kha/261	,, ,,	,,	—
422	Kha/84	Tribhaṅgī	Kaṇakanandi	—
423	Jha/126	Tribhaṅgisāra Tīkā	Nemicandra	Somadeva
424	Kha/19/3	Trilokasāra	Nemicandrācārya D/o Abhayanandi	—
425	Kha/39	,, Sacitra	,,	—
426	Jha/22	,, Bhāṣā	Toḍaramala	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	31.5×13.2 136.7.32	C	Old 1925 V. S.	
P.	D; H. Prose/ Poetry	32.6×17.5 953.15.58	C	Good 1970 V. S.	Copied by Sita Ram Śastri Commentry on Tatvārth Sūtra of Umā-Swāmi.
P.	D; Skt. Prose	35.7×21.2 60.15.45	C	Good 1919 V. S.	Published. Copied by Pandit Śivacandra.
P.	D; Skt. Prose	38.5×20.4 290.14.57	Inc	Old 1968 Śaka Saṁvata	Published. Copied by Ranganath Bhatṭ. First 67 Pages are missing.
P.	D;Skt./H. Poetry/ Prose	21.1×16.5 1.20.18	Inc	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	35.4×16.4 248.11.58	C	Recent 1988 V. S.	Copied by Sri Batuka Prasād.
P.	D; Pkt. Poetry	29.6×15.6 33 8.24	Inc	Good	Name of Auther not mentioned in ms.
P.	D; Pkt. Poetry	29.6×15.2 73 9.44	C	Good	It is also called Vistarasatva tribhangi.
P.	D;Pkt. Skt. Poetry Prose	35.1×16.3 66.13.50	C	Good 1994 V. S.	
P.	D; Pkt. Poetry	35.5×17.2 57.9.41	C	Old	Published. 1010 Gāthās.
P.	D; Pkt. Poetry	33.6×21 63.23.44	C	Good	
P.	D; H. Prose	23.4×12.6 126 12.41	Inc	Good	First 300 Pages are missing.

1	2	3	4	5
427	Ga/148/2	Trilokasāra	Malla Ji	—
428	Ga/79/1	,,	—	—
429	Ga/99/1	,, Bhāṣā	—	—
430	Kha/235	Trivarṇacāra	Brahma-Sūri	—
431	Kha/83	,,	,,	—
432	Kha/24	,,	Somaṣena Bhaṭṭār-aka D/o Guṇbhadra	—
433	Kha/122	,,	Jinasenacārya	—
434	Kha/144	,,	,,	—
435	Kha/25	,,	,,	—
436	Ga/125	,, Vacanika	Somasenā	—
437	Kha/89	Trivarṇa-Śaucācāra	Padmarāja	—
438	Jha/106	Upadeśa-Ratna-mālā	Sāha Thākura Singh	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Prose	26.2×13.8 67.9.32	C	Good	
P.	D; H. Prose	25 2×15 9 41.11.29	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. Prose	32.4×15.2 34.11.47	C	Good 1866 V. S.	Copied by Bhūpatiram Tiwari
P.	D; Skt. Prose	30.5×17.4 56.12.51	C	Good 2451 Vir S.	Copied by Nemiraja.
P.	D; Skt. Poetry	29 6×15.4 84.10.37	C	Good 2440 Vir S.	
P.	D; Skt, Poetry	28 4×13 7 175 9.38	C	Old 1759 V. S.	
P.	D; Skt Poetry	38 1×20 4 159.13.58	C	Old 1970 V. S.	Published. Copied by Gulazarilala Sharma.
P.	D; Skt, Poetry	35 4×13 8 442.7 43	C	Good 1919 V. S	Published.
P.	D; Skt Poetry	28.2×13.2 145.16.54	C	Good 1959 V.S.	
P.	D;H./Skt Prose/ Poetry	38.3×20.6 160.16.51	C	Good 1959 V. S.	Total No. ofSlokas 3100.
P.	D; Skt. Poetry	34.3×14.4 55.11.48	C	Old	
P.	D; Pkt. Prose	31.1×17.2 210.14.42	C	Good 1990 V. S.	It is also called Mahapurana Kalikā. Unpublished.

1	2	3	4	5
439	Kha/129	Upadeśaratnamāla	Sakalabhūṣaṇa D/o Śubhacandra	—
440	Kha/200/2	,,	,,	—
441	Jha/100	Vairāgyasāra Saṭika	Suprabhācārya	—
442	Ga/26	Vasunandiśravakācāra Vacanikā	Vasunandi	—
443	Ga/118	,, ,,	,,	—
444	Ga/141	,, ,,	,,	—
445	Kha/141/2	Vidagdhamukhamaṇḍana	Dharmadāsa	—
446	Jha/88	Viśvatattva-Prakāśa	Bhāvasena Traividyadeva	—
447	Kha/187/1	Vivāda Matakhaṇḍana	—	—
448	Kha/187/2	,, ,,	—	—
449	Kha/128	Viveka Bilāsa	Jinadatta	—
450	Kha/88/2	Vṛhada dīkṣa Vidhi	Fatelāl Paṇḍita	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt/ Poetry	29.8×12.9 119 12 46	C	Old	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	29 6×19.1 121 12.48	C	Good 1970 V. S.	Copied by Gulajārilāla. 3600 Ślokas.
P.	D; Apb. Poetry	24 1×19.5 11 15 33	C	Good 1989 V. S	
P.	D; H Poetry	30 3×13 5 400.11 48	C	Good	
P.	D; H Poetry	30 8×20 2 470 13.37	C	Old 1907 V .S.	
P.	D; H. Poetry	37 1×18.5 192.13.40	Inc	Old	Last fourteen pages are damaged.
P.	D; Skt Poetry	31 6×15 6 12 15.50	C	Old	Contains 480 Ślokas. Published., A work on Buddism.
P.	D; Skt Prose	34.7×16 4 9) 11.54	Inc	Good 1988 V. S.	
P.	D; Skt Poetry	20.6×10.9 12.8.24	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.4×10.8 11.8.37	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	2) 7×12.8 49.11.50	C	Old 1900 V. S.	Published by Saraswati Granthamālā Agra.
P.	D; Skt. Prose	37.2×19.3 60.12.60	C	Good	

1	2	3	4	5
451	Jha/99	Yogasāra	Gurudāsa	—
452	Kha/49	,,	,,	—
453	Jha/123	,, Satika (Nyāyaśāstra)	Yogīndradeva	—
454	Kha/112/3	Āptamīmāṁasā	Samantabhadra	—
455	Kha/94	,,	,,	—
456	Kha/137	,, Vṛtti	,,	—
457	Kha/150/4	,, Bhāṣya	,,	Akalaṅka deva
458	Kha/36	Āptaparīkṣā	Vidyānandi	—
459	Kha/93	,,	,,	—
460	Jha/34/6	Devāgama Stotra	Samanta Bhadra	—
461	Nga/7/5	,, ,,	,,	—
462	Ga/64/2	,, Vacanikā	Jayacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	23.8×19.4 6.15.31	C	Good 1989 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	22.5×11.5 20.9.28	C	Old 1950 V. S.	
P.	D; Apb. H. Prose Poetry	35.1×21.6 10.20.45	C	Good 1992 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 10.13.18	C	Good	Published. Written on copy size paper.
P.	D; Skt. Prose	29.4×12.8 93.10.57	Inc	Old 1842 V. S.	Capied by Mahātmā Sitārāma First 2oo pages are missing. published.
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	38.6×19.2 149.10.48	Inc	Old	Published, Last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	30.2×11.8 34.12.52	C	Old 1605 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	32.4×18.5 67.14.48	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Prose	26.2×14.2 136.9.41	C	Old 1962 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 11.11.32	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.1×16.9 9.15.16	C	Old	
P.	D; H. Prose/ Poetry	[illegible] 68.9.56	C	Good 1898 V. S.	

1	2	3	4	5
463	Ga/114	Devāgamastotra Vacanikā	—	—
464	Kha/86	Nyāyadīpikā	Abhinava Dharma-bhūṣaṇa	—
465	Kha/156/3	,,	,,	—
466	Kha/196	Nyāyamaṇi Dīpikā	Baṭṭāraka Ajitasena	—
467	Kha/48	Nyāyaviniścaya Vivaraṇa	—	—
468	Ga/134/1	Parīkṣāmukha Vacanikā	Jayacanda Chavaṛā	—
469	Ga/12	,,	,, ,,	—
470	Kha/193	Pramāṇa Lakṣaṇa	—	—
471	Kha/262	,, Mīmāṃsā	Śrutamunī ?	—
472	Kha/55	,, Prameya	—	—
473	Jha/116	,, ,, Kalikā	Narendrasena	—
474	Kha/7	,, Kamalamārtaṇḍa	Prabhācandra	—

(Nyāyaśāstra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	30.1×14.8 111.9.30	C	Old	
P.	D;Skt. Prose	31.4×13.3 50.8.45	C	Old 1910 V. S	Published.
P.	D; Skt. Prose	29.4×13.6 28.11.60	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Prose	32 0×16.0 196.13.38	C	Good 1980 V S.	Copied by Rājakumar Jain.
P.	D; Skt. Poetry	33.5×20.7 450.16.60	C	Old 1832 Śaka Saṁvata	Copied by Raṅganātha Śāstri.
P.	D; H. Prose	32.5×17 6 119.12 44	C	Good 1927 V. S.	
P.	D; H. Poetry/ Prose	32.1×18.5 99.14.40	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; Skt Prose	34.1×21.5 34.21.27	C	Good	Written of register size paper.
P.	D; Skt. Prose	35.4×16.3 35.12.72	C	Good 1987 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	29.8×15.6 20.10.41	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	35.1×19.3 10.12.49	C	Good 1991 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	27.8×15.6 440.11.53	C	Old 1896 V. S.	Published

1	2	3	4	5
475	Kha/33	Prameyakamalamārtaṇḍa	Prabhācandrā	—
476	Kha/230	Prameyakaṇṭhikā	Śāntivarṇi	—
477	Kha/63	Prameyaratnamālā	Anantavīrya	—
478	Kha/60	,,	,	—
479	Kha/221	Prameyaratnamālā-Arthaprakāśikā	Paṇḍitācārya Cārūkīrti	—
480	Kha/208	ṣaḍdarśana-Pramāṇa-Prameyānupraveśa	Śubhacandra	,,
481	Kha/90	Cintāmaṇi Vṛtti	Śākaṭāyana	Yakṣavarmācārya
482	Kha/58	Dhātupāṭha	—	—
483	Kha/104	Hemacandra Koṣa	Hemacandra	—
484	Kha/121	Jainendra Vyākaraṇa Mahāvṛtti	Devanandi	Abhayanandi
485	Kha/18	,, ,,	Abhayanandi	—
486/1	Jha/22	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	37.0×20.5 249.15.51	C	Good 1896 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	20.8×17.1 38 11 27	C	Good	Published.
P.	D; Skt Prose	2[illegible] 2×16.1 68.11.38	C	Old 1963 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	30.4×17.2 330 9.40	C	Good	Published. Copied by Lakṣamana Bhaṭṭa.
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	21 4×17.1 249.11 22	C	Good	It is commentry on Prameyaratnamālā of Laghu Anantavirya.
P.	D; Skt. Prose	21.1×11.5 24.8.33	C	Good	Page No. 17 & 18 are left blank
P.	D; Skt. Prose	29.8×15 5 339.11.49	C	Good 1832 Śaka. Samavata	
P,	D; Skt. Prose	34.5×14 2 19.8.49	C	Old	
P	D; Skt. Prose	26.5×10.8 53.17.67	Inc	Old 1910 V. S.	First three pages are missing.
P	D; Skt. Prose	35.4×18.3 380.13.58	C	Old 1907 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	31.2×13.4 43.8.30	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Prose	29.2×15.4 94.12.48	Inc	Old 1879 V. S.	Published. First 383 pages are missing.

1	2	3	4	5
486/2	Jha/78	Kātantra Vistāra	Vardhamāna	—
487	Jha/19	pañcasandhi Vyākaraṇa	—	—
488	Jha/61	Prākrita Vyākarana	Śrutasāgara	—
489	Kha/228	Rūpasiddhi ,,	Dayāpāla	—
490	Jha/8	Saraswati Prakriyā	—	—
491	Jha/20/2	Siddhānta Candrikā	Rāmacandrāsrama	—
492	Jha/20/1	Taddhita Prakriyā	—	—
493	Jha/24	Dhananjaya Koṣa	Dhanañjaya	—
494	Ga/106/1	Nāmamālā	Devidāsa	—
495	Kha/132	Śāradiyākhya Nāmamālā	Harṣakirti	—
496	Kha/185/1	,, ,,	,,	—
497	Jha/67	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	31.1×17.4 250.12.46	C	Good 1928 A. D.	
P.	D; Skt. H. Prose	24.1×15.2 21.17.37	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	21.1×11.4 152.6.20	Inc	Good	It has only two Chapaters.
P.	D; Skt Prose	34.1×21.1 143.21.30	C	Good	Written on Register size paper.
P.	D; Skt. Poetry	27.5×12.4 83.9.38	C	Old 1809 V. S.	Copied by Hemarāja. First 3 pages are missing.
P.	D; Pkt. Prose	24.1×10.6 69.13.48	C	Old	Dhanaji seems to be copier.
P.	D; Skt. Prose	24.1×10.6 60.9.31	Inc	Old	First Two pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	23.4×15.3 14.20.18	C	Good	It is also called Nāmamālā of Dhanañjaya.
P.	D; H. Poetry	24.7×16.3 16.11.29	C	Good 1873 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	30.2×13.8 25.12.37	C	Old 1828 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	24.3×14.2 26.12.40	C	Good 1918 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	32.8×17.6 23.11.37	C	Good 1985 V. S.	

1	2	3	4	5
498	Ga/15	Trepanakriyākośa	Kisana Singh	—
499	Ga/160	,,	,,	—
500	Ga/86/4	Urvaśī Nāmamālā	Śiromaṇi	—
501	Kha/31	Viśwalocanakośa	Pandit Sridharsena	—
502	Kha/20	Alaṅkāra Saṁgraha	Amṛtānanda Yogī	—
503	Kha/212	,, ,,	,, ,,	—
504	Nga/1/3/1	Bārahamāsā	Budhasāgara	—
505	Kha/209	Candronmīlana	—	—
506	Jha/108/1	,, Satīka	—	—
507	Jha/108/2	,, ,,	—	—
508	Jha/25/6	Dohavalī	—	—
509	Ga/106/8	Futakara Kavitta	Trilokacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.8×17.3 77.13.40	C	Old 1960 V. S.	
P.	D; H. Poetry	23.9×17.3 122.18.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	24.5×13.3 27.16.13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	28.5×13.0 103.11.40	C	Good 1961 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	34.0×14.4 32.15.48	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×11.6 104.8.21	C	Good 1925 V. S.	
P.	D; H. Poetry	16.9×12.7 4.11.10	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	20.9×11.4 32.8.26	C	Good	
P.	D; Skt/H. Prose/ Poetry	32.5×17.5 73.20.21	C	Good 1990 V.S.	Total No. of Slockas 337.
P.	D;H./Skt Prose/ Poetry	31.1×20.2 56.31.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.9×15.4 4.17.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.9×16.[illegible] 1.[illegible].27	C	Old	

1	2	3	4	5
510	Ga/80/7	Fuṭakara Kavitta	Trilokacand	—
511	Kha/162	Nitivâkyâmṛta	Somadavā Sūri	—
512	Kha/56	,,	,,	—
513	Kha/200	Ratnamañjūṣā	—	—
514	Kha/22	Rāghava Pāndavıyam Satika	Dhañjaya Kavı	Nemıcandra
515	Jha/101	Śṛṅgāra Mañjarı	Ajitasenadeva	—
516	Kha/231	Śṛṅgārārnavacandrıkā	Vijayavarni	—
517	Kha/219	Śıutabotha	Ajitasena	—
518	Jha/12	,,	Kālıdâsa	—
519	Nga/1/2/1	Śrutapañcamırāṣā		—
520	Jha/92/1	Subhadrā Nātikā	Hastimalla	—
521	Kha/171/5	Subhāṣita Muktāvalı	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	23.2×15.3 2.22.22	C	Old 1890 V. S.	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	28.6×13.6 75.8.35	Inc	Old 1910 V. S.	Published. 66 to 74 pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	34.5×14.5 137.8.42	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×16 8 95.15.26	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.0×16.6 253.12.63	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	23.6×19 3 6.15.34	C	Good 1989 V .S.	
P.	D; Skt. Poetry	21.2×16 9 109.11.24	C	Good	Copied by Vijayacandra Jaina.
P.	D; Skt. Poetry	21.1×16.8 6.13.21	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	27.1×10.1 4.8.42	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.8×13.5 6.10.25	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Prose	32.7×17.7 38.12.36	C	Good 2458 VIR S.	Copied by Śali.
P.	D; Skt. Poetry	20.5×16.5 25.12.24	C	Good	

1	2	3	4	5
522	Kha/29	Subhāṣita Ratnasaṁdoha	Amitagati	—
523	Kha/99	,, ,,	,,	—
524	Kha/160/2	Subhāṣitāvalī	—	—
525	Kha/187/3	,,	—	—
526	Kha/156/1	Subhāṣitaratnāvalī	Sakalakīrti	—
527	Kha/176/6	Sūkti Muktāvalī	Somaprabha.	—
528	Kha/176/7	,, ,,	,,	—
529	Kha/19/1	,, ,,	,,	—
530	Kha/163/6	,, ,,	,,	—
531	Kha/136/2	Sindūra Prakarṇa (Mūla)	,,	—
532	Ga/157/7	Akṣarakevalī Śakuna	—	—
533	Jha/136	,, Praśnaśāstra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	29.4×12.8 76.9.47	C	Good	.
P.	D; Skt. Poetry	26.4×11.8 83.9.46	Inc	Old 1784 V. S.	First eleven pages are badly rotten. published.
P.	D; Skt. Poetry	27.6×11.7 34.8.41	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	21.3×13.2 30.19.19	Inc	Old	Last pages are missing. Written on coloured paper.
P.	D; Skt. Poetry	28.8×13.2 22.11.47	C	Old 1836 V. S.	Unpublished.
P.	D; Skt, Poetry	26.2×11 3 27.11.44	Inc	Old	First & last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	25.4×10.5 20.10.40	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	33.5×14.8 25.5.35	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Poetry	24.6×12.1 10.9.55	C	Old 1813 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	34.2×20.5 26.6.30	C	Old 1947 V. S.	Copied by Paramananda. Published.
P.	D; Skt. Poetry	17.6×10.1 4.8.22	C	Old	Page No. 2 si missing.
P.	D; Skt. Poetry	20.5×17.4 7.10.17	C	Good 1943 A. D.	

1	2	3	4	5
534	Kha/188/4	Ariṣṭādhyāya	—	—
535	Jha/16/5	Dwādasa-Bhāvafala	—	—
536	Jha/137/2	Gaṇitaprakaraṇa	Śrīdharācārya ?	—
537	Jha/105	Jnānatilaka Saṭīka	—	Bhaṭṭavo-sari
538	Jha/137/1	Jyotirjnāna Vidhi	Srīdharācārya	—
539	Kha/239	Jānapradīpikā	—	—
540	Kha/272	Kewala Jnāna Praśna Cūdāmaṇi	Samantabhadrā	—
541	Kha/213	Kevalajnānahorā	Candrasena Sūri	—
542	Kha/174/3	Nimittaśāstra ṭikā	Bhadrabāhu	—
543	Kha/174/2	Mahānimittaśāstra	,,	—
544	Kha/179	,, ,,	,,	—
545	Kha/174/4	Nimittaśāstra ṭikā	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	23.8×10.6 27.6.28	C	Good	Copied by Pt. Rāmacanda.
P.	D; Skt. Prose	24 3×16.1 5.15.15	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20 5×17.5 13.10.18	Inc	Good 1944 V. S.	It seems to be part of Jyotirjñānavidhi.
P.	D; Skt./ Pkt. Prose/ Poet y	21.6×17.2 74.18.21	C	Good 1990 V. S.	Commentry with test.
P.	D; Skt. Prose	20 4×17.5 18.10.20	C	Good 1944 A.D.	
P.	D; Skt. Poetry	17.3×15.5 19.15.38	C	Good	Copied by Nemirājā.
P.	D; Skt. Prose	21.8×17.6 23 11.33	C	Good	Copied by Devakumāra Jain.
P,	D; Skt. Poetry	34 2×21.4 376.22.21	C	Good	Written on register size paper.
P.	D; Skt. Poetry	28.4×13.2 17.12.36	C	Good	Author's name not mentioned in the Ms.
P	D; Skt / Pkt. Poetry	26.8×15.7 76.11.40	C	Good	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	21.5×14.4 79.19.22	C	Old 1877 V. S.	
P.	D; Pkt Poetry	25.2×13.9 18.14.36	Inc	Good	Author's name not mentioned in the Ms.

1	2	3	4	5
546	Kha/165/4	Saṭpañcāśikā Sūtra	—	—
547	Kha/218	Sāmudrika Śāstra	—	—
548	Jha/110	Vratatithinirṇaya	Siṁhanandi	—
549	Jha/16/4	Yātrā Muhūrta	—	—
550/1	Jha/34/20	Ākāsagāminī Vidyā Vidhi	—	—
550/2	Jha/131	Aṁbikā Kalpa	Śubhacandra	—
551	Jha/71	Bālagraha Cikitsā	Malliṣeṇa	—
552	Jha/72	,, ,,	Rāvaṇa	—
553	Jha/70	,, Śānti	Pūjyapāda	—
554	Ga/157/1	Bālaka Mundana Vidhi	—	—
555	Nga/7/18	Bhaktāmarastotra Ṛddhi Mantra	Gautamasvāmī ?	—
556	Nga/7/17	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	24.8×11.3 3.13.52	C	Old	
P.	D;Skt. Poetry	16.8×15.3 10.11.27	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.1×16.3 11.12.52	C	Good 1991 V. S.	Contains slokas 401.
P.	D; Skt. Prose	24.3×16.1 3.15.14	C	Old	It has eleven carts.
P.	D; H. Prose	25.1×16.1 2.11.36	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	35.6×17 2 18.15.50	C	Good 1994 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	34.8×19.5 6.19.53	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	34.8×19.5 2.19.51	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	34.8×19,5 8.18.46	C	Good	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	20.1×15.5 3.1 .13	C	Good	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	21.1×16.4 22.14.16	C	Good	
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	21.1×16.9 21.15.16	C	Good 1950 V. S.	

1	2	3	4	5
557	Jha/26/1	Bhūmi Śuddikaraṇa Mantra	—	—
558	Jha/34/3-4	Bija Mantra	—	—
559	Kha/217	Bījakoṣa	—	—
560	Jha/79	Brahmavidyā vidhi	—	—
561	Jha/34/12	Candraprabhamantra	—	—
562	Jha/34/27	Caubisa Tīrthaṅkara Mantra	—	—
563	Jha/34/18	Caubisa Śāsanadavi Mantra	—	—
564	Kha/245	Gaṇadharavalayakalpa	—	—
565	Jha/36/6	Ghaṅtākarṇa	—	—
566	Jha/74	„ Kalpa	—	—
567	Ga/144	„ Vṛddhi kalpa	—	—
568	Kha/177/11	„ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	22.4×16.8 4.23.18	Inc	Good	
P.	D; Skt. H. Poetry	25.1×16.1 2.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16 9×15.2 21.11.29	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ poetry	20.8×16 7 34.11.20	C	Good	
P.	D; Skt Prose	25.1×16.1 1.11.32	C	Good	
P.	D; Skt Prose	25.1×16.1 1.11.33	C	Good	
P.	D; Skt Prose	25 1×16 1 2.11.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17 1×15.1 10.14 42	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19 7×14.9 2.11.20	C	Good	
P.	D;H./Skt. Prose	32.8×17.6 6.11.38	C	Good 1985 V. S.	
P.	D;Skt./H. Poetry/ Prose	33.3×16.3 5.13.40	C	Old 1903 V. S.	Rughan Prasād Agrawāla seems to be copier.
P.	D; Skt /H- Prose/ Poetry	27.2×12.3 5.12.55	C	Old	

1	2	3	4	5
569	Kha/177/8	Hāthājori Kalpa	—	—
570	Jha/34/17	Iaṣṭadevatārādhana Mantra	—	—
571	Nga/2/4	Jainasandhyā	—	—
572	Ga/166	Jainavivāha vidhi	—	—
573	Jha/133	Jinasaṁhitā	Māghanandi	—
574	Nga/7/7	Karmadahana Mantra	—	—
575	Jha/34/15	Kalikuṇda Mantra	—	—
576	Kha/177/6	Mantra Yantra	—	—
577	Kha/177/4	Namokāragaṇa Vidhi	—	—
578	Kha/118	„ Mantra	—	—
579	Jha/46	Padmāvati Kavaca	—	—
580	Jha/16/1	Pañcaparameṣṭhi Mantra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	26.8×11.7 1.15.48	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	25.1×16.1 2.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	19.4×15.5 2.13.15	C	Good	
P.	D;Skt./H Poetry	22.2×19.6 13.17.25	C	Good 1978 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	32.3×17.7 75.10.31	C	Good 1995 V. S.	It is also called Māghanandi Saṁhitā.
P.	D; Skt. Prose	20.9×16.9 6.16.19	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	25.1×16.1 1.11.30	C	Good	
P.	D; H. Prose	25.5×10 8 4.10 38	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.6×11.8 1.10.46	C	Old	
P.	D; Pkt/ Skt./ Poetry	16.6×10.8 56.8.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.4×11.5 35.7.18	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	24.3×16.1 4.21.20	Inc	Old	

1	2	3	4	5
581	Kha/223	Pañcanamaskāra Cakra	—	—
582	Jha/13/4	Pīthikā Mantra	—	—
583	Kha/237	Sarasvatīkalpa	Malayakīrti	—
584	Jha/34/19	Śāntinātha Mantra	—	—
585	Jha/16/3	Siddhabhagavāna ke guṇa	—	—
586	Kha/177/5	Solahacālī	—	—
587	Kha/177/7	Vivāha Vidhi	—	—
588	Kha/258	Yantra Mantra Saṁgraha	—	—
589	Kha/255	Akalaṅkasaṁhitā (Sāra Saṁgraha)	Vijayaṇapādhyāya	—
590	Kha/54	Ārogya Cintāmaṇi	Paṇḍita Dāmodara	—
591	Kha/224	Kalyāṇakāraka	Ugrādityācārya	—
592	Kha/206	Madanakāmaratna	Pūjyapāda ?	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	35.7×20.2 56.14.56	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	24.5×16.5 4.21.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.1×15.3 7.14.37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.1×16.1 1.11.30	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24.3×16.1 2.18.18	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	27.9×10.8 1.13.48	C	Old	Only one page available.
P.	D; Skt. Prose	25.6×10.9 5.8.50	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; Skt. Prose	21.1×16.9 145.10.31	C	Good	
P.	D; Skt Prose	30.3×16.6 238.12.51	C	Good	
P.	D; Skt Prose	38.5×20.5 40.13.54	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	34.1×21.2 155.23.27	C	Good	Copied by Śaṅkaranārāyaṇa Śarmā. written on register size paper.
P.	D; Skt. Poetry	34.1×21.1 32.23.14	C	Good	It is written on register size paper.

1	2	3	4	5
593	Kha/205	Nidānamuktāvalī	Pūjyapāda ?	—
594	Jha/77	Rasasāra Saṁgraha	—	—
595	Kha/226	Vaidyakasāra Saṁgraha	Harṣakīrti	—
596	Kha/103	,, ,,	,,	—
597	Kha/236	Vaidya Vidhāna	Pūjyapāda	—
598	Kha/114	Vidyā Vinodanam	Akalaṅka	—
599	Kha/134	Yoga Cintāmaṇi	Harṣakīrti	—
600	Jha/69	,, ,,	,,	—
601	Nga/2/9	Ācārya Bhakti	—	—
602	Nga/2/28	Aṅkagarbhaṣaḍāracakra	Devanandi	—
603	Kha/113	Aṣṭa Gāyatrī Ṭīkā	—	—
604	Kha/227/5	Ātmatattvāṣṭaka	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	34.1 × 21.1 3.22.22	C	Good	It is written on regester size paper.
P.	D; Skt. Poetry	33.8 × 20.5 40.16.40	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	33.8 × 21.2 84.23.24	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	27.5 × 12 7 128.14.48	C	Old 1840 V. S.	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	17 1 × 15.3 54.12.31	C	Good 1926 V. S.	Copied by Nemirāja.
P.	D; Skt, Poetry/ Prose	22 8 × 16.8 34.9.11	C	Old	Copied by T. N. Pangal.
P.	D; Skt. Poetry	25 6 × 10 2 139.8.48	C	Old 1896 V. S.	
P.	D;Skt. Prose	32.8 × 17 1 115 11.46	C	Good 1985 V. S.	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	19.4 × 15.5 4.13.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4 × 15.5 4.13.14	C	Good	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	21.2 × 16.6 19.11.27	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	35.2 × 16.3 1.9.62	C	Good	Copied by Batuka Prasada.

1	2	3	4	5
605	Kha/227/4	Ātmatattvāṣṭaka	—	—
606	Nga/13	Ātmajnāna Prakaraṇa Stotra	Padmasūri	—
607	Kha/123	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅgācārya	—
608	Kha/170/5	,, ,,	,,	—
609	Kha/178(K)	,, ,,	,,	—
610	Kha/165/13	,, ,,	,,	—
611	Jha/31/1	,, ,,	,,	—
612	Jha/28/1	,, ,,	,,	—
613	Jha/34/24	,, ,,	,,	—
614	Jha/40/2	,, ,,	,,	Hemarāja
615	Jha/35/1	,, ,,	,,	—
616	Nga/6/1	,, ,,	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 1.11.57	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P.	D;Skt. Poetry	19.4×15.5 7.12.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	34.5×21.3 24.4.18	C	Old 2440 Vir.S.	Published, written in bold letters.
P.	D; Skt. Poetry	27.5×12.9 6.14.44	C	Old 1882 V. S.	Published.
P.	D; Skt Poetry	20.8×16.3 13.18.17	C	Good 1947 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Poetry	25.2×10.4 4.8.57	C	Old 1763 V. S.	Published.
P.	D; Skt Peotry	18.2×11.8 7.10.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.5×15.8 7.16.15	C	Good	
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	25.1×16.1 13.11.33	C	Good	
P.	D; Skt./ H. Poetry	15.4×11.9 25.8.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.1×16.1 7.13.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.8×18.3 5.17.21	C	Old	

1	2	3	4	5
617	Jha/52	Bhaktāmarastotra Satika	Mānatunga	—
618	Ga/157/1 (K)	,,	,,	—
619	Nga/7/8	,,	,,	—
620	Ga/110/1	,, Tikā	Hemarāja	—
621	Kha/117/1	,, Mantra	Mānatuṅga	—
622	Kha/117/2	,, Ṛddhi Mantra	,,	—
623	Kha/119/1	,, ,,	,,	—
624	Kha/283	,, ,,	,,	—
625	Jha/34/16	,, Mantra	,,	—
626	Kha/284	,, Ṛddhimantra	,,	—
627	Kha/170/2	,, ,,	,,	—
628	Kha/177/14	,, ,,		—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt /H. Prose/ Poetry	17.5×10.9 40.8.24	C	Good 1971 V. S.	
P	D; Skt. Poetry	10.5×7.2 25.6.10	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.9×10.9 9.7.23	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.1×15.8 29.16.19	C	Good 1919 V. S.	
P.	D; Skt Poetry	15.8×11.2 49.10.27	C	Old 1967 V. S.	Published, copied by Pandit Sitārama Śastri
P.	D; Skt Poetry/ Prose	17.4×13.5 48.10.24	C	Old 1930 V. S.	Copied by Nilakaṇṭha Dāsa.
P.	D; Skt Poetry	16.8×14.5 47.9 20	C	Old 1930 V S.	Published, copied by Nilakaṇṭha Dāsa
P,	D; Skt. Poetry	20.5×16.3 48.13.17	C	Good	Published.
P	D; Skt. Prose	25.1×16.1 2.11.30	C	Good	
P	D; Skt./ Poetry	24.1×15.5 49.10.44	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.7×18.4 7.11.42	C	Good 1966 V. S.	Published, copied by Munindrakirti
P.	D; Skt. Prose	22.6×10.4 10.10.30	Inc	Old	First twenty pages & last pages are missing.

1	2	3	4	5
629	Ga/106/3	Bhaktāmara ṭīka	Hemarāja	—
630	Kha/87/1	,, ,,	Mānatuṅga	Brahma-Rāyamalla
631	Kha/170/6	Bhaktāmarastotra ṭīka	,,	Hemarāja
632	Ga/134/5	,, ,, Vacanikā	Jayacanda	—
633	Ga/80/2	,, ,, Sārtha	Mānatuṅga	Hemarāja
634	Jha/33	,, ,, Maṇatra	—	—
635	Jha/36/3	Bhairavāṣṭaka	—	—
636	Nga/7/14	,, Stotra	—	—
637	Kha/119/2	Bhairava Padmāvatī Kalpa	Malliṣeṇācārya D/o Jinaṣena	Bandhu-sena
638	Jha/127	,, ,,	,,	Candra-śekhara Śāstrī
639	Nga/3/2	Bhajana Saṁgraha	—	—
640	Kha/172/2	Bhakti Saṁgraha ṭīka	—	Sivacan-dra

6	7	8	9	10	11
P.	D,H. /Skt. Poetry/ Prose	23.9×16.8 14.25.26	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	29 6×13.4 26.14.53	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26.8×13.8 17.14.44	C	Good 1908 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	31.2×17.1 24.14.36	C	Good 1944 V. S.	
P.	D;H /Skt Prose/ Poetry	23 2×15.3 22.22.21	C	Old 1890 V. S.	
P.	D;Skt /H Poetry	16 5×11.8 17.12.14	Inc	Good	Oponing & Closing are missing
P.	D; Skt Poetry	19 7×14.9 2.11.25	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 8×16 3 3.9.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	17 3×14.6 52.13.33	Inc	Old 1956 V. S.	Published. Firt nine pagest aremissing. Copied by Nīlakaṇṭha Dāsa.
P.	D;Skt/H. Prose/ Poetry	35.1×16.3 73.13.47	C	Good 1993 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.6×16.5 5.12.14	C	Good	
P.	D; Skt, Prose/ Poetry	28.1×18.2 72.13.29	C	Good 1948 V. S.	

1	2	3	4	5
641	Ga/152/2	Bhāṣāpada Saṁgraha	Kundana	—
642	Kha/171/2(K)	Bhūpāla Caturviṁśatikā Mūla	Bhūpāla Kavi	—
643	Kha/178/5	Bhūpāla Stotra	,,	—
644	Kha/138/3	,, ,, ṭikā	,,	—
645	Kha/227/3	Bhāvanāṣṭaka	—	—
646	Jha/31/2	Candraprabha Stotra	—	—
647	Kha/190/2	Candraprabha Śāsana Devī Stotra	—	—
648	Nga/2/48	Caturviśmati Jina Stotra	—	—
649	Nga/2/40	,,	—	—
650	Kha/131	,, ,, Stuti	Māghanandi	—
651	Nga/2/8	Cāritra Bhakti	—	—
652	Jha/34/9	Caubīsa Tīrthaṅkara Stotra	Devanandī	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	27.4×12.1 11.16.50	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.4×16.9 4.12.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.6 9.16.20	C	Good 1947 V. S.	Published.
P	D; Skt. Poetry	31.7×16.8 13.11.36	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 1.9.64	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P.	D; Skt, Prose	18.2×11.8 3.10.22	C	Old 1852 V. S.	
P.	D; H Poetry	17.2×10.2 6.7.26	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 1.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.5×13.3 5.14.54	C	Old	
P.	D; Pkt./Skt Poetry	19.4×15.5 4.12.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poe·ry	25.1×16.1 3.11.30	C	Good	

1	2	3	4	5
653	Nga/8/5	Cintāmaṇi Aṣṭaka	Bhaṭṭāraka Mahīcandra	—
654	Kha/173/3(G)	„ Stotra	—	—
655	Jha/31/7	„ Pārśvanātha Stotra	—	—
656	Kha/253	Daśabhktyādi Mahāśāstra	Vardhamāna Muni	—
657	Kha/150/2	Devi Stavana	—	—
658	Jha/35/4	Ekibhāva Stotra	Vādirāja Sūri	—
659	Kha/171/2 (Kh)	„ „ Mūla	„ „	—
660	Kha/178 (Gha)	„ „	„ „	—
661	Kha/172/2(K)	„ „	„ „	—
662	Nga/6/7	„ „	„	—
663	Kha/138/2	„ „ Saṭika	Vādirāja Sūri	—
664	Nga/2/41	Gautamasvāmi Stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 1.13.27	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.2×17.6 1.14.34	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.2×11.8 36.10.23	C	Good 1853 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.7 132.10.28	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	38.9×12.2 4.9.39	G	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.1×16.1 5.13.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.4×16.9 4.12.25	C	Good	Published.
P.	D;Skt./H. Poetry	20.8×16.6 8.13.20	C	Good 1947 V. S.	Published.
P.	D; Skt Poetry	28.1×18.2 10.12.39	C	Good	Published.
P.	D; Skt Poetry	22.8×18.1 3.17.22	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	31.5×16.5 14.10.32	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	[illegible]15.5 [illegible].13.15	C	Good	

1	2	3	4	5
665	Kha/227/10	Gītavītarāga	Cārūkīrti	—
666	Kha/227/6	Gommatāṣṭaka	—	—
667	Ga/152/3	Gurudeva Kī Vintī	—	—
668	Ga/77/1	Jinacaityastava	Campārāma	—
669	Nga/7/12(Kha)	Jinadarśanāṣṭaka	—	—
670	Jha/39	Jinendra Darśana Pāṭha	—	—
671	Nga/2/52	Jinendrastotra	—	—
672	Nga/5/4	Jinavāṇī Stuti	Haridāsa Pyārā	—
673	Nga/2/34	Jinaguṇa Stavana	—	—
674	Kha/227/7	Jinaguṇasampatti	—	—
675	Jha/34/21	Jina Stotra	Raviṣaṇācārya	—
676	Kha/190/1	Jinapañjara Stotra	Devapravācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 17.11.56	C	Good 1930 A. D.	Copied by Baṭuka Prasāda.
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 1.9.58	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P.	D; H. Poetry	26.1×12.4 7.7.26	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.6×9.6 11.7.20	C	Old 1883 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×13.3 1.18.13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.3×12.4 5.10.13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.13.13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.7×17.1 3.11.20	C	Good 1963 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 3.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 2.11.60	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 3.11.33	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.8×10.4 7.7.24	C	Old	

1	2	3	4	5
677	Ga/157/12 (Kha)	Jinapañjara Stotra		—
678	Jha/31/4	,,		—
679	Kha/175/10	Jvālāmālinī Stotra		—
680	Jha/34/13	,, Devī Stuti		—
681	Jha/81	Jvālinī Kalpa	Indranandi	—
682	Kha/161/5	Kalyāṇamandira Stotra	Kumudacandrācārya	—
683	Nga/6/2	,, ,,	,,	—
684	Kha/161/8	,, ,,	,,	—
685	Kha/165/12	,, ,,	,,	—
686	Kha/170/7	,, ,,	,,	—
687	Kha/165/8	,, ,,	,,	—
688	Kha/172/2	,, ,,	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	10 5×7.2 8.6.10	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D;Skt. Poetry	18.2×11.8 2.10.20	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	23.7×10.9 3.8.35	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.1×16.1 3.11 32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	20.6×16.6 39.11.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.1×12 7 4.14.40	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Peotry	22.8×18.3 4.17.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.6×11.2 4.10.35	C	Old 1931 V. S.	Copied by Keshava Sāgara. Published.
P.	D; Skt. Poetry	26.2×10.8 2.13.45	C	Old	Published. pages are soften.
P.	D; Skt. Poetry	25.8×12.8 5.20.57	C	Old 1887 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Poetry	24.6×11.2 2.16.50	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	28.1×18.2 14.12.36	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
689	Kha/178 (Kh)	Kalyāṇamandira Stotra	Kumudacandra	—
690	Jha/35/2	,, ,,	Kumudacandra	—
691	Jha/40/3	,, ,,		Banārasi-dāsa
692	Jha/28/2	,, ,,	..	—
693	Jha/31/3	,, ,,	,,	—
694	Jha/28/3	,, Bhāṣā	—	—
695	Kha/106/4	,, Vacanikā	—	—
696	Ga/80/3	,, Sārtha	Kumudacandra	—
697	Nga/2/2/3	Kṣamāvāṇī Āratī	—	—
698	Jha/34/2	Kṣetrapāla Stuti	—	—
699	Kha/161/7	Kāṣṭhā Saṁgha Gurvāvalī	—	—
700	Jha/40/4	Laghu Sahasranāma	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.3 11.13.2	C	Good 1947 V. S.	Published,
P.	D; Skt. Poetry	16.1×16.1 6.13.20	C	Good	
P.	D;Skt./H Poetry	15.4×11.9 21.9.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poet. y	20.5×15.8 6.17.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.2×11.8 6.10.23	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15.8 1.17 15	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; H Poetry/ Prose	23.9×16.8 12.25.25	C	Old	
P,	D;Skt./H. Poetry/ Prose	23.2×15.3 19.22.22	C	Old 1890 V. S.	
P.	D; H. Poetry	17.8×13.5 4.10.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.2×16.1 1.14.28	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	26.4×12.8 3.14.39	C	Old	Published.
P.	D;Skt./H. Poetry	15.4×11.9 5.9.18	C	Good	

1	2	3	4	5
701	Nga/7/10	Laghusahasranāma Stotra	—	—
702	Jha/34/26	Lakṣhmi Ārādhana Vidhi	—	—
703	Nga/2/15	Mahālakṣmi Stotra	—	—
704	Nga/7/16	” ”	—	—
705	Jha/36/1	Maṅgalāṣṭaka	—	—
706	Nga/4/2	Maṅgala Ārati	Dyānatarāya	—
707	Ga/157/6	Maṇibhadrāṣṭaka	—	—
708	Nga/2/12	Naṅdiśvara Bhakti	—	—
709	Kha/173/3(K)	Namokāra Stotra	—	—
710	Nga/2/53	Navakāra-Bhāvanā Stotra	—	—
711	Nga/2/14	Nemijina Stotra	Raghunātha	—
712	Kha/202	Nijātmāṣṭaka	Yogindradeva	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	22.1×14.7 2.12.26	C	Good	
P.	D;H./Skt. Prose	25.1×16.1 1.11.33	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.12.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.3×14.7 2 14.11	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.7×14 9 2.11.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.5×17.9 1.10.28	C	Good 1951 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	15.6×13.3 3.10.16	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	19.4×15.5 10.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	27.2×17.5 1.13.35		Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 3.13.16	C	Good 1954 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 1.12.14	C	Good	
P.	D; Pkt, Poetry	29.7×19.3 3.8.39	C	Good	

1	2	3	4	5
713	Nga/2/29	Nirvāṇakāṇḍa	—	—
714	Nga/6/5	,,	—	—
715	Nga/6/6	,,	—	—
716	Kha/177/10 (K)	,,	Bhaiyā Bhagavati Dāsa	—
717	Nga/2/10	Niravāna Bhakti	—	—
718	Kha/112/6	Padmāvati Kavaca	—	—
719	Kha/40/2	,, Kalpa	Malliseṇa Sūri	—
720	Kha/153/2	,, Vṛhat Kalpa	—	—
721	Jha/34/1	Padmāmātā Stuti	—	—
722	Kha/75/1	Padmāvati Stotra	—	—
723	Kha/267	,, ,,	—	—
724	Nga/7/13 (K)	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 4 13.14	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.8×18 1 2.17.20	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.8×18.1 2.17.22	C	Old 1943 V. S.	
P.	D; H. Poetry	24.1×12.8 1.14.30	C	Good 1871 V. S.	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	19.9×15.5 8.13.16	G	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 11.14.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.5×19 7 24.13.35	C	Old 1884 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	27.4×12.6 2.16.55	C	Old	
P.	D; H Poetry	25.2×16.1 3.11.25	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	29.6×13.5 3.14.61	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	21.6×17.5 10.13.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.9×16.5 5.17.17	C	Good	

1	2	3	4	5
725	Jha/36/5	Padmāvatī Stotra		—
726	Jha/34/11	,, ,,		—
727	Jha/34/10	,, Sahasranāma		—
728	Jha/40/6	Paramānanda Stotra		—
729	Nga/7/11(K)	,, ,,		—
730	Kha/227/9	,, Caturviṁśatikā		—
731	Nga/2/47	Pārśvajina Stavana		—
732	Nga/2/50	Pārśvanātha ,,		—
733	Nga/2/39	Pārśvanātha Stotra		—
734	Kha/105/2	,, ,,	Vidyananda Swāmī	—
735	Kha/62/1	,, ,, Saṭīka	Padmaprabhadeva	—
736	Jha/34/7	,, ,,		—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	19.7×14.9 6.11.21	C	Good	
P.	D;Skt. Poetry	25.1×16.1 8.11.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 9.11.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.7 3.9.20	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	21.1×13.3 2.18.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16 3 2.11.58	C	Good	Copied by Batuka Prasāda.
P.	D; Skt. Peotry	19.4×15.5 3.13.15	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	19.4×15.5 3.13.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 4.13.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.5×15.5 4.9.49	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	30.7×16.0 3.14.52	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 4.11.30	C	Good	

1	2	3	4	5
737	Nga/6/16	Pārsvanātha Stotra	Padmaprabhadeva	—
738	Kha/119/3	Pañcastotra Satika	—	—
739	Ga/143	Pañcāśikā Śikṣā	Dyānatarāya	—
740	Kha/171/6	Pañcapadāmnāya	—	—
741	Kha/165/14	Prabhāvati Kalpa	—	—
742	Nga/2/35	Prārthanā Stotra	—	—
743	Kha/165/1	Rakta Padmāvati Kalpa	—	—
744	Nga/2/20	Ṛṣabha Stavana	—	—
745	Kha/112/5	Ṛṣimaṇḍala Stotra	—	—
746	Nga/7/1	,, ,,	—	—
747	Jha/34/19	,, ,,	—	—
748	Nga/2/26	Trikāla Jaina Sandhya Vandana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	22.8×18.1 1.17.21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	19.2×12.2 184.11.45	C	Old 1967 V. S.	Copied by Pandit Sitārāma Śāstri.
P.	D; H. Poetry	34.4×16.1 57.10.45	C	Good 1947 V. S.	It is a calection of Bhajan,
P.	D; Skt. Poetry	18.3×16.2 8.11.22	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	21.5×10.4 1.17 70	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 1.13 15	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24.9×10.8 10.11.38	Inc	Old 1738 V. S.	First page missing. Copied by Soubhāgya Samudra. D/o Jina Samudra Sūri.
P,	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.12.14	C	Good	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	19.4×15.5 19.14.14	C	Old	Written on copy size paper.
P	D; Skt. Poetry	20.4×16.5 13.21 14	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 9.11.33	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	19.4×15.5 4.13.14	C	Good	

1	2	3	4	5
749	Kha/243	Sahasranāmārādhanā	Devendrakīrti	—
750	Kha/153/1	„ Stotra Tīkā	Jinasenācārya	Śrutasāgara
751	Jha/35/5	„ „	—	—
752	Jha/75	„ Tīkā	Śrutasāgara	—
753	Kha/161/2	„ „	Pt. Āśādhara	Amarakīrti
754	Ga/134/7(Kh)	Sata Aṣṭotarī Stotra	Bhagavatīdāsa	—
755	Kha/188/2	Śakra Stavana	Siddhasenācārya	—
756	Nga/2/27	Sattarisaya „	—	—
757	Nga/2/51	Sammedāṣṭaka	Jagadbhūṣana	—
758	Kha/97	Samavasaraṇa Stotra	Samantabhadra	—
759	Ga/148/3	Saṅkaṭaharaṇa Vinati	—	—
760	Kha/177/13	Śāntinātha Āratī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	17.2×15.4 60.14. 37	C	Good 1926 V. S.	Copied by Nemirājā.
P.	D; Skt. Poetry	29.5×12.5 114.12.54	C	Old 1775 V. S.	Copied by Gaṅgārāma. Published.
P.	D; Skt. Poetry	16.1×16.1 9.13.19	Inc	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.8×17.5 127.11.38	C	Good 1985 V. S.	Page No. 68 to 78 are missing.
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	25.8×13.2 61.14.52	C	Old 1897 V. S.	
P.	D; H. Poetry	30 3×16.3 10 14.43	C	Good	
P.	D, Skt. Prose	25.3×11.0 3.9.41	Inc	Old 1774 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 3 13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×10.5 56.8.29	C	Old	
P.	D; H. Poetry	24.4×12.9 2.15.40	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.3×11.4 1.12.29	C	Old	Only one page is available.

1	2	3	4	5
661	Jha/36/2	Śāntinātha Stora	Guṇabhadrācārya	—
762	Nga/2/44	„ Stavana	—	—
763	Nga/2/19	„ „	—	—
764	Jha/34/23	„ „	—	—
765	Jha/80	Sarasvatī Kalpa	Malliṣena Sūri	—
766	Jha/34/8	„ S'otra	—	—
767	Kha/176/2	„ „	—	—
768	Kha/173/3 (Kha)	„ „	—	—
769	Kha/161/6	„ „	—	—
770	Nga/2/6	Siddhbhakti	—	—
771	Nga/7/15	Siddhipriya Stotra Tikā	Bhavyānanda	—
772	Jha/34/22	Siddhaparameṣṭhī Stavana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	19.7×14.9 1.11.20	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	19.4×15.5 1.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.12.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 2.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×16.7 9.11.22	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	25.1×16.1 2.11.32	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	23.9×13.5 2.9.28	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	27.2×17.5 1.14.36	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.1×12.1 1.11.32	Inc	Old	Only first page available.
P.	D; Skt / Pkt Poetry	19.4×15.5 5.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20.9×16.3 17.16.12	C	Old	The Ms. is demaged.
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 2.11.33	C	Good	

1	2	3	4	5
773	Nga/2/7	Śrutabhakti	—	—
774	Kha/50	Stotra Saṃgraha	—	—
775	Kha/165/11	Stotrāvali	—	—
776	Kha/165/5	„	—	—
777	Kha/120	Stotra Saṃgraha Guṭakā	—	—
778	Kha/286	„ „	—	—
779	Jha/73	„ „	—	—
780	Nga/2/46	„	Bhaṭṭāraka Jinacandradeva	—
781	Kha/227/8	Suprabhāta Stotra	—	—
782	Jha/34/5	Svayambhū Stotra	Samantabhadra	—
783	Jha/40/5	„ „	„	—
784	Kha/16	„ „ Saṭīka	„	Prabhācandrācārya

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	19.4×15.5 7.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×10.2 49.7.36	C	Old 1950 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	24.5×11.1 6.20.45	Inc	Old	First page is missing.
P.	D; Skt. Poetry	26.3×10.8 11.13.52	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	13.5×7.3 272.5.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.6×12.3 535.16.19	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	32.8×17.5 72.11.39	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19 4×15.5 2.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 2.11.55	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 14.11.32	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.4×11.9 5.9.16	C	Good	
P.	D; Pkt, Poetry/ Prose	29.7×13.5 79.9.38	C	Good 1919 V. S.	Published.

1	2	3	4	5
785	Kha/161/4	Viṣāpahāra Stotra	Dhanañajaya	—
786	Jha/35/3	" "	"	—
787	Nga/7/19	" "	"	—
788	Nga/7/12 (K)	" "	"	—
789	Nga/6/4	" "	"	—
790	Kha/185/3	" " ṭikā	"	Nāgacan-dra
791	Kha/178/51	" "	"	—
792	Ga/59/2	" "	"	Akhairāja
793	Kha/165/9	" "	"	—
794	Kha/171/2(G)	" " Mūla	"	—
795	Ga/157/8	Vinati Saṁgraha	—	—
796	Jha/31/9	"	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	24.1×12.7 3.13.40	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	16.1×16.1 5.13.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26.8×11.2 4.9.34	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×13 3 4.18.12	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.8×18.1 3 17.18	G	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	21.6×12.2 10.16.39	C	Old	
P.	D;H /Skt. Poetry	20.8×16.6 8.18.20	C	Good 1947 V. S.	Published.
P.	D;Skt./H Prose/ Poetry	29.5×13.5 12.14.48	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Poetry	26.1×10.5 5.7.32	C	Old 1672 V. S.	Published.
P.	D; Skt Poetry	25.4×16.9 5.12.24	C	Good	Published.
P.	D; H. Poetry	15.4×14.6 23.12.18	C	Good	1st page is missing.
P.	D; H. Poetry	18.2×11.8 1.10.22	C	Good 1852 V. S.	

1	2	3	4	5
797	Nga/2/16	Vitarāga Stotra	—	—
798	Jha/28/6	Vṛhat Sahasranāma	—	—
799	Nga/2/45	Yamakāṣṭaka Stotra	Bhaṭṭāraka Amarakīrti	—
800	Nga/2/11	Yogabhakti	—	—
801	Nga/5/5	Abhiṣekapāṭha	—	—
802	Nga/6/17	„ Samaya Kā Pada	—	—
803	Jha/15	Akṛtrima Caityālaya Pūjā	—	—
804	Jha/34/25	Anantavrata Vidhi	—	—
805	Kha/76	Anantavratodyāpana Pūjā	Guṇacandra	—
806	Kha/191/7 (Kha)	Aṅkuraropaṇa Vidhi	—	—
807	Jha/49/3	Arhaddeva Vṛhad Śānti Vidhāna	—	—
808	Kha/143/2	Arhaddeva Śāntikābhiṣeka Vidhi	Jinasenācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	19.4×15.5 7.12.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.2×15.8 2.15.20	Inc	Ol	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 1.13.15	C	Good	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	19.4×11.0 5.13 13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.9×17 1 8 15.18	C	Good 1965 V. S.	
P	D; Skt. Poetry	22.8×18.1 1.17.23	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24 6×16.2 72.22.16	C	Old	
P.	Prose	25.1×16.1 2.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.6×13.4 18.14.54	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	27.5×19.7 15.16.30	C	Old	
P.	D;Skt.H./ Poetry	20.8×16.2 50.14.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	31.4×14.2 90.10.39	C	Old 1800 V. S.	

1	2	3	4	5
809	Kha/177/10 (Kha)	Aṣṭaprakāri Pūjā Vidhāna	—	—
810	Kha/171/4	Atita Caturviṁśati Pūjā	—	—
811	Nga/8/9	Bārasi Caubisi Pūjā Va Uāddyāpana	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
812	Nga/2/30	Bhāvanā Battisi	—	—
813	Nga/6/15	Bisa Bhagavāna Pūjā	—	—
814	Kha/250	Vṛhatsiddhacakra Pāṭha	—	—
815	Kha/75/2	„ „ Vidhāna	—	—
816	Kha/176/5	Vṛhatśānti Pātha	—	—
817	Ga/80/6	Candraśataka	—	—
818	Jha/13/7	Caityālaya Pratiṣṭhā Vidhi	—	—
819	Nga/5/8	Caturviṁśati Pūjā	—	—
820	Kha/78/2	„ Tīrthaṅkara Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	24.1×12.8 1.14.34	C	Good 1871 V. S.	
P.	D;Skt./H. Poetry	20.4×16.6 16.11.28	C	Good 1969 V. S.	
P.	D, Skt. Prose/ Poetry	22.1×18.1 64.13.28	C	Good 1948 V. S.	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	19.4×15.5 13 13.15	C	Good	
P.	D;Skt./H Poetry	22 8×18 1 3.17 21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.7×10.6 119.9 51	C	Old 1961 V. S.	Copied by Sītārāma.
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	31.6×16 2 41.9.42	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	24.6×10.6 4 10.43	C	Good	
P	D; H. Poetry	23.2×15.3 15.22.22	C	Old 1890 V S.	Copied by Nandalāla Pāṇday.
P	D; Skt. Poetry/ Prose	24.5×12.5 7.21.16	C	Good	
P	D; H. Poetry	19.9×18.6 4.13.21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	33.0×14.4 32.12.46	C	Good 1892 V. S.	

1	2	3	4	5
821	Nga/6/1	ṃśati Jinapūjā	Dyānatarāya	—
822	Ga/55/1	Caubīsī Pūjā	Manaraṅga	—
823	Ga/145/1	,, ,,	Vṛndāvana	—
824	Ga/93/2	Caubīsa Tīrthaṅkara Pūjā	,,	—
825	Ga/94/1	Caubīsī Pūjā	,,	—
826	Jha/26/2	Cintāmani Pārśvanātha Pūjā	—	—
827	Jha/16/6	,, ,,	—	—
828	Jha/16/8	,, ,,	—	—
829	Nga/8/4	,, ,,	—	—
830	Ga/103/1	Daśalākṣaṇika Udyāpana	—	—
831/1	Nga/8/7	,, ,,	—	—
831/2	Kha/73/3	,, Vratodyāpana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.2×13.8 11.16.19	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.9×10.8 108.7.35	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; H. Poetry	32.1×16.2 64.10.41	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.5×17.6 [illegible] 11.38	Inc	Old	
P.	D; Skt Poetry	36.3×13.3 65.9.46	C	Good 1962 V. S	
P.	D, Skt Poetry	22.4×16.8 24.20.24	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	24.3×16.1 4.21.18	Inc	Old	
P.	D; Skt Poetry	24.3×16.1 5.19.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 10.13.28	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	34.7×20.4 09.15.42	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 17.13.25	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26.5×16.5 22.11.28	C	Good 1955 V. S.	

1	2	3	4	5
832	Ga/103/7	Daśalakṣaṇa Pūjā	Dyānatarāya	—
833	Ga/103/5	,, ,,	—	—
834	Nga/4/5	,, ,,	—	—
835	Nga/6/12	,, ,,	Dyānatarāya	—
836	Kha/72,3	Darśana Sāmāyika Pāṭha Saṁgraha	—	—
837	Jha/25/2	Devapūjā	Dyānatarāya	—
838	Jha/37	,, ,,	—	—
839	Jha/28/4	,, ,,	—	—
840	Nga/9/1	,, Pūjana	—	—
841	Nga/6/13	,, Śāstra-Gurupūjā	—	—
842	Kha/175/2	Devapūjā (Abhiṣeka Vidhi)	—	—
843	Nga/9/2	Dharmacakra Pāṭha	Yaśonandi Sūri	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	34.7×20.4 3.15.50	C	Good	Published.
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	34.7×20.4 4.15.48	C	Good	
P.	D,Skt./H. Poetry	21.5×17 9 15.10.22	C	Good 1951 V. S.	
P.	D;Apb /H. Poetry	22.8×18.1 11.17.19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26.8×17.2 42.15.42	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; H, Poetry	22.9×12.1 3.18.15		Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.4×13.8 25.10.14	C	Old	First page is missing.
P.	D; Pkt. oetry	20.1×15.8 10 13.17	Inc	Good	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	25.6×20.6 40.10.18	C	Good	
P.	D;Apb./ Skt /H. Poetry	22.8×18.1 10.17.19	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	27.2×14.1 13.16.38	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.5×20.3 48.14.16	C	Good 1962 V. S.	

1	2	3	4	5
844	Jha/16/2	Dharmacakra Pāṭha	—	—
845	Jha/131/8	,, Pūjā	—	—
846	Jha/13/1	Ganadharavalaya Pūjā	—	—
847	Nga/8/1	,, ,,	—	—
848	Ga/110/2	Grahaśānti ,,	—	—
849	Ga/157/2	Homa Vidhāna	Daulatarāma	—
850	Jha/26/5	,, ,,	Āśādhara	—
851	Kha/145/1	Indradhvaja Pūjā	Bhaṭṭāraka Viśvabhūṣaṇa	—
852	Kha/44	,, ,,	,,	—
853	Jha/27	,, ,,	,,	—
854	Nga/6/18	Janmakalyāṇaka Abhiṣeka Jayamālā	—	—
855	Jha/36/4	Jāpa-Vidhi	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	24.3×16.1 6.20.16	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.2×11.8 9.10.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.5×15.6 6.21.20	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	22.2×18.1 8.14.28	C	Good	
P.	D; H. Poetry	21.5×16.6 22.16.14	Inc	Old	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	20 8×15.8 15.13.15	C	Good 1930 V. S.	Laxmicanda seems to be copier.
P.	D; Skt Poetry	22.4×16 8 7.18.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.6×14.4 111.11.46	C	Good 1910 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29.2×19.5 147.12.32	C	Good 1951 V. S.	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	21.8×14.8 103.21.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.8×18.1 2.17.22	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	19.7×14.9 1.11.21	C	Good	

1	2	3	4	5
856	Nga/2/42	Jinapañcakalyāṇaka Jayamālā	—	—
857	Kha/204	Jinendrakalyāṇābhyudaya (Vidyānuvādāṅga)	—	—
858	Kha/207	Jinayajna Fhalodaya	Kalyāṇakīrtimuni	—
859	Nga/44	Jinapratimā Sthāpana Prabandha	Śrībrahma	—
860	Kha/163/5	Jinapurandara Vratodyâpana	—	—
861	Jha/16/7	Kalikuṇḍa Pārsvanātha Pūjā	—	—
862	Jha/26/3	Kalikuṇḍala Pūjā	—	—
863	Kha/244	Kalikuṇḍārādhanā Vidhāna	—	—
864	Kha/278	Karmadahana Pāṭha Bhāṣā	—	—
865	Ga/37	Karmadahana Pūjā	—	—
866	Kha/74/1	,, ,,	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
867	Kha/72/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	34.8×14.4 131.9.53	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	31.5×18.7 86.15.47	C	Good 2451 Vir S.	
P.	D; Skt Prose/ Poetry	31.8×14.2 48.12.37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	25.0×12.1 9.10.55	G	Old 1932 V. S.	Unpublished. Copied by Rāmagopāla.
P	D; Skt Poetry	24.3×16.1 5.20.16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	22.4×16.8 3.20.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.1×15.4 13.12.33	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.9×17.9 7.19.26	Inc	Good	
P.	D; H Poetry	27.1×17.5 22.24.16	C	Good 1951 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29.6×15.2 34.11.45	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	26.5×17.4 10.12.33	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
868	Kha/37/1	Karmadahana Pūjā	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
869	Kha/168	,, ,,	,,	—
870	Jha/48	,, ,,	—	—
871	Nga/8/2	,, ,,	Vādicandra Sūri	—
872	Kha/186/1	Kṣetrapāla ,,	—	—
873	Kha/185/4	Laghusāmāyika Pāṭha	—	—
874	Kha/232	Mahābhiṣeka Vidhāna	Śrutasāgara Sūri	—
875	Nga/2/43	Mahāvīra Jayamālā	—	—
876	Kha/140/3	Mandira Pratiṣṭhā Vidhāna	—	—
877	Kha/242	Mṛtyuñjayārādhanā Vidhāna	—	—
878	Ga/148/1	Mūlasaṁgha Kāṣṭhāsaṁghī	—	—
879	Ga/18/2	Nandīśwara Vidhāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	35.0×18.3 11.13.53	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	24.8×10.6 16.11.46	Inc	Old	Pages disarranged & missing.
P.	D; Skt. Poetry	19.3×18.1 19.15.22	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	22.1×18.1 15.13.26	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	23.2×13.6 9.11.34	C	Old 1836 V. S.	Copied by Cainsukhaaji
P.	D; Pkt / Skt. Prose/ Poetry	16.4×11.2 8.12.24	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	30.5×17.4 40.12.50	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	19.4×15.5 2.13.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	30.4×16.6 38.13.52	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	17.1×15.4 7.12.37	C	Good 1926 V. S.	Copied by Nemirājā.
P.	D;Skt./H. Poetry	30.3×16.5 16.11.33	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	33.3×21.1 16.12.41	C	Good	

1	2	3	4	5
880	Ga/18/1	Nandīswara Vidhāna	Takacanda	—
881	Nga/2/54	Navagraha Arişta Nivāraka Pūjā	—	—
882	Nga/1/4/1	Navakāra Paccisī	Vinodilāla	—
883	Kha/191/1(K)	Nāndīmangala Vidhāna	—	—
884	Kha/234	,, ,,	—	—
885	Jha/32	Nityaniyama Pūjā	—	—
886	Kha/70/2	,, ,,	—	—
887	Nga/4/4	Nityaniyama Pūjā Saṁgraha	—	—
888	Ga/94/2	Nirvāṇa Pūjā	—	—
889	Nga/4/3	Pañcamaṅgala	Rūpacanda	—
890	Kha/87/2	Pañcamī Vratodyāpana	—	—
891	Nga/5/1	Pañcamerū Pūjā	Dyānatarāya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	31.6×17.3 15.13.48	C	Good 1951 V. S.	
P.	D;Skt./H. Poetry	19.2×15.1 6.13.14	C	Good	
P.	D; H Poetry	17.5×13.5 12.13.9	C	Good 1913 V. S.	First page is missing.
P.	D; Skt. Prose	27.5×19.7 20.16.30	C	Old	
P.	D; Skt Prose	30.5×17.4 55.11.50	C	Good	
P.	D,Skt.,H. Poetry	17.8×14.3 24.14.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.4×19.2 9.20.19	Inc	Old	First page damaged & last pages are missing.
P,	D, Skt./ H. Poetry	21.5×17.9 32.10.24	C	Good	
P	D; H. Poetry	36.3×13.3 5.9.35	C	Good 1965 V. S.	
P	D; H. Poetry	21.5×17.9 8.10 28	C	Good 1951 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29.6×13.4 4.14.56	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	18.3×14.5 14.15.17	C	Good	

1	2	3	4	5
892	Kha/95	Pañcaparameṣṭhi Pūjā	—	—
893	Kha/74/2	,, ,,	Yaśonandi	—
894	Ga/103/2	,, ,,	—	—
895	Ga/66	,, Vidhāna	—	—
896	Kha/112/4	,, Pāṭha	Yaśonandi	—
897	Kha/40/1	Pañcakalyāṇaka Pūjā	—	—
898	Jha/23/3	,, ,,	—	—
899	Kha/62/2	,, ,,	—	—
900	Ga/103/1	,, ,,	Bakhtāvara	—
901	Nga/1/1	,, ,,	—	—
902	Kha/112/1	,, Pāṭha	—	—
903	Kha/112/7	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	27.5×13.5 43.9.38	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	29.8×15.1 67.13.44	Inc	Old	First 33 pages are missing.
P.	D; H. Poetry	34.7×20.4 18.15.51	C	Good 1937 V. S.	Copied by Jamunadas.
P.	D; H. Poetry	24.5×22.3 129.15.24	C	Old	Copied by Paṇdit Hirā Lāla.
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 134.10.31	C	Old 1800 Saka-samvat	Published. Written on copy size paper with black & red ink pages are bordered with fine printing.
P.	D; Skt. Poetry	33.0×15.5 21.9.45	C	Old	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.6 21.17.23	C	Good 1953	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	29.6×14.8 9.11.37	Inc	Old	First 19 pages & last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	34.7×20.4 13.15.50	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	15.5×11.8 23.12.25	C	Good 1879 V. S.	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	19.8×15.5 75.12.28	C	Old 1936 V. S.	Written with red& black ink. Pages are boardered with fine printiag. Last three pages are const of fine manadls sketches.
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 47.17.20	Inc	Old	First two pages and last pages are missing.

1	2	3	4	5
904	Nga/5/2	Pañcakalyāṇaka Pāṭha	—	—
905	Kha/184	Pañcakalyāṇakādi Maṇḍala	—	—
906	Nga/3/1	Padmāvatī Pūjā	Haridāsa	—
907	Nga/7/13 (Kha)	Padmāvatīdevī ,,	—	—
908	Jha/26/4	,, Pūjana	—	—
909	Nga/8/3	Palyavidhān Pūjā	—	—
910	Jha/55	Pratiṣṭhākalpa	Akalaṅkadeva	—
911	Kha/222	,, , Tippaṇa (Jina Saṁhitā)	Kumudacandra	—
912	Jha/86	Pratiṣṭhā Pāṭha	Jayasenācārya	—
913	Jha/42	,, ,,	—	—
914	Jha/54	Pratiṣṭhā Sāroddhāra	Bramhasūri	—
915	ha/140/2	Pratiṣṭhāsāra Saṁgraha	Vasunandi Saiddhāntika	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	21.1 × 16.4 37.11.24	C	Good	
P.	— —	22.3 × 18.3 30.0.0	C	Old	It is skeches of thirty mandalas
P.	D; Skt. Poetry	20.6 × 16.5 162.11.18	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20 9 × 16.5 2 17.18	C	Good	
P.	D; H Poetry	22.4 × 16.8 3.14 16	C	Good	
P	D; H, Poetry	22.1 × 18.1 8.13.30		Good	
P	D; Skt. Poetry	21.2 × 16 8 80.14.36	C	Good 1926 V. S.	Copied by Nemirājā.
P.	D; Skt. prose	34.8 × 14 5 39 10.69	C	Good 2451 Saka S.	,, ,,
P.	D; Skt. Poetry	31.7 × 19.8 80.13.30	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24 8 × 12.8 34.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.1 × 16.8 112.14.00	C	Good 2452 Vir.S.	Copied by Nemirāja.
P.	D; Skt. Poetry	27.4 × 16.3 33.14.51	C	Old 1949 V. S.	Pt. Paramanand.

1	2	3	4	5
916	Kha/247	Pratiṣṭhā Vidhāna	Hastimalla	—
917	Kha/176/1	„ Vidhi	—	—
918	Gaa/157/3	Prākṛtaṅhavaṇa	—	—
919	Kha/156/2	Puṇyāhavācana	—	—
920	Kha/98/1	„	—	—
921	Jha/9/1	Puṣpāñjali Pūjā	—	—
922	Kha/169	Pūjā Saṁgraha	—	—
923	Ga/103/6	Ratnatraya Pūjā	Narendrasena	—
924	Jha/23/1	„ „	Jinendrasena	—
925	Jha/51	„ „	„	—
926	Nga/6/9	„ „	Dyānatarāya	—
927	Ga/103/8	„ „	„	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	17.1×15.1 19.11.34	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	27.1×15.4 34.11.32	C	Old 1909 V. S.	Written on coloured thin paper.
P.	D; Pkt. Poetry	17.5×15.5 3.13.27	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	27.4×13.6 6.11.43	C	Old	
P.	D; Stk. Poetry	21.5×12.2 11.9.29	C	Old 1866 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	27.2×12.4 6.13.50	C	Good	
P.	D; Skt./ Pkt./H. Poetry	24.9×21.4 88.26.48	C	Good 1947 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	34.7×20.4 7.15.46	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 12.18.23	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.2×16.2 16.17.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.8×18.1 5.17.23	C	Good	
P.	D; H. Poetry	34.7×20.4 3.15.46	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
928	Kha/263	Ratnatraya Pūjā Udyāpana	Viśvabhūṣaṇa S/o Viśālakīrti	—
929	Ga/193/4	" "	—	—
930	Kha/91	" "	—	—
931	Kha/98/2	" Jayamālā	—	—
932	Kha/165/3	" "	—	—
933	Ga/93/3	Ṛṣimaṇḍala Pūjā	Jawāhara Lāla	—
934	Jha/49/2	" "	"	—
935	Jha/31/5	" "	—	—
936	Ga/80/5	Rūpacandra Śataka	Rūpacandra	—
937	Jha/13/3	Sakalīkaraṇa Vidhāna	—	—
938	Kha/143/3	" "	—	—
939	Jha/45	Samavasaraṇa Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	24.6×19.8 33.15.40	C	Good	This work is presented to Jain Sidhant Bhavan by Buchchulāla Jain in 1987 V.
P.	D; Sk.t/ Pkt. Poetry	34.7×20.4 19.15.52	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	30 4×14.2 8.14.57	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	29.1×13.4 4.7.43	C	Good	
P	D; Skt Poetry	25.6×11.8 3 6.35	C	Old	
P	D; H. Poetry	32.3×16.8 12.13.51	C	Good 1901 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.2 33.14.16	C	Good 1960 V. S.	Durgalāl seems to ba copier.
P.	D; Skt. Poetry	18.2×11.8 19.10.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.2×15.3 4.22.22	C	Old 1890 V. S.	It is written only Doha Chhanda.
P.	D; Skt. Poetry	24.5×16.5 2.23.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	31.5×14.4 9.11.47	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.6×18.1 25.14.52	C	Good	

1	2	3	4	5
940	Kha/79	Samavasarana Pāṭha (Samavaśruti-Pūjā)	Bhaṭṭāraka Kamalakīrti	—
941	Ga/36	Sammedaśikhara Māhātmya	Lālacandra	—
942	Ga/151/2	Sammedaśikhara Pūjā	Jawāhara	—
943	Jha/38/2	,, ,, ,,	—	—
944	Nga/1/5/1	Sarasvatī Pūjā	Sadāsukha	—
945	Ga/77/2	,, ,,	Sadāsukha Dāsa	—
946	Jha/13/2	Saptarṣi ,,	Viśvabhūṣaṇa	—
947	Nga/4/1	,, ,,	Bhaṭṭāraka Viśvabhūṣaṇa	—
948	Jha/23/2	,, ,,	Visva Bhūṣaṇa	—
949	Kha/148	Satcaturtha Jenārcoana	—	—
950	Kha/70/3	Ṣaṇṇavati Kṣetrapāla Pūjā	Srī Viśvasena	—
951	Kha/37/2	Sārdhadvayadvipā Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	27.5×13.6 38.11.49	C	Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×18.3 45.12.40	C	Good 1937 V. S.	
P.	D; H. Poetry	28.8×12.4 15.9.39	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.3×13.2 12.10 15	C	Old	
P.	P; H. Poetry	17.5×14.4 27.11.20	C	Good 1921 V. S.	
P.	D; H. Poetry	24.5×10.6 25.8.33	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	24.5×16.5 8.21.18	C	Good	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	21.2×15.1 12.9.25	C	Good 1951 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	23.3×19.4 8.18.21	C	Good 1956 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	28.1×15.2 95.12.33	C	Good 1935 V. S.	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	29.5×19.0 17.22.21	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	35.5×19.1 93.14.54	C	Old	

1	2	3	4	5
952	Jha/1	Sārdhadvaya dwipasth Jinapūjā	—	—
953	Kha/32	Sāmāyika Paṭha	Bahumuni	—
954	Kha/80/1	Śāntyāṣṭaka Tikā	—	—
955	Jha/13/6	Śāntimantrābhiṣeka	—	—
956	Kha/210/Kha	Śānti Pāṭha	—	—
957	Ga/55/2	,, Vidhān	Śwarūpacand	—
958	Kha/233	,, ,,	—	—
959	Kha/72/1	Śāntidhārā Pāṭha	—	—
960	Nga/6/14	Siddhapūjā	—	—
961	Jha/38/1	,,	—	—
962	Kha/160/4	Sidhacakra	Devendrakirti	—
963	Ga/51	Śikharamāhātmya	Lālacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	31.3×15.6 106.12.40	C	Good 1868 V. S.	Śivalāla seems to be copier.
P.	D; Skt. Poetry	31.0×12.6 16.9.38	C	Old 1836 V. S.	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	26.8×14.3 34.10.43	Inc	Old 2440 Bir. S.	Last pages are missing.
P.	D; Skt./H. Prose	24.5×12.5 17.21.14	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26.8×15.8 7.8.30	Inc	Good 2438 Vir S.	Copied by Dharamcand.
P.	D; H. Poetry	28.5×12.9 43.9.36	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	30.5×17.4 17.12.48		Good	
P.	D; Skt. Prose	28.0×17.0 6.9.31	C	Good 1947 V. S.	
P	D; Skt. Poetry	22.8×18.1 3.17.25	C	Good	
P	D; H. Poetry	14.3×13.2 7.10.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	28.4×10.8 16.9.41	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	30.1×19.1 49.12.34	C	Good 1955 V. S.	

1	2	3	4	5
964	Kha/140/1	Siṁhāsana Pratiṣṭhā	—	—
965	Kha/172/3	Solahakāraṇa Jayamālā	—	—
966	Nga/8/6	,, Udyāpana	—	—
967	Nga/5/7	Sudarśana Pūjā	Śikharacandra	—
968	Jha/28/5	,, ,,	—	—
969	Kha/98/3	Śrutaskandha Vidhāna	—	—
970	Jha/9/2	,, Pūjā	—	—
971	Jha/13/5	Swasti Vidhāna	—	—
972	Nga/2/1	Svādhyāya Pāṭha	—	—
973	Ga/20	Terahadwipa Vidhāna	—	—
974	Jha/14	Tisacaubisi Paṭha	—	—
975	Nga/8/8	Tisacaturviṁśati Pūjā	Śubhacandra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	30.4×17.1 11.13.36	C	Old	Copied by Pt. Paramananda.
P.	D; Pkt. Poetry	27.2×18.2 17.6.29	C	Old 1952 V. S.	Copied by Gobinda Singh Varmā.
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 28.13.30	C	Good	
P.	D; H. Poetry	21.2×16.6 4.14.18	C	Good 1950 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.2×15.8 5.10.24	C	Good 1950 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29.5×13.4 7.14.51	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	27.2×12.4 17.8.28	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.5×16.5 9.22.15	C	Good	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	19.4×15.5 4.13.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	37.5×19.8 183.12.41	Inc	Good	First page & last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	24.4×15.2 73.18.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 49.13.26	C	Good 1774 V. S.	

1	2	3	4	5
976	Ga/137	Tīsa Caubīsī Pūjā	—	—
977	Kha/78/1	Trikāla-Caturviṁśati Pūjā	—	—
978	Ga/19	Trilokasāra ,,	Paṅdit Mahācandra	—
979	Ga/3	,, Vidhāna	Jawāhara Lāla	—
980	Kha/241	Vajrapañjarādhanā Vidhāna	—	—
981	Ga/112/2	Vāsupujya Pūjā	—	—
982	Kha/240	Vāstupūjā Vidhāna	—	—
983	Ga/157/11	Vidyamāna Caturviṁśati Jinapūjā	—	—
984	Ga/157/5	Viṁśati Vidyamāna Jinapūjā	—	—
985	Kha/171/1	,, ,,	Śikharacandra	—
986	Kha/238	Vimānaśudhi Vidhāna	—	—
987	Jha/84	Vratodyotana	Abhradeva	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	28.3×17.9 136.13.35	C	Good 1913 V. S.	
P.	D. Pkt. Poetry	29.6×15.2 13.11.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	42.8×21.3 148.13.33	C	Good 1954 V. S.	
P.	D; H Poetry	36.1×20.5 227.15.44	C	Good 1964 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	17.3×15.5 6.12.37	C	Good	Copied by N. N. Rāya.
P.	D; H, Poetry	20.9×16.5 5.13.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	17.1×15.2 9.12.32	C	Good	Copied by Nemirājā.
P.	D; Skt. poetry	12.7×00.0 29.9.18	Inc	Old	1 to 5 Pages are missing.
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	18.2×11.9 6.12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.9×17.5 60.15.13	C	Old 1941 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	17.1×15.3 9.12.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.3×16.2 22.9.54	C	Good 1987 V. S.	

1	2	3	4	5
988	Jha/49/9	Vribadnbavaṇa	—	—
989	Kha/154	Vṛhacchānti Pāṭha	Dharmadeva	—
990	Jha/122	Bimbanirmāṇa Vidhi	—	—
991	Jha/25/4	Caubīsa Daṇḍaka	—	—
992	Jha/56	Dvijavadana Capeta	—	—
993	Jha/92/2	Lokānuyoga	Jinasenācārya	—
994	Kha/177/2	Maṅdala Cintāmani	—	—
995	Jha/117	Munivaṅśābhyudaya	Cidānaṅda Kavi	—
996	Jha/102	Trailokya Pradīpa	Indravāmadeva	—
997	Ga/88	Yaṅtra dwārā vividha carcā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.2 14 14.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.6×13.3 27.14.49	C	Good 1937 V. S.	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	21.6×17.5 20.13.30	C	Good 1992 V. S.	
P.	D; H. Prose	22.9×15.4 7.18.15	C	Good	
P.	D; Skt Prose/ Poetry	20.9×18.9 28.16.22	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 81.11.49	C	Good 1989 V. S.	
P.	D; H.	00.0×00 0 1.00.00	C	Old	It is a sketch of cintāmani prepared by Munilāla.
P.	D; K. Poetry	33.8×16.3 40.10.45	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.4×16.3 82.11.55	C	Good 1990 V. S.	
P.	D; H. Prose	36.4×28.8 68.25.40	C	Good	Unpublished.

जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

(संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी ग्रन्थ-सूची)

परिशिष्ट

(पुराण, चरित, कथा)

१. आदिपुराण

Opening : श्रीमते सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीयुषे ।
धर्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीयुषे ।।

Closing : यो नाभेस्तनयोऽपि विश्वविदुषां पूज्यः स्वयम्भूरिति
त्यक्ताशेषपरिग्रहोऽपि सुधीयां स्वामीति यः शब्द्यते ।
मध्यस्थोऽपि विनेयसत्वसमितेरेकोपकारीमतो
निर्दानोऽपि बुधैरुपास्यचरणो यः सोऽस्तुवः शांतये ।।

Colophon : इत्यार्षे भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण-संग्रहे प्रथमतीर्थंकर चक्रधरपुराणं परिसमाप्तम् । सप्तचत्वारिंशतितमः पर्वः ।

पुस्तक आदिपुराणजी कर भट्टारक राजेन्द्रकीर्ति जी को दिया लखनऊ में ठाकुरदास की पत्नी ललितपरसाद की बेटी ने मिति माघ वदी सं० १६०५ के साल में ।

द्रष्टव्य—प्र० जै० सा०, पृ० १०२ ।
जि० र० को०, पृ० २६ ।
आमेर भंडार के ग्रंथ, पृ० ५१ ।
रा० सू०, पृ० २६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १ ।
Catg. of sk. & pkt Ms., page-624.

२. आदिपुराण

Opening : देखें, क्र० १ ।

Closing : देखें, क्र० १ ।

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणे

प्रथमतीर्थंकरप्रथमचक्रधरकेवलज्ञाने निर्वाणादिवर्णनं नाम महापुराणं समाप्तम् ॥४७॥ समाप्तोऽयं श्री आदित्यपुराणग्रंथः। अथ श्रीसंवत्सरे नृपति श्रीबिक्रमादित्यराज्ञः सम्वत् १८५१ चैत्रमासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ रविवासरे पट्टनपुरनगरे लिखितमिदं महापुराण उदेरामब्राह्मणेन। ॥ शुभम् ॥

३. आदिपुराण

Opening : देखें, क्र० १।

Closing : देखें, क्र० १।

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणे प्रथमतीर्थंकर प्रथमचक्रधर केवलज्ञान निर्वाणादिवर्णनोनाम महापुराणं समाप्तम्। समाप्तोऽयं श्रीआदिपुराणग्रंथः। अथश्रीसंवत्सरे नृपतिश्री विक्रमादित्यराज्ञः संवत् १७७३ आषाढ़े मासे शुक्लपक्षे चतुर्थी तिथौ-भौमवासरे पाटलिपुरेनगरे लिख्यतमात्मने ब्रह्मचारिणा सानंदेन ॥

४. आदिपुराण

Opening : देखें, क्र० १।

Closing : देखें, क्र० १।

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण-संग्रहे प्रथमतीर्थंकरचक्रधरनिर्वाणगमणपुराण परिसमाप्ति सप्तचत्वारिंश-तमः पर्वः ॥४७॥

रुद्रेंदुनाभिता संख्याप्रवाच्यासुमनीषिभिः।
ज्ञेयमादिपुराणाद्विगणितं सुममीहितम् ॥
.. ..श्री हरिकृष्णसरोजराजराजितपद्पंकज।
सेवतमधुकरसुभटबचनमंत्रिततनुअंकज ।
यह पुरण लिख्यौ पुराणातिन शुभ शुभ कीरति के पगनकौ।
जगमगतु जगमनिजसुअटलशिष्यसुगिरधर परसरामके कथनकौ।
शुभं भव सुमंगलम् श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥

५. आदिपुराण

Opening : प्रणमि सकल सिद्धनिकूं, प्रणमि सकल जिनराय।
प्रणमि सकल सिद्धान्तकूं, नमि गणधर के पाय ॥

Closing : श्रीमत आदि पुराणके, श्लोक भाषा अनुमान ।
तेईस जु सहस्र है, बुधजन करहु बखान ॥

Colophon : मासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे द्वितीयां बृहस्पति संवत् १८६ पुस्तक लिखतं पेमकर्णतस्यात्मपुत्र भातालाल तस्य पुत्र जुगराज अपने पठनार्थ हेतु लिखी ।

६. आदिपुराण टिप्पण

Opening : ॐ नमो वक्रग्रीवाचार्याय श्रीकुन्दकुन्दस्वामिने । अथावध्यवरेण्य-सकलपुण्यचक्रवर्तितीर्थकरपुण्यमहिमावष्टम्भसम्भूतपञ्चकल्याणान्वित····· ।

Closing : ·····स्वपरार्थसिद्धि स्वपरार्थज्ञानं सम्यग्ज्ञानमित्यर्थः । वृषभः श्रेष्ठः ।

Colophon : इति प्रथमचक्रधरपुराणं सप्तचत्वारिंशसमं पर्वपरिसमाप्तम् ।

विशेष : अन्तिम एक पत्र में अंक संदृष्टि दी गई है ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २७ ।

७. आदिनाथ पुराण

Opening : देखें, क्र० १ ।

Closing : श्रीपुराणसमाम्नायमाम्नातं हस्तिमल्लिना ।
तरण्डं सर्वशास्त्राब्धेरखण्डं धारयत्वमुम् ॥

Colophon : इति दशमं पर्व ।
श्रीमदखिलप्राणिगणकल्याणकारकमिदं वृषभनाथपुराणं श्रीवीरवाणीविलास—जैनसिद्धान्तभवनस्य कर्णाटकलिपिविभूषित—जीर्ण-प्राचीन ताडपत्रग्रंथाद्यथामति वेण्पुरनिवासिना लोकनाथशास्त्रिणा उद्धृत-मिति भद्रं भूयात् । महावीर शक २४६६ भाद्रपदकृष्णपक्षाष्टमी ता० २१-६-४३ ।

विशेष : इसमें केवल दस ही पर्व हैं । जबकि प्रारंभ और अन्तिम जिनसेन के आदिपुराण की भांति ही है । इसमें कर्त्ता का नाम हस्तिमल्ल लिखा है ?

८. आदिपुराण वचनिका

Opening : देखें, क्र० ५ ।

Closing : ....विश्वंभर विश्वनाथ जगनाथ का पिता सो तुम भव्यजीव-निकूं सातके अर्थिहोहु ।

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्य......लक्षणमहापुराणे प्रथमतीर्थंकर प्रथमचक्रधरपुराणसप्तचत्वारिंसतम पर्व पूर्ण भया। इति श्री आदिनाथ पुराण भाषा संपूर्ण। शुभं भवतु। मिती चैत्रवदी ११ संवत् १६६१ मु० चन्द्रापुरी मध्ये।

६. आदिनाथ पुराण

Opening : श्रीमंतं त्रिगन्नाथमादितीर्थंकरं परम्॥
फणीद्रेंद्रनरेंद्राच्यं वंदेनंतगुणार्णवम्॥१॥

Closing : अष्टाविंशाधिका शोषट् चत्वारिंशछतप्रमाः॥
अस्याग्रर्हच्चरित्रस्य स्युः श्लोकाः पंडिता बुधैः॥

Colophon : इति श्री वृषभनाथचरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्तिविरचिते वृषभनाथनिर्वाणगमनवर्णनो नाम विंशः सर्गः॥२०॥

मिति पौष शुद्ध १५ चद्रवासरे संवत् १६७०॥ लिखितमिदं पुस्तक मिश्रोपनामक गुलजारीलाल शर्म्मणा। शुभं भवतु। भिण्डाग्रनगरवासोस्ति॥

श्लोक सख्या ५५०० प्रमाण, संवत १७६७ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है।

देखे—जि० र० को०, पृ० २८।
Catg. of skt. & pkt. Ms., Page 624.

१०. आराधनाकथा कोश

Opening : श्रीमद्भव्याब्जसद्भानून् लोकालोकप्रकाशकान्।
आराधना कथाकोश वक्ष्ये नत्वा जिनेश्वरान्॥

Closing : भव्यानां वरशांतिकान्तियिलसद्कीर्तिप्रमोदं श्रियं।
कुर्यात्मिरचिताः विशुद्धशुभदाः श्रीनेमिदत्तेन वैः॥

Colophon : इति श्री कथाकोशे भट्टारक श्रीमल्लिभूषणशिष्य ब्रह्मनेमिदत्तविरचिते श्रीजिनपूजादृष्टांतकथा वर्णनायां चतुर्थपरिच्छेदः समाप्तः। १११/सवत् १८४८/शाके १७१३/समयनाम आश्विनमासे कृ (ष्ण) पक्षे षष्ठी रविवार लिखित पं प्राकृष्णनाथ पटणामध्ये स्वस्थान काशी मध्ये।

देखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३-४।
प्र० जै० सा०, पृ० १०४-१०५।
रा० जै० भं० सू० III, पृ० २२५।

जि० र० को०, पृ० ३२।
Catg. of skt. & pkt. Ms., page, 626.

११. आराधनाकथा कोश

Opening : देखें, क० १०।

Closing : तेषां पादपयोजयुग्मकृपया श्री जैनसूत्रोचिताः,
सम्यग्दर्शनबोधवृत्ततपसामाराधनासत्कथा ॥

Colophon : इति श्री कथाकोशे भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्यब्रह्मनेमिदत्तविरचिते श्री जिनपादपूजाफलदृष्टान्तकथा वर्णनायां चतुर्थः परिच्छेदः समाप्तः। संवत् १८०७ वर्षे फाल्गुन सुदी ६ बुधे लिखितम् श्री श्री साहिजहआबाद मध्ये। शुभं भवतु। श्रीरस्तु। लेखकपाठकयोः।

१२. आराधनासार

Opening : श्री अरिहंत जिनेसुरजी इस ग्रंथ की आदि सुमंगलदाई।
लोक अलोक प्रकाशकदेव समोष्टत आदिक सद्गलहाई ॥

Closing : जैवन्तो निशदिन रहो, जैनधर्म सुखकंद।
जा प्रसाद राजा प्रजा, पावो बहुआनन्द ॥

Colophon : इति श्री आराधनासार कथाकोष समाप्तम्। शुभम्।

१३. भद्रबाहुचरित्र

Opening : सद्बोधभानुनाभित्वा जनानां मातरं तमः।
यः सन्मतित्वमापन्नः सन्मतिः सन्मतिं क्रियात् ॥

Closing : श्वेतांशुकमतोद्भूति मूढान् ज्ञापयितुं जनान्।
व्यरीरचमिमं ग्रंथं, न स्व पांडित्यगर्वतः ॥

Colophon : इतिश्री भद्रबाहुचरित्रे आचार्य श्री रत्ननंदिविरचिते श्वेतांबरमतोत्पत्ति आपलिमतोत्पत्ति वर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः। इति भद्रबाहुचरित्रं समाप्तम्। पंडितदयारामेन लिखापितम्।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४।
प्र० जै० सा०, पृ० १९३।
जि० र० को०, पृ० २९१।

१४. भद्रबाहुचरित्र

Opening : देखें—क्र० १३ ।

Closing : देखें—क्र० १३ ।

Colophon : इति श्री भद्रबाहुचरित्रे आचार्य्य श्री रत्ननंदिविरचिते श्वेतांबरमतोत्पत्ति आपलिमतोत्पत्तिवर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः ।। इति श्री भद्रबाहुचरित्र समाप्तम् ।। लीलकण्ठदासेन लिखितम् ।।

१५. भगवत् पुराण

Opening :
श्रीमंतं परमेश्वरं शिवकरं लीलानिवासं शिवम्,
नोम्यानन्तशिवं महोदयमहं लोकत्रयार्च्चास्पदम् ।
त योगीन्द्रनृपेन्द्रदेवनिकरैः संस्तूयमानं सदा,
यदृष्टया भुवनत्रयेपि नितरा पूज्यो भवेन्मानुषः ।।

Closing :
खखवह्निशिखिश्लोकसंख्या प्रोक्ता कवीशिना ।
श्रीमतोऽस्य पुराणस्य लेखयतु सुखार्थिना ।।

Colophon : इति श्री भगवत्पुराणे महाप्रासादोद्धारसंदर्भे भ० श्री रत्नभूषण भ० श्री जयकीर्त्याम्नायप्रवेकनरपस्याचार्य शिष्यब्रह्ममगलाग्रज मंडलाचार्य श्री केशवसेनविरचिते श्रीऋषभनिर्वाणानंदनाटक वर्णननामा द्वाविंशतितमः स्कन्धः ।।२२।। संवत् १६६८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे पूर्णमास्यां तिथौ भृगुवासरे श्री अवतिकापुर्यां श्री महावीरचैत्यालये श्रीमत् काष्ठासघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भ० श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्रीरत्नभूषणतत्पट्टे भ० श्रीजयकीर्ति तद्गुरुभ्रातामडलाचार्य श्री केशवसेन तच्छिष्याचार्य श्री विश्वकीर्ति अवन्म ब्र० कनकसागर ब्र० दीपजी सिद्धान्ती ब्र० राजसागर ब्र० इन्द्रसागर ब्र० मनोहर बा० दाना बा० लक्ष्मी बा० कमलावनी पं० चपायण पं० योगराज पं० मायाराम प० बलभद्र इति संघाष्टक चिर जीयात् । आचार्य श्री विश्वकीर्तिपठनार्थं जोसी उद्धवेन लिखितमिदं पुस्तकं चिरंतेषु ।
सवत् १६८६ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिथौ श्री आरानगर्यां श्री स्व० देवकुमारेण स्थापित श्री जैन सिद्धान्तभवने तत्पुत्रबाबू निर्मल-कुमारस्य मंत्रित्वे श्री पं० के० भुजवलीशास्त्रिणः अध्यक्षत्वे च संग्रहार्थ-मिद पुस्तकं लिखितम् । शुभमस्तु ।

१६. भक्तामर कथा

Opening : प्रथम पीठि कर जोरि करि शुद्ध भावते शिर नाइयै ।

वसुसिद्धि अरु नव निधि वृद्धि सु रिद्धि जातैं पाइये ॥

Closing : कही विनोदीलाल शारदगुरु परतापतैं ।
पूरन भई रसाल अद्भुत कथा सुहावनी ॥

Colophon : इति श्री प्रथम जिनेन्द्रस्तवने श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लालविनोदीकृत ....कथा सम्पूर्णम् । सब मिलके चौपही दोहा ॥ ३७५६ ॥ संवत् ॥ १९३८ मिती सावनशुक्लपक्षे अष्टम्यां मंगलवासरे आरा नगरे सम्पूर्णम् ।

१७. भक्तामर कथा

Opening : देखें, क्र० १६ ।

Closing : संख्या परम रसाल देखहु याही ग्रन्थ की ।
कही विनोदीलाल षट् सहस्त्र द्वै सतक पुनि ॥

Colophon : श्री इति प्रथम जिनेन्द्र स्तवन श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लाल विनोदीकृत चौपाई बध अड़तालीसमी कथा सम्पूर्ण । सर्वकथा चौपाई छंद श्लोक दोहा अरिल्ल (अडिल्ल) कुंडलिया सोरठा काव्य ॥ ३७६० ॥ सपूर्ण शुभमस्तु । पौषमासे कृष्णपक्षे तिथौ ११ चंद्रवासरे संवत् १९५४ । दस्तखत बलदेवदत्त पंडित के ।

१८. भक्तामर चरित्र

Opening : देखें, क्र० १६ ।

Closing : देखें, क्र० १७ ।

Colophon : इति श्री प्रथम जिनेन्द्रस्तवने श्री भक्तामरचरित्रे भाषा लाल विनोदि कृत चौपाई बध अड़तालीसमी कथा समाप्तम् । सर्वकथा चौपाई छंद श्लोक दोहा अरिल्ल कुंडलिया सोरठा काव्य । ३७६० । मिति श्रावणकृष्ण दशम्यां रोज मगर (ल) वार संवत् १९५५ । श्लोक ५४०० ।

यह ग्रंथ लिखावित बाबू श्रीयांशदास वास्ते लोचना बीबी कि दान देने श्री मुनीद्रकीर्ति जी भट्टारक जी को देने को लिखा चुनीमाली ने ।

१९. चन्द्रप्रभचरित्र

Opening : वन्देऽहं सहजानन्दकन्दलीकन्दबन्धुरम् ।
चन्द्राङ्कं चन्द्रसंकाशं चन्द्रनाथं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥

चन्द्रप्रभार्हद्धीरस्य काव्यं व्याख्यायते मया ।
विश्वमन्वयरूपेण स्पष्टसंस्कृतभाषया ॥ २ ॥

Closing : इति वीरनन्दिकृतावुदयाङ्के चन्द्रप्रभचरिते महाकाव्ये तद्व्याख्याने च विद्वन्मनोवल्लभाख्ये अष्टादशः सर्गः समाप्तः ।

Colophon : शक वर्ष १७६१ नेत्रविकारि संवत्सरद माघ शुद्ध १ .... श्रीमच्चारुकीर्ति पंडिताचार्यवर्य स्वामियवर पादकमल भृंगोपमानियाद वेलगुलदयि वर्गदवसिष्टगोत्रद विजयं णैयनवी चन्द्रप्रभा काव्यदव्याख्यानद पुस्तक बरदु संपूर्णवायितु आचद्रार्कपर्यंत भद्रं शुभं मगलम् ।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ११६ ।
Cat. of Skt. & Pkt. Ms., Page-640.
Cat. of Skt. Ms., P. 302.

२०. चन्द्रप्रभ पुराण

Opening : श्री चन्द्रप्रभु पदकमल, हाथ जोड़ गिर नाय ।
प्रणम शारदा मातफुन, गुरु के लागू पाय ॥

Closing : यही उत्तम जगत माही चार सब अघहार ।
सरन इनही की मुहीरा, नात भवदध तार ॥
हमरै यही मंगलचार ॥

Colophon : इति श्री चद्रप्रभपुराणे वक्कुलनामगाम वर्णनो नाम सत्तरमों अधिकार पूर्णभया । इति श्री चद्रप्रभपुराण भाषा सम्पूर्णम् ।
मिति जेठवदी १ सवत् १९७८ । शुभ भवत् ।

२१. चतुर्विंशति जिन भवावलि

Opening : जयादिब्रह्मा च महाबलोभवत्,
ललितन्यदेहत्ववज्रजंघकः ।
आर्यस्ततः श्रीधरको विधिस्ततो,
च्युतेन्द्र नाभिस्त्वहमिंद्र कर्षभे ॥

Closing : देवो विश्वकनंदिदेवहरषयो भूभारकः केशरी,
धर्मातारकसिंहदेवकनको द्योतं पुरो लान्तवे ।
राजाभूद्हरिषेणकसुरइतश्चक्रीसुरोनदकः,
स्वर्गे षोडशमेहरिंजिनवरोवीरोभवतारास्मृताः ॥

Colophon : इति चतुर्विंशति जिन भवावलि संपूर्णम् ।

२२. चारुदत्तचरित्र

Opening : चरण नमों महावीरके, हरन सर्व दुखदंद ।
तरन जु तारण जगत को, करन महासुख कंद ॥

Closing : चारुदत्त संपति विभौ अहिमिंदर पद कहि बरन ।
इस भांति चरित वाचो सुनो सकल सग मंगलकरण ॥

Colophon : इति श्री चारुदत्त चरित्र भाषा भारामल्ल विरचितं सम्पूर्णम् । लिखितं गुलजारीलाल निवासी रुस्तमगढ़ के जैनी पद्मावती पुरवार रोज वृहस्पतिवार संवत् १९६० मिती चैत्र शुक्ल ५ पचमी शुभम् ।

२३. चेतनचरित्र

Opening : श्रीजिनचरण प्रणामकरि, भविक भगति उरआनि ।
चेतन अरु कछु करमको, कहों चरित्र बखानि ॥

Closing : सवत सत्रहसैंबनीम में, जेठ सप्तमी आदि ।
श्री गुरुवार सुहावनो, रचना कही अनादि ॥

Colophon : इति श्री चेतनकर्मचरित्र संपूर्णम् । मिति श्रावण सुदी १३ सवत् १९५८ ।

२४. चेतनचरित्र नाटक

Opening : पारस चरन सरोजरज, सरस सुधारसमार ।
जेहि सेवत जड़ता नसै, सज सुबुद्धि सुखसार ॥ १ ॥
पंच परमपद को नमो, सर्वसिद्धि दातार ।
चेतन कर्मचरित्र को कहूं कछू अधिकार ॥ २ ॥

Closing : आप विराजो महल आपने समर भूमि जाता हूं,
जितने आये सबी को बंदी करके लाता हूं ।
खुशी मनावे जिनवर ध्यावो समर जीति मैं आता हूं,
मैं भी आपका राजबीर दास धीर कहलाता हूं ।
अपने मालिक के दुश्मन को सूरबीर यदि पाता है,
तो मारे बिन निरख गज केहरि क्या गम खाता है ॥

Colophon : इति चेतनचरित्र नाटक सपूर्ण ।

२५. दर्शनकथा

Opening : श्री रिषभनाथ जिन प्रणमौ तोहि ।
अजर अमर पद दीजे मोहि ।।
अजित जिनेश्वर वंदन करौ ।
कर्मकलंक छिनक मे हरौ ।।

Closing : दर्शन कथा पूरणभई, पढ़ै सुनै सब कोय ।
दुख दलिद्र (दरिद्र) नाशै सबै, तुरत महासुख होय ।।
।। ८१ ।।

Colophon : इति श्रीदर्शनकथा सम्पूर्ण । मिती अगहन वदी ३० संवत् १९६१ मुकाम चन्द्रापुरी ।

२६. दर्शनकथा

Opening : देखें क्र० २५ ।

Closing : दुख दरिद्र सब जाय नशाय ।
जो यह कथा सुनो मनलाय ।।
पुत्रकलित्र बढ़ै परिवार ।
जो यह कथा सुनै नरनार ।।

Colopnon : इति दर्शन कथा सम्पूर्णम् ।
यह ग्रन्थ संवत् १९४० में मनोहरदास आरा के मंदिर में चढ़ाया गया था ।

२७. दशलाक्षणी कथा

Opening : अर्हंतं भारती विद्यानंदिसद्गुरू-पंकजम् ।
प्रणम्य विनयात् वक्ष्ये दशलाक्षणिकं व्रतम् ।। १ ।।
राजगेहात्ममागन्य वैभारवरभूधरम् ।
श्रेणिको नमतिस्मोच्चै. वीरं गंभीरधीधरम् ।। २ ।।

Closing : जातः श्रीमतिमूल संघतिलके श्री कुंदकुंदान्वये,
विद्यानंदि. गुरुर्गरिष्ठमहिमा भव्यात्मसंबुद्धये ।
तच्छिष्य श्रुतसागरेण रचित कल्याणकीर्त्याग्रहे,
शदेयाद्दशलाक्षणव्रतमिदं भूयाच्चसत्सपदे ।।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणिक कथा समाप्ताः ।

२८. दशलाक्षणीकथा

Opening : रिषभनाथ प्रनमूं सदा, गुरुगनधर के पाय ।
तीन भवन विख्यात है, सब प्राणी सुषदाय ॥

Closing : भूला चूका होय जो, लीजौ सुकवि सुधार ।
मोह दोस दीजै नहीं, करी जु भव हितकार ॥

Colophon : इति दशलाक्षणी कथा समाप्तम् ।

२९. दान कथा

Opening देव नमो अरिहंत सदा और सिद्ध समूहन कौ चितलाई ।
सूरज आचार को भजी और नमों उपध्याय के नित पाई ॥

Closing : दानकथा पूरन भई, पढ़ै सुनै नित सोई ।
दुख दालिद्र (दारिद्र) नाशै सबै, तुरत महासुख होई ॥

Colophon . इति श्री दानकथा सपूर्ण । लिखितं पंडित रामनाथ पुरोहित मुकाम चन्द्रापुरी ।

३०. धर्मशर्माभ्युदय

Opening : श्री नाभिसूनोश्चिरमंङ्घ्रियुग्म नखेंदवः कौमुदमेधयंतु
यत्रानमन्नाकिनरेंद्रचक्रचूडास्मगर्भप्रतिबिंबमेणः ॥ १ ॥

Closing : अभजदथविचित्रैर्वाक् प्रसूनोपचारैः
प्रभ्रि ह चंद्राराधितोमोक्षलक्ष्मीम् ।
तदनुतदनुयायी प्रापपर्यंतपूजोपचित
सुकृतराशिः स्वं पदं नापिलोकः ॥ १२५ ॥

Colophon इति श्री महाकवि हरिचन्द्रविरचिते धर्मशर्माभ्युदये महाकाव्ये श्री धर्मनाथ निर्वाणगमनो नाम एकविंशतितमः सर्गः ॥ २१ ॥ श्री संवत् १८८६ कातिक धवल पंचम्याम् । अग्रवाल आरानगरे वासलगोत्रे बाबू जीवनलाल जी तथा गुपाल चंद जी तेन इदं शास्त्रं लिखापितं तथा उत्तमचंदजी बा जो धनलाल जी अछेलाल तथा प्यारेलालजी इदं शास्त्रं लिखापितम् ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ९ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १६२ ।

(३) रा० सू०, पृ० २१० ।
(४) जि० र० को०, पृ०१६३ ।
(5) Catg. of Skt. & Pkt. Ms. Page-656
(6) Cat. of Skt. Ms. P. 302

३१. धर्मशर्माभ्युदय सटीक

Opening : जयति जगति मोहध्वातविध्वंसदीपः,
स्फुरित कनकमूर्तिर्ध्यान लीनो जिनेन्द्रः ।
यदुपरि परिकीर्णस्कंधदेशाजटाली,
विगलितसरलांतः कज्जलाभाविभर्ति ॥

Closing : ....तदनुयायी तत्सेवातत्परः सन् कृतनिर्वाणकल्याणमहोत्सवोपार्जितपुण्यराशिर्निजं निजं स्थानं चतुर्णिकायामरसघातो जगाम ।

Colophon : इति श्री मण्डलाचार्य श्री ललितकीर्तिशिष्य पंडित श्री यशःकीर्तिविरचितायां संदेहध्वांतदीपिकायां धर्मशर्माभ्युदयटीकायां एकविंशतिमः सर्गः । स्वस्तिश्री संवत् १६५२ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यातिथौ गुरुवासरे अम्बावती वास्तव्ये राजाधिराज श्रीमानसिंह जी राज्ये श्री नेमिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदान्वये भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्तिः तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोधागोत्र सा पचाइण भार्या पुंहसिरि तत् पुत्रौ द्वौ प्रथम सा. नूना द्वितीय सा. पूना ....नूना पु. सा. वीरदास भार्या ल्होकन चांदणदे सिणारदे एतान्मिलित्वा धर्मशर्माभ्युदयकाव्यश्च टीका लिखाप्य आचार्य लक्ष्मी चन्द्रायप्रदत्ता ।

शुभमिति ज्येष्ठशुक्ला द्वितीया शुक्रवार विक्रम सम्वत् १९९० को यह पुस्तक लिखकर पूर्ण हुई, जिसे आरा निवासी स्वर्गीय बाबू देवकुमार द्वारा स्थापित श्री जैनसिद्धान्त भवन में सग्रह करने के लिए पं० के० भुजबली जी शास्त्री अध्यक्ष के द्वारा बाबू निर्मल कुमार जी मंत्री जैन सिद्धान्त भवन ने लिखवाया । रोशनलाल ने लिखा ।

३२. धन्यकुमार चरित्र

Opening : श्रीमंतं जिनं नत्वा केवलज्ञानलोचनम् ।
वक्ष्ये धन्यकुमारस्य वृत्तं भव्यानुरंजनम् ।।

Closing : तां त्रिः परीत्य सद्भक्त्या तं दृष्ट्वा केवले क्षणम् ।
कनत्कांचनसद्रत्नं सिंहासनमधिस्थितम् ।।

Colophon : उपलब्ध नहीं ।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० १८७ ।

३३. धन्यकुमार चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३२ ।

Closing . इह निचोर (ड़) इस ग्रन्थ को यही धर्म को मूर (मूल) ।
सुद्धातम ल्यौ लाये मिटै कर्म अंकूर ।। ६४ ।।

Colophon : इति धनकुमार चरित्र सम्पूर्णम् । संवत् १९३२ चैत्र वदि ७ शुक्रवार शुभम् । श्लोक संख्या १२२४ ।

३४. धन्यकुमार चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३२ ।

Closing : धन्यकुमार चरित्र यह पूरन भयो विशाल ।
(प) ढ़त सुनत सुख उपजै आनंद मंगलकार ।।

Colophon : इति धन्यकुमार चरित्र सम्पूर्णम् ।

३५. दुधारस द्वादसी कथा

Opening : वीनवे उग्रसेन की लाडली कर जोरिके नेमि के आगे खड़ी ।
तुम काहे पिया गिरनार बैठो हमसेती कहो कहा चूक परी ।।

Closing : कथाकोष में जो कह्या, ताको देखि विचार ।
सेवक भाषा मनधरी, पढ़ो भव्य चितधार ।।

Colophon : इति दुधारस द्वादशी कथा समाप्ता ।
लिख्यतं प्रभूदास अग्रवाला । मिति वैशाख सुदी ६ शुक्रवार संवत् १९१८ ।

३६. गजसिंह गुणमाला चरित्र

Opening : श्री ऋषभादिक जिनवर नमूं, चौबीसों सुखकंद।
दरसण दुखदूरै हरै, तामैं नित आनंद॥

Closing : जो नरहनारी सीलधारी तामगति अतिमंडणी।
शिवसुखकरणी दुखहरणी कमयमयलविहमणी॥

Colophon : इति श्री गजसिंह गुणमालचरित्रे गुणमाल तपकरण……उपधानवहन राजा-धर्मशास्त्रबारमा रचना श्रवण हुकमकुमर पदस्थापन राजागुणमाल दीक्षाग्रहणदेवलोक गमनाधिकार षष्टं खंड संपूर्णः। इति श्री तपगच्छमध्ये चंद्रशाखायां पंडित श्री मुक्तिचंद्र तत् शिष्य पंडित श्री खेमचन्द्रविरचितायां गुणमाल चौपई सम्पूर्णः। संवत् १७८८ वर्षे मिति चैत्र सुदि पंचमी दिने जतिकुमला लिपिकृतं श्री मालपुरामध्ये। श्रीरस्तु।

३७. गजसिंह गुणमाला चरित्र

Opening : देखें-क्र० ३६।

Closing : देखें-क्र० ३६।

Colophon : इति श्री गजसिंह गुणमाला चरित्रे गुणमाला तपकरण तपउपधान वहण राजाधर्मशास्त्रबारमारचना श्रवण हुकम कुमार पट्टस्थापन राजा गुणमाला दीक्षाग्रहणदेवलोक गमनाधिकार षष्ट खंड समाप्त। मिति फागुन वदी १५ संवत् १९८४ श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा लिखित भुजबल प्रसाद जैन गारयौन जिला-सागर।

३८. हनुमान चरित्र

Opening : सद्बोधसिंधु चन्द्राय, सुव्रताय जिनेशिने।
सुव्रताय नमोनित्यं, धर्मशर्मार्थ सिद्धये॥

Closing : पठकः पाठकत्वेन, वक्ता, श्रोता च भावकं,
चिरं नंद्यादयं ग्रंथः तेन सार्द्धं युगावधिः।
प्रमाणमस्य ग्रंथस्य द्विसहस्रमितं बुधैः
श्लोकानामिहमंतव्यं हनूमच्चरित्रे शुभे॥

Colophon : इति श्री हनुमच्चरित्रे ब्रह्मजितविरचिते एकादशः सर्गः

पर्याप्त: (समाप्त:)। शुभं भवतु।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२।
(२) जि० र० को०, पृ० ४५६।
(३) आ० सू०, पृ० १६०।
(४) रा० सू० III, पृ० २२१।
(५) रा० सू० II, पृ० २० एवं ५३४।
(6) Catg. of Skt. & Pkt. Ms. Page-714.

३९. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८।

Closing : देखें, क्र० ३८।

Colophon : इति श्री हनुमंच्चरित्रे ब्रह्माजितविरचिते द्वादशसर्ग: समाप्त: ॥

४०. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८।

Closing : देखें, क्र० ३८।

Colophon : इति श्री हनुमच्चरित्रे ब्रह्माजितविरचिते एकादश: सर्ग: समाप्त: ॥ १२ ॥ हस्ताक्षर बटुक प्रसाद ॥ मुकाम जैन सिद्धान्त भवन–आरा ॥ संवत् १९७८ ॥

४१. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८।

Closing : देखें, क्र० ३८।

Colophon : इति श्री हनुमानचरित्रे ब्रह्माजितविरचिते द्वादसं सर्ग समाप्त। मिती फागुनवदी ३ संवत् १९८४ लिख्यतं भुजवलप्रसाद जैनी मुकाम मालथौन जिला सागर निवासी ने।

४२. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८।

Closing : जिनवर एक वचन मो देहु। कुगुरु कुशास्त्र निवारहु ऐहु ॥
होहि सदा सन्यासह मरन। भव भव धर्म जिनेश्वर सरन ॥

Colophon : इति श्री हनुमंतचरित्रे आचार्य श्री अनंतकीर्तिविरचिते हनुमन्निर्वाणगमनो नाम पंचमो परिच्छेद। इति श्री हनुमच्चरित्र-सम्पूर्णम्। संवत् १९०१ का शाके १७६६ रा जेठ मासे कृष्णपक्षे तिथौ १३ बुधवासरे सवाई राजा रामसिंह जी को राज। लिखतं महात्मा जोशीपन्नालाल लिखी सवाई जयपुर म (में)। श्रीरस्तु।

४३ हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८।

Closing : देखें, क्र० ४२।

Colophon : इति श्री हनुमानचरित्र आचार्य श्री अनंतकीर्तिविरचिते हनुमन्निर्वाणगमनोनाम पचमो परिच्छद। इति हनुमानचरित्र सम्पूर्णम्। श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ रविवासरे सवत् १९५५।

४४. हरिवंश पुराण

Opening : सुरवइमय वंदहु तिजणंदहु, मिरि अरिट्ठणेमिहु चरण।
पणविवितहु वंमहु कहजयसंसहु भणमि सवणमणसुदरयणं॥

Closing : चिरुणंदउ सच्छो जामणहच्छो रविससिगणहणरकत्त गणु।
कइयणणिरुमोहहु दोसु णिरोहहु सुणउपम‥‥भव्वयणु॥

Colophon : इय हरिवंसपुराणे मणवंछियफलेण सुपहाणे सिरिपंडिय रइधूवणिए सिरिमहाभव्वसाधु लाहासुय संघाहिवणोणाणमणिए सिरि अरिट्ठणेमि णिव्वाणगमणं तहेव दायाग्वं मुद्देरण णाम चउदहमो सधो परिछेऊ सम्मत्तो संधि॥ १४॥

अथसंवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १६५८ वर्षे वैशाखशुदि पंचमी आदित्यवासरे‥‥‥‥भगउतीदासतेनेदं हरिवंम शास्त्रलिखापितम्, ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं लिखापितम्। इति हरि-पुराणरयधूकृत समाप्तम्। मिति वैशाखशुक्ल १२ संवत् १९८७ ह० प० शिवदयाल चौबे चन्देरी वालों के।

४५. हरिवंश पुराण

Opening : पयडिय जय हंसहो कुणय विहंसहो।
भविय कमल सरहंसहो पणविव जिणहंसहो॥

Closing : जामहि णहु सायरु चंदु दिवायरु, ता णंदउ ठिवढाहु कुलु ।
जेवि राहुहि चरियउ कुरुवंस हूसहियउ, कारविउ हुय पावमालु ।।

Colophon : इय हरिवंसपुराणे कुरुवसाहिट्ठुए विबुह चित्ताणुरंजणे सिरि गुणकित्ति सीस मुणि जसकित्ति विरइये साहु ठिवढा णाम किए णेमणाह जुधिष्ठर भीमञ्जुण णिव्वाणगमणं णिकुल सहदेव सव्वट्ठुसिद्धि गमण वण्णणो णांम तेरहमो सग्गो समत्तो । संधि १३ । इति हरवंस पुराण समाप्त । चैत्र सुदी १४ संवत् ८५ ? ।

४६. हरिवंश पुराण

Opening : सिद्धं सम्पूर्ण ······· प्रतिपादनम् ।।

Closing : रक्षा कुर्वन्तु संघस्य जिनशासनदेवता ।
पालयतोखिलं लोक भव्यसज्ज्ञानवत्सला ।।

Colophon : इति श्री हरिवंशपुराणे ब्रह्म श्री जिनदास विरचिते नेमिनिर्वाण गमन वर्णनो नाम चत्वारिंशतमः सर्गः । इति हरिवंश पुराण समाप्तम् ।

यह पुस्तक पं० पन्नालाल जी (उदासीन आश्रम तुकोगज इंदौर) के मार्फत लिखाई गई । मिति माघकृष्ण २ सं० १९८८ ह० पं० शिवदयाल चौबे चन्देरी वालों के ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४६० ।
(२) आ० सू०, पृ० १६१ ।
(३) जैन ग्रन्थ प्र० सं. I, पृ. १०० ।
(४) प्रश० सं० II, पृ० ७० ।
(५) रा० सू० II, पृ० २१८ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २२४ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P 715.

४७. हरिवंश पुराण

Opening : सिद्धं ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षणं द्रव्यसाधनम् ।
जैनं द्रव्याद्यपेक्षातः साधनाद्ययशासनम् ।। १ ।।

Closing : आशीर्वाद ।। मांगल्यम् ········· ।।

Colophon : अथसंवत्सरेऽस्मिन् श्रीविक्रमादित्यमहीभृतोगुरुद्रा ।

संवत् १८६४। तत्र शाके १७२६। वैसाखमासे कृष्णपक्षे द्वितीया भृगुवासरे। लिखितं भोपतिराम तिवारी। पोथीलिखी मैनपुरी मौहोकमगंजमध्य: ॥

यावज्जिनस्य धर्मोऽयं लोकोस्थितिदयापर:।
यावत्सुरनदीप्रवाहस्तावन्नंदतु पुस्तकम् ॥
यादृशं पुस्तक............ दीयते ॥

द्रष्टव्य-(१) जि० र० को०, पृ० ४६०।
(२) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३।

४८. हरिवंश पुराण

Opening : देखें, क्र० ४७।

Closing :

सेवक नरपति को सही, नाम सुदौलतराम।
तातैं इह भाषा करी, जपकरि जिनवर नाम ॥
श्रीहरिवंश पुराण की, भाषा सुनऊ सुजान।
सकलग्रंथ संख्या भई, सहस एकीस प्रमाण ॥

Colophon : इति श्रीहरिवंश पुराण भाषा वचनिका सपूर्णम्। श्लोक अनुष्टुप संख्या एकीस हजार। २१,०००। सवत् १८८८ मासोत्तमे मासे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे सप्तम्या सोमवासरे। पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मा लिखि। पटनपुरमध्ये गायघाट क्षत्री महलमध्य निवास शुभमस्तु कल्याणकमस्तु। सिद्धिरस्तु मंगलमस्तु पुस्तक लिखापित बाबु जिनवरदास जी ने।

४९. हरिवंश पुराण

Opening : देखें, क्र० ४७।

Closing :

तवहिदेव तासौ फिरि जोई।
तो सौ मूरि ... ।

Colophon : अनुपलब्ध।

५०. जम्बूस्वामी चरित्र (११ सर्ग)

Opening :

श्रीवर्धमानतीर्थेशं वंदे मुक्तिवधूवरं।
कारुण्यजलधिं देवं देवाधिपनमस्कृतम् ॥

Closing : द्वाविंशतिप्रमाणानि शतान्यत्रचरित्रके ।
त्रिंशद्युतानिश्लोकानां शुभानां संति निश्चितम् ॥

Colophon : इति श्री जम्बूस्वामीचरित्रे ब्रह्मश्रीजिनदासविरचिते विद्युच्चरमहामुनि सर्वार्थसिद्धिगमनं नामैकादशाः सर्गः ।

यावल्लवण समुद्रो यावन्नक्षत्रमंडितो मेरु ।
यावद्भास्करचन्द्रो यत्तावदयं पुस्तको जयतु ॥

संवत् १६०८ की प्रति से यह नकल की गई है । मिति ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां १४ शनिवासरे सवत् १६७१ लिखितमिद पुस्तकं मिश्रोनामक गुलजारीलालशर्मणा भिंडाख्यनगरवासो...स्त रि० ग्वालियर ।

यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिख्यते मया ।
यदि शुद्धमशुद्धं वा ममदोषो न दीयते ॥

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १२७ ।
(३) आ० सू०, पृ० ५६ ।
(४) रा० सू० I, पृ० ६८, ६६, १३१, २१० ।
(५) जि० र० को०, पृ० १३२ ।

५१. जम्बूस्वामी चरित्र

Opening : देखें, क्र० ५० ।

Closing : देखें, क्र० ५० ।

Colophon : इत्यार्षे श्री जंबूस्वामीचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते विद्युच्चरमहामुनि सर्वार्थसिद्धिगमनो नामेकादशः सर्गः ॥ ११ ॥

श्री संवत् १६६४ वर्षे आसोज सुदि १५ शुक्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषणगुरुपदेशात भीलोडा वास्तव्यकुंबडज्ञातीय सां, की का ...र्यावि-नकादेनायाः सुत सां. लाड़का भार्या ललतादेनायाः सुत...र ज भार्यादाडमाद भ्रातृमहीआ भ्रातृगणे शयति, स्वज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं बाङ्कीयवनाय इद लिखाप्य दत्तम् । लेखकपाठकयोः शुभं भवतु । साहरांमाकेन लिखितमिदं वर्द्धतांजिनशासनं श्री । श्री जंबूस्वामिचरित्र भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिकृत । भ. श्री जिनचन्द्रस्य पुस्तकमिदं ।

५२. जम्बूस्वामी चरित्र

Opening :　उद्दीपीकृतपरमानंदाद्यात्मचतुष्टयं च बुद्धया ।
निगदति यस्य गर्भाद्युत्सवमिहतं स्तुवे वीरम् ॥

Closing :　जंबूस्वामीजिनाधीशो भूयान्मंगलसिद्धये ।
भवता भुवि भो भव्याः श्री वीरांतिमकेवली ॥

Colophon :　इति श्री जंबूस्वामिचरित्रे भगवच्छ्रीपश्चिमतीर्थंकरोपदेशानुसरित स्याद्वादानवद्यगद्यपद्यविद्याविशारद पंडित राजमल्लविरचिते साधुपासात्मजसाधुटोडरसमभ्यर्थिते मुनि श्री विद्युच्चर सर्वार्थसिद्धिगमनवर्णनो नाम त्रयोदशमः पर्वः ।

शब्दार्थैरर्थवच्छास्त्रं यथेदं याति पूर्णताम् ।
तथा कल्याणमालाभिः वर्द्धतां साधु टोडरः ॥

अथ संवतसरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द सवत् १६३२ वर्षे चैत्रसुदी ८ वासरे .... परमगुरुश्रावकसाधु श्री टोडर जंबूस्वामिचरित्र कारापितं लिखापितं च कर्मक्षयनिमित्तम् । लिखित गंगादासेन ।

यह प्रतिलिपि स्व० बा० देवकुमार जी द्वारा स्थापित श्री जैनसिद्धान्त भवन आरा में संग्रहार्थ श्री बाबू निर्मलकुमार जी के मंत्रित्व काल में श्री पं० के भुजबली शास्त्री की अध्यक्षता में बा० पन्नालाल जी के द्वारा देहली से उपरोक्त प्रति मंगाकर तैयार की गई। शुभ मिति अषाढ़ कृष्णा १२ वीर सं० २४६१ वि० सं० १९९२ । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० १३२ ।

५३. जम्बूस्वामी कथा

Opening :　प्रथम पंच परमेष्ठी नाऊँ ।
दूज्यो सरस्वती नमूं पाऊँ ॥
तीजै गुरु चरने अनुशरो ।
होय सिद्धि कवि तु विस्तरो ॥

Closing :　तिन यह कथा करी मनलाई ।
वाच्य हर्ष उपजै सुखदाई ॥
पढ़ै सुनै जो मनुवै कोई ।
मनवांछित फल पावै सोई ॥

Colophon : इति श्री जंबूस्वामी की कथा संपूर्ण। मिति श्रावणवदी ३ वार रविवार सन् १८८३ साल। दस्तखत दुरगाप्रसाद जैनी आरे।

५४. जयकुमारचरित्र (१३ सर्ग)

Closing : श्रीमतं त्रिजगन्नाथं वृषभं नृसुरार्चितम्।
भवभीतिनि हंतारं वंदे नित्यं शिवाप्तये ॥ १ ॥

Opening : सकलकीर्तिकृतं पुरदेवजं समवलोक्य पुराणमियं कृतिः।
जयमुनेर्गुणपालसुतस्य च बृहदलं जिनसेनकृतं कृता ॥ १०१ ॥

Colophon : इति श्री जयांके जयनाम्निपुराणे भट्टारक श्री पद्मनंदि गुरुपदे ब्रह्म कामराजविरचिते पंडित जीवराजसहाय्या त्रयोदशमः सर्गः। इति श्री जयकुमार चरित्रं समाप्तं। गुरुप्रसादात संपूर्ण जातम्। संवत् १२४२ मांसोत्तममासे आसौजमासे कृष्णपक्षे १५ सोमवासरे नगरवियानामध्ये पांडे हेमराजेन लिखितमस्ति। स्वपठनार्थं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। बाचैं पढ़ैं जे पंडितजी नैं श्री जिनाय नमः म्हांकी जीनैं बैं। आयुर्भवतु श्री। मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये तदाम्नाये श्री भट्टारक विश्वभूषणदेवाः तत्पट्टे श्रीभट्टारकेंद्रश्रीभट्टारक जिनेन्द्रभूषणदेवाः तत्पट्टे भट्टारकमहेन्द्रभूषणदेवास्तैरिहं स्वस्वाध्यायसार्थं शुभं भूयात् गोपा····? नगरे जयकुमारचरितस्येदं पुस्तकम्।

देखें—जि० र० को०, पृ० १३२।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 643.

५५. जिनदत्तचरित्र वचनिका

Opening : पंचपरम गुरुकूं प्रणमि पूजों शारदमाय।
भाषा जिनदत्त चरित की करूं स्वपर हितदाय॥

Closing : पन्नालाल सु चौधरी रची वचनिका सार।
जिनदत्त के जु चरित्र की निजमति के अनुसार॥

Colophon : सम्पूर्णम्

५६. जिनेन्द्रमाहात्म्य पुराण

Opening : श्री मतिसद्यपदांबुजद्वयरजः शुद्धांजनोन्मीलित-,
प्रोद्यल्लोचनतो विलोक्य निखिलं जैनस्मृतेर्निश्चयम् ।
विद्वत्केसवसेनदिनाममुनिना प्रोक्तां यथा वै तथा,
निर्मास्यामि समस्तकल्मषहरीं पौण्याश्रवीं सत्कथाम् ॥

Closing : वांछा श्री मज्जिनेन्द्रादिभूषणस्य च या हृदि ।
सा जिनेन्द्रप्रसादेन सफली भवताद्ध्रुवम् ॥

Colophon : इति मुमुक्षुसिद्धान्तचक्रवर्त्तिः श्री कुन्दकुन्दाचार्यानुक्रमेण श्री भट्टारकविश्वभूषण पट्टा भरण श्री ब्रह्महर्षसागरात्मज श्री भट्टारक-जिनेन्द्रभूषणविरचितम् श्री जिनेन्द्रपुराणं समाप्तमिदं शुभ भूयात् । संवत् १८५२ कार्तिकशुक्लप्रतिपदायां गुरुवासरे पुराणसमाप्तिः ।

श्री मूलसंघे बलात्कारगणे ···भट्टारकमहेन्द्रभूषणेन इयं पुस्तिका लिखापिता दत्ता स्वज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थम् ।

यह पुस्तक जैन सिद्धान्त भवन में लिखी गई । शुभमिति पौष कृष्ण सप्तमी ७ मंगलवार श्री वीर निर्वाण सं० २४६२ विक्रम संवत् १९९२ । ह० रोशनलाल जैन लेखक ।

विशेष—५५ कथाएँ (चरित्र) हैं ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १३९ ।

५७. जिनमुखावलोकन कथा

Opening : चतुर्विंशतितीर्थेशान् धर्मसाम्राज्यवर्तकान् ।
नत्वा वक्ष्ये व्रतं श्री जिनेंद्रमुखावलोकनम ॥

Closing : ·········मौनव्रतसत्फलार्थकथकानंदत्वयं भूतले ॥

Colophon : इति मौनव्रत कथा समाप्तम् । लिखित पंडित परमानंदेन रात्रौ गुरौ एकादश्यां १९३२ संवत्सरे दिल्ली नगरे आयामल मंदिरे शुभं भूयात् ।

द्रष्टव्य :—जि० र० को०, पृ० १३६ ।

५८. जीवन्धर चरित्र

Opening : जयवंतो वरतो सदा प्रथम रिषभ अवतार ।
धर्मप्रवर्तन तिन कियो जुग की आदि मझार ॥

Closing : संवत् अष्टादश शत जान। अधिक और पैंतीस प्रमान।
कातिक सुदि नौमी गुरुवार। ग्रन्थ समापित कीनौ सार ॥

Colophon : इति श्री जीवंधर चरित्र आचार्य श्री शुभचन्द्रप्रणीतानुसारेण नथमल बिलालाकृत भाषायां जीवंधरमुनिमोक्षगमन वर्णनो नाम त्रयोदशसर्गः सम्पूर्णम्। इति जीवन्धर चरित्र सम्पूर्णम्। मिती फूस (पौष) सुदी ४ संवत् १९६१ मुक्काम चंद्रापुरी।

५९. कथावली

Opening : श्री शारदास्पदीभूत-पादद्वितयपंकजम्।
नत्वार्हतं प्रवक्ष्यामि व्रतं मुकुटसप्तमीं ॥

Closing : मुनिराहे निभोश्रेष्ठि······· ॥

द्रष्टव्य :—जि० र० को०, पृ० ६६।

६०. कुदेव चरित्र

Opening : सो हे भव्य तूं सुणि। सो देखौ जगत विषै
भी यहु न्याय है।

Closing : तौ एक सर्वज्ञ वीतराग जो जिनेश्वर देवता का वचन अंगीकारकरि अर ताका वचनांकैअनुसारि देवगुरु धर्म का श्रद्धानकरि।

Colopnon : इति कुदेव चारित्र वर्णन सम्पूर्णम्। मिति कार्तिक सुदी २ सन् १२७६ साल दसखत दुरगाप्रसाद जैनी आरा मध्ये लिखा, जो देखा सो लिखा।

भूलचूक देखके, बुधजन लियो सुधार।
हमें दोष मत दीजियो, क्षमा करो उर ज्ञान ॥

६१/१. मदनपराजय

Cpening : यदमलपदपद्म श्री जिनेशस्य नित्यम्,
शतमखशतसेव्यं पद्मगर्भादिवद्यम्।
दुरितवनकुठारं ध्वस्तमोहांधकारं,
सकलिलसुखहेतुं त्रिः प्रकारैर्नमामि ॥ १ ॥

Closing : अज्ञानेन धिया विना किल जिनस्तोत्रं मयायत्कृतम्,
किं वा शुद्धमशुद्धमस्ति सकलं नैवं हि जानाम्यहम् ।
तत्सर्वमुनिपुङ्गवाः सुकवयः कुर्वन्तु सर्वे क्षमा,
संशोध्या.......कथामिमां स्वसमये विस्तारयन्तु ध्रुवम् ॥

Colophon : इति मदनपराजयं समाप्तम् ।

६१/२. महिपाल चरित्र

Opening : यस्यांशदेशे शत् कुंतलाली, दूर्वांकुरालीव विभाति नीला ।
कल्याणलक्ष्मी वसतिः सदिस्यादादीश्वरो मगलमालिकां वः ॥

Closing : श्रीरत्ननंदिगुरुपादसरोरुहालिश्चारित्र भूषणकविर्यदिदं ततान ।
तस्मिन् महीपचरिते भववर्णनाढ्यः सर्गः समाप्तिमगतमत्किल पचमोऽयम् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक रत्ननंदिसूरि शिष्यमहाकविवर श्री चारित्र-भूषणमुनि विरचिते श्री महीपालचरित्रे पचमो सर्गः । इति श्री महीपालचरित्रं काव्यं सम्पूर्णम् । अथ ग्रथ श्लोक सख्या ९९५ संवत्सरे १८७० का ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे तिथौ ४ बुधवासरे लिप्यकृत महात्मा शभुरामः ।

उक्त लिपि देहली से मंगवाकर श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा में सग्रह के लिए श्री पं० के० भुजवली जी शास्त्री की अध्यक्षता में लिखी शुभमिति चैत्रकृष्णा ११ बुधवार विक्रम सं० १९९३ वीर सं० २४६३ । हस्ताक्षर रोशनलाल जैन ।

द्रष्टव्य— जि० र० को०, पृ० ३०८ ।
Catg. of Skt. & pkt Mss., P. 680.

६२. महिपाल चरित्र

Opening : श्रीमत वीर जिनेशर, युग नमकर धरि भाल ।
महीपाल नृप चरित्र की, भाषा करो रसाल ॥

Closing : जिनप्रतिमा जिनभवन जिन पंचकल्याणक थान ।
आदि मध्य अवसान मैं मंगलकरो महान ॥

Colophon : इति श्री महीपाल चरित्र सम्पूर्णम् ।

६३. मैथिलीकल्याण नाटक

Opening : यः प्रस्तोता त्रिलोक्यो प्रतिहतविपदां संमतानां कृतीनां,
यं च स्तोता स्वयं च स्तुतिशतपदवी वाग्वधूवल्लभानाम् ।
कल्पः कल्याणभाग्भिर्श्रियमतुपरमामाप्तवानाप्तरूपः,
सोय भद्रं विधेयाद्दशरथतनयः साधुवो रामभद्रः ।।

Closing : एतन्नाटकरत्नमुत्तमगुणं विभ्राजते मैथिली,
कल्याणं भुशमद्वितीयमपि सत्तेषु द्वितीयं मतम् ।
सर्वत्रप्रथिताः प्रबंधमणयः श्री सूक्तिरत्नाकर,
प्रख्यातापरनामधेय महतः श्री हस्तिमल्लस्य ये ।।

Colophon : समाप्तोऽयं मैथिली कल्याणनाटकम् इति शुभम् । संवत् १६७२ विक्रमे आषाढ शुक्ला १४ रवौ श्री ऋषभादितीर्थंकराः श्रेयस्कराः सन्तु ।

आषाढ़ शुक्लपक्षे हि चतुर्दश्यां रवौ लिखे- ।
श्रेत्रर्षाङ्केन्दु वर्षे च सीतारामकरेण सत् ।।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ३१५ ।

६४. मेघेश्वर चरित्र

Opening : सिरिरिसहु जिणेन्दहु भुवसयइन्दहु भवतम चंदहु गणहरहु ।
पयजुयजुण वेप्पिणु चित्तिणि हेप्पिणु चरिउ भणमि मेहेसरहु ।।

Closing : पुणु सुउतुहु तीयउ अइबरिणीयउ जिणसासण रहधूर धरणु ।
रइयति रयणोवमु पालियकुलकमु दुत्थिहजणदुह भरहरणु ।।१३।।

Colophon : इय मेहेसर चरिए । आइपुणल्स सुत्त अणुसरिए सिरिपंडिय रइधूविरइय ।। सिरिमहाभव्वखेमसीह साहुणामणाम किए ।।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृप विक्रमादित्य गताब्दः १६०६ वर्षे मार्गसिर शुदि दुतिया श्री कुरुजांगलदेशे श्री ब्हितगढ साहिराज्य प्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भट्टारक श्री कुमारसेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रतापसेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री महासेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री नयसेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री आससेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री अनन्तकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारकीर्तिदेवाः तत्पट्टे

अनेक विद्यानिधान भट्टारक श्री हेमचंददेवा: तत्पट्टे अनेकविद्या हरीतरंगु भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा: ।।

शुक्रवार वदी ८ सं० १९९६ वीर सं० २४६५ ।। ई० १९३९ को समाप्त हुआ । लेखक राजधरलाल जैन ।।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३१५.

६५. नन्दीश्वर व्रत कथा

Opening : प्रणम्य परमानंदं जगदानंददायकम् ।।
सिद्धचक्र कथा वक्ष्ये भव्यानां शुभहेतवे ।। १ ।।

Closing : श्रीपद्मनंदीमुनिराजपट्टे शुभोपदेशीशुभचन्द्रदेव: ।
श्री सिद्धचक्रस्य कथावतारं चकार भव्यांबुजभानुमाली ।।
सम्यग्दृष्टिर्विशुद्धात्मा जिनधर्मे च वत्सल: ।।
जालाक: कारयामास कथां कल्याणकारिणी ।।

Colophon : इति नंदीश्वर अष्टान्हिका कथा समाप्ता: ।।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० २००, ४३६.

६६. नेमिचन्द्रिका

Opening : आदि चरन हिरदै धरौ, अजित चरन चितलाय ।
संभवसुरत लगायकैं, अभिनंदन मनलाय ।।

Closing : मारग जाने मोक्ष कौ, जिनवर भक्त सुवास ।
कहूं अधिक कहूं हीन है, सो सब लीजे सोर ।।

Colophon : इति श्री नेमिचन्द्रिका संपूर्णम् । मिती जेष्ठवदी ७ संवत् १९६२ । लिखित प० चौबे छुटीलालकी ।

६७. नेमिनाथचन्द्रिका

Opening : प्रथम नमो जिनचंद्रपद नमत होत आनंद ।
शिवसुखदायक सकल हित, करत जगत जगफंद ।।

Closing : एक सहस अरु अठशतक, वरष असिति और ।
याही संवत मो करी, पूरन इह गुणगौर ।।

Colophon : इति श्री नेमनाथ जीकी चंन्द्रिका मुन्नालालकृत सम्पूर्णम् । संवत् १८९५ मासोत्तमे मासे माघेमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां चंद्रवासरे

पुस्तकमिदं रघुनाथ द्विजलेखितं पट्टनपुरे आलमगंज निवसति. जिन-
प्रसादात् मंगलमस्तु ।

६८. नेमिनाथचरित्र

Opening :
प्राणित्राणप्रवणहृदयो बंधुवर्गं समग्रम्,
हित्वा भोगान्सहपरिजनैरुग्रसेनात्मजां च ।
श्रीमान्नेमिर्विषयविमुखो मोक्षकामश्चकार,
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ।।

Closing : श्री नेमिनाथ का निर्मल चरित्र रचा जो कि राजीमती के
दुःख से आर्द्र है ।

Colophon : इति श्री विक्रमकवि विरचित नेमिचरित हिन्दी भाषानुवाद
सम्पूर्णम् ।

६९. नेमिनाथपुराण

Opening :
श्री मन्नेमि जिनं नत्वा लोकालोकप्रकाशकम् ।
तत्पुराणमहं वक्ष्ये भव्यानां सौख्यदायकम् ।।

Closing :
शांति कान्ति सुनीति सकलसुखयुतां संपदामायुरुच्चैः,
सौभाग्य साधुसंग सुरपति महितं सारजैनेन्द्रधर्मम् ।
विद्या गोत्र पवित्र सुजन जन ...... आदिताति,
श्री नेमे सुत्पुराण दिशतु शिवपद वोत्र ·· ।।

Colophon : इति श्री त्रिभुवनैक चूडामणि श्री नेमिजिनपुराणे भट्टारक
श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदी नामांकिते ब्रह्मनेमिदत्त
विरचिते श्री नेमितीर्थंकरपरमदेव पंचम कल्याणक व्यावर्णनो नाम
पद्मनाम नवम बलदेव कृष्णनाम नवमनारायण जरासंध नामप्रति-
नारायण चरित्र व्यावर्णनो नाम षोडशोऽधिकारः समाप्तः ।

श्री शुभमिति आश्विनकृष्ण पंचमी गुरुवार वीर सं० २४६०
विक्रम सं० १९९० को यह पुस्तक लिखकर पूर्ण भई । हस्ताक्षर
रोशनलाल लेखक । आरा जैनसिद्धान्त भवन में प्रतिलिपि की गई ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २१८ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १९९ ।
(४) रा० सू०, पृ० ८४ ।

(५) जैं० ग्र० प्र० सं०1, पृ० १५७ ।
(6) Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 661.

७०. नेमिपुराण

Opening : नमामि विमलाधीशं केवलज्ञानभास्करं ।
वदेनंतजिनं भक्तयानंतानतसुखाकरम् ॥ १२ ॥

Closing : देखें-क्र० ६९ ।

Colophon : भुवनैक चूडामणि श्री नेमिजिनपुराणे भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदि नामांकिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्री नेमितीर्थंकरपरमदेव पचमकल्याणक व्यावर्णनो नाम पद्मनाम नवमबलदेव कृष्णनाम नवम-नारायण जरासंध प्रतिनारायण-चरित्रव्यावर्णनो नाम षोडशोधिकारः समाप्तः ।

७१. नेमिपुराण

Opening : देखें-क्र० ६९ ।

Closing : ततोदुःखाद रिद्री च रोगीशोकाविरूपकः,
परद्रव्यापहारेण संसारे संसरत्परम् ।
तस्मात् संतोषतो नित्यम् मनोवाक्काययोगतः,
स्तेयत्यागो दृढं भव्यैः पालनीयः सुखप्रदः ॥

विशेष :— हस्तलिपि में विभिन्नता है ।

७२. नेमिपुराण

Opening : नेमिचंद जिनराज के चरण कमल युगध्याय ।
भाषू नेमपुराण की भाषा सुगम बनाय ॥

Closing : मंगल श्री अरहत सिद्ध साधु जिनधर्म पुन ।
ये ही लोक महत परम सरण जगजीव को ॥

Colophon : ऐसे भट्टारक श्री मल्लिभूषण के शिष्य आचार्य श्री सिंहनन्दि के नामकरि चिन्हित ब्रह्मनेमिदत्त करि विरचित जो तीनभुवन का चूडामणि समान नेमिजिन ताके पुराण की भाषा वचनिका संपूर्ण । मिती वैशाख वदी १२ संवत् १९६२ मु० चंदेरी मध्ये शुभं भवतु ।

७३. नेमिनाथरिस्ता

Opening : छोड़े संसार नेहे तपको जोड़े ।
छोड़े सब तात मात बात बीचारी ।
छोड़े परिवार सबै राजुल नारी ॥

Closing : अब साई मेरा नेम है।

Colophon : इति रेषता सम्पूर्ण।

७४. नेमिनिर्वाणकाव्य (१५ सर्ग)

Opening : श्री नाभिसूनोः पदपद्मयुग्मनखाः सुखानिप्रथयन्तु ते वः।
समुन्नमन्नाकिशिरः किरीटसंघट्टविश्रस्तमणीयितं यैः॥

Closing : अहिच्छत्रपुरोत्पन्नप्राग्वाटकुलशालिनः।
छाहस्य सुतश्चक्रे प्रबंधंवाग्भटः कविः॥

Colophon : इति श्री नेमिनिर्वाणाभिधानो नाम पंचदशः सर्ग समाप्तः।
संवत् १७२७ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे अष्टमी शुक्रवासरे।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६।
(२) जि० र० को०, पृ० २१८।
(३) जैन ग्रन्थ प्र० सं, I, पृ० ८।
(४) रा० सू० II, पृ० २४८।
(५) प्र० जै० सा०, पृ० १६६।
(6) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., Page-661.
(7) Catg. of Skt. Ms., P 302.

७५. नेमिनिर्वाणकाव्य पंजिका

Opening : धृत्वा नेमीश्वरं चित्ते लब्धानंतचतुष्टयम्।
कुर्वेहं नेमिणिर्वाणमहाकाव्यस्य पंजिका॥

Closing : चेरुः चरंति स्म। पुरस्सरं अग्रेशरं। विरच्य रचयित्वा
अवसादितमोहशत्रुं निरस्त मोहरिपुम्॥ ८२॥

Colophon : इति श्री भट्टारकज्ञानभूषणविरचितायां श्री नेमिनिर्वाण
महाकाव्यपंजिकायां पंचदशमः सर्गः समाप्तोऽयं ग्रन्थः। श्रीरस्तु।
देहली से प्रति मंगवाकर जैन सिद्धान्त भवन, आरा में
प्रतिलिपि कराकर रखी गई।

७६. निशि भोजन कथा

Opening : प्रथम प्रणमि जिनदेव, दूजै गुरु निरग्रंथ कूं।
करहुँ सरस्वती सेव दरसावै शिव पंथ कूं॥

Closing : निश सु कथा पूरन भई, पढ़े सुनै नित सोय ।
सुख पावैं जे नर त्रिया, पाप नाश तिन होय ।।

Colophon : इति निश भोजनत्याग कथा समाप्ताः । शुभं भवतु ।
मिति अगहण वदी ७ सम्वत् १९६१ ।

७७. निशि भोजन कथा

Opening : देखें, क्र० ७६ ।

Closing : देखें, क्र० ७६ ।

Colophon : इति श्री निशिभोजन कथा समाप्तम् ।
महावीर वंदौं सदा, रत्नतीन दातार ।
निजगुण हमे सु दो अबे, अपनो जानि हितकार ।।
श्री शुभ संवत् १९५५ मिति कुआर कृष्ण ८ बार बृहस्पति ।

७८. निर्दोष सप्तमी कथा

Opening : श्री जिन चरणकमल अनुसरूं, सदगुरु की मैं सेवा करूं ।
निरदोष सातमनी कथा, बोलूं जिन आगम छै यथा ।।

Closing : ये व्रत जे नरनारि करैं, ते जन भवसागर उतरैं ।
अजर अमर पद अविचल लहैं, ब्रह्म ज्ञान सागर इम कहैं ।।

Colophon : इनि श्री निर्दोष सप्तमी व्रत कथा समाप्तम् ।

७९. पद्मनन्दिचरित टिप्पण

Opening : शंकरं वरदातार जिणं नत्वा स्तुतं सुरैः ।
कुर्वे पद्मचरित्रस्य टिप्पणं गुरुदेशनात् ।।

Closing : लाड़ बागडि श्रीप्रवचनं सेन पंडिता पद्मचरितस्य कर्णोवलात्कारगण श्री श्रीनंद्याचार्य सत् शिष्येण श्री चन्द्रमुनिना श्रीमद्विक्रमादित्यसंवत्सरे सप्ताशीत्यधिकवर्ष सहस्त्र श्रीमद्धरायां श्रीमतो राजे भोजदेवस्य पद्मचरिते ।

Colophon : इति पद्मचरित्रे पर्व टिप्पण सम्पूर्णम् । एवमिदं पद्मचरित-टिप्पणं श्री चन्द्रमुनिकृतं समाप्तम् । शुभं भवतु संवत् १८८४ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे पंचम रविवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये आम्नाये ।

८०. पद्मपुराण

Opening : सिद्धं संपूर्णभव्यार्थं सिद्धेः कारणमुत्तमम् ।।
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादकम् ।। १ ।।

Closing : इदमष्टादशप्रोक्तं सहस्राणि प्रमाणतः ।
शास्त्रमानुपद्रुपश्लोकैः त्रयोविंशतिसंगतम् ।।

Colophon : इति श्री पद्मचरिते रविषेणाचार्य प्रोक्तं बलदेवनिर्वाणाभ-मनाभिधानं नाम पर्वः । १२३ ।। इति श्री रामायणं सम्पूर्णम् । ग्रंथाग्रंथ संख्या-१८०२३ शुभमस्तु । संवत् १८८५ प्रथम आषाढ़-शुक्लपक्षे पंचमि भौमवासरे लिखितं ब्राह्मण गौड़ तिवाड़िमातराज-नग्रमध्ये (?) ।।

यादृशं .. .. न दीयते ।।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २० ।
(२) जि० र० को०, पृ० २३३ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १७१ ।
(४) आ० सू०, पृ० ८७ ।
(5) Cat of Skt. & Pkt. Ms., Page-664.
(6) Catg. of skt. Ms., page, 314.

८१. पद्मपुराण

Opening : (पृष्ट १८) देववर्णनो नाम प्रथमोध्यायः ।
अथ वंसाश्चत्वारि तेषां नामानि वक्षते ।
इक्ष्वाकुसोमवंसौश्च हरिविद्याधरौ तथा ।। १ ।।
भरतस्यादित्ययसो पुत्रतस्माछुतं यशाः ।
ततोबलाकः सुबलो महूबलाबतीबलः ।। २ ।।

Closing : (पृष्ट ८२)
कुबेरेण ततो मार्गे मायाशालस्तु निर्मितः ।
शतयोजनमुत्सेधः क्रूरजीवैर्भयंकरः ।। ५२ ।।
बक्षात्वेन ततो ज्ञात्वा समीयं वैरिणपुरः
बहीतुर्प्रेषितः सैन्यः प्रहस्तोकंकनीयसी ।। ५३ ।।

८२. पद्मपुराण

Opening : अथानंतर श्री रामलछमन सभा विषै विराजे अर राजा पृथ्वीधर ………।

Closing : जे पालैं जे सरदहै, जिनवचधर्म सुजान।
जे भाषे नर सुधता निश्चै लेहि निरवान॥

Colophon : इति श्री पद्मपुराण जी की भाषा ग्रन्थ संपूर्णम्। श्लोक संख्या २३०००। संवत् १८९०। चैत्रकृष्णद्वितीयायां गुरुवासरे पुस्तकमिदं रघुनाथसर्म्मणे लेखि।

८३. पद्मपुराण वचनिका

Opening : चिदानंद चैतन्य के, गुण अनंत उरधार।
भाषा पद्मपुराण की भाषूँ श्रुति अनुसार॥

Closing : देखें, क्र० ८४।

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्य विरचितमहापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिका विषै बालावबोध वर्णनो नाम एक सौ बाईसमा पर्व पूर्ण भया। यह ग्रंथ समाप्तभया शुभं भवतु। माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पंचम्यां। श्री संवत् १९५३। ग्रथ श्लाक सख्या २३२००।

सूबा औध (अवध) देशमुल्क हिन्दुस्तान मे प्रसिद्धजिला सु नवाबगंज बाराबंकी नाम है।
टिकैतनगर सुथाना डाकखाना जानौ तासु दिसपूरव सरैयां भलो ग्राम है॥
कवि भगवानदत्त वास स्थान जानौ तहां अन्न जलकै स्ववस आयो यही ठाम है।
लिख्यौ ग्रंथ पदुमपुराण धर्मवृद्धि हेत जिला शाहाबाद आरा शहर मुकाम है॥

विशेष :— ग्रन्थ के काष्ठावरण पर (ऊपर) लिखा है—

"पुत्र पौत्र संपति बाढ़ै बाढ़ै अधिक सरस सुखदाई।
मुसम्मात नन्ही बीबी जौजे बाबू सुखालचंद पुत्र धनकुमारचंद वो राजकुमारचंद पौत्र संबूकुमारचंद जंबूकुमारचंद जैनेन्द्रकुमार चन्द मंगलम् भूयात्।"

'बीच में मन्दिर का चित्र है उसके दोनों ओर इन्द्र हाथियों के साथ चवर ढुराते हुए।'

काष्टावरण पर (भीतर)

" चौबीस तीर्थंकरों के चिह्नों के बहुत ही सुन्दर रंगीन चित्र " बने हुए हैं।

चौबीस तीर्थंकरों के चिह्नों के चित्र एवं तीर्थंकरों नाम टीकाकार की हस्तलिपि में स्पष्टरूप से लिखे हुए हैं। लकड़ी पर चित्रकारी का कौशल अनुपम है. जो कि अन्यत्र बहुत कम उपलब्ध है। अंग्रेजी में इसे "लैकर वर्क" चित्रकारी कहते हैं, जो कि सामान्यतया पानी पड़ने पर भी नहीं धुलता।
इस तरह के चित्रकारी के लिए चित्रकारिता का विशिष्ट ज्ञान आवश्यक है।

कला पारखी दर्शकों के लिए इस काष्ठपट्ट पर बनायी गई अनुपम चित्रकला को श्री जैन सिद्धान्त भवन के अन्तर्गत श्री शांतिनाथ मंदिर के प्रांगण में श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार कला दीर्घा में रखा जा रहा है, ताकि अधिक से अधिक दर्शक इसे देख सके।

८४. पद्मपुराण वचनिका

Opening : महावीर बंदौं सुबुधि रतन तीन दातार।
निजगुण हमें द्यौ अबैं, अपनों जानि हितकार॥

Closing : तादिन संपूर्ण भयौ यह ग्रंथ सिव दाय।
चहुं संघ मंगल करौ, वढौ धर्म जिनराय॥

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्य कृत महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिका बालबोध का तेईसवाँ पर्व पूर्ण भया। इति महापद्मपुराण समाप्तम्। १२३॥ संवत् १८४८ वर्षे भादौ सुदी १२ को लिख चुके, लेखक बखतमल्ल नंदवंसी वारी नगर मध्ये लिखा है।

८५. पद्मपुराण भाषा

Opening : सिद्ध··· ··· ··· ··· ····प्रतिपादनम्॥

Closing : बहुरि जाय बन तप करि भारी।
शिवपुर जानेकी मनमें विचारी ॥
अब इहा भई निरविघ्न अहार।
राममुनि को निर्विघ्न अहार ॥

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्य कृत मूलसंस्कृत ताकी वचनिका दौलतराम कृत ताकी चौपाई छद बध मह श्री राम महामुनि का निरंतराय अहार का होना यत्र एकसौ बीसवी संधि पूर्ण भयो। शुभम्।

८६. पांडवपुराण

Opening : सिद्धसिद्धार्थ सर्वस्वनिद्धिद सिद्धिसम्पद ॥
प्रमाणनयसंसिद्धि सर्वज्ञं नौमि सिद्धये ॥ १ ॥

Closing : यावच्चन्द्रार्कतारा: सुरपतिसदनं तोयधि: शुद्धधर्मं
यावद्भूगर्भदेवा सु-निलयगि.रिदैव गर्गादिनद्य ॥
यावत्सत्कल्पवृक्षास्त्रिभुवनमान्तिामारते वैजगत्या
तावत्स्थेयात्पुराण शुभशततजनक भारत पाण्डवाना ॥

Colophon : श्रीमद्विक्रमभूपते द्विकहतस्पष्टाष्ट मध्ये मते
रम्येष्टाधिकवत्सरे सुखकरं भाद्रे द्वितीया नि-ो ॥
श्रीमद्वाग्वरनी मृतीदमतुले श्री शाकवा.टपुरे
श्रीमच्छ्रीपुरुधामिर्ने िरचित स्थेयात्पुराण चिरम् ॥
इति श्री पाडवपुराणे भारतनाम्निभट्टारकश्रीशुभचन्द्रप्रणीते ब्रह्मश्रीपालसाहाय्यसापेक्षे या भवोपसर्गसहनकेवलोत्पत्तिमुक्तिसर्वार्थसिद्धिगमनश्रीनेमिनाथनिर्वाणगमनवर्णनं नाम पंचविंशतितम पर्व: २५। संवत् १८२० वर्षे द्वितीयप-ये ठसुदि रविवारे ग्रथ लिख्यापितं पंडित...... ? श्री याल्मनी जी तत् शिष्य पंडित मथा-मजी आत्मयोग्य कर्मक्षयार्थं लिखितम्। श्री कासमा.जार मध्ये श्रीरस्त ॥ श्री: ॥

द्रष्टव्य -(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २०।
(२) जि० र० को, पृ० २४३।
(३) आ० सू०, पृ० ६८।
(४) प्र० जै० सा०, पृ० १८१।
(5) Catg. of Skt. & Pkt. Ms. P 667.

८७. पांडवपुराण

Opening : सेवत सत सुरराय स्वयं सिवसिद्धमय।
सिद्धारथ सरवंसनय प्रमान ससिद्ध जय॥

Closing : कीजै पुष्ट शरीर को, करके सरसाहार।
को गुनता सो युद्ध मैं जो भाजै मयधार॥

Colophon : नही है।

८८. पार्श्वपुराण

Opening : पणविवि सिरि पासहो सिवउरि वासहो, विहुणिय पासहो गुणभरिऊ।
भविय सुहकारणु दुक्खणिवारणु, पुणु आहास मितहु चरिऊ।

Closing : मच्छरमय हीणउं सत्यपवीणउं, पंडियमणुणंदउ सुचिरू।
परगुणगहणायरू वर्याणिय मायरू जिणपय पयम्हु णविय सिरु॥

Colophon : इय सिरि पासणाहपुराणं आयम अत्थस्स अत्थिसुणिहाणे सिरि पंडिय रइधू विरइए सिरि महाभव्वखेऊं साहुणामं किए सिरि पासजिण पंचकल्लाणवण्णणो तहेव दायार वंस णिद्देसो णाम सत्तमो संधी परिच्छेओ सम्मत्तो। संधि।७। इति श्री पार्श्वनाथपुराणं समाप्तम्।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये १५४६ वर्षे चैत्र-सुदि ११ शुक्रवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे शुभनामा योगे श्री हिसारपेरोजा कोटे श्री महावीरचैत्यालये सुलितान श्री साहिसिकंदरराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे त्रयोदशप्रकारचरित्रालंकारालं-कृतः बाह्याभ्यन्तर परिग्रहसमिग्रह (?) समर्था: भट्टारक श्री खेमकी-र्तिदेवाः तत्पट्टे त्रिकालागत श्राद्धवृंदविहितपदसेवा भट्टारक श्री हेमकीर्तिदेवाः तत्पट्टे कुवलयविकासनैकचन्द्रो भट्टारक श्री कुमारसेन-देवाः तत्पट्टे प्रतिष्ठाचार्य श्री नेमचंद्रदेवा, तदाम्नाये अग्रेकान्वये गोहलगोत्रे आशीवाल सराफ-देवशास्त्रगुरु चरणारविंदचंचरीकोपम पंचाणुव्रत प्रतिपालका समा परमश्रावकसाधु महणाख्य: चादपाही। तृतीयपुत्र: जिनपूजापुरंदरसाधु दूल्हणु भार्या जे वूहि तस्यांगजा प्रथम पुत्रमयणरूप व्रत·······हू चितज कल्पवृक्षान् साध······वणुभार्यादिवाही

द्वितीय पुत्र साधु सीहा, भार्या डेडीए तेषां ········ कर्म्मक्षयं साधुपि-रदूतस्य पुत्र ·········· पार्श्वनाथ चरित्र लिखापितम ।

उपर्युक्त प्रति से यह प्रति जैन सद्धान्तभवन, आरा के संग्रहार्थ लिखी गई। शुभमिती माघशुक्ला ८ गुरुवार वीरसम्वत २४६३। विक्रम संवत् १९९३ हस्ताक्षर रोशनलाल जैन। इति।

द्रष्टव्य-- जि० र० को०, पृ० २४६।

८९. पार्श्वपुराण

Opening :

नम. श्री पार्श्वनाथाय विश्वविघ्नौघनाशिने।
त्रिजगत्स्वामिने मूर्ध्ना ह्यनन्तमहिमात्मने ॥

Closing :

सर्वे श्रीजिनपुंगवाश्च विमला: सिद्धा अमूर्ता विदो,
विश्वाच्चर्या गुरुवोजिनेंद्रमुखजा सिद्धान्तधर्मादय:।
कर्त्तारो जिनशासनस्य सहिता स वंदिता संश्रुता,
येतेमेऽत्र दिशतु मुक्तिजनकै: सुद्धि: च रत्नत्रये ॥

पंचादशाधिकानि वा विंशति: शतान्यपि।
श्लोकसंख्या अस्य विज्ञेया सर्वं ग्रन्थस्य लेखकै. ॥

Colophon :

इति श्री पार्श्वनाथथचरित्रे भट्टारक सकलकीर्ति: विरचिते श्री पार्श्वनाथमोक्षगमन त्रयोविंशतितम: सर्ग. समाप्त:। इति श्री पार्श्वनाथचरित्र समाप्तम्।

देखे—जि० र० को०, पृ० २४६।
Catg. of Skt. & pkt Ms., P. 667.

९०. पार्श्वपुराण

Opening : देखे, क्र० ८९।

Closing : देखे, क्र० ८९।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथचरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्तिविरचिते श्री पार्श्वनाथमोक्षगमनवर्णनो नाम त्रयोविंशतितम: सर्गा: श्री पार्श्वनाथचरित्रसमाप्तं ॥ देउल ग्रामे लिखितं नेमसागरस्य इदं पुस्तक ॥

६१. पार्श्वपुराण

Opening : मोह महातम दलन दिन, तप लक्ष्मी भरतार।
है पारस परमेश मुझ, होय सुमति दातार॥

Closing : संवत् सत्रह मै समैं, अर नवासी लीय।
सुदि अषाढ़ तिथि पंचमी, ग्रंथ समापत कीय॥

Colophon : इति श्री पार्श्वपुराणभाषायां भगवन्निर्वाणगमनीनाम नवमो अधिकार समाप्तम्। सवत् १८५६ कातिक सुदी नवमी बुध-श्वेताम्बर ऋषि हंसराज जी तत् शिष्य ऋषि रामसुखदास जी शाहजहानाबाद मध्ये लिपिकृतम् आत्मार्थे। शुभं भवतु।

६२. पार्श्वपुराण

Opening : देखे, क्र० ६१।

Closing : देखे, क्र० ६१।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथपुराण भाषायां भगवन्निर्वाणकवर्णनो नाम नवमोधिकारः॥ ६॥ इति श्री पार्श्वनाथपुराण भाषा सम्पूर्णम्। संवत् १९५३ सन् १३०३ अगहण शुक्ल एकादश्यां तिथौ मंगरवासरे दसखत चुनीमाली का।

६३. प्रद्युम्नचरित्र (१४ सर्ग)

Opening : श्रीमतं सन्मतिं नत्वा नेमिनाथं जिनेश्वरम्॥
विश्वजेतापि मदनो बाधितुं नो शशाकयः॥ ॥

Closing : चतुःसहस्रसंख्यातः सार्द्धं चाष्टशतैर्युतः।
भूतले सततं जीयाच्छ्रीसर्वज्ञप्रसादतः॥ १६६॥

Colophon : इति श्री प्रद्युम्नचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्यविरचिते श्री प्रद्युम्न सांबअनिरुद्धादिनिर्वाणगमनो नाम चतुर्दशः सर्गः समाप्तः॥ मिति कार्तिक शुक्ला ५ चंद्रवासरे संवत् १९५३। लिखि नटवर लाल शर्मणा॥

विशेष—इसमें मात्र १४ सर्ग हैं, जबकि दिल्ली जिनग्रन्थ रत्नावली में १६ सर्ग की प्रतियों के भी उपलब्ध होने की सूचना है।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, प०, पृ० २२।
(२) जि० र० को०, पृ० २६४।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १७६।
(४) आ० सू०, पृ० ६४।
(५) रा० सू० III, पृ० २१३।
(6) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 670.

६४. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क्र० ६३।

Closing : देखें क्र० ६३।

Colophon : इतिश्री प्रद्युम्नचरिते आचार्य श्री सोमकीर्तिविरचिते श्री प्रद्युम्न अनिरुद्धनिर्वाणगमनो नामचतुर्दश सर्गः समाप्तः। समाप्तमिद श्री प्रद्युम्नचरितम्। वाच्यमान चिर नदन्तु पुस्तकः सवत् १७१७ वर्षे माघ सुदि २ दिने लिख्या समाप्तिनीतः लिखिततच्च कुशलान्वये साहश्री बंगूजी तत्पुत्र परम धार्मिक साह श्री रायसिहजी केन स्वकीय ज्ञातवृद्धयर्थम्।

श्लोक—यादृशं······ ··· ······न दीयते ॥

६५. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क्र० ६३।

Closing : देखें, क्र० ६३।

Colopnon : इति श्री प्रद्युम्नचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्य विरचिते प्रद्युम्न शंवअनिरुद्धादि निर्वाणगमनो नाम चतुर्दशः सर्गः। श्री मद्वि-क्रमभूपते-र्गजरसाद्रीं दुर्गते वत्सरे मासे फागुनि के दिने रवि सुते-रुद्राख्यकासत्तिथि तस्मिन्नेव लिपिकृतो गुवताराज्येविमष्टे मितो ग्रंथो धनपतिसंज्ञिनामतिमता कैराणकाख्ये पुरे।

६६. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क० ६३ ।

Closing : देखें, क० ६३ ।

Colophon : इति श्री प्रद्युम्नचरित्रे श्रीसोमकीर्ति आचार्यविरचिते श्री प्रद्युम्नसंबअनुरुद्धादि निर्बाणगमनो नामषोडश: सर्ग: । इति प्रद्युम्नचरित्र सम्पूर्णम् । संवत्सरे श्री विक्रमार्कभूपते संवत् १७६६ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे तिथौ च नौम्यां सोमवासरे । लिखत सुखंकसागरेण तत् शिष्यसमीप तिष्ठते धामपुर मध्ये ।

जो उपजो संसार सर्व वस्तु का नाश है ।
तातैं इही विचार धर्मविषै चितगाखना ।।

श्रीरस्तु मंगलं दद्यात् ।

विशेष -संवत् १७६५ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे द्वादसी दिने नादरसाहशार शाह नैं दिल्ली में कतलाम किया मनुष्यों का प्रहर तीन ।
इस प्रति में सर्गों की संख्या १६ है, जबकि अन्त में श्लोक संख्या वही है ।

६७. पुण्याश्रव कथा

Opening : श्री वीरजिनमानम्य वस्तुतत्त्वप्रकाशकम् ।
वक्ष्ये कथामयं ग्रंथं पुण्याश्रव विधानकम् ।।

Closing : रविसुतको पहलो दिन जोय ।
अरु सुरगुरु को पीछे होय ।।
वार यही गिन लीजो सही ।
तादिन ग्रंथ समापति लही ।।

Colophon : इति श्री पुण्याश्रव ग्रंथ मूल कर्त्ता रामचंद्र मुनि टीका दौलतराम कृत संपूर्ण । संवत् १८७४ मिती माहसुदि ३ रविवासरे संपूर्ण कृतम् ।

६८. पुण्याश्रव कथा

Opening : देखें, क०६७ ।

Closing : ……तीस्यौ पुकारैं छैं । तब राजाबहोतबल ला ……।

Colophon : उपलब्ध नहीं।

९९. पुण्याश्रव कथाकोष

Opening : वर्द्धमान जिन वंदिकैं, तत्वप्रकाशनसार।
पुण्याश्रव भाषा करूं भव्य जीवन हितकार॥

Closing : दान तना अधिकार यह, पूरा भया सुजान।
चहुविध की सत्रुसम, भोवहु करै कल्यान॥५९०६॥

Colophon : इति श्री पुन्याश्रवविधाने ग्रंथ के सवानंदिव्य मुनि शिष्य रामचंद्र विरचिते दान अधिकार समाप्त।
पुन्याश्रव ये कथा रसाल। पूजादिक अधिकार विसाल॥
षट् अधिकार परम उतकिए। छप्पन कथा जासमैं मिए॥
आदि पुरानादिक जे कहा। अभिप्राय सो यामैं लहा॥
आचारज जिय धरि अभिलाष। कीनो तास सस्कृत भाष॥
तास वचनकारूप सुधार। दौलतराम कथा बुधसार॥
तातैं भावसिंघ निज छद। आरंभ किया चौपाई वद॥
... .

प्रभु को सुमिरन ध्यानकर, पूजा जाप विधान।
जिन प्रणीत मारग विषै, मगन होहु मतिमान॥

१००. पुण्याश्रव कथाकोष

Opening : देखें, क्र० ९७।

Closing : प्रभु को सुमरण ध्यानकर, पूजा जाप विधान।
जिनप्रणीत मारगविषै, मगन होहु मतिमान॥

Colophon : इति श्री पुण्याश्रव कथाकोष भाषाजी राजभावसिंह कृत समाप्तम्। श्रीशुभ संवत् १९६२ तत्र वैशाखकृष्ण तृतीयायां लिपिकृतम् पं० सीतारामशास्त्री स्वकरेण सहारनपुर नगरे।

नोट :—लेखक का नाम भावसिंह होना चाहिए।

१०१. पुराणसार संग्रह

Opening : पुरूदेव पुराणाद्यं प्रणम्य वृषभं विभुं।
चरितं तस्य वक्ष्यामि पुण्यमादशमान्नुवान्॥

Closing : महिम्नामाधारो भुवनविततध्वांततपनः ।
स भूयान्नो वीरो जननजयसंपत्तिजननः ॥

Colophon : इति श्री वर्द्धमानचरित्रे पुराणसारसंग्रहे भगवन्निर्वाणगमनं नाम पंचमः सर्गः समाप्तः ।

प्रतिलिपि जैनसिद्धान्त भवन आरा में रोशनलाल जैन ने की । शुभमिती फाल्गुन शुक्ला ६ गुरुवार विक्रम संवत् १९९० वीर संवत् २४६० । इति शुभं भवतु ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० २५३ ।

१०२. पूज्यपाद चरित्र

Opening : पादपद्मगलिगे चाचुवेनेन्नलकवनु ॥
उपदेशगैदु सकलतत्वचनूरे कुप ःवेन्लव सहरिमि ।
सुपथव तोरि मुग्रवनु ःव्यगित्तवृपदेशकन्णि रगुवेनु ॥

Closing : .. सौख्यम कनर्कागिरिवराधीश्वर पार्श्वनाथ ।

Colophon : अंतु संधि १५ क्कां पदनु १८३२ सखिरद वंभैनूर मूव–सोंबसक्कां मगल जयमगल शुभमगल नित्यमंगल महा ।

हूदिनैदनेय मधि मुगिदुदु ।
पूज्यपादचरित्रे संपूर्न मगलमहा ।

१०३/१. रामयशोरसायन रास

Opening : श्री मनमोहन स्वाम जी त्रिभुवन त्यारण देव ।
तीरथंकर प्रभु वीसमो सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥

Closing : बरसां सोलां केरी सुन्दरी सुन्दर मुयूल भाषै ।
रूप अनूपम अधिक बनायो इन्द्र करै अभिलाष ॥ सी० ॥
रिमझिम रिमझिम घूघर बाजै ।

Colophon : नहीं है ।

विशेष : यह पाण्डुलिपि गुजराती लिपि में 'देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, सूरत' से 'आनन्दकाव्य महोदधि' के दूसरे भाग में

प्रकाशित ।

१०३/२. रत्नत्रय कथा

Opening : श्री जिनकमल नित नमु, सारदा प्रणमी अघ निरगमु ।
गौतम केरा प्रणमो पाय, जहथि बहुविधि मंगल थाय ।।

Closing : याम्या मणि मानिक भंडार, पद-पद मंगल जय जयकार ।
श्रीभूषण गुरुपद आधार, ब्रह्मज्ञान बोले पुविचार ।।

Colophon : इति रत्नत्रय कथा संपूर्णम् ।

१०४. रत्नत्रयव्रत पूजा व कथा

Opening : श्रीमत सन्मत नत्वा श्रीमतः सुगुरुन्नपि ।
श्रीमदागमतः श्रीमान् वक्षे रत्नत्रयार्चनम् ।।

Closing : देखे, क्र० १०३/२ ।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयव्रत कथा समाप्तम् ।

विशेष—पूजा जिनेन्द्रसेन रचित है ।

१०५. रविव्रत कथा

Opening : श्री सुषदायक पास जिनेस,
प्रणमौ भव्य पयोज दिनेस ।
सुमरौ सारद पद अरविंद,
दिनकर व्रत प्रगट्यौ सानंद ।।

Closing : यह व्रत जे नरनारी करैं,
सो कबहूं नहि दुरगति परैं ।
भाव सहित सुर वर सुषलहैं,
बार बार जिन जी यों कहैं ।।

Colophon : इति श्री रविव्रत कथा जी लघु समाप्तम् ।

१०६. रविव्रत कथा

Opening : देखें—क्र० १०५ ।

Closing :
इह व्रत जो नरनारी करै,
सो कबहू नहि दुर्गति परै।
भाव सहित सो सिवसुष लहै
भानुकीर्ति मुनिवर यो कहै ।।

Colophon : इति रविव्रत कथा समाप्तम् ।

१०७. राजावलि कथा

Opening : श्री मत्समस्तभुवनशिरोमणि सद्विनयविनमिताखिलजनचिन्तामणिये नित्य परमस्वामियनभिनुतिसि पडे—वे शाश्वतसुखमम् ।

Closing : इति कथेयं केलवर भ्रातियु नेरेकेडुमु बलिकमायु श्रीयु संतानवृद्धि सिद्धियनतसुख तप्पुदप्पुदेबुदु निहन ।

Colophon : इति सत्यप्रवचन काल प्रवर्तन कनकाचलश्रीजिनाराधक मलेयूर देवचंद्र पंडित विरचित राजवली कथासारदोल् जातिनिर्णय—प्ररूपणं त्रयोदशाधिकारं । समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

१०८. रामपमारोपम पुराण

Opening :
पंचपरमगुरु को सुमरन करौ, अरु जिन प्रतमा जिनधाम ।
श्री जिनवाणी जिनधरम को, करजोर करौ परनाम ।।

Closing :
श्रीरामपमारौ वर्नन करौ वाच सुनो नरकोय ।
भवदधि तारन को यह कारनै मोक्षवंछ वरलोय ।। २५ ।।

Colophon : अपठनीय ।

१०९. रामपुराण

Opening :
वंदेहं सुव्रतं देवं पंचकल्याणनायकम् ।
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृंदसुखप्रदम् ।।

Closing : श्री मूलसंघे वरपुष्करारूये गच्छेसुजातो गुणभद्रसूरिः।
पट्टे च तस्येव सुमोमसेनो भट्टारकोभूद्विदुषां शिरोमणिः ॥

Colophon : इति श्रीरामपुराणो भट्टारकं श्री सोमसेनविरचिते राम-
स्वामीनो निर्वाणवर्णनो नामत्रयत्रिशत्तमोधिकारः । ३३ ॥
समाप्तोयं रामपुराण ग्रंथाग्रंथश्लोक ७००० । सप्तसह-
स्त्राणि । मिती भादौ सुदी ११ संवत् १९८६ तादिन यह पुस्तक
लिखकर समाप्त की ।
द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३३१, २३४ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., Page-687.

११० रोहिणी कथा

Opening : वासुपूज्य जिनराज को, वंदू मनवचकाय ।
ता प्रसाद भाषा करो, सुनो भविक चितलाय ॥

Closing : रोहनी व्रत पालै जो कोई, ता घर महामहोत्सव होई ।
मनवचकाय सुद्ध जो धरै, क्रमतेमुकति वधु सुख वरै ॥ ८५ ॥

Colophon : इति रोहणी व्रत कथा सम्पूर्णम् ।

१११ रोटतीज व्रत कथा

Opening : चौबीसो जिन को नमौं, श्री गुरुचरण प्रभाव ।
रोटतीज व्रत की कथा, कहो सहितचित चाव ॥

Closing : मूल चक जा कथा मंझारा, लै भविजन सब सुजन सवारा ।
शुभ सवत् उन्नीसपचासा, अषाढ शुक्ल तृतीया मलोमासा ॥
वार शुक्र शशि कथा प्रकाशा, वाचक हृदय हर्ष की आशा ।
जैन इन्द्र किशोर सुनाई, जय-जय ध्वनि चतुर्दिक छाई ॥

Colophon : इति संपूर्णम् । शुभं भूयात् ।

११२. रोटरीज व्रत कथा

Opening : देखें, क्र० १११ ।

Closing : देखें, क्र० १११ ।

Colophon : शुभं भूयात् । इति सम्पूर्णम् ।
यह पुस्तक संवत् १९५१ मिति वैशाख कृष्ण परिवा को शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढ़ाया ।

११३. ऋषभपुराण

Opening : श्रीमन्त त्रिजगन्नाथमादितीर्थकरं परम् ।
फणीन्द्रेन्द्रनरेन्द्रार्च्यं वंदेऽनंतगुणार्णवम् ।।

Closing : अष्टाविंशाधिकाभिः षट् चत्वारिंशत्शतप्रमाः ।
अस्यादर्हश्चरित्रस्य स्युः श्लोकाः पिंडिताबुधैः ।।

Colophon : इति श्री वृषभनाथ चरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्ति विरचिते वृषभनाथनिर्वाणगमनोनाम विंशतितमः सर्गः ।
द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ५७ ।

११४. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : परमपुरुष आनन्दमय चेतन रूप सुजान ।
नमो शुद्धपरमातमा, जग परकासक भान ।।

Closing : सम्यक्दर्शन मूलहै, ग्यान पेड द्रुम डार ।
चरण सुपल्लव पहुप है, देहि मोषि फलसार ।।

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा भाषा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदयभूप अरहदाससेठादिक स्वर्गगमन कथन संधि ग्यारमी संपूर्णम् ।

अठारासै सोलहत्तरा, चैतमास है सार ।
शुक्लप्रतिपदा है सही, गुरुवार पैसार ।।१।।
लिपि कीन्ही भेलीराम जू, ग्याति सावडा जानि ।
वासी चंपावति सही, वोरिगढ मधि आनि ।।२।।
जयचंद जी सौं वीनती, करौं जुमनवचकाय ।
राति दिवस पढ़िज्यो सदा, इह कथा मनलाय ।।३।।

११५. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखे, ११४ ।

Closing : चंदसूर पानी अवनि, जबलग अवर आकाश ।
मेरादिक जबलगि अटल, तबलगि जैन प्रकाश ॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा साह जोधराज गोदीका विरचिते उदतोदयभूप अरहदाससेठादिक स्वर्गगमनवर्णन नाम एकादश परिच्छेद. । इति श्री समकित कौमुदी कथा साह जोधराज गोदीका जातिभावसाकी करि भाषा समाप्त: । सवत् १६१८ पौष मासे कृष्ण सप्तमीयां गुरुवासरे । श्लोक सख्या १७०० ।

११६. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखे, क्र० ११४ ।

Closing : धरम जिनेश्वर कोय है, स्वर्गमुक्ति पद देय ।
ताकी मनवचकाय सौ, देवसु पूज करय ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

११७. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखें, क्र० ११४ ।

Closing : देखें, क्र० ११४ ।

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा भाषा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदयभूप अर्हद्दाससेठादिक स्वर्गगमन कथा सधी ग्यारमी सम्पूर्णम् ।

देखें, क्र० ११४ ।

स्री संवत् १६७० शाके १६३५ मगशिर सुदी ६ नवमी रविवार मध्यानमें इह ग्रंथ संपूर्ण भया।

विशेष—हरप्रसाद दास धर्मशालाशाला, आरा में लिखा गया।

११८. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखें, क्र० ११४।

Closing : देखें, क्र० ११४।

Colophon : देखें, क्र० ११७।

संवत् १६४६...... ...श्रावण कृष्ण अष्टम्यां सम्पूर्णम्।

११९. संकटचतुर्थी कथा

Opening : वृषभनाथ वंदो जिनराज, पुनि सारद वंदो सुषसाज।
गणधर ये सुभमति हो लहो, संकटचोथि कथा तब कहो ॥

Closing : विश्वभूषण भट्टारक भए देवेन्द्रभूषण तिहिपट्ट ठए।
तिनि यह कथा करी मनुलाइ, भव्यकजन सुनियो चित ल्याइ ॥

Colophon : इति सकटचौथिकथा समाप्ता।

१२०. संकटचतुर्थी कथा

Opening : देखें, क्र० ११९।

Closing : देखें, क्र० ११९।

Colophon : इति संकट चौथकी कथा सम्पूर्णम्।

१२१. सप्तव्यसन चरित्र

Opening : श्री अर्हंत प्रनाम करि, गुरुनिरग्रंन्थ मनाइ।
सप्तविसन भाषा कहूं, भव्यजीव हितदाइ ॥

Closing : सकलमूल याग्रंथ को जानो मनवचकाय।
दयाधर्म नितकीजिये, सो भव भव सुख होय ॥

Colophon : इति श्री सप्तविसन भाषायां समुच्चय कथा परस्त्री विसनफल वर्णनो नाम सप्तमो अधिकार। इति श्री सप्तविसन चरित्र भाषा सम्पूर्ण। मिति चैत्रसुद २ सवत् १६७७।

१२२. सप्तव्यसन कथा

Opening : प्रणम्य श्रीजिनान् सिद्धानाचार्यान् पाठकान् यतीन्।
सर्वद्वंद्वविनिर्मुक्तान् सर्वकामार्थदायकान्॥

Closing : यावत्सुदर्शनोमेरुर्यावच्च सागराद्वर ।
तावन्नदत्वयं लोके ग्रंथो भव्य जनार्चित:॥

Colophon : इत्यार्षे भट्टारक श्रीधर्मसेन भट्टारक श्रीभीमसेनदेवा: तेषां आचार्य श्री सोमकीर्तिविरचिते सप्तव्यसनकथा समुच्चय परस्त्रीव्यसनफलवर्णनो नाम सप्तम: सर्ग:॥७॥

शाके १६६४ मिति आषाढ वदि त्रयोदश्या तिथौ भौमवासरे सवत् १८२६ का तद्दिवसे आर्द्रानक्षत्रे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये वैराडदेशे मगनूरग्रामे भट्टारक श्री धर्मचंद्रलिखितमिदं शास्त्र सप्तव्यसनचरित्र अर्जिका श्री नागश्री पठनार्थं इद शास्त्र लिखित स्वज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं दत्तम्।

विशेष—संपूर्णग्रन्थस्य श्लोकाना संख्या— १८५३।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २४।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० २३४।
(३) जि० र० को०, पृ० ४१६।
(4) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P 701.

१२३. सप्तव्यसन कथा

Opening : देखें, क्र० १२२।

Closing : देखें, क्र० १२२।

Colophon : सवत् १६२६ वर्षे शके १४९१ प्रवर्तमाने शुक्लसवत्सरे वैशाखमासे शुक्लपक्षे षष्ठी तिथौ रविवारे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री धर्मचन्द्रोपदेशात् बघेरवाल जाति चामरागोत्रे संघवीधीना तस्य भार्या लखमाई तयो: पुत्र नील्ह साह तस्य भार्या पुतलाई तयो: पुत्र गुणासाह

तस्य भार्या बोजाई ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं गोमटश्री अधिकार्ये: पुत्तलिका पुस्तक दत्तम् । कल्याण भवतु । भट्टारक माहेन्द्रसेण ...... ।

१२४. शय्यादान वंक चूली कथा

Opening : शय्यादानगुणख्यात्री संवेगरसकूपिका ।
सप्तव्यसननंदिश्री वंकचूलकाथाख्यात् ।।

Closing : इत्येव नृपनन्दनःप्रतिदिनं निःशेषपापोद्यतः,
शय्यादानमनुत्तरं गुणवतां दत्वा मुनीनां मुदा ।

Colophon : इति शय्यादाने वंकचूली कथा ।

५२५. शांतिनाथ पुराण (१६ सर्ग)

Oloing : नम. श्रीशांतिनाथाय जगच्छांति वि धायिने ।।
कृत्स्न कर्म्मौघशांताय शांतये सर्वकर्म्मणाम् ।। १ ।।

Closing : अस्य शांतिचरित्रस्य श्रेयाः श्लोकाः सुलेखकैः ।।
पचसप्तत्यधिकास्त्रिचत्वारिंशछतप्रमाः ।। ४१७ ।।

Colophon : इति श्रीशांतिनाथचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते श्री शांतिनाथसमवसरणधरमोपदेशमोक्षगमनवर्णनो नाम षोडषोऽधिकारः ।। १६ । इति श्री शांतिनाथचरित्रं समाप्तम् । शुभं भवतु ।। मासोत्तमे मासे वैशाखेमासे शुक्लतिथौ षष्ट्यां भृगुवासरे अयं ग्रंथा समाप्त. । लिखितमिद पुस्तकं मिश्रोपनामकगुलजारीलालशर्मणा ।। संवत् १६७१ ।। आर्य्या बनाई ।

श्लोक—भिन्डे निवासनशाली गुलजारीलाल नामको हि मिश्रश्च ।।
विललेखपुस्तकं यत् पातु सदा ब्रह्मिक्षवश्रमान् लोके ।। १ ।।

रि० ग्वालियर जि० भिंड । श्लोक संख्या ५६७२ संवत् १६२१ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है ।

द्रष्टव्य—(१) जि० र० को०, पृ० ३८० ।
(२) दि० जि० ग्रं० र०, पृ० २४ ।
(३) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 694

१२६. शान्तिनाथ पुराण

Opening : प्रणम्य परमानन्दाम् देवसिद्धान्तसगुरुम् ।
शांतिनाथपुराणस्य भाषा सहित नौम्यहम् ।।

Closing : जिनवर धर्मप्रभाव सों, परम विस्तरयौ ग्रथ ।
ता सेवत पाइये सदा, नाक मोष (मोक्ष) को पंथ ।।

Colophon : इति श्री शांतिनाश पुराण आचार्य श्री सकलकीर्ति विर-चिताद्भाषा विरचितात् लघुकवि सेवारामेन तस्य जिनज्ञानोत्पत्ति धर्मोपदेश विहार समय निर्वाणगमन निरूपणो नाम पचदसमोधिकार: । इति शांतिनाथ पुराण भाषा सम्पूर्णम् । लिखि आरा नगर मे श्री जिनमंदिर विषै मिती चैत्रशुक्ल चौथ वार बुध को लिख समाप्त भया ।
शुभं भवतु ।

१२७. शान्तिनाथ पुराण

Opening : देखें, क्र० १२६ ।

Closing : देखें, क्र० १२६ ।

Colopnon : देखे, क्र० १२६ ।

इति श्री शान्तिनाथ पुराण भाषा सपूर्णम् । लेखक दुर्गाप्रसाद ब्राह्मण लिखि गोरखपुरमध्ये अलीनगर में श्री जिनमदिर विषै मिति कार्तिक सुदी चौथ (४) वार बुध को लिखि समाप्त भया ।

धर्मेन हन्यते शत्रु धर्मेन हन्यते ग्रह: ।
धर्मेन हन्यते व्याधि यथा धर्म तथा जय: ।।

१२८. शीलकथा

Opening : प्रथमहि प्रणमूं श्री जिनदेव, इन्द्र नरिन्द्र करे तिन सेव ।
तीनलोक में मंगलरूप, ते वंदू जिनराज अनूप ।।

Closing : जा घर शील धुरंधर नारि।
मो घर सदा पवित्र निहार ॥
जाघर त्रिया वि ··· ···· ··· ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२९. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८ ।

Closing : देखें क्र० १३० ।

Colophon : इति शील माहात्म्य कथा सम्पूर्णम् । दस्तखत दुरगाप्रसाद मिति कुवार (आश्विन) सुदी १४ सोमवार को बाबू केशो (केशव) दास की कबीला सुमतदास की महतारी ने चढ़ाया पंचायती मंदिर में गया जी के ।

१३०. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८ ।

Closing : शीलकथा पूरनभई पढ़े सुने जो कोय।
सुख पावें वे नर त्रिया, पाप नाश तिन होय ॥

Colophon : इति श्री शीलकथा सम्पूर्णम् । तारीख २ अप्रैल सन् १९०५ । वैशाख कृष्ण ३ सनिवार ।

१३१. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८ ।

Closing : देखें, क्र० १३० ।

Colophon : इति श्री शील माहात्म्य की कथा सम्पूर्णम् । मिती पौष कृष्ण ११ दिन शनिवार को पूरण भई । इदं पुस्तकं नीलकंठदासेन लिखितम् ।

१३२. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८।

Closing : देखें, क्र १३०।

Colophon : इति श्री शीलकथा सम्पूर्ण। मिति वैशाख बदी १ सन् १२७६ साल दसखत दुरगा प्रसाद जैनी जिला आरा।

१३३. श्रेणिकचरित्र

Opening : तीनलोक तिहुकालमें पूजनीक जिनचंद।
श्री अरहुत महंतके, वंदौ पद अरविंद॥

Closing : मनवचतन यह शास्त्र कों, सुने सरदहै सार।
नामशर्म्म भोगिकें, होत भवोदधिपार॥

Colophon : इति श्री श्रेणिक महाचरित्रे ग्रंथ फलितवर्णनो नामएकविंशतिमो प्रभाव:। इति श्रेणिकचारित्र सम्पूर्णम्।

उगणीस सौ वासठ यही, कृष्ण पाच वैसाख।
सोम सहारनपुर विषै, सीताराम जुराख॥१॥
मूलऋक्ष शिवयोग मे लिखकरि पूर्ण विचार।
पंडित जन पढ़ लीजियो, लिखी बुद्धि अनुसार॥२॥
जैसी प्रति देखी लिखी, तैसी नहीं महान।
निजकर शोधि संभारिकै, पढ़ि लीजै बुधवान॥३॥

शुभम् संवत्सर: १९६२ शक: १८२७ वैशाखकृष्ण पचम्यां सोमदिने मूलर्क्षे शिवयोगे सहारनपुरनगरे लिपिकृतं पं० सीताराम-शास्त्री निजकरेण।

भव्या: पठन्तु शृण्वन्तु, क्षेममार्गानुगामिन:।
कराग्रेण विदोत्तूर्णं श्रीमद्‌गुरुप्रसादत:॥

१३४. श्रेणिकचरित्र

Opening : श्री वर्द्धमानमानंदं नौमिनानागुणाकरम्।
विशुद्धध्यानदीप्ताचिर्हुतकर्मसमुच्चयम्॥

Closing : चंदार्कहेमगिरिसागरभूमिवान गंगानदी नभसि सिद्धशिलाश्च लोके ।
तिष्ठंतु यावदमितो वरमर्त्यसेवा तिष्ठंतु कोविदमनोंबुजमध्यभूता: ।।

Colophon : इति श्री श्रेणिकचरित्रभवानुबद्ध भविष्यत् पद्मनाभपुराणे आचार्यशुभचन्द्रविरचिते पंचकल्याणवर्णनो नाम पञ्चदशपर्व्व: समाप्त: । संवत् १८०७ ज्येष्ठसुदी ५ मंगलदिने लिखितं मुनिविमल सुश्रावकपुण्यप्रभावक जंनीलाला प्रतापसिंह जी आत्मार्थे परममनोग्यम् ।

संवत् १९९३ विक्रमीये आषाढ़ सुदि १० मंगलदिने रोशनलाल लेखक ने लिखा ।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २५ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३९९ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २२४ ।
(४) आ० सू० पृ०, १५७ ।
(५) रा० सू० II, पृ० १९, २३१ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २१९ ।
(7) Catg. of skt. & Pkt. Ms., page, 698.

१३५. श्रेणिकचरित्र

Opening : पणवेवि अणिंद हो चरमजिणिंद हो, वीर हो दंसणणाणवहा ।
सेणिय हो णरिंदहु कुवलयचंद हो णिसुणहो भविय हो पवरकहा ।।

Closing : दयधम्मपवत्तणु विमलसुकत्तणु णिसुणतहो जिणइंदहु ।
जं होइ सघण्णऊ हुउ मणिमण्णाउ तं सुह जगिहरि इंदहु ।।

Colophon : इयसिरि वड्ढमाणकव्वे पयडियचउवग्गमग्गरसभव्वे सेणिय अभयचरित्ते विरइय जयमित्तहल्लुसुकइसो भवियणजणमणहरण संघाहिवहोलिवम्मकण्ण सेणियधम्मलाहो वड्ढमाणणिव्वाणगमणवण्णणा णाम एयारहमो संधी परिच्छेऊ सम्मत्तो संधी ।। ११ ।।

इति श्री श्रेणिकचरित्रं सम्पूर्णम् । संवत् १७६६ वर्षे श्रावणवदि ५ भृगु अपराह्निसमए श्रीपालमनगरि स्थाने लिखित ब्रह्म कृपासागर तच्छिष्य लिखितं पंडित सुंदरदास ।

शुभमिती माघशुक्ला ८ बृहस्तपरिवार वीर सम्वत् २४६३ विक्रम संवत् १९९३ । हस्ताक्षर रोशनलालजैन ।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ३९९ ।

१३६. श्रेणिकचरित्र (११ संधि)

Opening : परमप्पयभावणु सुहगुणपावणु णिहणिय जम्मजरामरणु ।
सासयसिरिसुंदरु पणयपुरंदरु रिसहगुण ववितिहभूसणसरणु ॥

Closing : देखें, क०, १३५

Colophon : इति श्री वर्द्धमानकाव्ये ॥ श्रोणिकचरिएकादशमो संधि. समाप्ता ॥ अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्य राज्ये संवत् १६०० तत्रवर्षे फाल्गुणमासे कृष्णपक्षेद्वितीयायां २ तिथौ शुक्रवासरे श्री तिजारा स्थान वास्तव्यो साहिआल सुराजप्रवर्त्तमाने श्री काष्टासंघे माथुरान्वये । पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रदेवा तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे साहुनोल्हा (?) भार्या राणीतस्य पुत्र जिणदासु । तस्य यार्यां सोभा तत्पुत्रा पंच । प्रथम पुत्र साधु महादासु । द्वितीय पुत्र साधुगेल्हा । तृतीय पुत्र साधु नगराजु । चतुर्थपुत्र साधु जगराजु । पंचमपुत्र साधु सीहू । जिण– दास प्रथमपुत्र महादासु तस्य भार्या दोदामही । तस्य पुत्रुते जनुतस्य भार्या लाडो । जिनदास दुतीयपुत्र गेल्हा तस्य भार्या धीमाही तस्य पुत्र मानूभस्य भार्या भागो तस्यसुत्रहीननु । दुतीय सुत्र सोत तस्य भार्या पोमी दुतीय भार्या सबीरी । जिणदास तृतीयपुत्र नगराजु- तस्य भार्या धनपालही पुत्र चत्वार प्रथमपुत्र जीवांहुतस्य भार्या भीषयो दुतीयपुत्र अमियपालु तृतीय पुत्र ग ? चतुर्थ दरगहमलु । जिणदास पुत्र चतुर्थ जगराजु तस्य भार्या धीमाही तस्य तृतीय वूढा । तस्य तस्य भार्या चांदिणी दूतीय पुत्र ··· ··· ···· तृतीयतो तु जिणदास पंचमपुत्र सीहु तस्य भार्या लक्ष्मणही तस्य ······ ···· तस्य भार्या कपूरी । एतेषां मध्ये साधु सांगूनि इदं श्री सेनिकसारा ज्ञानावरणी कर्म्मक्षयनिमित्तेण आत्मपठनार्थं कर्मक्षय निमित्तम् लिख्यापितं ॥

१३७. श्रेणिकचरित्र

Opening : श्री जिनवंदौं भावयुत, मनवचतन सुद्ध रीति ।
ऐसो है परताप प्रभु, कहीं उपजै भीत ॥

Closing : धर्मचंद्र भट्टारक नाम, ठो या गोत वह्यो अभिराम ।
मलयसेण सिंहासन सही, कारंजय पट सोभा लही ॥

Colophon : इति श्री होनहार तीर्थङ्कर पुराणे भट्टारक श्री विजयकीर्ति विरचिते जंबूस्वामी अरहदास श्रेष्ठि अर्जिका मुनिदीक्षाविधानवर्णन नाम द्वात्रिंसोऽधिकारः। संवत् १९२९ शाके १७९४ समय भाद्रपदे मासे कृष्णपक्षे एकादश्यां गुरुवासरे इदं पुस्तकं लिखितं रामसहाय शर्मण: सा० वांवपाली प्र० आरे।

१३८. श्रेणिकचरित्र

Opening : श्री सिद्धचक्र विधि केवल रिद्धि।
गुण अनंत फल जाको सिद्ध ॥
प्रणमौं परम सिद्ध गुरु सोइ।
भव्य संग ज्यौ मगल होइ ॥

Closing : जीवदया पालै दुखहरै, अशुचि बोल कबहुं न उच्चरै।
आप आपनै चित सब सुखी, कम जोग शक्ति नर दुखी ॥
... . तहां कथा यह पूरण करै ॥

Colophon : इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यसंगमगलकरणं बुधजनमनरंजन पातिगगजन सिद्धिचक्रविधि दुखहरणं त्रिभुवनसुखकारण भव्यजलतारण सम्पूर्णम्। श्री लिखित ब्राह्मण प० चन्द्रावड महाराष्ट्र ज्ञानी ब्रह्मा हरिप्रसाद। संवत् १८६५ मिति चैत्र सुदी ७ रविवार। शुभं भूयात्।

१३९. श्रेणिक चरित्र (९ अधिकार)

Opening : नत्वा श्रीमज्जिनाधीशं सुराधीशार्चितक्रमम्।
श्रीपालचरितं वक्ष्ये सिद्धचक्रार्चनोत्तमम् ॥

Closing : जीयादत्र महेन्द्रदत्त सुयती संज्ञानवन्निर्मलः।
सूरि श्रीयुतसागरादियतिनां सेवापरः सन्मतिः ॥
ख्याते मालवदेशस्थे पूर्णाशानगरे वरे।
श्रीमदादीजिनागारे सिद्धं शास्त्रमिदं शुभम् ॥
संवत् सार्द्धसहस्रे च पंचाशीति समुत्तरे।
आसाढेषु पंचम्यां संपूर्णं रविवासरे ॥

Colophon : इति श्रीसिद्धचक्रपूजातिशयं प्राप्ते श्रीपालमहाराज चरित्रे भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदि ब्रह्म श्री शांतिदासानुमोदिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्रीपालमहामुनीन्द्रनिर्वाण गमनवर्णनो नाम नवमोधिकारः सम्पूर्णम् । संवत् १८३७ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे । कुंदकुंद आचार्याम्नाये भट्टारक श्री गुलालकीर्त्तजी तत् शिष्य हरिसागरजी तत् पुन. लालजु पंडित इद पुस्तक लिखित्वा परोपकाराय इद हिरदै नग्रमध्ये श्रावण शुक्ल पंचम्यां संपूर्णो जातः । शुभं भूयात् । मोसमात गोवीदा कुंवर जौजे बाबू महावीर सहायजी कीने दशलाक्षणी के उद्यापन में चढाया मीति भादो शुक्ल १५ संवत् १९४५ ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३९७ ।

Catg. of Skt. & pkt. M . P 696.

१४०. श्रीपाल चरित्र

Opening : प्रथमहि लीजै ऊँकार । जो भवदुख विनाशन हार ।।
सिद्धि चक्रविध केवल रिद्ध । गुण अनंत जाको फल सिद्ध ।।

Closing : ता सुत कुल मंडन परमध्य । धर्म आगरे में अरि मध ।।
ता सुत बुद्धि हीन नहि आन । तिन कियौ चौपई बंध बखान।।

Colophon : नहीं है ।

१४१. श्रीपाल चरित्र

Opening : जय श्री धर्मनाथ सुखगेह, कंचन वरनविराजनि देह ।
जय श्री संति पयासहु साति, दुखहरन मूरति सोभति ।।

Closing : अरू जो नरनारी व्रतकरै, चहुँ गति को भ्रम सब हरै ।
भव्यनि को उपहास बताइ, निहिचै सोउ मुकति हि जाइ।।
।।२४००।।

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यमंगमंगलकरने बुधजन मनरंजने पातिगगंजने सिद्धचक्रविधिदुखहरने त्रिभुवनसुखकरने भवजलतरने चौपही बंध परिमल्ल कृतं श्री जिनवर वंद्यो महि आनंदो सिद्धचक्र वसुसारनीयं जुवती नवरंग पुरजनसंगम गहेसुर निजगेह गय । एक दशमो संधि ।।११।।

Colophon : लिखतं जवाहरब्राह्मणगढ गोपाच (ल) मध्ये मिति आषाढ़ कृष्ण ११ दैत्यवारे शुभ संवत् १८६१ ।

१४२. श्री पुराण

Opening : देखें, क्र० १।

Closing : देखें, क्र० १।

Colophon : इति श्री पुराणसमाम्नाये दशमं पर्व। इत्ययं समाप्तो ग्रन्थः।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३९८।

१४३. श्रुतपंचमी व्रत (भविष्यदत्त चरित्र)

Opening : विशुद्धसिद्धान्तमनंतदर्शनं, स्फुरच्चिदानंदमहोदयोदितम्।
विनिद्रचंद्रोज्ज्वलकेवलप्रभं प्रणौमि चंद्रप्रभतीर्थनायकम्॥

Closing : अपठनीय।

Colophon : अपठनीय।

१४४/१. सुदर्शनचरित्र (८ परिच्छेद)

Opening : नमः श्रीवर्द्धमानाय धर्मतीर्थप्रवर्तिने।
त्रिजगत्स्वामिनेनंत शर्मणे विश्वबांधवे॥

Closing : सर्वे पिंडीकृताः श्लोकाः बुधैर्नवशतप्रमाः।
चरित्रस्यास्य विज्ञेया श्री सुदर्शनयोगिनः॥

Colophon : इति श्री भट्टारक सकलकीर्तिविरचिते श्रीसुदर्शनचरित्रे सुदर्शनमहामुनिमुक्तिगमन वर्णनोनामाष्टमः परिच्छेदः समाप्तमिति। शुभं भवतु। देउलग्रामे नेमिसागरेण अयं ग्रन्थः लिखितः स्व पठनार्थम्। शके १७३७ तिथि फाल्गुन सुदी ३।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३०।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० २४९।
(३) आ० सू०, पृ० १४६।
(४) जि० र० को०, पृ० ४४४।
(5) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P.711.

१४४/२. सुदर्शन सेठ कथा

Opening : तदा सुदर्शनः स्वामी तस्मिन्घोरोपसर्गके ।
ध्यानावासे स्थितः तत्र मेरुवन्निश्चलाशयः ।।

Closing : किंचिदूनः परित्यक्तं कायाकारोप्यकायकः ।
त्रैलोक्यशिखरारूढः तनुवाते स्थिर स्थितः ।।

Colophon : नहीं है ।

१४५. सुगंधदशमी कथा

Opening : श्रीजिनसारद मनमें धरू । सुहगुरु नै नित वंदन करु ।।
साधसत पद वंदो सदा । कथा कहुं दशमीनी मुदा ।।

Closing : ए व्रत जे नर नारी करैं, ते भौसागर ते ओतरैं ।
छंदै पाप सकल सुख भरैं, ब्रह्मज्ञानसार उच्चरैं ।।

Colophon : इति सुगधदशमी कथा सम्पूर्णम् ।

१४६. सुकोशल चरित्र

Opening : जिणवरमुणिविंद हो थुवसयइंदहु चरणजुवलु पणवेविन हो ।।
कलिमलदुहनासणु सुहणयसामणु चरिउ भणामि सुकोशल हो ।।

Closing : जा महिरयणायरु णहिमसिभायरु कुलगिरिवरकण यद्दिवरा ।
तावाइ जंतउ वुहहि णिरुत्तउ चरिउ पवट्ठउ गुरुधरा ।।

Colophon : इय सुकौसल चरिए छउसंधी सम्मत्तो ।। ६ ।।

यह प्रति सु० देहली खजूर की मसजिद वाले नये पचायती मंदिर में से संवत् १६३३ विक्रम की लिखी हुई प्रति से लिखी जो कि बाबू देवकुमार जी द्वारा स्थापित श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए संग्रहार्थं विक्रम् सवत् १९८७ के मार्गशीर्ष कृष्ण १४ को लिखकर तैयार हुई । इति शुभम् ।

द्रष्टव्य– जि० र० को०, पृ ४४४ ।

१४७ उत्तर पुराण

Opening : श्रीमांजितोजितो जीयाद् यद्वचांस्यमलानलम् ।
क्षालयंति जलानीव विनेयानां मनोमलम् ।।

Closing : अनुष्टुप छन्दसा श्रेया ग्रंथसंख्यात्रविंशतिः ।
सहस्राणां पुराणस्य व्याख्यातृश्रोतृलेखकैः ।।

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसंग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते श्रीवर्द्धमानपुराणं परिसमाप्तम्……… ……? समाप्तं च महापुराण ग्रंथाग्रंथसहस्त्र २०००० । श्रेयः श्रेणयः …. … … । संवत् अष्टादशशत १८०० पंचदशसंवत्सरे मार्गशीर्षमासे दशम्यां तिथौ कृष्णायां शनिवासरे ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३२ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १०७ ।
(३) रा० सू० III, पृ० २१२ ।
(४) आ० सू०, पृ० १५ ।
(५) जि० र० को०, पृ० ४२ ।
(६) Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 627
(७) Catg. of Skt. Ms., P. 314 ।

१४८ उत्तर पुराण

Opening : ………………जिनि भूपति में षट गुन होय ।
ते निह कंटक राजकरेय, आगे और सुनो चितदेय ।।

Closing : इह पुराण जिन पास को संपूरण सुखदाय ।
पढै सुने जे भव्य जन ते खुस्याल सुखपाय ।।

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्ठि लक्षण महापुराणसंग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्य प्रणीतानुसारेण श्री उत्तरपुराणस्य भाषायां श्री पार्श्वतीर्थङ्करपुराण परिसमाप्तम् ।

१४९. वर्द्धमानचरित्र (१९ अधिकार)

Opening : जिनेशे विश्वनाथाय ह्यनन्तगुणसिंधवे ।
धर्मचक्रभृतेमूर्द्ध्ना श्री वीरस्वामिने नमः ।।

Closing : त्रिसहस्त्राधिकाः पंच त्रिंशद्श्लोकाः भवंतिवै ।
यत्नेन गुणिता सर्वे चरित्रस्यास्य सन्मते ।।

Colophon : इति भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते श्री वीरवर्द्धमान-चरित्रे श्रेणिकाभयकुमारो भवावली भगवन्निर्वाणगमनवर्णनो नामैकोनविंशोधिकारः । ग्रंथ संख्या ३०३५ । संवत् १८८६ का मिति माघकृष्णत्रयोदश्यां गुरुवासरे श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे-लोहाचार्याम्नाये भट्टारकश्री महेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचंददेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीललितकीर्ति वर्तमाने तेनेद पुस्तकं लिखापितं विराटनगर मध्ये कुंथुनाथचैत्यालयमध्ये इदं पुस्तक लिपिकृतम् ।

तैलाद्रक्षेजलाद्रक्षेद्रक्षेसिथलबंधनात् ।
मूर्खहस्ते न दातव्य एव वदंति पुस्तकम् ।।
जबलगमेरु अडिग है तबलग ससिअरु सूर ।
तब लग यह पुस्तक रहो दुर्जन हस्तकर दूर ।।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३६३ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P 689.

१५०. वर्द्धमान पुराण

Opening : श्री जिनवर्द्धमान इह नाम, सार्थ विराजतु है गुणधाम ।
घातिकर्म क्षय तें वृद्धि जोय, ज्ञानी तणी मम दीजै सोय ।

Closing : महावीर पुराण के, श्लोक अनुष्टुप् जान ।
दोय सहस्र नवशतक है संख्या लयो शुभ जान ।।

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्ठि लक्षणमहापुराणेसंग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्य-प्रणीतानुसारेण श्री उत्तरपुराणस्य भाषायां श्री वर्द्धमानपुराण परिस-

माप्तम् । संवत् १८८४ शाके १७४६ ज्येष्ठ शुक्ल पंचम्यां गुरुवासरे पुस्तकमिदं रघुनाथ शर्मा ने लिखि । शुभं भूयात् ।

१५१. विष्णुकुमार कथा

Opening : प्रथमहि प्रथम जिनेन्द्र चरण चित ल्याईयें ।
प्रथम महाव्रतधरन सु ताहि मनाईयें ।।
प्रथम महामुनि भेष सुधरण धुरंधरो ।
प्रथम धरम परकाशन प्रथम तीर्थंकरो ।।

Closing : मुनि उपसर्ग निवारणी, कथा सुने जो कोइ ।
करुणा उपजे चित्तमें, दिन दिन मगल होय ।।

Colophon : इति श्री विष्णुकुमार का वात्सल्यमुनि उपसर्ग निवारणी कथा लाल विनोदी कृत स्वयं पठनार्थ सूकरे लिखितम् सम्पूर्णम् । शुभ भवतु । संवत् १९४९ चैतशुक्ल पक्ष चौथ शनिवासरे । लिखतं वृणू बाबू की माँजी कलकत्ता मध्ये ।
इतनी मेरी अरज है, सुनो त्रिभुवन के ईश ।
तुम विन काऊ और कूं, नये न मेरो शीश ।।

१५२. व्रतकथाकोश

Opening : ज्येपटं जिनं प्रणम्यादावकलंकं कलध्वनि ।
श्री विद्यानंदिनं ज्येष्टजिनव्रतमथोच्यते ।।

Coleing : स्त्री चैषागवशेन माजसदृङा निर्व्यु‍ढचारुव्रता ।।
दीर्यायुर्वलभद्रदेवहृदया भूयात्पदं संपद. ।।२४९।।

Colophon : इति भट्टारक श्री मल्लिभूषण भट्टारक गुरूपदेशात्सूरी श्री श्रुतिसागर विरचितापल्लविधानव्रतोपाख्यान कथा समाप्ता । फागुण कृष्णपक्ष संमत् १९३७........ ।। ब्राह्मण गगा बकस पुष्करणा पाराशर ।। बनेडामध्ये ।।
संवत् १७१९ का भाद्रवमासे कृष्णपक्षे प्रतिपत्तिथौ बुधवासरे अस्य व्रतकथा कोशशास्त्रस्य टीका लिखिता ।।
द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३६८ ।

१५३. यशोधरचरित्र

Opening : जितारातीन्जिनान्नत्वा सिद्धान्सिद्धार्थसंपदः ।
सूरीनाचारसपन्नानुपाध्यायान् तथा यतीन् ॥१॥

Closing : सम्यक् सिद्धगिरी ······सच्छ्रियाः ॥

Colophon : इति यशोधरचरिते मुनिवासवसेनकृतेकाव्ये अभयरूचि भट्टारक अभयमत्यो. सूर्यप्रगमनो चंद्रमारी धर्म्मलाभो यशोमत्यादयोन्ये यथा-यथं नाक निवासिनोम् अष्तम सर्गः समाप्तः। इति वासवसेन विरचिते यशोधरचरित्र समाप्तम्। सवत् १७३२ वर्ष सोमे काष्ठासंघे भट्टारक श्री प० विश्वसेन ब्रह्मजयसागरः। आत्मपठनार्थम्।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६।
(२) रा० सू० III, पृ० ७५, २१७।
(३) जै० ग्र० प्र० सं० १, पृ० ७।
(४) जि० र० को० पृ० ३२०।

१५४. यशोधरचरित्र

Opening : देखे, क्र० १५३।

Closing : कृतिर्वासवसेनस्य वागडान्वयजन्मन. ।
इमा यशोधराभिख्यां समोध्य धीयतां बुधाः ॥

Colophon : इति यशोधरचरिते अभयरुचि भट्टारकस्य स्वर्गगमनो वर्णनो नामाष्टमः सर्ग।

सवत् १५०१ वर्षे माघसुदि ३ गुरौ अद्य इहसूर्यपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्ठासघे नदितटगच्छे विद्याधरगणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये········ सुश्राविकाहरपू पुत्र जाईआ सागधर्म-प्रभावना निमित्त श्री यशोधरचरित्रस्य पुस्तक लिखाप्य श्री जिन-शासनम्।

१५५. यशोधरचरित्र (४ सर्ग)

Opening : श्रीमदारब्धदेवेन्द्रमयूगनंदवर्त्तनम्।
सुव्रतामोधर वन्दे गंभीरनयगर्जितम् ॥

Closing : मुनिभद्रयशः कांत मुनिवृंदैः सुसेविता।
भद्रं करोतु मे नित्यं भयदोषाधिवर्जिता ॥७६॥
यह ग्रंथ वीर सं० २४४० में लिखा गया है।

देखें, जि० र० को०, पृ० ३३६।

धर्म, दर्शन, आचार

१५६. अध्यात्मकल्पद्रुम

Opening : नमः प्रवचनाय। अथायं श्रीमान् शांतनामरसाधिराजः सकलागमादिसुशास्त्रास्मरिवायनिषद्भूतसुधारसाद्यमाऐहिकामुष्मिकाअ- नंतानंदोहसाधनतया पारमार्थिकोपादश्यतयमर्वरससारभूत ज्ञाताशा- तरसभावनात्माऽध्यात्मकल्पद्रुमाभिधान ग्रंथांतरग्रथननिपुणेन पद्य सदर्षेण भाव्यते।

Closing : इममितिमानधीत्यवित्तेरमयतियो विरमत्ययं भवाद्राग्। स च नियत मनोरमेतवास्मिन् सह नव वैरिजयश्रियाशिव श्री।

Colophon : इति नवमश्रीशांतरमभावनास्वयो अध्यात्मकल्पद्रुमग्रंथोऽय जयअंके। श्री मुनिसुंदरभूरिभिः कृतम्।

विशेष—यह ग्रथ करीब वि० म० १८०० से भी कम का ज्ञान होता है।
देखे, जि० र० को०, पृ० ५।

१५७. अध्यात्म बारखड़ी

Opening : खौर तिलक बिंदी, अंग बाप उरमाल।
यामैं तो प्रभु ना मिले, पेट भराई चाल॥

Closing : ग्यान हीन जानों नही, मनमें उठी तरंग।
धरम ध्यान के कारनै, चेतन रचे सुचग॥

Colophon : इति अध्यात्म बारखड़ी समाप्त।

१५८. अन्यमतसार

Opening : आदिनाथ भगवान की वंदना करि संसारके हितके निमित्त जैनमतधर्मकी प्रसंशाकरि मुख्यदया धर्म की धारना करना श्रेष्ठ है

Closing : शास्त्र यह अब पूरन भयौ। भव्यन के मन आनंद ठयौ।
जे श्रावक पढ़ै मनलाय। छहमत भेद तुरत सोपाय॥

Colophon : इति श्री अन्यमतसार संग्रह ग्रंथ भाषा संपूर्ण।
एक सहस्त्र अरु छ सौ जान।
ग्रंथ सो संख्या करी बखान॥
पंडित वेनीचंद सुजान।
जैनधर्म मै किंकर जान॥ संपूर्ण।
मिति माघ वदी १४ संवत् १९३६।

१५९. अर्थप्रकाशिका टीका

Opening : वंदो श्री वृषभादि जिन धर्मतीर्थ करतार॥
नमैं जासपद इंद्र सत सिवमारग रुचिधार॥

Closing : राजै सहज स्वभाव मै, तजि परभाव विभाव।
नमौं आप्त के परमपद ··· ·· ···· ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

विशेष—मात्र एक अध्याय की टीका पूरी हुई है। शेष अनुपलब्ध है।

१६०. अष्टपाहुड वचनिका

Opening : श्रीमत वीरजिनेश रवि, मिथ्यातम हरतार।
विघ्नहरन मंगलकरन, वंदौ वृष करतार॥

Closing : संवत्सर दसआठ शत सतसठि विक्रमराय।
मास भाद्रपद सुकलतिथि तेरसि पूरण थाय॥

Colophon : इति श्री कुंदकुंदाचार्य कृत अष्टपाहुड ग्रंथ ··· प्राकृत गाथा बंध ताकी देशभाषामय वचनिका समाप्तम्। श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ १४ गुरुवासरे संवत् १९६०। श्री।

१६१. अष्टपाहुड वचनिका

Opening : देखें, क्र० १६०।

Closing : देखें, क्र० १६० ।

Colophon : देखें, क्र० १६० ।
लिखतं वैश्य गंगाराम साकिन मुरादाबाद मुहल्ला किसरौल संवत् १६४६ चैतवदी अमावस दिन इतवार (रविवार) ।

१६२. आचारसार

Opening : लक्ष्मीवीर जिनेश्वर: पदनतानंतामराधीश्वर: ।
पद्मासद्मपदांबुज: परमविल्लीलाप्ततत्वव्रज: ॥

Closing : विमेघचन्द्रोज्वलकीर्तिमूर्तिस्समस्तसैद्धांतिकचक्रवर्ति: ।
श्रीवीरनंदीकृतवानुदारमाचारसारं यतिवृत्तसारं ॥
ग्रंथ प्रमाणमाचारसारस्य श्लोकर्मामित
भवेत्सहस्त्रद्विशतं पंचाशच्छांकतस्तथा ॥३५ ॥

Colophon : इतिश्रीमन्मेघचन्द्रत्रैविद्यदेव श्रीपादप्रसादऽसाधितात्मप्रभाव समस्त विद्याप्रभाव सकलदिग्वर्ति कीर्ति श्री मद्वीरनंदी सैद्धांतिक चक्रवर्ति कृताचारसारे शीलगुणवर्णन नाम द्वादशाधिकार: समाप्त. ॥१२॥ श्री पंचगुरुभ्योनम: ॥

शके १८३२ साधारण नाम संवत्सरस्य फाल्गुन मासे कृष्ण-पक्षे ११ रविवासरे समाप्तोयं ग्रंथ: । रामकृष्ण शास्त्रिणा पुत्र रगनाथ शास्त्रिणा लिखितोयं ग्रन्थ शुभं भवतु ।

देखें, जि० र० को०, पृ० २२ ।

१६३. आलापपद्धति

Opening : गुणानां विस्तरं वक्ष्ये स्वभावानां तथैव च ।
पर्यायाणां विशेषेण नत्वा वीर जिनेश्वरम् ॥

Closing : .. ... संश्लेषसहितवस्तुसंबन्धविषयोनुपचारिता: सद्भू-तव्यवहार: यथाजीवस्य शरीरमिति ।

Colophon : इति श्री सुखबोधार्थमालापपद्धतिश्रीदेवसेन पंडित विरचिता समाप्तम् ।

(१) जि० र० को०, पृ० ३४ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०६ ।
(४) आ० सू० पृ०, १३ ।
(५) रा० सू० II, पृ० ८०, १६४ ।
(६) रा० सू० III, पृ० १६६ ।
(६) दि० जि० र०, पृ० ३८ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt Ms., page, 626.

१६४. आलापपद्धति

Opening : देखें, क्र० १६३ ।

Closing : देखें, क्र० १६३ ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापपद्धतिः श्रीदेवसेनपंडित विरचिता समाप्ता। लिखतं पूर्वदेश आरा नगर श्री पार्श्वनाथजिनमंदिर मध्ये काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्याम्नाये श्री १०८ भट्टारकोत्तमे भट्टारकजी श्री ललितकीर्ति तत्पट्टे मार्दवापरनामी श्री १०८ राजेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति दिल्ली सिंहासनाधीश्वर नें लिखी संवत् १९४९ का मिती भादव वदी ६ वार रवि कू पूरा किया ।

१६५. आराधनासार

Opening : विमलयरगुणसमिद्धं सुरसेण वंदिय सिरसा ।
णमिऊण महावीरं वोच्छं आराहणासारं ॥१॥

Closing : अमुणियतच्चेण इमं भणियं जं किंपि देवसेणेण ।
सोहंतु तं मुणिंदा अत्थि हूजइ पवयणविरुद्धं ॥११५॥

Colophon : एवं आराधनासार समाप्तम् ।
द्रष्टव्य—जि. र. को., पृ. ३३ ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 626

१६६. आराधनासार

Opening : प्रथम नमूं अर्हन्त कूं, नमूं सिद्ध शिरनाय ।
आचारज उवझाय नमि, नमूं साधु के पाय ॥

Closing : केई ग्रन्थनिकी वणी वचनिका भाषामई देश की ।
पन्नालाल जु चौधरी विरचिजो कारक दुलीचंदजी ॥

Colophon : इति वचनिका बनने का सम्बन्ध सपूर्ण ।

१६७. आराधनासार

Opening : सम्यग्दर्शनबोधन चरित्ररूपान् प्रणम्य पंचगुरून् ।
आराधनासमुच्चयमागमसारं प्रवक्ष्याम: ॥

Closing : छद्मस्थतया यस्मिन्नतिबद्धं किंचिदागमविरुद्धम् ।
शोध्यं तद्धीमद्धीमद्भिर्विशुद्धबुध्या विचार्यपदम् ॥
श्री रविचन्द्रमुनीद्रै: पनसोगे ग्रामवासिभि: ग्रन्थ: ।
रचितोऽयमखिलशास्त्रप्रवीणविद्वन्मनोहारी ॥

Colophon : इत्याराधनासार: ।
यह ग्रन्थ जैन ज्ञानपीठ मूडविद्री के वर्तमान एवं जैनसिद्धान्त भवन आरा के भूतपूर्व अध्यक्ष विद्याभूषण पं. के. भुजवली शास्त्री के तत्त्वावधान मे उक्त भवन के लिए जैन मठ मूडविद्री के ग्रन्थागार से पन. चन्द्रराजेन्द्र विशारद–द्वारा लिखवाया गया । नवबर १९४४ ई. ।
द्रष्टव्य— जि. र. को, पृ. ३३ ।

१६८. आषाढ़भूति चौपाई

Opening : सकल ऋद्धि सभृद्धि करि, त्रिभुवन तिलक समान ।
प्रणमु पासजिणेसरू, निरूपम ज्ञान निधान ॥

Closing : ... नित हौज्यो परम कल्याण रे ।

Colophon : इति श्री पिंड विशुद्धि विषये आसाढभूति चौपाई संपूर्णम् । सवत् १७६७ वर्षे मिती ज्येष्ठ सुदी ४ शुक्रवारे श्रावकासदा कुवर लिखायतं । श्री आगरा नगरे ॥

१६९. आत्मबोध नाममाल

Opening : सिद्धसरन चितधारके, प्रणमूं शारद पाय ।
मुझ ऊपर कीजै कृपा, मेधा दीजे माय ॥

Closing : इक अष्ट चार अरि सात धरिये, माघसुदी दशमी रवी।
इह साख विक्रम राज के हैं, चित्तधार लीजे कवी।
इह नाममाला अतिविशाला कठ धारे जे नरा।
बहु बुद्धि उपजे हियै माही, ग्यान जगमें है खरा ॥
॥२७६॥

Colophon : इति श्री आत्मबोध नाममाला भाषा सम्पूर्णम्।

१७०. आत्मतत्त्वपरीक्षण

Opening : समन्तभद्रमहिमा समंतव्याप्तमंविदा।
कुरुते देवराजार्य आत्मतत्त्वपरीक्षणम् ॥

Closing : ... ... प्राणात्मवादोप्य प्रामाणिकः प्राणस्यानित्यतया देहात्मवादोक्तदोषप्रसङ्गात्।

Colophon : इति श्रीमदर्हत्परमेश्वरचारुचरणारविंदद्वंद्वमधुकरायमान-आत्मीयस्वांतेन सद्युक्तियुक्तमवचननिचयवाचस्पतिना अतिसूक्ष्मम तिना परमयोगीयोऽदमरूपक्षितभागधेयेन सुकृतिकृतिविहितभागधेयेन सज्जनविधेयेन समुचितपवित्रचरित्रानुमधेयेन जैनराजस्य जननजल-निधिराजायमानमिततटाकनिलयदेवराजराजाभिधेयेन रणविवरण-वितरणप्रवीणेन अगण्यपुण्यवरेण्येन प्रणि ... ।

१७१. आत्मानुसार

Opening : शिक्षावचस्सहस्रैव क्षीणपुण्येन धर्मधीः।
पात्रे तु स्फायते तस्मादात्मैव गुरुरात्मनः ॥

Closing : तद्विचारिसहस्रेभ्यो वरमेकस्तत्ववित्तमः।
तत्वज्ञानसम पात्र नाभून्न च भविष्यति ॥

Colophon : नही है।

१७२. आत्मानुशासन

Opening : लक्ष्मी निवासनिलयं, विलीननिलयं निधाय हृदिवीरं।
आत्मानुशासनं शास्त्रं, वक्ष्ये मोक्षाय भव्यानाम् ॥

Closing : श्री नाभियोजिनोभूयाद्, भूयसे श्रेयसेषवः ।
जगद्ज्ञानजलेयस्य दधाति कमलाकृतिम् ।।

Colophon : इति श्री आत्मानुशासनं समाप्तम् ।
जैनधर्म की पाल, तुम करयो महाराज ।
दर्शन तुम्हारे करत ही, पाप जात है भाज ।।
मिति ज्येष्ठ वदी ११ शुक्रवार संवत् १९४० । लिखतं ब्रह्मदत्त पंडित आत्म पठनार्थम् ।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३९ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २७ ।
(३) प्र० जैन० सा०, पृ० १००–१०१ ।
(४) आ० सू०, पृ० १० ।
(५) रा० सू० II, पृ० १०, १७६, ३८४ ।
(६) रा० सू० III, पृ० ३९, १९१ ।
(7) Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 623.

१७३. आत्मानुशासन

Opening : देखें, क्र० १७२ ।

Closing : इति कतिपयवाचांगगोचरीकृत्यकृत्यं,
चितमुदितमुच्चैश्चेतसां चित्तरम्यं ।
इदम् विकलमंतः संततं चिन्तयन्तः,
सपदि विपद पेतामाश्रयते श्रियते ।। २६७ ।।

Colophon : जिनसेनाचार्य पादस्मरणादीनचेतसां ।
गुणभद्रभदतानां कृतिरात्मानुशासनम् ।। २६८ ।।
इति श्रीमद्गुणभद्रस्वामी विरचितमव्मानुशासन समाप्तम् ।।

१७४. आत्मानुशासन

Opening : श्रीजिनशासनगुरु नमौं, नानाविधि सुखकार ।
आतमहित उपदेशतैं, करैं मंगलाचार ।।

Closing : ···· अथवा जिनसेनाचार्य का शिष्य जो गुणभद्र ताका भाष्या है। ए दोऊ अर्थ प्रमाण है।

Colophon : इति श्री आत्मानुशासनमूलभाषाग्रंथ सपूर्णम्। सवत् १८५८ मिती मार्गशिर वदी १४।

१७५. आवश्यक विधि सूत्र

Opening : नमो अरहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाण, नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूण ॥

Closing : १ सच्चित्त, २. दव्व, ३ विगई, ४. वाहणह, ५ वक्ष, ६ कुसुमेसु, ७. वाहण, ८ सयण, ९ विलेपण, १० अवत, ११. दिसि, १२ न्हाण, १३. भानसु, १४ नीम।

Colophon : इति आवश्यकविधिसूत्र। संवत् १६४२ वर्षे कातग (कातिक) मासे शुक्लपक्षे पचमी तिथौ रविवारे लिखित कृष्णतगुणेन। शुभ भवतु।

१७६. बनारसीविलास

Opening : ··ताल अरथविचार ॥

Closing : ···ध्यानधरै बिनती करै।
बनारसि बदाति ··॥

Colopnon : अनुपलब्ध।

१७७. भगवती आराधना

Opening : सिद्धे जयप्पसिद्धे चउव्विआराहणा फलं पत्ते।
वंदित्ता अरिहंते वुच्छं आराहणा कममो ॥

Closing : हरो जगत के दुख सकल करो सदा सुखकंद।
लसो लोक में भगवती आराधना अमद ॥

Colophon : इति श्री शिवाचार्य विरचित भगवती आराधनानाम ग्रंथ की देशभाषामय वचनिका समाप्तः। मिती माघ सुदी १२ संवत् १९६१। श्री जिनाय नमः।

१७८. बाईस परीषह

Opening : पंच परमपद प्रनमिके, प्रनमो जिनवर वानि।
कहौं परीषह साधुकैं, विशति दोय वखानि ॥

Closing : हृदैराम उरतैं भए कवित्त ए सार।
मुनि के गुन जे सरदहै, ते पावहि भवपार ॥

Colophon : इति श्री बाईस परीसह सम्पूर्णम्।

१७९. भव्यकण्ठाभरण पञ्जिका

Opening : श्रीमान् जिनो मे श्रियमेषदिश्याद्यदीयरत्नोज्ज्वलपादपीठम्।
कर्णैर्नरेन्द्रोत्करमौलिरत्नैः स्वपक्षरागादिव चालितं स्वैः ॥ १ ॥

Closing : आप्तादिरूपमिति निश्चमवेत्य तान्यगेतेषु रागमितरेषु च मध्यभावम्।
ते तन्वते बुधजनः नियमेन तेऽ ासम्यमेत्य सतत सुखिनो भवन्ति ।६।

Colophon : इत्यर्हद्दासकृत भव्यकण्ठाभरणस्य पञ्जिका समाप्तम्।
अयं च मूडबिद्रि निवासिना रानू० नेमिराजाख्येन समालिख्य आषाढ़ शुक्ला ७ म्यां समाप्तोऽभवत् ॥ वीरशक २४५१ ॥
देखें, जि० र० को०, पृ० २९३।

१८०. भव्यानन्दशास्त्र

Opening : श्रिा क्रियायस्य सुराभिषेके निरस्तगाम्भीर्यगुणः पयोधिः।
स्वीकीयरत्नप्रकरैः प्रदीपशोभां बिधत्ते स जिनश्चिरं वः ॥१॥

Closing : नमः श्रीशान्तिनाथाय कर्मारण्यदवाग्नये।
कर्मारामप्रसन्ताय बोधाम्भोधिसुधांशवे ॥

Colophon : इति श्रीमत्पाण्ड्यभूपतिविरचिते भव्यानन्दः समाप्तः।
अयमपि रानू० नेमिराजाख्येन लिखितः। आषाढ़ शु० नवम्यां समाप्तोभूत् ॥
श्री वीरनिर्वाण शक २४५१ ॥ मूडबिद्री ॥

१८१. भावसंग्रह

Opening : खविदघणघायिकम्मे अरहन्ते सुविधिदत्थणिवहेय ।
सिद्धाण्ठ गुणेसिद्धेरय शान्तय साहूगेथुवे साहू ॥ १ ॥

Closing : वरसारन्तयणीउणोसुन्द परदो विरहिय परभावो ।
भवियाणं पडिबोहूण परोपहा चन्दणाम मुणी ॥ १२२ ॥

Clophon : इति श्रुतमुनिविरचितः भाव संग्रह. समाप्तः ॥

देखें–Catg of skt. & pkt. Ms., P. 678.

१८२. भावसंग्रह

Opening : श्रीमद्वीरंजिनाधीशं, मुक्तीशं त्रिदशार्च्चिम् ।
नत्वा भव्य प्रबोधाय, वक्ष्येऽहं भावसग्रहम् ॥

Closing : यावद्वीपाद्वयो मेरु यविचन्द्रदिवाकरौ ।
तावद्वृद्धि प्रयात्युच्चिर्विशदं जिनशासन ॥
अयोगगुणस्थानं चतुर्दशम् ।

Colophon : इति श्री वामदेव पंडित···· ··· ···

देखे, (१) दि. जि. ग्र. र., पृ. ८२ ।
(२) जि. र. को., पृ. २९६ ।
(३) प्र. जै. सा., पृ. १९५ ।
(४) आ. सू., पृ. १०८ ।
(५) रा. सू. II, पृ. १६४ ।
(६) रा. सू. I , पृ. १८३ ।
(7) Catg. of skt. & pkt. Ms , P. 678

१८३. भावनासार संग्रह

ॐ नमो वीतरागाय ।

Opening : अरिहनव रजो हतनररहस्य हरं पूजमायमहं ······ ।

Closing : तत्वार्थरद्धान्त महापुराणेष्वाचारशास्त्रेषु च विस्तरोक्तम् ।
आख्यान् समासात्नुयोगवेदी चारित्रसारं रणरगसिंहः ॥

Colophon : इति सकलागम संयम संपन्न श्रीमज्जिनसेन भट्टारक श्री पादपद्म प्रसादासादित··········शिष्य श्री ब्रह्मसारु तदाम्नाये ।

देखें,—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 640.

१८४. ब्रह्मचर्याष्टक

Opening : कायोत्सर्गायतांगो जयतिजिनपतिर्नाभिसुनुः महात्मा ।
मध्यान्तैयस्य भास्वानुपरिपरिगतै राजतेस्मोग्रमूर्तिः ॥
चक्रं कर्मेन्धनानामतिबहुदहतो दूरमैदास्य ··· ···· ···।
··· ··· ··· त्यादिना ॥

Closing : मया पद्मनन्दिमुनिना मुमुक्षुजनं प्रति युवती स्त्रीसंगति वर्जित अष्टकं भणितं कथितम्, सुरतरागसमुद्रगताः प्राप्ताजनाः लोकाः अजमयि मुनौ मुनीश्वरे क्रुद्धं क्रोधं माकुरुत माकुर्वंतु मयि पद्मनंदिमुनी ।

Colophon : इति श्री ब्रह्मचार्याष्टकम् समाप्तम् । शुभ संवत् १९३७ भाद्रव सुदी ५ गुरुवार लिखितम् सुगनचंद पालमग्राममध्ये । शुभं भवतु ।

देखें— जि० र० को०, पृ० २८६ ।

१८५. ब्रह्म विलास

Opening : ओंकार गुण अतिअगम, पंचपरमेष्ठि निवास ।
प्रथम तासु वदन कियौं लहियह ब्रह्मविलास ॥

Closing : जामें निज आतम की कथा, ब्रह्मविलास नाम है जथा ।
बुद्धिवंत हसियो मतकोय, अल्पमति भाषाकवि होय ॥
भूलचूक निजनैन निहारि, शुद्ध कीजियौ अर्थविचारी ।
संवत् सत्रह सै पचावन ··· ॥

Colophon : नहीं है ।

विशेष—इसके अन्तिम पद्य ही प्रशस्ति सूचक हैं ।

१८६. ब्रह्म विलास

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहंत बहुरि श्री सिद्ध नमीज्जै ।
आचारिज उपझाय तासु पदवंदन किज्जै ॥

Closing : जह देखो तहाँ ब्रह्म है, विना ब्रह्म नही और ।
जे यह पाये विनसुख कहै, ते मूरष शिरमौर ॥

Colophon : इति श्री ब्रह्मविलास् भैया भगवतीदास जी कृत समाप्तम् ।
तनुज श्री वीरनलाल के, लेखक दुर्गालाल ।
जैनी आरामो वसे, कांसिल गोत्र अग्रवाल ॥
श्री शुभ सम्वत् १६५४ मिती भादो शुक्ल १४ बृहस्पतिवार समाप्त भया ।

१८७. ब्रह्माब्रह्मनिरूपण

Opening : असी आउसा पंच पद, बंदौ शीश नवाय ।
कहु ब्रह्मा अरु ब्रह्म की, कहु कथा गुनगाय ॥

Closing : .... सोई तो कुपथ भेद जाने नाही ।
जीवन की, विना पथ पाय मूढ़ कैसे मुन्दा हरसे ॥

Colophon : पूरनम् ।

१८८. बुद्धिप्रकाश

Opening : मनदुखहरकर सिद्धसुरा, नरासकल सुखदाय ।
हरकर्मभट अष्टक अरि, ते सिध सदा सहाय ॥

Closing : पढ़ो सुनो सीखो सकल, बुधप्रकाश कहंत ।
ताफल मिव अघनासिकैं, टेक लहो सिव सत ॥

Colophon : इति श्री बुधिप्रकाशनाम ग्रंथ सपूर्णम् । इसग्रंथ का प्रारंभ तो नगर इंदोर विषै भया । बहुरि तापीछै सपूरण भाइलनग्र जोमैलसाता विषै भया । यांके पढ़ै सुनै तै बुद्धि होय तातै हे भव्य हो जैसे तैसे इसका अभ्यास करने योग्य है ।

मिति कार्तिक वदी एकम चंद्रवार संवत् १६७८ तादिन यह शास्त्र समाप्त भया । हस्ताक्षर पं० श्री दुबे रूपनारायण के ।

१८९. बुद्धि विलास

Opening : समवविजय सुत जिनसु नमत अघहरत सकलजग,
कुवर पदहितप घडगलियधकर हनिये करम ठग ।

भरमतिमर सब चसतु-उदय हुव तिभुवन दिनकर,
जपि भवि भवदधि तरत लहत गति परममुक्तिवर।
तसु चरनकमल भविजन भ्रमर लषि अनुभवरस चखत,
वहकरहु नजरि मुझपर सुजिम फल फलहि झमकहि
वखत ।। १।।

Closing : नखित अश्वनी वारगुरु, सुभमहरत के मद्धि।
ग्रंथ अनूप रच्यो पढै, हूं ताको सबसिद्धि ।।

Colophon : इति श्री बुद्धिविलास नामग्रंथ सम्पूर्णम् । मिती भादौ वदी ६ संवत् १६८२ में ग्रंथ पूर्णभयो ।
जैसी प्रत देखी हती, तैसी लई उतार।
अक्षिर घट वड हो जो, बुधजन लीयो समार ।।

१६०. चन्द्रशतक

Opening : अनुभौ अभ्यासमें निवास शुद्ध चेतन को,
अनुभौ सरूप सुद्धबोध बोध को प्रकाश है।
अनुभौ अनूप ऊपरहत अनंत ग्यान,
अनुभौ अतीत त्याग-ग्यान सुखरास है ।।

Closing : सपतभंगगुनथान थैं छूटे एक गत देवकी।
यौं कहयो अरथ गुरुग्रथ मे, सति वचन जिनसेवकी ।।

Colophon : इति श्री चद्रशतक समाप्तम् ।

१६१. चरचा नामावली

Opening : त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं सालोकमालोकितम्,
साक्षाघेनयथास्वयं करतले रेखात्रय सांगुलि ।
रागद्वेष भयामयांतक् जरा लोलत्वलोभादयो,
नालं यत्पदलंघनाय समह दिवो मया वंद्यते ।।

Closing : अैसें जानि करि सदाकाल वीतराग देवकों स्मरण करवो जोग्य छै।

Colophon : इति चरचा नामावली संपूर्णम् । शुभं भवतु मगलम् । मिती भादो वदी ८ संवत् १६४२ मुक्काम चन्द्रापुरीमध्ये लिख्यत पं० श्री चोबे मथुरापरसाद ।

१६२. चर्चा शतक वचनिका

Opening : ॐ सरवज्ञ अलोकलोक इक उकवतदेखै ।
हस्तामल जोलीक हाथ जो सर्व विशेखै ।।

Closing : तातैं पदार्थ हम सरदहा भली प्रकार जानना । इति कहिये इस प्रकार चरचा कहिये सिद्धान्त की रववदल सतक कह मोकवित्त संपूर्णम् । करता द्यानतराय टीका का करता हरजीमल शुद्धजैनी पाणीपथिया । १०४ ।

Colophon : इति चरचाशतक टीका संपूर्ण । शुभमिती असाढ़ कृष्णा ४ संवत् १६१४ गुरुवार लिख्यतं नदराम अग्रवाल । श्लोक सख्या २०८० ।

१६३. चर्चा शतक वचनिका

Opening : देखें, क्र० १६२ ।

Closing : जगमहादेव है रूद्रपद कृष्ण नामहर जानिये ।
द्यानतकुलकर मैनाभभूप भीम बली भुव मानिये ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६४. चर्चा शतक वचनिका

Opening : देखें–क्र० १६२ ।

Closing : चरचा सुख सौं भनं सुनं नहिं प्राणी कानन,
केई सुनि घरि जाय नांहि भाव फिरि आनन ।
तिनको लखि उपगारसार यह शतक बनाई,
पढत सुनत ह्वै बुद्धि शुद्ध जिनवाणी गाई ।
इसमें अनेक सिद्धान्त का मथन कथन द्यानत कहा,

मत्र मांहि जीव को नाम है जीवभाव हम सरदहा ।।

Colophon : इति श्री द्यानतराय जी कृत चर्चाशतक सम्पूर्णम् । संवत् १९२९ श्रावण शुक्ल अष्टम्यां चंद्रवासरे लिखि कर्मणा पूर्णीकृतम् । शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

१९५. चर्चासंग्रह

Opening : धर्मधुरधर आदि जिन, आदिधर्म करतार ।
नमूं देव अघहरण तै, सब विधि मंगलसार ।।

Closing : .. .. विद्यानामचतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वंतनो-मंगलम् ।

Colophon : इति चतुर्दश विद्यानाम संपूर्णम् ।

मिती ज्येष्ठ सुदी ५ सवत् १८५४ शुभस्थाने श्री अटेर मैं लिख्यौ ग्रंथप्रति श्री लाला जैनी फतेचदसघई जी की पैंतैवासी सुखधाम शुभस्थाने श्री भेंगोडजी में लिखाई ग्रथ चर्चासग्रह जी ।

१९६. चर्चा समाधान

Opening : जयो वीर जिनचंद्रमा उदै अपूर्व जासु ।
कलियुग कालेपाखमय, कीनो तिमिर विनास ।।

Closing : देवराज पूजत चरण, अशरणशरण उदार ।।
कहूं संघ मंगलकरण, त्रियकारिणी कुमार ।।

Colophon : इति श्री चरचा समाधान ग्रंथ संपूर्णम् ।

१९७. चर्चा समाधान

Opening : देखें--क० १९६ ।

Closing : देखें- क० १९६ ।

Colophon : इति श्री चरचा समाधान ग्रंथ संपूर्ण । पत्र १३२ । दोहा--
सुत श्री बिरनलाल के, लेखक दुरगा लाल ।

जैनी आरा मो रहे, कांशिल गोत्र अग्रवाल ।।
महल्ले महाजन टोली अनुअल में। संवत् १६५६ मिति फागुन शुक्ल १ वार गुरुवार ।

१९८. चर्चा सागर वचनिका

Opening : श्री जिन वासुपूज शिवदाय। चंपा पंचकल्यान लहाय ।।
विघ्न विडारन मंगलदाय। सो वंदों शरणाइ सहाय ।।

Closing : चउपद के धुर वर्ण चउ, क्रम करि पंक्ति अनूप।
चर्चा सागर ग्रंथ को, कर्ता नाम स्वरूप ।।

Colophon : इति श्री चर्चासागर नाम शास्त्र संपूर्णम्। शुभ भवतु।

१९९. चरित्रसार वचनिका

Opening : परमधरमरथ नेमि मम, नेमिचंद जिनराय।
मंगल कर अघहर विमल, नमों सु मनवचकाय ।।

Closing : ... अन्य ग्राम विषै जो भिक्षा कै निमित्त गमन ता विषै नाही है उद्यम जाके बहुरि पाणिपुट मात्र ही है।

Colophon : अनुपलब्ध।

२००. चरित्रसार वचनिका

Opening : मुकतमानादिसायकैं कर्म सयल करि चूरि।
वंदौ विश्व विलोकि कौ, इच्छूं त्रयगुण भूरि ।।

Closing : .... जो याके अपराध समान मेरा भी अपराध है, ऐसा ही ...।

Colophon : अनुपलब्ध।

२०१. चौबीस ठाणा

Opening : सिद्धं सुद्धं पणमिय जिणिंदवर णेमिचंदमकलंकं ।
गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं ।।

Cloning : ए इंदिय बियलाणं इक्काणवदी हवंति कुल कोडी ।
तिरिय(४३)नर(१४)देव(२६)नारय(२४)सगअट्ठा
सहिय सद्धाणं ।।

Colophon : इति चउवीस ठाणा समाप्ता । संवत् १७२५ वर्षे भादव वदि ९ वृहस्पतिवारे काष्ठासंघी भट्टारक श्री महीचन्द्रजी तत्शिष्य पांडे भोवाल तेन लिखतं स्वात्मार्थम् ।

विशेष इसमे कुछ गाथाएँ गोम्मटसार की प्रतीत होती है ।
देखें, C. tg. of kt & Pkt. Ms., P. 642.

२०२. चौबीस गणगाथा

Opening : गइइंदियचकायेजोयेवेय कषायणाणेय ।।
सयम दंसण लेस्सा भविया सम्मत्त सण्णि आहारे ।।१।।

Closing : उरपांच सहनन वाले न मांडे । तेरमें गुणस्थान तक ।
वज्र वृषभनाराचसंहनन है ।। आगे सहनन ।। हाड नांहि ।
ऐसा जिनवानी में कह्या है । तीवानि धन्य है ।।५।।

Colophon : इति श्री पस्वुरणसमजनेलायकचर्चा ।। संपूर्ण ।। लिपीकृत लहिया करमचद रामजी पालीताणा नयरे ।। संवत् १९६९ भाद्रमासे कृष्ण पक्षे तिथि द्वितियाम् ।।

विशेष—कुछ गोम्मटसार की गाथाएँ भी उद्धृत हैं ।

२०३. चौदस गुणनियम

Opening : सचित्र दव्व विगइं वाणहि तंबोल वच्छ कुसुमेसु ।
वाहण सयण विलेवण दिसि बंभ न्हाण भत्तेसु ।।

Closing : इति चउदस नियम प्रभातें मो कला राखी जै संध्याकूं फेर याद कीजे जितरामोकला राख्या था तिण सोउ वालागै तो विशेषलाभ होइ, अधिक न लगाई जै ।

Colophon : इति श्री चउदस गुण नियम संपूर्णम् । लिखतं कृष स्यांमजी (श्यामजी) संवत् १८१० माघशुक्ला १४ । कल्याणमस्तु ।

२०४. चौदह गुणस्थान

Opening : गुन आतमीक परिनाम गुनी जीवनाम पदार्थ ते आतमी परिनाम तीन जातके शुभ, अशुभ, शुद्ध ...।

Closing : तिन सहित अविनाशी टंकोत्कीर्ण उत्कृष्ट परमात्मा कहिए ।

Colophon : यह चौदह गुणस्थानक का स्वरूप संक्षेप मात्र जिनवाणी अनुसार कथन पूर्ण भया। इतिः श्री चौदह गुणस्थान चर्चा सम्पूर्णम । शुभसंवत् १८६० मिती माघकृष्ण चतुर्दशी गुरुवासरे लिपिकृतम् नन्दलाल पांडे छपरामध्ये ।

२०५. चउसरण पईन्नं

Opening : सावज्जजोगविरहउ किल्तणगण वउय पडिवत्ता ।
खलियस्स निंदणावण तिगिंछ गुणधारणा चेव ।।

Coling : इय जीव पमायमहारिबर सट्टतमेव मज्झयण ।
जाए सुति सजम वउ कारण निवुई सुहण ।।

Colophon : इति श्री चउसरण पईन्न समाप्तम् । लिखत पूज्य ऋषि जी तस्य शिष्येण ऋषि लाखू आतमार्थम् । सम्वत् १६८२ वर्षे चैत्रवदि ७ । कल्याणमस्तु ।

२०६. चालगण

Opening : देवधरमगुरु वंदिकै कहूं ढाल गणसार ।
जा अवलोके बुद्धि उर, उपजै शुभकरतार ।।

Closing : तहाँ काल अनता रहे सुसता अनअवहंता सुखदानी ।
चिन्मूरति देवा ध्यान अभेवा सुरमुख सेवा अमलानी ।।

अब जनमे नाहीं या भवमांही सबके सांई सवजानी ।
तुमको जो ध्यावै तुमपद पावै कविटेक कहै क्या अधिकारी ।।

Colophon : इति चालगण सम्पूर्णम् ।

२०७. छहढाला

Opening : तीनभुवन में सार, वीतराग विज्ञानता।
शिवसरूप शिवकार, नमौ त्रियोग सम्हारिकै ॥

Closing : लघुधी तथा प्रमादतैं शब्द अर्थ की भूल।
सुधी सुधार पढौ सदा ज्यौ पावौ भवकूल ॥

Colophon : इति श्री छहढाल्यौ दौलतरामजी कृत संपूर्णम्। मिती मगसिर सुदी १० वार सोमवार संवत् १९५० । शुभं भूयात्।

२०८. छियालीस दोषरहित आहारशुद्धि

Opening : अरिहंत सिद्ध चितारिचित, आचारज उवझाय।
साधु सहित वंदन करो, मन वच शीश नवाय ॥

Closing : केवल ज्ञान दोउ उपजाय, पचम गतिमें पहुँचे जाय।
सुख अनत विलसैहि तिहि ठौर, तातै कहै जगत शिरमौर ॥

Colophon : सवत सत्रस पचास ज्येष्ठ सुदी पचमी परकाश।
भैया वंदत मन हुल्लास जै जै मुक्ति पंथ सुखवास ॥
इति छियालीस दोष रहित आहारशुद्धि सम्पूर्णम्।

२०९. दर्शनसार

Opening : पणमिय वीरजिणिंदं सुरसेणि णमेसिये विमलणाणं।
वोच्छ दसणसारं जह कहियं पुव्वसूरीहिं ॥

Closing : रूसतूरू सउलोउच्चं अरकंतयस्य जीवस्स।
किं जुअभण्णसा जीवज्जियव्वाणरिदेण ॥

Colophon : इति दर्शनसार समाप्तम् विराटनगरमध्ये मल्लिनाथ चैत्यालये इद पुस्तकं लिखापितं श्रावणवदी चतुर्दश्यां वुधवासरे संवत् १८८६ का।
देखें—जि० र० को०, पृ० १६७।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 652.

२१०. दर्शनसारवचनिका

Opening : देवेन्द्रादिक पूज्य जिन ताके क्रम शिरनाय।
भूतभावि जिनवर्तते भावभक्ति उरल्याय ॥

Closing : विशेष विद्वान होय सो ग्रंथ के अभिप्राय सूं लिषी बातैंनो नीसैं नवति की जाणै और शास्त्रनतैं लिखी बातैं यह अवार की संवत् १९२३ की माघ सुदि १० की जानैं, ऐसैं जानना।

Colophon : इति श्री दर्शनसार समाप्तः।
षट्दर्शन अरु पच मिथ्यात जैनाभास पंथ अधबात।
अरु कलि आचार शास्त्र निरुपण सार।।

२११. दसलक्षणधर्म

Opening : ॐकार कूं नमनकरि, नमूं सारदा माय।
तिनि कारग्रहमें टिकैं, श्रीजिन सीस नवाय।।

Closing ... . सम्यक् दृष्टि कै तौ ऐसी वांछा है।

Colophon : इति दसलक्षणधर्म कथन भाषा वचनिका सम्पूर्णम्। मिति भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी गुरुवार संवत् विक्रम १९७८।

२१२. दानशासन

Opening : यस्य पादाब्जसद्गन्धाघ्राणनिर्मुक्तकल्मषाः।
ये भव्याः सन्ति तं देव जिनेन्द्र प्रणमाम्यहम्।। १।।
दानं वक्ष्येऽथ वारीव शस्यसम्पत्ति कारणम्।
क्षेत्रोप्त फलतीव स्यात् सर्वस्त्रीषु समं सुखम्।। २।।

Closing : मतं समस्तैऋषिभिर्यदाहृतैः प्रभासुगात्मावनदानशासनम्।
मुदे सता पुण्यधनं समर्जितं दानानि दद्यान्मुनये विचार्य तत्।।

Colophon : शाकाब्दे त्रियुगाग्निशीतगुणितेऽतीते वृषे वत्सरे
माघे मासि च शुक्लपक्षदशमे श्री वासुपूज्यर्षिणा।
प्रोक्तं पावनदानशासनमिदं ज्ञात्वाहित कुर्वताम्
दानं स्वर्णपरीक्षका इव सदा पात्रत्रये धार्मिकाः।।
समाप्तमिदं दानशासनम्

देखें—जि० र० को, पृ० १७३।

२१३. द्रव्यसंग्रह

जीवमजीवं दव्वं जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं।
देविंदविंदवंदं वंदेतं सव्वदा सिरसा।।

दव्वसंगहमिणं मुणिणाहा दोससंचयचुदासुदपुण्णा ।
सोधयंतु तणुसुत्तधरेण णेमिचंदमुणिणा भणियं जं ॥
इति मोक्षमार्गप्रतिपादकः तृतीयोऽध्यायः । द्रव्यसग्रहसंपूर्णम् ।
देखें, —जि० र० को, पृष्ठ १८१ ।
Catg of skt. & pkt. Ms., P. 654.

२१४. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें०—क०, २१३ ।

Closing : देखें०—क० २१३ ।

Colophon : इति द्रव्यसंग्रह समाप्तम् । लिखित भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति छपरानगरमध्ये पार्श्वनाथ जिनदीर्घ मंदिरे सवत् १९४८ मि० भा० सु० १ वा० शु० । प्रातकाल समाप्त शुभ भूयात् ।

२१५/१. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे —क० २१३ ।

Closing : देखें—क० २१३ ।

Colophon : इति श्रीदव्वसंग्रह जी संपूर्णम् । मीति माघवदी ५ रोज शुक्र सन् १२७३ साल ।

२१५।२. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें–२१३ ।

Closing : देखें–क० २१३ ।

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह गाथा संपूर्णम् ।

विशेष—इस प्रति में ६३ गथाएँ हैं ।

२१६. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें–क० २१३ ।

Closing : णिक्कम्मा अट्ठगुण किंचूणा चरमदेहदो सिद्धा।
लोयग्गठिदा णिच्चा उप्पादवयेहिं संजुत्ता ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

२१७. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें क्र० २१३।

Closing : कुकथा के नासनि कूं बुद्धि के प्रकाशनि कूं।
भाषा यह ग्रंथ भयो सम्यक् समाज जो ॥

Colophon : इति श्रीद्रव्यसंग्रह भाषा और प्राकृत सम्पूर्णम्।

२१८. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे–क्र० २१३।

Closing : द्यानत तनक बुद्धि तापरि बखान करी,
बाल रीति धरी ढकी लीजो गुणमाज जो।
कुकथा के नाशन को बुद्धि के प्रकाशन कों,
भाषा यह ग्रंथ भयो सम्यक् समाज जी ॥

Colophon : इति द्रव्यसंग्रहं नेमिचन्द्राचार्य विरचितमिदं पचधा द्रव्यसंग्रह समाप्त.। श्रीरस्तु। सं० १६६२। नेत्ररसांकेन्दुवत्सरे विक्रम-नृपस्य वर्तमाने माघमासे तमपक्षे बाणतिथौ शशिवासरे लिपिकृतम्। मोताराम करेण चक्षुषापि बुद्धिमंदतया विशेषं कथ शक्यम्। इदमपि विद्वास: पठनीया:। शुभमस्तु।

२१९. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे, क्र० २१३।

Closing : मंगलकरण परम सुखधाम। द्रव्यसंग्रह प्रति करौं प्रणाम ॥
आगे चेतन कर्मचरित्र। बरनौं भाषा बंध कवित्त ॥

Colophon : इति श्री दर्वसंग्रह ग्रंथ गाथा कवित्त बंध सम्पूर्णम्।

विशेष – अन्त में चेतन कर्म चरित्र प्रारम्भ करने की बात लिखी है लेकिन लिखा नहीं गया है।

२२०. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें—क्र० ११३ ।
Closing : देखें—क्र० २१८ ।
Colophon : इति द्रव्यसंग्रह मूल गाथा वा भाषा संपूर्णम् ।

२२१. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे —क्र० २१३ ।
Closing : संवत् सतरमैं इकतीस, माहसुदी दशमी सुभदीस ।
मंगलकरण परम सुखधाम द्रव्यसग्रह प्रति करू प्रणाम ।।
Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह कवित्तबंध सम्पूर्णम् ।

२२२. द्रव्यसंग्रह

Opening : रिषभनाथ जगनाथ सुगुण मनथान है,
देव इन्द्र नरविंद वंद सुखदान है ।
मूल जीव निरजीव दरव षट्विध कहे,
बंदौं सीस नवाय सदा हम सरदहै ।। १ ।।
Closing : देखें, क्र० २१८ ।
Colophon : इतिपूर्ण ।

२२३. द्रव्यसंग्रह टीका (अवचूरि)

Opening : अथेष्टदेवताविशेषं नमस्कृत्य महामुनि सैद्धान्तिक श्री नेमिचन्द्र प्रतिपादितानां षड्द्रव्याणां स्वल्पबोधप्रबोधार्थं संक्षेपार्थतया विवरणं करिष्ये ।

Clophon : .... द्रव्यसंग्रहमिमं किं विशिष्टाः दोषसंचयच्युताः षट्पादिदोषसंघातच्युताः वचन गोचरा ।

Colophon : इति द्रव्यसंग्रह टीकावचूरि सम्पूर्णः। संवत् १७२१ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे पंचमी दिवसे पुस्तिका लिखापित सा० कल्याण दासेन।

२२४. द्रव्यसंग्रह वचनिका

Opening : .... या मैं कहूँ हीनाधिक अर्थ लिखा होय तो पंडित जन सोधियो ... ...।

Closing : मंगल श्री अरहंतवर मंगल सिद्धि सुमूरि।
उपाध्याय साधू सदा करो पाप सब दूरि॥

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह भाषा सम्पूर्णम्।

२२५. धर्मपरीक्षा

Opening : श्रीमत्प्रभास्वत्त्रयतुंगशाल जगद्गृहंबोधमयं प्रदीपः।
समंततोद्योतयते यदीया भवन्तु ते तीर्थकराः श्रियेन॥

Closing : संवत्सराणां विगते सहस्त्रे, संसप्तातौ विक्रम पार्थिवाख्या।
इदं निषिद्धान्यमत समाप्तं जिनेन्द्र धर्मामितियुक्तशास्त्र॥

Colophon : इत्यमितगतिकृता धर्मपरीक्षा समाप्ता। संवत् १६८१ वर्षे पोषवदी षष्ठी तिथौ। पुस्तक पंडित जी श्रीरामचंद जी आत्मपठनार्थं लिपिकृता।

देखें, (१) दि. जि. ग्र. र., पृ. ४७।
(२) जि. र. को., पृ. १८९।
(३) प्र. जै. सा., पृ. १६१।
(४) आ. सू., पृ. ७६।
(5) Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 655.

२२६. धर्मपरीक्षा

Opening : देखें, क्र० २२५।
Closing : देखें, क्र० २२५।
Colophon : इत्यामितगति कृता धर्म्म परीक्षा समाप्ता॥
संवत् १७७६॥ समय कार्तिक सुदि वदि दशम्यां मंगलवासरे लिखितमिदं पुस्तकं गोवर्द्धन पंडितेन॥

२२७. धर्मपरीक्षा

Opening : प्रणमु अरिहंत देव, गुरु निरग्रंथ दया धर्म ।
भवदधि तारण एव, अवर सकल मिथ्यात भणि ॥

Closing : पढै सुनै उपजै सुबुद्धि कल्याण शुभ सुख धरण ।
मनरसि मनोहर इम कहै सकल संघ मंगलकरण ॥

Colohpon : इति श्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहर दास कृत संगानेरी खंडेलवाल कृत सम्पूर्ण ।
ग्रन्थ संख्या ३३०० श्लोक ।

२२८. धर्मपरीक्षा

Opening : देखो – क्र० २२७ ।

Closing : देखों – क्र० २२७ ।

Colophon : इतिश्री धर्मपरीक्षा भाषा सम्पूर्ण । लिखतं धरमदास अयं पुस्तकम् ।

२२९. धर्मपरीक्षा

Opening : देखे – क्र० २२७ ।

Closing : देखें क्र० २२७ ।

Colophon : इतिश्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहरदास कृत सम्पूर्ण ।

२३०. धर्मरत्नाकर

Opening : लक्ष्मीनिरस्तनिखिला पदमाप्रवतो,
लोकप्रकाशखदपभवति भव्या. ।
यत् कीर्ति-कीर्तनपराजित वर्धमान,
तं नौमि कोविदनुत सुधिया सुधर्मम् ॥

Closing : य बंधो नयता सुधाकरदवी, विश्वं निजाश्रुतकरै,
यावल्लोकमिमं बिभर्तधरणी, यावच्च मेरुस्थिर: ।
रत्नासुर्छुरितो तरंगपधगो, यावत्पयो राशय.,
तावच्छास्त्रमिद महर्षिनिवहे ततयच्वमानश्रिये ॥

Colophon : इति श्री सूरि श्री जयसेन विरचिते धर्मरत्नाकरनामशास्त्र सम्पूर्णम् । मिती वैशाख सुदी दोयज (२) संवत् १९८५ भृगुवासरे शुभं लिषा भुजवल प्रसाद जैनी श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए । इत्यलम् ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १९२ ।

२३१. धर्मरत्नाकर

Opening : देखे, क्र० २३० ।

Closing : देखे, क्र० २३० ।

Colophon : इति श्री सूरि श्री जयसेन विरचिते धर्मरत्नाकरनामशास्त्र सपूर्णम् । सवत् १९१० का मार्गशीर्ष वदी ५ बुधवासरे शुभम् ।

२३२. धर्मरत्नोद्योत

Opening : मगल लोकोत्तम नमों श्रीजिन सिद्ध महन्त ।
साधु केवली कथित वर, धरम शरण जयवत ।।

Closing : स्याद्वाद आगम निर्दोष, अन्य सर्व ही है जु सदोष ।।
त्याग दोष गुण धरे विचार । हेतु विचय ध्यान निर्द्धार ।।

Colophon : इति श्री बाबू जगमोहन लाल कृत धर्मरत्न ग्रन्थे मध्य आराधना नाम नवमो अधिकार ।।९।। याके पूर्ण होते श्री धर्मरत्नग्रन्थ सपूर्णभया ।

आदि मध्य अरु अत मे, मगल सर्वप्रकार ।
श्रीजिनेन्द्र पद कज जुग, नमों सुकर सिरधार ।।
तर्कवात लागे नही नहि आज्ञानतमरच ।
धर्मरत्न उद्योत मे करि उद्यम सुख सच ।।

२३३. धर्मरत्नोद्योत

Opening : देखे, क्र० २३२ ।

Closing : उपमा बहु अहमिन्द्रकी, है सबही स्वाधीन ।
कहे पुरातन अर्थ को दाहे छद नवीन ।।

Colophon : इति श्री धर्मरत्नग्रन्थ सम्पूर्णम् । सवत् १९४८ मिति कार्तिक कृष्ण ६ रविवासरे लिखितं नीलकठदासेन श्रेयांशदासस्य पठनार्थम् ।

२३४. धर्मरसायन

Opening : णमिऊण देवदेवं धरणिंदणरिंद इंद थुयचलणं ।
णाणं जस्स अणंतं लोयालोयं पयासेइ ॥१॥

Closing : भव्वियाण बोहणत्थं इयधम्मरसायणं समासेण ।
वरपउमणंदि मुणिणा रइयजमणियमजुत्तेण ॥

Colophon : इति श्री धम्मरसायणं संपूर्णम् ।
इति श्री धर्मरसायन ग्रन्थ की भाई देवीदासजी खडेलवाल गोधा गोती जैनगर वासी ने पटना में भाषा की । मिति आसिन सुदी १४ ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १९२ ।

Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 656.

२३५. धर्मरसायन

Opening : देखें, क्र० २३४ ।

Closing : देखे, क्र० २३४ ।

Colophon : इतिश्री धम्मरसायणं संपूर्णम् ।

२३६. धर्मविलास

Opening : गुण अनंतकरि सहित रहित दस आठ दोषकर ॥
विमल ज्योति परगास भास निज आंन विषै हर ॥

Closing : जय धम्र धम्र सब साधु तुम वकता श्रोता सुखकरौ ।
द्यानत हे माता सरसुती तुम प्रसाद सब नर तरौ ॥

Colophon : इति श्री धर्म विलास भाषा महाग्रंथ सुकवि द्यानतराय अगरवाले कृत ···· ··· सम्पूर्णः ।

पुस्तक रिषबदास जी छावड़ा के डेरै मस्तक परि विराजै, बस्ती सवाई जैपुर का तेरापंथ के मंदिर की पंचायती मैं ।

२३७. धर्मविलास

Opening : वंदो आदि जिनेश पाप तमहरन दिनेश्वर।
वंदत हो प्रभु चंद चद दुख तपत हनेश्वर॥

Closing : देखें, क्र० २३६।

Colophon : इति श्री श्री धर्म विलास भाषा महाग्रथ सुकवि द्यानतराय अग्रवालकृत उनासी अधिकार सपूर्ण। संवत् १९३४ मिति माह (माघ) सुदी ६ रोज (दिन) सोमवार।

लिखतं पीतम्बर दास जैसवार मोजे सहयऊ मध्ये परगन्ह सादाबाद जिला मथुरा। लिखायत लाला जगभूषणदास जी अगरवाले मोजे आरे वाले।

२३८. धर्मविलास

Opening : देखें—क्र० २३७।

Closing : कनक किरती करी भाव, श्री जिन भक्ति रचे जी।
पढ़ै सुणे नर नारि सुरग सुख लह्यो जी॥

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम्।

विशेष— प्रति के अन्त में एक विनती है। प्रशस्ति नहीं।

२३९. धर्मोपदेशकाव्य टीका

Opening : श्री पार्श्वं प्रणिपत्यादौ श्री गुरुं भारती तथा।
धर्मोपदेश ग्रन्थस्य वृत्तिरेषा विधीयते॥

Closing : यावन्मेरुः क्षितिभृत् यावन्नक्षत्रमंडलं विलसत्।
तावन्नन्दतु नित्यं ग्रंथः सवृत्ति सदितोयम्॥

Colophon : इति श्री धर्मोपदेश काव्यं सवृत्तिकं सम्पूर्णम्।
शास्त्राभ्यासः सदाकार्यो विबुधे धर्मभीरुभिः।
पुस्तकं साधनं तस्य तस्माद्रक्षेत् पुस्तकम्॥ १॥
अद्यनास्ति जिनाधीशः नास्ति संप्रति केवली।
आधारः पुस्तकस्यैव नृणां सम्यक्त्वधारिणाम्॥ २॥
भुर्व्वन्ति जिनवाणीं य गद्यपद्यमयीं बुधाः।

असंशयं लभंते ते स्वर्गमोक्षश्रियं शुभाम् ॥ ३ ॥
देखें, जि० र० को०, पृ० १६५ ।

२४०. ढालगण

Opening देवधरमगुरु वंदिकें, कहूं ढालगण सार ।
जा अवलोकें बुद्धि उर, उपजें शुभ करतार ॥

Closing : अब जनमैं नाहीं या भव मांही सबके सांई सब जानी ।
तुमकों जो ध्यावैं तुम पद पावैं कवि टेक कहै क्या अधिकानी ॥

Colophon : इति ढालगढ़ संपूर्णम् ।

२४१. ढालगण

Opening : देखें—क्र० २४० ।

Colsing : देखें—क्र० २४० ।

Colophon : देखें—क्र० २४० ।

२४२. गोमम्टसार (जीव०)

Opening : सिद्धंसुद्धंपणमिय जिणिदवरणेमिचंदमकलंकं
गुणरयणभूसणुदय जीवस्सपरूवणं वोच्छं ।

Closing : गोमट्टसुतलहणे ··· ····जमिणयवीरमत्तंगी ॥

Colophon : गोमटसारजी की गाथा संपूर्ण ।
देखें,–(१) जि. र. को., पृ. ११० ।
(२) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 637-38
(३) Catg. of Skt. Ms., 310.

२४३. गोम्मटसारवृत्ति (जीवकाड)

Opening : मुनिं सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रं जिनेश्वरम् ।
टीकां गोमटसारस्य कुर्वे मंदप्रबोधिकाम् ॥

Closing : आर्य्यार्य्यसेन गुणसमूह संधार्य्यजित सेन गुरुर्भुवनगुरुः यस्य गोम्मटो जयतु ।

Colophon : नहीं है ।

२४४. गोम्मटसार (जीवकाण्ड)

Opening : वंदौं ज्ञानानन्दकर नेमिचद गुणकंद ।
माधव वंदित विमल पद पुण्य पयोनिधि नंद ।।

Closing : धन्य धन्य तुम तुमहीतैं सब काज भयो कर जोरि
बारंबार वंदना हमारी है ।
मगल कल्यान सुख ऐसो अब चाहत हौं होऊ मेरी
ऐसी दशा जैसी तुम्हारी है ।।

Colophon : इति श्रीमत् लब्धिसार वा क्षपणासार सहित गोमटसार शास्त्र की सम्यग्ज्ञान चद्रिका नामा भाषाटीका सपूर्ण । ''' श्री महाराजा श्री राजाराम चद्रराज्य शुभं । लिख्यत नग्रचद्रापुरी मध्ये हीराधर जो वाचैं सुनैं ताको श्री शब्द बचनैं । सवत् १८८८ आषाढ सुदी १५ दिनं शुभ भवतु ।

२४५. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : पणमिय सिरसा णेमिं गुणरयणविभूषणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणनिलयं पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छ ।।

Closing : पाणवधादीसु रदो जिणपूआमोक्खमग्गविग्घयरो ।
अज्जोइ अंतरायं ण लहइ इच्छिय जेण ।।

Colophon : इति श्री कर्म्मकाण्ड सम्पूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० ११०

Catg. of Skt & pkt. Ms., P. 608.
Catg. of Skt. Ms., P. 310.

२४६. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : देखें—क्र० २४५ ।

Closing : देखें—क्र० २४५ ।

Colophon : इति श्री कर्मकाण्ड समाप्तम् ।

२४७. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : देखें—क्र० २४५ ।

Closing : ··· ··· णरतिरियाऊ ···· अपूर्ण ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

२४८. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : देखे—क्र० २४५ ।

Closing : · · · पूर्वोक्त क्रियाकरि करै स स्थिति अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जाणना ।

Colophon : इति श्री कर्मकाण्डनेमिन्द्राचार्य विरचिते हेमराजकृत टीका सम्पूर्णम् । मिती कातिक सुदी १३ संवत् १८८८, लिषतं भीवन नाथ नतिवारा पुस्तिक साहू फूलचंद की ।

२४९. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : देखे क्र० २४५ ।

Closing : · · · · · अरु जु प्रत्यनीक आदिक पूर्वोक्त क्रियाकरि करै सु स्थिति अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जानना । इयं भाषा टीका पंडित हेमराजेन कृता स्वबुध्यानुसारेण ।

Colophon : इति श्री कर्मकांड टीका सपूर्णसमाप्ता: श्री कल्याणमस्तु श्रीरस्तु । संवत् १८४५ शाके १७१० श्रावणबदि ११ भौम ।

२५०. गोत्रप्रवर निर्णय

Opening : गोत्रादिविवर-अमितत्तेजगोत्रं वृषभप्रवरकुम्भसूत्रम् पर्याय-शाखा, हरिकेतु गोत्रम् सम्भवप्रवर सतधनु सूत्रम् पर्याय समास शाखा ।

Closing : भागिनि रथगोत्रं निष्कलङ्क प्रवर गङ्गदेवसूत्रम् अग्रायणीय शाखा।

Colophon : नहीं है।

२५१. गुणस्थान चर्चा

Opening : गुन आतमीक परिनाम गुनी जीऊ नाम पदार्थ ते आतमी परिनामतीन जातके, शुभ, अशुभ, शुद्ध... ... ... ।

Closing : ए पांच भाव सिद्ध के रहे, तिन सहित अविनाशी टंकोत्कीर्ण उत्कृष्ट परमातमा कहिये।

Colophon : यह चौदह गुणस्थानक कथनरूप सख्पेपमान् जिनवाणी अनुसार कथनकर पूरनकिया। संवत् १७३६ मगसिर बदी त्रयोदशी तिथौ। ... ... ।

२५२. गुरोपदेश श्रावकाचार

Opening : पंचपरम मंगलकरन, उत्तम लोक मझारि।
असरन को ये ही सरन, नमू सीस करधारि ।।

Closing : माधो नृपपुर जांहि डालूराम न्यौ गयाहि, इष्टदेवबललहि उमगको अनाय है।
गुरुउपदेशसार श्रावक आचारग्रन्थ, पूरनता पाहि अक्षै पदवी को दायक है ।।

Colophon : इति श्री गुरोपदेश श्रावकाचार सम्पूर्णम्। इति शुभ मिती भाद्रपदसुदी ३ शनिवार सम्वत् १६८२। हस्ताक्षर पं० श्री बच्चूलाल चौबे के।

२५३. गुरुशिष्यबोध

Opening : जनत जुगत जगदीश से है वो बड़ो सुजान।
ताकूं वंदौं भाव से, सो परमातम जान ।।

Closing : ... ...अर जैसो और है तैसो तू नाही,

जाहा (जहाँ) तहा (तहाँ) तू है सो तू ही है····।

Colophong : (Missing) नहीं है।

२५४. हितोपदेश

Opening : जयति परं ज्योतिरिदं लोकालोकावभासनम्।
यस्या परमात्मनामध्येयं तद्वन्देशुद्धचैतन्यम्॥

Closing : ये यथोक्तविधायिनः सुमत्तयास्तेनन्त सोख्योज्वला।
जायन्ते च हितोपदेशममलं सन्तः श्रयन्तु श्रीयैः॥

Colophon ; समाप्तोऽयं ग्रन्थः। हस्ता० बटुकप्रसान। संवद् १९७०।

२५५. इन्द्रनन्दिसंहिता (४ अध्याय)

Opening : अथस्नानविधिप्रक्रमा।
लोगियधम्मो लोगुत्तरोहि धम्मो जिणेहिं णिद्दिट्ठो।
पढमं मंतरसुद्धी पच्छादुवहिभवासुद्धी॥

Closing : भावेइ छेदपिंडं जो एइ इंदणंदियणिरचिदं।
सोइयलोउत्तरिएववहारे होइ सो कुसलो॥४८॥

Colophon : इति इन्द्रनन्दिसंहितायां प्रायश्चित्तप्रकरणो नाम चतुर्थोत्ध्याय। इतिम्पूसर्षम्।

२५६. इष्टोपदेश

Opening : पूज्यपाद मुनिराजजी, रच्यो पाठ सुखदाय।
धर्मदास वंदनकरै, अंतरघटमें जाय॥

Closing : ··· अर मोक्ष मैं प्राप्त होय है तातै सर्व,
प्रयत्नकरि निर्ममत्वभाव ···· ··· ·· ।

Colophon : अनुपलब्ध।

२५७. जलगालनी

Opening : प्रथम वंदे जिवदेव अनंत । परम सुभग शीतल शुभ संत ।।
सारद गुर वंदु प्रमाण । जलगालण विधि कहू बखाण ।।

Closing : जो जलगालि जुगतिसु जिहि विधि कहु पुराण ।
गुलाल ब्रह्मइत नुरस किहिउ, लोकमधि परमान ।।३१।।

Colophon : इति जलगाल परिसंपूर्णम् । भट्टारक शुभकीर्ति तत्शिष्य-स्वामी मेघकीर्ति लिखितम् । शुभंभवतु ।

२५८. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व्याख्यान

Opening : जंबूद्वीपमंदीपणकं । पचत्रीसकोडाकोडी उद्धार, पल्य । सजेत्ता-रोम हवंति तेत्ता द्वीपसमुद्रा भवति ।

Closing : ... ... गजदंत—२०, वृषभगिरि १७०, मलेच्छखड ८५०, कुभोगभूमि ९६, समुद्र २, तोरणद्वार २२५०, एवं ज्ञातव्यम् ।

Colophon : इति श्री पद्मनदी सिद्धांतिवचनकाकृत जबूद्वीपप्रज्ञप्ति-व्याख्यानकं कृत समाप्तम् । कर्मक्षयोनिमित्तम् । संवत् १९७९ आषाढकृष्णा ३ भौमवासरे श्री जैन सिद्धान्तभवन आरा के लिए पं०भुजबलीशास्त्री की अध्यक्षता में काशीमण्डलान्तर्गत सथवाग्राम-निवासी वटुकप्रसाद कायस्थ ने लिखा ।

देखें, Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 64:.

२५९. जैनाचार

Opening : श्रीमदमरराजनुतपादसरसिज सोमभास्कर कोटितेज ।
कामितार्थवनीवसुरवीजसुखवीजक्षेमदोरि सु जिनराज ।।

Closing : दिनकरशशिकोटिभासुर सुज्ञानतनुरूपपुण्यकलाप ।
गुणमणिमयदीपयन्नघसंताप र्तार्णासिसंतेसु निर्लेप ।।

Colophon : समाप्तम् ।

२६० जिनसंहिता

Opening : मंगल भगवानर्हन्मंगलं भगवान् जिनः ।
मंगलं प्रथमाचार्यो मंगलं वृषभेश्वरः ।।१।।

विज्ञानं विमलं यस्य भासते विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चितांङ्घ्रये ॥२॥

Closing : नाटकस्थलतुल्यस्तत्पार्श्वमित्यच्छ्रयो भवेत् ।
तद्भित्तिस्थलभित्ति च यथाशोभं प्रकल्पयेत् ।७५॥
सभद्रो वा कल्पोऽथ ... ... रथोभवेत् ।
वासोऽस्मिन्पञ्चताल: स्यादुक्तांशश्च ापितोच्छ्रये ॥७६॥

Colopnon : इति जिनसंहिता संपूर्णम् ।
देखें— जि० र० को०, पृ० १३७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५२ ।
रा० सू० II, पृ० १४ ।

२६१. जीवसमास

Opening : श्रीमतं त्रिजगन्नाथं केवलज्ञानभूषितम् ।
अनंतमहीरूढं श्रीपार्श्वेशं नमाम्यहम् ॥

Closing : नवधामानवाश्चैव नवधाविकलांगिन: ।
इति जीवसामासा:स्युरष्टानवति संख्यका: ॥

Colophon : नहीं है ।

२६२. ज्ञानसूर्योदय नाटक

Opening : वंदों केवलज्ञान रवि, उदय अखंडित जास ।
जो भ्रमतमहर मोक्षपुर, मारग करत प्रकाश ॥

Closing : ये चार परममंगल विमल ये ही लोकोत्तम विदित ।
ये ही शरण्य जगजीव कौं जानि भजहु जो चहत हित ॥

Colophon : इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक सपूर्णम् । विक्रम संवत् १९६१ तत्र भाद्रशुक्ला १५ पौर्णिमायां लिपिकृतम् पं० सीताराम शास्त्री स्वकरेण विमलमालायाम् ।
देखें, Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 649.

२६३. ज्ञानसूर्योदयनाटक वचनिका

Opening : देखें—क्र० २६२ ।

Closing : देखें —क्र० २६२ ।

Colophon : इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक की वचनिका सम्पूर्णम् । मिति फाल्गुणमास शुक्लपक्ष द्वादश्या वृहस्य (वृहस्पति) वार शुभ संवत् १६४५ का सवाई आरानगर मध्ये लिपिकृत्वा । शुभ ।

२६४. ज्ञानसूर्योदय नाटक (वचनिका)

Opening : देखें - क्र० २६२ ।

Closing : देखें—क्र० २६२ ।

Colophon : इति ज्ञान सूर्योदय नाटक सम्पूर्णम् । मिती वैशाख वदी १० बुधवार सवत् १८६६ ।

२६५. ज्ञानसूर्योदय नाटक वचनिका

Opening : देखें -क्र० २६२ ।

Closing : देखें क्र० २६२ ।

Colophon : इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक की वचनिका संपूर्ण । मिति कातिकशुक्ल एकम्यां शुक्रवासरे शुभ संवत् १६४६ का सवाई आरा नगर । कल्याणमस्तु ।

२६६. ज्ञानार्णव

Opening : ज्ञानलक्ष्मीघनाश्लेष प्रभवानदनंदिनम् ।
निष्ठितार्थमज नौमि परमात्मानमव्ययम् ॥

Closing : इति जिनपति सूत्रात्सारमुद्धृत्य किञ्चित्
स्वमति विभवयोग्यं ध्यानशास्त्र प्रणीतम् ।
विबुधमुनि मनीषाभोधि चन्द्रायमाणम्,
चतुरतु भुवि विभूत्यै यावदीद्रचद्रान् ॥

Colophon : इत्याचार्य श्री शुभचन्द्र विरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे मोक्षप्रकरणम् समाप्तम् । इति श्री ज्ञानार्णवः समाप्तः । संवत् १५२१ वर्षे आषाढ़ सुदी ६ सोमवासरे श्री गोपाचलदुर्गे तोमर वरवंशे श्री राजाधिराज श्री कीर्तिसिंह राज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुस्करगणे भ. श्री गुणकीर्तिदेवस्तत्पट्टे भ. श्रीयशः कीर्तिदेवस्तत्पट्टे भ. श्रीमलयकीर्तिदेवस्तदाम्नाये गर्गगोत्रे सा. महूणासम्रा-

यहिलोमृत्पुत्रत्रिपंचाशत् क्रियाकमलिनी मार्त्तण्ड चर्तुविधदानपरंपरा धाराधरा मारपोषितानेकोत्तममध्यमावरपात्र: अनेक गुणिजनहृदया-नंदाकृपाल्लासेद्रयकल्पदेहा. सदा सदयोदय प्रभाकर कराप-हस्ति पाप संतापतमश्चय अनवरत दान पूजाश्रुतश्रवणादिगुणगण-निवासनिलय: कारापितप्रतिष्ठा महामहोत्सव: अत्यात्मरसरसिक: संघभारधुरंधर: संघाधिपति: बुधानामधेय. सद्भार्याविमलतर शीलनी-रतरंगिणी जिणधर्माणुरागिणी निर्मलतपाचरणा अनवरतकृतशरणा संघमणिपल्हो तयो: प्रथमपुत्रआहारदानदानश्वर. आश्रितजनकल्पवृक्ष. गुरुचरणकमलषट्पद: षट्वर्मरत दानपूजाकारापितनिरंतरक्षमामूर्ति: संघाधिपति .. भार्या ऋनही स. बुधाद्वितीयपुत्र हाथी भार्यापाल्हाही सं. बुधा तृतीयपुत्र देवराजएतेषां मध्ये चतुर्विधदानरतेन संघई क्षेमल नामधेयेन निजज्ञानावरणीय कर्मक्षयाय श्री ज्ञानार्णवं पुस्तक लिखाप्य मुनि श्री पद्मनंदिने दत्तम् ।

श्री मूलनंदि संघादि बलात्कारगणे गिर: ।
.... गछे भट्टारकस्येदं ज्ञानभूषणस्य पुस्तकम् ।।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५३ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १५० ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५७ ।
(४) आ० सू०, पृ० १६६ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २०२, ३८६ ।
(६) रा० सू० III, पृ० ४०, १९२ ।
(7) Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 646.

२६७. ज्ञानार्णव

Opening : देखें- क्र० २६६ ।

Closing : देखें—क्र० २६६ ।

ज्ञानार्णवस्य माहात्म्यं चित्तं कोवित्ततत्रत:
य ज्ञानातीयते भव्यै दुस्तरोपि भवार्णव: ।। ३ ।।

Colophon : इत्याचार्य श्री शुभचन्द्रदेवविरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदी-पाधिकार: । मोक्षप्रकरणं समाप्तं । इति श्री ज्ञानार्णवसूत्रसं-

पूर्ण। संवत् १६८० वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ गुरुवासरे। श्री ज्ञानार्णवम् संपूर्णकृता।
लिखितं श्री पट्टणानगरमध्ये। लेषक-पाठकयो चिरं जीयात्। श्रीरस्तु शुभं भवतु॥

२६८. ज्ञानार्णव

Opening : देखें—क्र० २६६।

Closing : देखें—क्र० २६६।

Colophon : इत्याचार्य श्री शुभचंद्रविरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे मोक्षप्रकरण समाप्तम्। सवत् १८७०।

२६९. ज्ञानार्णव भाषा

Opening : ललितचिन्ह पद कलित निरखत निजमपति।
हरषित मुनिजन होइ धोइ कलिमलगुन जपति॥

Closing : ताके जिनवानी को श्रद्धान है प्रमान ज्ञान,
दरसन दान दयावान अवधान है।
ज्ञान ही के कारणतैं भाषा भयौ ज्ञान सिंधु,
आगम को अंग यामें ध्यान को विधान है॥

Colophon : इति श्री शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे श्री श्रीमालान्वये वदलियागोत्रे परमपवित्र भईया श्रीवस्तुपाल सुत श्री ताराचन्द्रस्याभ्यर्थनया पंडित श्रीलक्ष्मीचन्द्रेण विहिताभाषेयं सुखबोधनार्थम्। संवत् १८६६ शाके १७३४ वैशाखमासे तिथौ ११ बुधवासरे समाप्तम् भवतु, लिखत काशि मध्ये राजमंदिर लिखायित लाला बगसुलाल जी पठनार्थं परोपकरणार्थम्। श्रीभगवानार्पणमस्तु। लिखतं ब्राह्मण शिवलाल जाति गौड ब्राह्मण। शुभं भूयात्।

२७०. ज्ञानार्णव टीका

Opening : शिवोयं वैनतेयश्च स्मरश्चात्मैव कीर्तितः।
अणिमादिगुणनर्घ्यरत्नवार्द्धिर्बुधैर्मतः॥

Closing : .... शुभं कारितं मयानी गुणवरित्रय विमयतो ज्ञानार्णवस्यांतरे विद्यामदि गुरुप्रसादजनितदयादमेय सुखम्।

Colophon : इति श्री ज्ञानार्णवस्य स्थितिगतटीकातत्त्वत्रय प्रकाशिन समाप्ता ।

२७१. कर्मप्रकृति

Opening : प्रक्षीणावरणद्वंद्वमोहप्रत्यूह कर्मणे ।
अनंतानतधीदृष्टि सुखवीर्यात्मने नमः ॥

Closing : जयन्ति विधुताशेषपापांजन समुच्चयाः ।
अनंतानंतधी दृष्टिसुखवीर्या जिनेश्वराः ॥

Colophon : इति कृतिरियमभयचंद्र सिद्धान्तचक्रवर्तिनः । भद्रमस्तु स्याद्वादशासनाय ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ७२ ।

२७२. कर्मप्रकृति ग्रंथ

Opening : देखें— क्र० २४५ ।

Closing : देखें—क्र० २४५ ।

Colophon : इति श्री नेमिचंदसिद्धान्ति विरचित कर्म्मप्रकृति ग्रंथः समाप्तः ॥ संवत् १३६६ का शुभमस्तु ॥

विशेष—यह ग्रंथ श्री देवेन्द्र प्रसाद जैन द्वारा दिनांक १३-६-१९१८ को श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा को सादर समर्पित किया गया है ।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० ७१ ।
(2) Catg. of skt. & Pkt Ms., page, 632.

२७३. कर्मविपाक

Opening : सिरिवीरजिणं वंदिय, कम्मविवागं समासओ वुच्छं ।
कीरइ जिराण हेऊहिं जेण सोमणराकम्मं ॥

Closing : गाहुगांभयरीए वुंदमहूलरमयाणुसारीए ।
टीमाए णिम्मियाणं एगूणा होइ णउईऊ (ओ) ॥

Colophon : इति श्री कर्मग्रंथ सूत्रसमाप्तम् । षष्ट कर्मग्रंथ । श्रीरस्तु । संवत् १९६६ शाके १७३१ मिती भाद्रवबदि ३ सोमवारे तथा विर्ज

आणदसूरगच्छे लिपि शराज (स्वराज) विजैमुनि श्री नागपुर मध्ये दिक्षणदेशे ।

देखें, जि. र. को पृ ७२, ७३ ।

२७४. कषायजयभावना

Opening : येन कषायचलत्कं ध्वस्तं संसारदुःखतरुबीजम् ।
प्रणिपत्य त जिनेन्द्र कषायजयभावना वक्ष्ये ॥

Closnig : यत. कषायैरिहजन्मवासे समाप्यते दुःखमनन्तपारम् ।
हिताहित प्राप्तविचारदक्षैस्त. तषाया. खलु वर्जनीया ॥

Colophon : इति कनककीर्तिमुनिना कषायजयभावना प्रयत्नेन भव्यचित्तशुद्धयैविनयेन समासतो रचिता । इति कषायजय सम्बन्धी ग्रन्थ समाप्तः । जैन सिद्धान्त भवन आरा ता १८-१०-२६ ताड़पत्र से उतारा गया ।

२७५. कार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक

Opening : शुभचन्द्रं जिन नत्वानन्तानंतगुणार्णवम् ।
कार्तिकेयानुप्रेक्षायास्टीका वक्ष्ये शुभश्रिय ॥

Closing : लक्ष्मीचन्द्रगुरु स्वामी शिष्यस्तस्य सुधीयता ।
वृत्तिर्विस्तारिता तेन श्री शुभेन्दुः प्रसादत. ॥

Colophon : इति श्री स्वामी कार्तिकेयटीकायां त्रिद्य विद्याधरषट्भाषा कवि चक्रवर्तिभट्टारक श्री शुभचन्द्र विरचितायां धर्मानुप्रेक्षायां द्वादशमोधिकारः समाप्तम् । १२ सपूर्णम् । गतेपि वेदवस्वेदु विक्रमार्कगतेपि वैशालिवाहनसाकश्च नागौरमुनिचद्र ।

देखें, —जि० र० को, पृष्ठ ८५ ।

Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 634.

२७६/१. कार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक:

Opening : देखें०—क्र०, २७५ ।

Closing : देखें०—क्र०, २७५ ।

Colophon : इति श्री स्वामि , कार्तिकेयटीकायां त्रिविद्याधरषट्भाषा कविचक्रवर्ति: भट्टारक श्री शुभचद्रविरचितायां धर्मानुप्रेक्षायाः द्वादशमोधिकार: समाप्तम् । संपूर्णन् संवत् १८५८ वर्षे शाके १७२३ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे तिथौ षष्ठी मंगलवासरे हिसार पट्टे लोहाचार्याम्नाये काष्ठासंघे पुस्करगणे माथुरगच्छे श्रीमद्भट्टारकत्रिभुवनकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री खेमकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्रीसहस्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेंद्र-कीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्ति जी तत् भ्राता पंडित आणंदराम तच्छिष्य खेमचन्द्रेण प्रयागमध्ये लिपि कृतम् । स्वयं पठनार्थम् । शुभमस्तु ।

२७६।२. कार्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : अथ स्वामिकार्तिकेयो मुनींद्रोऽनुपेक्षा व्याख्यातुकामो ।
मलगालनमंगावाप्तिलक्षणं मंगलमाचष्टे ॥

Closing : तिहुयणपहाण सामि कुमारकाले वि तवियत्तवयरणं ।
वसुपुज्जसुयं मल्लिं चरिमतियं संसुवे णिच्च ॥

Colophong : इति स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा समाप्ता । मिती कार्तिगमासे शुभे कृष्णपक्षे तिथि ७ वार सोमवार सवत् १८६० का साल .... मध्यचीरंजीव अमिचन्दगोतसेठी लिखायतं चिरजीव श्री चन्द्रेण स्वकीय पठनार्थ वाचपढ ज्यानजथा योग्य वंचज्यौ । श्रारस्तु कल्याणमस्तु ।

यादृशं .... दीयते ।
इदं पुस्तकं राज्येंद्रकीर्तिमुने पठनार्थं श्रीचन्द्रेणदत्तम् ।

२७७. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : प्रथम रिषभजिन धरम कर, सनमति चरन जिनेश ।
बिघनहरन मंगलकरन, भवतम दुरन दिनेश ॥

Closing : जैनधर्म जयवंत जग, जाको मर्म सुपाय ।
वस्तु यथारथ रूपलखि, ध्यावे शिवपुर जाय ॥

Colophon : इति श्री स्वामि कार्तिकेयानुप्रेक्षा नाम प्राकृत ग्रंथ की देश भाषामय वचनिका सम्पूर्ण। मिती कार्तिक वदी ५ वार गुरु सम्वत् १६१४ को समाप्त भया। लिखा चन्द्रलाल कायथ (कायस्थ) निजराय। जौरीलाल अग्रवाल नारायण दास के बेटा ने मोकामी आरे वास्ते सिरी (श्री) अंसदासके।

२७८. क्रियाकलाप टीका

Opening : जिनेन्द्रमुन्मीलितकर्मबन्ध, प्रणम्य सन्मार्ग कृतस्वरूपम्।
अनतबोधादि भत्रं गुणौघं, क्रियाकलाप प्रकट प्रवक्ष्ये ॥

Closing : ... . एतावश्सख्यप्रवाच्छिन्नत्रयदपरिमाण श्रुत पचपद्र पचभि: पादैरति क नामानि—११२८३५८००० ।

Colophon : इति श्रीपडित प्रभाचन्द्र विरचितायां क्रिया कलापटीकाया समाप्तम्। सवत् १५७० वर्ष चैत्रवदि ७ शुक्रवासरे। श्र.मूलसघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे श्रीसिहनन्दिन: शिष्यनीवाई विनय श्री लिखापितम्।

देखो, Catg of Skt. & Pkt. Ms. P 635.

२७९. क्रियाकलापभाषा

Opening : समवसरण लछमी सहित, बर्द्धमान जिनराय।
नमो विबुध वंदित चरण, भविजन कों सुखदाय ॥

Closing : जबलौ धर्म जिनेसर सार।
जगतमांहि वरतै सुखकार ॥
तबलौ विस्तर ज्यौ यह ग्रंथ।
भविजन सुरसित् दायक पंथ ॥१६००॥

Colophon : इति श्री क्रियाकोश भाषा मूलत्रेपन क्रिया नैं आदि दे अर और ग्रन्थ की शाखका मूलकथन उपरि सम्पूर्णम्।
इति क्रियाकलाप भाषा समाप्तम्।

२८० लघुतत्वार्थसूत्र

Opening : दृष्ट चराचरं येन केवलज्ञानचक्षुषा।
तं प्रणम्य महावीरं वेदिकां त प्रवक्ष्यते ॥

Closing : बोधि: समाधि: प्रणमामि सिद्धि:,
स्वात्मोपलब्धि: शिवसौख्यसिद्धि: ।
चिंतामणि चिंतितवस्तुदाने,
त्वां विद्यमानस्य ममास्तु देव ॥

Colophon : इति श्री लघुतत्वार्थानि समाप्तम् ।

२८१. लघुतत्त्वार्थं

Opening : देखें, क्र० २८० ।

Closing : देखें, क्र० २८० ।

Colophon : इति श्री लघुतत्वार्थानि समाप्तानि ।

२८२. लोकवर्णन

Opening : भवणेसु सत्तकोडी, बावत्तरिलख होंति जिणगेहा ।
भवणामरिंद महिया, भवणसमा ताणि वंदामि ॥

Closing ; जंबूरविंदूदीवे चरंति सीदिं सदं च अवसेसं ।
लवणे चरंति सेसा— — — ॥

Colophono : नहीं है ।

विशेष—प्रारंभ में गाथा एक से नौ तक मूल है । उसके बाद क्रमांक ३०२ से ३७४ तक पूर्ण है । अन्त में अधूरी गाथा Closing में दी हुई है । ग्रन्थ अव्यवस्थित है ।

२८३. लोकविभाग

Opening : लोकालोकविभागज्ञान् भक्त्या स्तुत्वा जिनेश्वरान् ।
व्याख्यास्यामि समासेन लोकतत्वमनेकधा ॥

Closing : पञ्चादशशतान्याहु: षट्त्रिंशदधिकानि वै ।
शास्त्रस्य संग्रहस्त्वेदं छन्दसानुष्टुभेन च ॥

Colohpon : इति लोकविभागे मोक्षविभागो नामैकादशं प्रकरणं समाप्तम् ।
देखें—जि० र० को०, पृ०३३६ ।

२८४. मरणकंडिका

Opening : पणमतिसुरासुरमनुलियरयणव्वंकिरणकतिवियरयम् ॥
वीरजिणयजयलणमिनुणमणेमिरिद्गातम् ॥१॥

Closing : दयइअरकराइ दुणह भावहलोराहि हरहणि १ ॥
जीवइ सोणरइले समेणमरणं च सुणण ॥

Colophon : इति मरनकांड संपूर्ण मिती कात्यागवदी ५ बुधवासरे सवत् १८८७ समनलाल ।

२८५. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : प्रथम सुमरि अरिहंत कौं, सिद्धन कौ धरि ध्यान ।
सरस्वती शीश नवाइके, वंदौ गुरु जुत ध्यान ॥

Closing : महिमा श्री जिनधर्म की, सुनियत अगम अनंत ।
जा प्रसादतै होत नर मुक्ति वधू के कंत ॥
ग्रन्थ अनूपम रच्यौ यह दै ग्रन्थनिकी साखि ।
मूरख हाथि न देहु भवि, अधिक जतन सौ राखि ॥

Colophon : इति मिथ्यात्व खंडन नाटक सम्पूर्ण । संवत् १६३५ मिती ज्येष्ठ कृष्ण नवमी शनिवारे ।

२८६. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : देखें, क्र० २८५ ।

Closing : देखें, क्र० २८५ ।

Colophon : इति मिथ्यात्व खंडन नाटक सम्पूर्ण । मिती श्रावण कृष्णे ४ बुधवार सवत् १८७१ लिखी फतेपुर मध्ये ।

२८७. मिथ्यात्व खंडन नाटक

Opening : देखें—क्र० २८५।

Closing : देखें—क्र० २८५।

Colophon : इति श्री मिथ्यात्व खंडन नाटक सम्पूर्ण।

२८८. मोक्षमार्ग प्रकाशक

Opening : मंगलमय मंगलकरन वीतराग विज्ञान।
नमों ताहि जातें भये अरिहन्तादि महान ॥

Closing : बहुरि स्वरूप विषै वा जिनधर्म विषै वा धर्मात्मा जीवनि विषै अतिप्रीति भावसों वात्सल्य है। ऐसैं आठ अंग जानने।

Colophon : नहीं है।

२८९. मोक्षमार्ग प्रकाशक

Opening : देखें—क्र० २८८।

Closing : ···· ··· सो परलोक के अर्थि कैसे, स्मरण
करै है किछू विचार होय सकता नांही।

Colophon : इति श्री मोक्षमार्ग प्रकाशजी संपूर्ण।

२९०. मृत्यु महोत्सव

Opening : मृत्युमार्गेप्रवृत्तस्य वीतरागो ददातु मे।
समाधि बोधिपाथेयं यावन्मुक्ति पुरीपुरः ॥

Closing : उगणीसें अठारा सुकल पंचमि मास असाढ।
पूरण लखी बांचो सदा मनधारि सम्यक् गाढ ॥

Colophon : इति श्री मृत्यु महोत्सव पाठ वचनिका समाप्ता। लिखतं बिरामण सियाराम वासी नग्र लिक्षमणगढ का। मिति पौ (ष) सुदी २ संवत् १९४४।

२९१. मृत्युमहोत्सववचनिका

Opening : कृमिजालशताकीर्णे, जर्जरे देहपंजरे ।
भज्यमानेन भेतव्यं यस्त्वं ज्ञानविग्रहः ।।

Closing : देखें, क० २९० ।

Colophon : इति श्री मृत्युमहोत्सव वचनिका सम्पूर्णम् ।

विशेष—अन्तमें अभिषेक पाठ भी लिखाहुआ है, जो अपूर्ण है ।

२९२. मूलाचार

Opening : मूलगुणे सुविसुद्धे वंदित्ता सव्वसंजदे सिरसा ।
इह परलोगहिदत्थे मूलगुणे कित्तइस्सामि ।।

Closing : ... . सकललोकालोकस्वभाव श्रीमत्परमेश्वरजिनपतिमतवितत मतिचिदचित्स्वावचिद्भावमाधितस्वभाव परमाराध्यतमसंद्धान्तपारावार पारीणाय आचार्य श्री कुन्दकुन्दाचार्याय नम. ।

Colophon : इति समाप्तोऽयं ग्रंथः ।

२९३. मूलाचार प्रदीप

Opening : श्रीमत मुक्ति भर्त्तारं, वृषभ वृषनायकम् ।
धर्मतीर्थकरं ज्येष्ठ, वंदेनतगुणार्णवम् ।।

Closing : पंचषट्ट्याधिकाः, श्लोकाः त्रयस्त्रिंशशतप्रमा. ।
अस्याचारगुणस्यास्य ज्ञेयाः पिंडीकृता बुधैः ।।

Colophon : नही है ।

देख—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३५ ।
(३) आ० सू०, पृ० ११३, २०१ ।
(४) रा० सू०, पृ० १६५ ।
(५) Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 681.

२९४. मूलाचार प्रदीप

Opening : देखें, क० २९३ ।

Closing : देखें, क० २९३ ।

Colophon : इति श्री मूलाचारप्रदीपकाख्ये महाग्रंथे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिविरचितेअनुप्रेक्षा परीषहद्धिवर्णनोनाम द्वादशमोधिकार: । लिखतं वयाचन्द लेखक वासी जैनगर का हालवासी जैसिंघपुरामध्ये । मिति बैशाख शुक्लपक्षे तिथौ चतुरथ्यां रविवासरे संवत् १८७४ का । वाचकानां लेखकानां शुभ भवतु ।

२६५. नवरत्न परीक्षा

Opening : रत्नत्रयाय भुवनत्रयवंदिताय कृत्वा नम: समवलोक्य च रत्नशास्त्रम् ।
रत्नप्रवेशकमधिकृत्य विमुच्य फल्गुन् सक्षेपमात्र मिति बुद्धभटेन दृष्टम् ।।१।।

भुवनत्रितयाक्रांतप्रकाशीकृतविक्रम: ।
बलो नामाभवच्छ्रीमान्दानवेंद्रो महाबल: ।।२।।

Closing : तत्रगुराइहसूनुना समामोक्ति: । मणिशास्त्र महतां बुद्धभटक्षयेणेयमिति वज्रमौक्तिक पद्मराग मरकतेंद्र नीलवैडुर्यकर्केतन पुलक रुधिराक्ष स्फटिक विद्रुमाणां । वीजाकर गुणदोष ज्ञातममूल्य परीक्षा प्रारंभितुम् । दोषगुणानान् हानियोगं च विस्तारेऽपौवुद्धभटेन निर्दिष्ट: ।।

Colophon : इति वृद्धभट्टनाम रत्नशास्त्र समाप्तम् ।। भद्र भूयादिति स्तौमि अयमपि ग्रन्थ: रान्० नेमिराजाख्येन लिखित. ।। माघशुक्ल चतुर्दश्या रामाप्तश्च रक्ताक्षि मवासर: ।। क्रिस्तशक १६२५-फेबुअरी ।। मूडबिद्री ।।

२६६. नयचक्र सटोक

Opening : बंदौ श्री जिनके वचन, स्याद्वाद नयमूल ।
ताहि सुनत अनभवतही, ह्वै मिथ्यात निरमूल ।।

Closing : तैसो ही कहनो सोइ अनुपचरित असद्भूत विवहार कहिये । जैसे जीवको शरीर ऐसौ कहणो ।

Colophon : इति पंडित नारायणदासोप् शेन यह हेमराजकृत नयचक्र की सामान्य वचनिका समाप्तम् । श्री मिती पौष सुदी ११ संवत् १६५६ । हस्ताक्षर बलदेव प्रसाद।

२६७. नीतिसार (समयभूषण)

Opening : प्रणम्यन्त्रिजगन्नाथाग्निन्द्रा नन्दितसम्पदः ।
अनागाराम्प्रवक्ष्यामि नीतिसारसमुच्चयम् ॥१॥

Closing : माघत्प्रात्यर्थिवादिद्विरद घटिघटाटोपवेगपावनोदे ।
वाणी यस्याभिरामामृगपतिपदवीं गाहते देवमान्या ॥
श्रीमानिन्द्रनन्दी जगतिविजयतां भूरिभावानुभावी ।
दैवज्ञ. कुण्डकुन्दप्रभुपदविनयः स्वागमाचारचञ्चुः ॥११३॥

Colophon : इति श्रीमदिन्द्रनन्द्याचार्य्यं विरचितमिदं समयभूषण समाप्तम्
॥ शुभ भूयात् ॥
देखें—जि० र० को , पृ० २१६ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 660.

२६८. नीतिसार

Opening : श्रीमदुन्नतलक्ष्मीरमणाय नमः ॥ निर्ग्रन्थसमय भूषणम् ॥
देखें, क्र० ४४७ ।

Closing : माद्यन्त सिद्धशान्तिस्तुनिर्जिनगर्भजनुर्षास्तु या द्वंत ॥
निष्क्रमणेयोग्यतं विधिश्रुनाग्रपि शिवे शिवान्तर्मपि ॥

Colophon : नही है ।

२६९. न्यायकुमुदचन्द्रोदय

Opneing : सिद्धिप्रद प्रकटिताखिलवस्तुतत्त्वमानंदमदिरमशेषगुणैक पात्रम् ।
श्रीमज्जिनेन्द्रमकलंकमनंतवीर्य मानम्य लक्षणपदं प्रवर
प्रवक्ष्ये ॥१॥

Closing : तत्संपत्तौ च मुमुक्षुजनमोक्षमार्गोपदेशद्वारेण परार्थं
संपत्तये सौचेरहत इति ॥

Colophon : इति श्री भट्टारकाकलङ्कशशाङ्कानुस्मृतप्रवचनप्रवेशः समाप्तः।
इति ग्रन्थः समाप्तः ।
देखें—जि० र० को०, पृ० २१६ ।

३०० पद्मनन्दि पंचविंशतिका

Opening : देखें—क्र० १८४ ।

Closing : युवतिसंगतिवर्जनमष्टकं प्रतिमुमुक्षुजनं भणितं मया ॥
सुरभिरागसमुद्रगता जना कुरुत माकुध मत्रमुनौ मयि ॥

Colophon : इति श्री ब्रह्मचर्याष्टकप्रकरणं समाप्तम् ॥
इति श्री पद्मनंदिकृता पंचविंशतिका समाप्ता ॥
देखें,--जि० र० को०, पृ० २२८ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 664.

३०१. पद्मनंदि पर्चविंशतिका

Opening : देखें --क्र० १८४ ।

Closing : देखें --क्र० ३०० ।

Colophon : इति श्री ब्रह्मचर्याष्टकप्रकरणं समाप्तम् ॥ इति श्री पद्मनंदिकृता पचविंशतिका समाप्ता ॥ २५ ॥ अथ संवत्सरेऽस्मिन् नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १८३६ मितिचैत्र शुक्लनवम्या शनिवासरे इदं पुस्तकं लिपीकृत पूर्णं जात श्री रस्तु शुभ भूयात् कल्याणमस्तु ॥

३०२. पंचमिथ्यात्व वर्णन

Opening : वेदान्त क्षणकत्वं च शून्यत्व विनयात्मकम् ।
अज्ञान चेति मिथ्यात्व पचधा वर्तते भुवि ॥

Closing : इत्येव पंचधा प्रोक्ता मिथ्यादृष्टिभिधानकम् ।
नोपादेयमिदं सर्वं मिथ्यात्व विषदोषत: ॥

Colophon : इति श्री पचमिथ्यात्व वर्णन संपूर्णम् । संवत् १८०३ वर्षे पोह (पौष) सुदी २ तिथौ बुधवारे श्री दिल्लीमध्ये श्री माथुर गच्छे काष्ठासघे स्वामी जी भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्ति जी तस्य भ्रातृयांमे श्री जैरामजी तस्य यांमे रामचंद लिखापितम् । शुभ भवतु ।
परस्परस्य मर्माणि, न भाषन्ते बुधाजना: ।
ते नरा च क्षयं यांति, वल्मीकोदर सर्पवत् ॥

३०३. पञ्चास्तिकाय भाषा

Opening : ... ... को नाहीं प्राप्त हुए है, तिनको सरण है। तिनको नमस्कार होउ ।

Closing : ....संसार समुद्रको उतरि करि सम ... ... ।

Colophon ; अनुपलब्ध ।

३०४. पंचास्तिकाय भाषा

Opening : जीर्ण ।

Closing : जीर्ण ।

Colophon : नही है ।

३०५. पंचसंग्रह

Opening : छद्दव्वसवपयत्थे दव्वाइ चउव्विहेण जाणते ।
वन्दित्ता अरहन्ते जीवस्स परूवण वोच्छ ॥ १ ॥

Closing : जागस्य अपडिपुणो अत्थो अप्पागमेणरइ उत्ति ।
तं खमिऊण बहुसुया पूरऊणं परिकहितु ॥ ६ ॥

Colophon : एवं पचसग्रहः समाप्त ॥ शुभ भवत्लेखकपाठकयोः ॥ अथ श्री टवंक नगर ॥ संवत् १५२७ वर्षे माघवदि ३ गुरुवासरे श्री मूलसंघ सारस्वतगच्छे । भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः । तच्छिष्यो मुनि रत्निकीर्तिदेवाः ॥

देखें, जि० र० को०, पृ० २२८, २२६ ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 662.

३०६. परमार्थोपदेश

Opening : नत्वानंदमयं शुद्धं परमात्मानमव्ययम् ।
परमार्थोपदेशाख्यं ग्रंथं वच्मि तदर्थिनः ॥

Closing : येऽधुनैव शमसंयमयुक्ताः द्वेषरागमदमोहविमुक्ताः ।
संति शुद्धपरमात्मनि रक्ताः ते जयंतु सततं जिनभक्ता. ॥२७२॥

Colophon : इति परमार्थोपदेशग्रन्थः भट्टारक श्री ज्ञानभूषण विरचित-समाप्तः ।

यह प्रतिलिपि जैन सिद्धान्त भवन, आरा में संग्रहार्थ लिखी

गई । शुभमिती पौषकृष्णा ७ मंगलवार विक्रम संवत् १६६२, हस्ताक्षर रोशनलाल जैन ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६१ ।
(२) जैं० ग्र० प्र० सं०, प्रस्तावना, पृ० ५१ ।
(३) भ. सम्प्र., पृ. १४२, १५४, १८३, १६७

३०७. परमात्म प्रकाश

Opening : चिदानंदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ।।

Closing : परम पय गयाण भासवो दिव्वकाउ,
मणसि मुणिवराणं मुक्खदो दिव्व जोई ।
विसय सुह रयाण दुल्लहो जोउ लोए,
जयउ सिव सरूवो केवली कोवि बोहो ।।

Colophon : इति श्री योगीन्द्रदेव विरचित परमात्मप्रकाश संपूर्णम् । संवत् १८२६ वर्षे मिती भादौ वदी ११ एकादशी चद्रवासरे लिखितं गुमीनीराम सौन पोथी गुन आगर लेखक-पाठकयो शुभं अस्तु कल्याणमस्तु ।

देखें—जि. र. को., पृ. २३७ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 665.

३०८ परमात्मप्रकाश वचनिका

Opening : चिदानंद ।चिद्रूप जो, जिन परमातम देव ।
सिद्धरूप सुविशुद्ध जो, नमौं ताहि करि सेव ।।

Closing : ऐसा श्री जिन भाषित शासन सुखनिक कैसैं करानिकरि। वृद्धि कूं प्राप्त होऊ।

Colophon : श्री योगिन्द्राचार्यकृत मूल दोहा ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका दौलतराम कृत भाषा वचनिका सम्पूर्ण भई, संवत् १८६१ ।

३०६ परमात्म वचनिका

Opening : चेतन आनंद एक रूप है, कर्मरूपी वैरीको जीतें ताते जिन है ।

Closing : और विषै सुखमें जो मगन है तिनकों इह जोग दुरलभ है। जैवंत प्रवर्तो सेव दुरलभ कोई ग्यान है सो।

Colophon : इति परमात्मप्रकाश समाप्तम्।

३१०. परसमयग्रंथ

Opening : श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

Closing : निश्शेष्टाना वधो राजन् कुत्सितो जगतो मतो।
ऋतु मध्योपनीतानां पशुनामिव राघव.॥ १६४॥

Colophon : नही है।

विशेष—विभिन्न पुराणों से संग्रहीत सदाचार विषयक श्लोक हैं।

३११. प्रश्नमाला भाषा

Opening : आगे राजाश्रेणिक गौतम स्वामी तैं प्रश्न किये ।

Closing : ते भव्यात्मा कल्याण के अर्थि सुबुद्धी परभवमें मोक्ष पावेंगे ऐसी जानि इस प्रश्नमाला को धारन करहु।

Colophon : इति श्री प्रश्नमाला सम्पूर्णम्।
प्रश्नमाला पूरनभई, आदेश्वर गुनगाय।
सायक्ति सहित याचित रहो, ज्ञान सुरति मनमाह॥

३१२. प्रबोधसार

Opening : नमः श्री वीरनाथाय भव्यांभोरुह भास्वते।
सदानंद सुधास्यंदन् स्वात्मसंवेदनात्मने॥

Closing : सर्वलोकोत्तरत्वाच्च ज्येष्ठत्वात्सर्वभूभृताम्।
महात्वात्सर्ववर्णत्वात्त्वमाद्य इह पुरुष.॥

Colophon : इति प्रबोधसारः समाप्तः।

देखें—जि० र० को, पृ० १७३।

३१३. प्रश्नोत्तरोपासकाचार (२४ सर्ग)

Opening : जिनेशं वृषभं वंदे वृषभं वृषनायकम्।
वृषाय भुवनाधीशं वृषतीर्थं प्रवर्तकम्॥१॥

Closing : शून्याष्टाष्टद्वया काव्य: सख्ययामुनिनोदित: ।
नंदत्वे पावनो ग्रंथो यावत्कालांतमेव हि ।। १३४ ।।

Colophon : इति श्री प्रश्नोत्तरोपासकाचारे भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति-विरचिते अनुमत्यादि प्रतिमा द्वयप्ररूपको नाम चतुर्विशतितम: परिच्छेद: ।। २४६ ।। संवत् १९७१। लिखितमिदं मिश्रोपनामक गुलजारीलालशर्मणा ।। मिती माघ शुद्ध ५ शनौ शुभं भवतु श्लोकसंख्या प्रमाणम् ३३०० ।। संवत् १८७५ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है ।

देखें-(१) दि० जि० र०, पृ० ६३ ।
(२) जि. र. को., पृ. २७८ ।

३१४. प्रश्नोत्तरोपासकाचार

Opening : देखे—क्र० ३१३ ।

Closing : गुणधरमुनिसेव्यं, विश्वतत्वप्रदीपम् ।
विगतसकलादेशं ... . ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

३१५. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार

Opening : सेवत जहि सुरईश, वृषनायक वृषदाइ हैं ।
बंदौ जिनवृषभेश, रच्यो तीर्थ वृष आदिजिन ।।

Closing : तीनहिसे या ग्रंथ के, भए जहानाबाद ।
चौथाई जलपथ विषै, वीतराम परसाद ।।

Colophon : इति श्री मन्महाशीलाभरण भूषित जैनी सुनु लाला बुलाकीदास बिरचितायां प्रश्नोत्तरोपासकाचारभाषायां अनुमत्यादिमप्रतिमाद्वय प्ररूपणो नाम चतुर्विशतिम: प्रभाव: ।। २४ ।। इति भाषा प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ग्रंथ सम्पूर्ण । संवत् १८२१ पौष शुक्ल दशमी चंद्रवार । पुस्तकमिदं रघुनाथ शर्मा ने लिखि । मंगलमस्तु ।

३१६. प्रतिक्रमण सूत्र

Opening : इच्छामि पडिक्कमिउं पगामसिज्जाए निगामसिज्जाण उव्वत्तणाण परियत्तणाए आउट्टणाए सारणाए··· ···· ।

Closing : एवमाहं आलोइय निंदिय गरहिय दुगंथिय ।
तिविहेण पडिक्कंतो वंदामिणे चौवीसं ॥

Colophon : इति यतिनां प्रतिक्रमणसूत्रं सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० २५६ ।
(2) Catg. of skt. & Pkt. Ms., page, 669.

३१७. प्रवचनपरीक्षा

Opening : त्रिलोकीतिलकायार्हत्युवराय नमो नमः ।
वाचामगोचराचिन्त्य बहिरभ्यन्तरश्रिये ॥

Closing : परमामृतदानेन प्रीणयद्विबुधान् परम् ।
शरण भक्तिमन्नेमिचन्द्रवजिनशासनम् ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २७० ।

३१८. प्रवचन प्रवेश

Opening : धर्मतीर्थंकरेभ्योस्तु स्याद्वादिभ्यो नमो नमः ।
वृषभादिमहावीरान्तेभ्यः स्वात्मोपलब्धये ॥

Closing : प्रवचन पदान्यभ्यस्यार्थास्ततः परिनिष्ठिता-
नसकृदवबुद्ध्वाद्बोधाद्बुधो हतसशय ।
भगवदकलंकानां स्थाम सुखेन समाश्रित ,
कथयतु शिव पथानं वः पदस्य महात्मनाम् ॥

Coophon : इति भट्टाकलंकशशांकानुस्मृतप्रवचनप्रवेशः समाप्तः ।
अयमपि एन नेमिराजाख्येन लिखितः । माघशुक्ल त्रयो-
दश्यां समाप्तः । दक्षिण कनाडा मूडबिद्री १९२५ फेब्रवरी ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २७० ।

३१९. प्रवचनसार

Opening : सर्व व्याप्यैकचिद्रूप, स्वरूपाय परमात्मने ।
स्वोपलब्धिः प्रसिद्धाय ज्ञानानंदात्मने नमः ॥

Closing : इतिगदितिमनीचैस्तत्त्वमुच्चावच यः,
चिंतितदपि किलाभूवकल्पमग्नौ कृतस्य ।

अनुभुवसदुर्व्वैः विश्विदेवाद्य यस्माद्,
अपरमिह न किंचित् तत्वमेकं परंचित् ॥

Colophon : इति तत्वदीपिका नाम प्रवचनसारवृत्तिः समाप्ता। श्रीरस्तु। संवत् १७०५ वर्षे माद्रपदमासे शुक्लपक्षे पौर्णमास्यां बुधवासरे अर्गलपुरमध्ये शाह जहान राज्ये लि० श्वेतावर रामविजयेन लिखाप्येदं भांडिकाख्यगोनूणां संघपत्तिना श्री साह श्री जयतीदासेन पुत्र जगतराजयुतेन स्वकीयज्ञानावरणीय कर्मक्षयनिमित्तं पंडित श्री वीरूकायदत्त वाच्यमानं श्री चतुर्विधसंघपुरतः .... पुस्तक जीयात्।

देखें, (१) दि. जि. ग्र. र., पृ. ६३।
(२) जि. र. को, पृ. २७०।
(३) प्र. जै. सा., पृ. १७८।
(४) आ. सू., पृ. ६६।
(5) Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 671.

३२०. प्रवचनसार

Opening : सिद्ध सदन बुधिवदन मदनमदकदनदहन रज,
लवद्धिलसत अनंत चारु गुनवत संत अज ॥

Closing : प्रवचनसार जी महान, वृंदावन छंदवद करी।
ताको दुजिप्रत्यहरि आन मनवंछित पूरन करी ॥

Colophon : श्री प्रवचनसार जी गाथा २७५ टीका संस्कृत २७५ भाषा छद २८६४। मकरमासे कृष्णपक्षे तिथौ ७ बुधवासरे सवत् १६६६।

३२१. प्रायश्चित्त

Opening : जिनचन्द्रं प्रणम्याहमकलंकं समन्ततः।
प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि श्रावकाणां विशुद्धये ॥

Closing : सहस्राणि त्रत्रैस्त्वैका पंचनिष्कै प्रपूजनम्,
प्रायश्चित्तं य करोत्येतदेवं जाते दोषे तथा शान्त्यर्थमार्या।
राष्ट्रस्यासौ भूमिपस्यात्मनोपि स्वस्थावस्थितं शं तनोति ॥

Colopnon : इत्यकलंकस्वामि निरूपितं प्रायश्चित्तं समाप्तम्। मिती वि. संवत् १६७६ श्रावण शुक्ला चतुर्थी लिखितं जयपुरे पं० मूल चन्द्रेण समाप्तः प्रायश्चित्ते ग्रंथः अकलंकविरचितः।

(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६४ ।
देखें—(२) जि० र० को०, पृ० २७६ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ १८० ।
(४) रा सू. II, पृ. १७२ ।
(५) रा. सू. III, पृ. १८६ ।
(६) Catg of Skt & Pkt. Ms., P 673.

३२२. पुण्य पचीसी

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहंत बहुरि श्रीसिद्ध नमीजे ।
आचारज उवझाय तासु पदवंदन कीजे ।।

Cloing : सत्रह से तेतीस के उत्तम फागुनमास ।
आदि पक्ष नमिभावसों कहै भगोती दास ।।

Colophon : इति पुण्य पचीसी ।

३२३. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय

Opening : परमपुरुष निज अर्थ को साधि भए गुणवृंद ।
आनंदामृत चंद को वंदत हूं सुखकंद ।।

Closing : अठारह से ऊपरे संवत् सत्ताईस ।
मास मागिसर रतिसिसिर सुदि दोयज रजनीस ।।

Colophon : इति श्री पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ।

३२४. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय

Opening : देखे—क्र० ३२३ ।

Closing : अठारह से ऊपरे संवत् है बीस मास ।
मार्गसिर शिशिर रितु, सुदी है अरनीस ।।

Colophon : इति श्री अमृतचन्द्र सूरि कृत पुरुषार्थसिद्ध्युपाय सम्पूर्णम् ।
इदं पुस्तकं लिखतं हरखंदराय श्रवक पल्लीवार गोटि गुजरात कास्यप गोत्र तस्य तनय रामदयाल निविसते कान्यकुब्जे मिति वैशाखमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे दशम्यां संवत् विक्रमादित्ये १६४७ ।।

विशेष —इसके आवरण (कूट) पर एक स्टीकर चिपका हुआ है

जिसपर " पुरुषार्थ सिद्धोपाय बाबू सीरी अंसदास " हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखा हुआ है। जिसका ग्रन्थ की प्रशस्ति से कोई सम्बन्ध नहीं प्रतीत होता, अतः यह क्या है ? समझना कठिन है।

३२५. रत्नकरण्डश्रावकाचार सूत्री

Opening : नमः श्रीवर्धमानाय निर्धूतकलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्यादर्पणायते ॥

Closing : सुखयति सुखभूमिः कामिनं कामिनीव,
सुतमिव जननी मां शुद्धशीलाभुनक्तु ।
कुलमिव गुणभूषण कन्यका संपुनीतात्,
जिनपतिपदपद्म प्रेक्षिणी दृष्टिलक्ष्मीः ॥

Colophon : इति श्री समंतभद्रस्वामि विरचितोपासकाध्ययने पंचम परिच्छेदः समाप्तः।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६५।
जि० र० को०, पृ० ३२६।
प्र० जै० सा०, पृ० २०८।
आ० सू०, पृ० १२०।
रा० सू० II, पृ० १६८।
रा० सू० III, पृ० ३८।
Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 685.

३२६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार वचनिका

Opening : इहा इस ग्रन्थ के आदि में स्याद्वाद विद्याके परमेश्वर परम निर्ग्रंथ वीतरागी श्री समन्तभद्रस्वामी जगतके भव्यनि के परमोपकार के अथि ··· ···।

Closnig : हरि अनीति कुमरण हरो, करो ··· ···।
मोक्ष निति भूषित करो, शास्त्र जु रत्नकरड ॥

Colophon : इति श्री स्वामी समन्तभद्र विरचित रत्नकरड श्रावकाचार की देशभाषामय वचनिका समाप्ता। इस प्रकार मूलग्रन्थ के अर्थ का प्रसादतें ··· ··· अपने हस्त ते लिखा। संवत् १६२६ श्रावण शुक्ल चतुर्दश्यां शनिवासरे। श्लोक अनुष्टुप १६०० हजार ग्रन्थ संपूर्ण लिखा।

३२७. रत्नकरण्ड श्रावकाचार वचनिका

Opening :　　वृषभ आदि जिन सन्मतिसार ।
शारद गुरुकूं नमि सुखकार ॥
मूल समन्तभद्र मुनिराज ।
वृत्ति करी प्रभेन्दु यतिराज ॥

Closing :　　टीका रमणी देखिकरि संस्कृत करि अभिराम ।
कल्पित किंचित् नही लिखी, रची तासकी दाम ॥

Colophon :　　इति रत्नकरंड वचनिका सम्पूर्णम् ।

३२८. रत्नकरण्ड विषम पद

Opening :　　रत्नकरंडस्य विषमपदव्याख्यान कथ्यते ॥
श्री वर्धमानाय ॥ अन्तिम तीर्थङ्कराय ॥

Closing :　　जिनोक्तपदपदार्थप्रेक्षमशेलेति ॥

Colophon :　　इति रत्नकरंडक विषमपदव्याख्यान समाप्तम् ।

विशेष　समन्तभद्राचार्य के रत्नकरंडक के विषम पदों का व्याख्यान है। आचार विषयक होने पर भी पुस्तक की पद्धति कोशात्मक है।

३२९. रत्नमाला

Opening :　　सर्वज्ञं सर्ववागीशं वीरं मारमदापहम् ।
प्रणमामि महामोह-शान्तये मुक्तिताप्तये ॥

Closing :　　यो नित्यं पठति श्रीमान् रत्नमालामिमां परां ।
समुद्धचरणो नूनं शिवकोटित्वमाप्नुयात् ॥

Colophon :　　इति रत्नमाला संपूर्णम् ।

विशेष—छपी पुस्तक में ६७ श्लोक हैं, जबकि उक्त प्रति में ६८ हैं ।
देखें—जि० र० को०, पृ० ३२७ ।

Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 686.

३३०. रत्नमाला

Opening :　　सर्वज्ञं सर्ववागीशं वीरं मारमदापहं ।
प्रणमामि महामोह शान्तयेम मुक्तताप्तये ॥१॥

Closing : योनित्यम्पठति श्रीमान् रत्नमालामिमां पराम् ।
सशुद्धभावनोनूनं शिवकोटित्वमाश्नुयात् ॥६७॥

Colophon : इति श्री समन्तभद्र स्वामि शिष्यशिव कोटयाचार्य्य विरचिता-रत्नमाला समाप्ता ॥ शुभंभूयात् ।

३३१. राजवार्त्तिक

Opening : प्रणम्यसर्वविज्ञानमहास्पदमुमाश्रेयं ॥
मिथ्यौतकल्मपंचीरं वक्ष्ये तत्वार्थवर्त्तिकम् ॥१॥

Closing : प्रत्यक्षं तभगवतानर्हतांतैश्च भाषितम् ॥
गृह्यतेस्तीत्यतः प्राज्ञैर्न्नंघ्मपगीक्षया ॥३२ ॥

Colophon : इति तत्त्वार्थवार्त्तिके व्याख्यानालंकारे दशमो ध्यायः ॥ समाप्त ॥

देखें —जि० र० को, पृ० १५६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 869

३३२. रूपचन्द्र शतक

Opening : अपनौ पद न विचारहु, अहो जगत के राय ।
भवबन ज्ञायकहार हे, शिवपुर सुधि विसराय ॥

Closing : रूपचंद सद्गुरुनिकी, जतु वलिहारी जाइ ।
आपुनवै सिवपुर गए, भव्यनु पंथ दिखाइ ॥

Colophon : इति श्री पांडे रूपचंद शतकं समाप्तम् ।

३३३. सद्बोध चन्द्रोदय

Opening : यज्जानन्नपि बुद्धिमानपि गुरुः शक्तो न वक्तुं गिरा,
प्रोक्तं चेन्न तथापि चेतसि नृणां सम्मातिचाकाशवत् ।
यत्रस्वानुभवस्थितेपि विरला लक्ष्यं लभन्ते चिरात्,
तन्मोक्षैकनिबन्धनं विजयते चित्तत्वमत्यद्भुतम् ॥१॥

Closing : तत्वज्ञानसुधार्णवं लहरिभिर्दूरं समुल्लासयन्,
तृच्छायत्र विचित्रचित्तकमले संकोचमुद्रां दधत् ।
सद्विद्याश्रितभव्यकैरवकुले कुर्वन्विकाशं श्रियं,
योगीन्द्रोदयभूधरेविजयते सद्बोधचन्द्रोदयः ॥५०॥

Colophon : इति श्री सद्बोधचन्द्रोदय समाप्तम् ।

विशेष–जिनरत्नकोष पृ० ४१२ पर 'पद्नानन्द' कृत सद्बोधचन्द्रोदय का उल्लेख है, जिसमें ६० संस्कृत श्लोक हैं । किन्तु इसमें मात्र ५० श्लोक हैं ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ४१२ ।
Catg. of Skt & pkt. Ms. P 700.

३३४. सद्बोध चन्द्रोदय

Opening : देखें– क्र० ३३३ ।

Closing : देखें—क्र० ३३३ ।

Colophon : इति पद्मनन्दिविरचितसद्बोधचन्द्रोदयः समाप्तः ।

३३५. सज्जनचित्त वल्लभ

Opening : नत्वा वीरजिनं जगत्त्रयगुरुं मुक्तिश्रियो वल्लभं,
पुष्पेषु क्षीयनीतबाणनिवहं संसारदुःखापहम् ।
वक्ष्ये भव्यजनप्रबोधजननं ग्रंथं समासादहं
नाम्ना सज्जनचित्तवल्लभमिमं शृण्वंतु संतो जना. ॥

Closing : वृत्तं. विंशति ·· ·· ·· संसारविच्छित्तये ॥

Colophon : इति सज्जनचित्तवल्लभ समाप्तम् ।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६७ ।
जि० र० को., पृ. ४११ ।
प्र० जै० सा०, पृ० २३० ।
रा० सू० II, पृ० ३६०, ३७३ ३८६ ।
जै. ग्र. प्र. सं. १ पृ. ६१, ७२ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 700.

३३६. सज्जनचित्त बल्लभ

Opening : यहां प्रथम ही टीकाकार अपने इष्टदेवगुरुशास्त्रदेव कौं नमस्कारूप मंगलाचरण करै है ।

Closing : हरगुलाल कहै, जोलौं जगजालदहै ।
और शिवनाहो लहै तोलौ तूं ही स्वामी हमार हैं ।।

Colophon : इति सज्जनचित्तबल्लभ नाम ग्रन्थ संपूर्णम् संवत् १६५३ ।

३३७. संबोध पंचास्तिका

Opening : णमिऊण अरूहचरणं वंदे युणु मिद्ध तिहुयणे सारं ।
आयरियउज्झायाणं साहू वंदामि तिविहेण ।।

Closing : सावणमासम्मि कया गाहाबंधेण विरइयं सुणह ।
कहियं समुच्चय छंपयडिज्जंतं च सुहवोहं ।।५०।।

Colophon : इति संबोध पंचास्तिका समाप्तम् ।
देखें,—जि० र० को०, पृ० ४२२ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 704.

३३८. संबोध पंचास्तिका सटीक

Opening : देखें—क्र० ३३७ ।

Closing : अस्या संवोधपंचासिकाया वहवो अर्थो भवति परन्तु मया संपेक्षार्थे कथिता: च पुन. सुखं स्वात्मोत्पन्नसुखं बोधि प्राप्त्यर्थं मया कृता: ।

Colophn : इति संवोधपंचासिका धर्माविकाशिकशास्त्रं समाप्तम् । श्री गोतमस्वामीविरचितं शास्त्रं समाप्तम् । सम्वत् १७९३ वर्षे शाके १६५८ प्रवर्तमाने कातिकमासे कृष्णपक्षे षष्ठी तिथौ ।

शुभमिती पौषकृष्णा ७ मंगलवार श्रीवीर संवत् २४६२ वि० सं० १९९२ के दिन यह प्रतिलिपि लिखकर तैयार हुई । ह० रोशन–लाल जैन ।

३३९. समयसार (आत्मख्याति टीका)

Opening : नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकाशते ।
चित्स्वभावायभावाय सर्वभावांतरच्छिदे ॥

Closing : स्वशक्तिसंसूचितवस्तुतत्वैः, व्याख्याकृतेयं समयस्य शब्दैः ।
स्वरूपगुप्तस्य न किंचिदस्ति, कर्त्तव्यमेवामृतचन्द्रसूरिः ॥

Colophon : इति समयसारव्याख्यायामात्मख्यातिनाम्नी वृत्तिः समाप्ता । समाप्तश्चसमयसारव्याख्याव्यासः । श्रीरस्तु लेखकपाठकयोः मंगलमस्तु । ओंकाराय नमो नमः । परमात्मविनाशिने नमोनम । ओं नमः सिद्धाय ।

देखें—दि. जि. ग्र. र., पृ. ६१ ।
जि. र. को., पृ. ४१८ ।
प्र. जै. सा., पृ. २३५ ।
आ सू. पृ. १३५ ।
रा. सू. II, पृ. १८६, ३८६ ।
रा. सू. III, पृ. ४३ ।
Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 703.

३४०. समयसार (आत्मख्याति टीका)

Opening : देखें—क्र० ३३९ ।

Closing : देखें—क्र० ३३९ ।

Colophon : इत्यात्मख्यातिनामा समयसार व्याख्या समाप्ता ।
विशेष—यह ग्रन्थ करीब १९०० विक्रम संवत् का है ।

३४१. समयसार सटीक

Opening : देखे—क्र० ३३९ ।

Closing : अनुपलब्ध ।

३४२. समयसार नाटक

Opening : करम भरम जगतिमिर हरन खगतुरग लखन पगशिव-
मगदरसी ।
निरखत नयन भविक जल वरषत हरषंत अमितभविक-
जन सरसी ॥

Closing : समैसार आतमदरब, नाटकभाव अनंत।
मोहै आगम नामपै, परमारथ विरतंत ॥

Colophon : इति श्री परमागम समैसार (समयसार) नाटकनाम सिद्धान्त सम्पूर्ण।

संवत् १७३५ वर्षे माघसुदि ८ बृहस्पतिवारे साहिजहानाबाद-मध्ये पातिसाह श्री अवरंगजेबराज्ये। श्रीमालज्ञाति शृंगार।
अज्ञानभावान्मतिविभ्रमाद्वा, यदर्थहीनं लिखतं मयात्र।
तत्सर्वमार्यैपरिशोधनायं, कोप न कुर्यात खलु लेखकस्य ॥

३४३. समयसार नाटक

Opening : देखे— क्र० ३४२।
Closing : देखें—क्र० ३४२।

Colophon : इति श्री परमागम नाटक समयसार सिद्धान्त सम्पूर्णम्। लिखतं प्रयागमध्ये। संवत् १८२८ वर्षे मिति श्रावण सुदि १२ तिथौ भ्रवासरे लिखत शुभवेलायां लेखक पाठक चिरंजीव आयु। श्रीरस्तु।
.... ओसवाल जातीय वैणी प्रसाद जी पुस्तक लिखाया प्रयाग मध्ये सं० १८२८ वर्षे लिखतं श्री।

३४४. समयसार नाटक

Opening : देखे --क्रम ३४२।
Closing : देखें क्र० ३४२।

Colophon : इति श्री परमागम समयसार नाटकनाम सिद्धान्त संपूर्णम्। मिति अग्रहण शुक्ल प्रतिपदा बुधवासरे तृतीये प्रहरे पूर्ण किया।

३४५. समयसार नाटक

Opening : देखें०—क्र०, ३४२।
Closing : देखें०— क्र०, ३४२।
Colophon : संवत् १७४५ फागुन वदि १० शनिवार को पूरन भया।

३४६. समयसार नाटक सार्थ

Opening : देखे, क्र० ३४२ ।

Closing : देखे, क्र० ३४२ ।

Colophon : इति श्री परमागम समयसार सिद्धान्त नाटक समाप्त: ।

३४७. समयसार नाटक

Opening : देखे, क्र० ३४२ ।

Closing : ... ... बानी लीन भयो जगमो ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

३४८. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : देखें, क्र० ३४२ ।

Colophono : इति श्री परमागम समयसार नाटक नाम सिद्धान्त समाप्तम् । ... श्लोकसंख्या १७०७ । सन् १८८६ मिती माघ शुक्ल ४ वार रविवार के संपूरन भया । दसखत दुर्गाप्रसाद आरमध्ये महाजन टोली में ।

३४९. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : देखें, क्र० ३४२ ।

Colohpon : इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्ण । संवत् १८६२ । बैशाख मास कृष्णपक्ष तिथि सातैं (सप्तमी) शनिवार दिन गौरीशंकर अग्रवाल जैन धर्म प्रतिपालक ... लिखी पठनार्थ जैनधरम पालनहार श्री मंगल ददातु ।

३५०. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२।

Closing ; देखें क्र० ३४२।

Colophon ; इति श्री समयसार नाटक सिद्धान्त समाप्त:। संवत् १७२५ अ. सु. १० मं.।

३५१. समयसार नाटक

Opening : ··दलन नरकपद क्षयकरन, अतट भव जलतरन।
बरसबल मदन बनहर दहन, जय जय परम अभय करन॥

Closing : देखें क्र. ३४२।

Colophon : इति श्री परमागम समैसार नाटक नाम सिद्धान्त बनारसीदासकृतम्। लिखितं नित्यानंदब्राह्मणेन लिखायतं श्रावग जीवसुखराम उभयोमंगलं ददातु। संवत् १८७६ वर्षे भाद्रपद शुक्ला ५ बुधवासरे समाप्ता:। शुभं भूयात्।

३५२. सम्यक कौमुदी

Opening : श्री वर्द्धमानस्य जिनदेवं जगद्गुरुम्।
वक्षेह कौमुदीं नृणां सम्यक्तगुण हेतवे॥ १॥

Closing : अर्हद्दासेन राजा हृष्टस्तस्य पुण्य कृतां प्रशंसनश्च॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ७१।
(२) जि० र० को०, पृ० ४२४।
(३) प्र. जै सा., पृ. २६६।
(४) रा० सू०, पृ० १३२, १३३।
(५) रा० सू० III, पृ० ८१।

३५३. समाधिमरण

Opening : अथ अपने इष्टदेव कौं नमस्कार करि अंतिम समाधिमरण ताका सरूप वरनन करिए है। सो हे भव्य तुमं सुणो। सोही अब लक्षण बरणन करिहैं। सो समाधिनाम नि:कषाय का है शांति प्रणामों (परिणामो) का है।

Closing : ... ताका सुख की महिमा वचन अगोचर है ।

Colophon : इति श्री समाधिमरण सरूप सम्पूर्णम् । सवत् १८६२ आसोज सुदि ५ गुरुवारे लिखतं महात्मा वकसराम सवाई जयपुर मध्ये । श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय ।

३५४. समाधितन्त्र

Opening : जिनान् प्रणम्याखिलकर्ममुक्तान् गुरुन् यदाचारपरान् तथैव ।
समाधितन्त्रस्य करोमि बालाविवोधन भव्यविबोधनाय ।।

Closing : ... ...इण ही आठ प्रकार का पृथक्–२ जघन्य अतरा-समय १ जाणिवा ।

Colophon : इति समाधितंत्रसूत्र बालबोध समाप्ता । ग्रन्थसख्या ८८००, संवत् १८७८ शाके १७३६ । आषाढ शुक्ल १ रवि पुस्तकरघुनाथ-शर्मणा लेपि पाटार्थ रत्नचंदस्य । शुभ भूयात् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ४२१ ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 703.

३५५. समाधितन्त्र सटीक

Opneing : जिनान् प्रणम्याखिल कर्ममुक्तान् गुरुन् सदाचार
परात् तथैव ।
समाधितंत्रस्य करोमि बालावबोधन भव्य
विबोधनाय ।।

Closing : .... अर्थोदयं सुकृतधी: कृत्त वा समाधौ ।।

Colophon : बालबोध समाधितंत्रसूत्रे भव्यप्रबोधनाधिकारे आत्मर-सप्रकाशे धर्माधिकार सम्पूर्णम् । संवत् १७८८ प्रवर्नमाने फागुण (फाल्गुन) वदी ११ तिथौ मुनि फत्तेसागरेण लिपि चक्रे ।

३५६. समाधितन्त्र

Opening : देखें—क्र० ३५४ ।

Closing : देखें—क्र० ३५४ ।

Colophon : नही है ।

३५७. समाधितन्त्र वचनिका

Opening : इहाँ संस्कृत में प्रवीन नाही अर अर्थ सीखने के रोचक ऐसे केत्तेकसुबुद्धी मूलग्रंथ का प्रयोजन ... . ।

Closing : औरनिसूं भी मेरी सोधिवे निमित्त प्रार्थना है सो देखि सोधि लीजियो ।

Colophon : इति समाधितत्र वचनिका माणिकचद कृत संपूर्णम् । संवत् १९३८ का मिती माघ शुक्ल पडिवा शुक्रवार ।

३५८. समाधिशतक

Opening : येनात्माबुद्धात्मैव परत्वेनैवचापरं ॥
अक्षयानंतबोधाय तस्मै सिद्धात्मने नमः ॥१॥

Closing : ज्योतिर्मयं सुखमुपैति परात्मतिष्ट ॥
स्तन्मार्गमेतदधिगम्यसमाधितत्रम् ॥ १०५ ॥

Colophon : इति श्री समाधिशतक समाप्तम् ॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । संवत् १८१४ । आश्विनकृष्ण ७ गुरुवासरे पुस्तकदमिदं संपूर्णम् ॥

देखें—जि० र० को०, पृ०४२१

३५९. सम्मेदशिखर महात्म्य

Opening : पच परमगुरु को नमों दोकर सीस नवाय ।
श्रीजिन भाषित भारती, ताको लागो पाय ॥

Closing : रेवा सहर मनोग, बसै श्रावग भव्य सब ।
आदित्य ऐश्वर्य योग, तृतीय पहर पूरन भयो ॥

Colophon : इति श्री संमेदशिखरमहात्मे लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति छप्पय लालचंद विरचिते सुवरकूटवर्णनो नाम एकविंशतिमः सर्गः ॥२१॥ समाप्त भया । इति श्री संमेदशिखर महात्म जी संपूर्णम् । लिखितं गुलाबचद अग्रवाले जैनी कानसीलगोत्रस्य पुत्र

३५९　बाबू मुन्नीलाल जीके। श्लोक ॥ १२६० ॥ मिति जेठ बदी ५ रोज सनीचर। संवत् १९३३ साल के संपूर्ण भया। पत्र चौंतीस।

३६०. सप्तपंचास दास्त्रविका

Opening : अभिवन्द्य जिनान् वीरान् मज्ञानादि गुणात्मकान्।
कर्णाटभाषाया वक्ष्ये जकामास्त्रव सन्मते: ॥

Closing : ध्यानमुमं मेण्नगे दिसदुदये गेय्यनिकर कृतपराधं क्षंतुमर्हंति संतः।

Colophon : मन्मथ नाम मंवत्सरद श्रावण बहुल विदिगे बुधवारदल्लु मंगलम्।

३६१. सत्वत्रिभंगी

Opening : पणमीय मुर्गेंद्रपूजिय पयकमलं वड्ढमाइममन्तगुण।
पंचामतावणं वोच्छेह सुणुह भवियजणा ॥१॥

Closing : पंचामवेहि विरमण पंचिंदिय णिगहोकसायजया ॥
तिहि दडेहि यविरदिम तारस संयमा भणियो ॥
तिययरातपि यराहट्ठधर चकायअधकाय ॥
देवायभोगभूमिआहारा अत्थिणहिणिहारा ॥ १६४ ॥

Colophon : इत्यास्त्रवबंधउदयोदीरसत्वत्रिभगीमूल ममाप्त: उडुयपुर प्रांत दुर्ग ग्रामस्थ रामकृष्ण शास्त्रि ननयेन रगनाथ भट्टाख्येन लिखित्वा परिधाविवत्सरे वैशाख मासी शुक्लपक्षे पौर्णिम्यां ममापितस्यास्य ग्रथस्य शुभमस्तु।

३६२. सत्यशासन परीक्षा

Opening : विद्यानन्दाधिप: स्वामी विद्वद्देवो जिनेश्वर:।
यो लोकैकहितस्तस्मै नमस्तात्स्वात्मलब्धये ॥

Closing : नदेवमनेकबाधकसद्भावात् भाद्रप्राभाकरैरिष्टम्। भद्रं भूयात्।

Colophon : नहीं है।

देखें—जि० २० को, पृ० ४१२।

३६३. सत्यशासन परीक्षा

Opening : देखें—क्र० ३६२ ।

Colophon : यतो युगपद्भिन्नदेशस्वाधारवृतित्वे सत्येकत्वं तस्यासिद्धत्स्वाधारावृत्तित्वेमत्येकत्वं तस्य सिद्धयत्स्वाधारांतरालेस्तित्व साधयेदिति तदेवमनेकबाधकसद्भावाद्मातृप्राभाकरैरिष्टम् ।।

३६४. सागारधर्मामृत (स्वोपज्ञटीका)

Opening : श्री वर्द्धमाननमाम्य मंदबुद्धि प्रबुद्धये ।
धर्मामृतोक्त सागार धर्मटीका करोम्यहम् ।।

Closing : यावत्तिष्टशासनं जिनपते छिदानमंतस्तमो,
यावच्चार्कनिशाकरौ प्रकुरुतः पुंसां दृशामुत्सवं ।
तावत्तिष्ठतु धर्मस्तरिभिरियं व्याख्यायमाना निशं,
भव्यानां पुरतोत्रदेशविरता वार प्रवोधोद्धुर ।।

Colophon : इत्याशाधर विरचिता स्वोपज्ञधर्मामृतसागारधर्मटीकायां भव्यकुमुदचंद्रिका नाम्नी समाप्ता ।

अनुपस्यां दसापंचशतायाणिसतां मता सहस्त्राण्यस्य चत्वारि ग्रंथस्य प्रमिति किल । मिति मार्गशिर (शीर्ष) कृष्णा ४ रविवासरे लिखतं रामगोपाल ब्राह्मण वासी मौजपुरमध्ये अलवर का राजमैं ।

देखें– जि० र० को०, पृ० १६५ ।

Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 707.

३६५. सामायिक

Opening : पडिक्कमामि भंते । इरिया वहियाए विराहणाए अणागुत्ते .... ।

Closing : गुरवः पातु नो नित्यं ज्ञानदर्शननायकाः ।
चारित्रार्णवगंभीरा मोक्षमार्गोपदेशकाः ।।

Colophon : इति साममिक संपूर्णम् ।

३६६. सामायिक

Opening : सिद्धश्चाष्ट गुणान्भक्त्या सिद्धान् प्रमणमत: सदा ।
सिद्धकार्या: शिवं प्राप्ता: सिद्धि ददतु नोहिते ॥

Closing : एवं सामयिकं सम्यक् सामायिकमखण्डितम् ।
वर्ततां मुक्तिमानेन वशीभूतमिदं मम ॥ १२ ॥

Colophon : इति श्रीलघु सामायिक समाप्तम् ।

३६७. सामायिक

Opening : सिद्धिवस्तुवचोभक्त्या सिद्धान् प्रणमते: सदा ।
सिद्धिकार्यासिवंप्रेदा सिद्ध दधतु नोव्ययम् ॥

Closing : ... ... भो सामायक मुक्ति वधू के वसीभूत औसे तुम्हारे अर्थ हमारा नमस्कार होहु ।

Colophon : इति सामायक सम्पूर्णम् ।

३६८. सामायिक

Opening : ... अर्हन्त भगवान की वाणी की भक्ति करि सदाकाल सिद्धभगवान कूं नमस्कार करते ।

Closing : जलयी वार्की मख्या । वाजित्र वजासुन वाकी संख्या । दशोदिशा की संख्या ।

Colophon : इति सामायिक सम्पूर्णम् ।

३६९. सामायिक वचनिका

Opening : आदि रिषभ सनमति चरम, तीर्थंकर चउवीस ।
सिद्ध सूरि उवझाय मुनि, नमूं धारिकरि शीश ॥

Closing : ऐसैं सामायिक पठ्यो सारजानि मुनि वृंद ।
धर्मराज मति अल्प फुनि भाषामय जयचंद ॥

Colophon : इति सामायिक वचनिका संपूर्णम् । लिखितमिदं [पुस्तकं श्रावक नौ (नव) नंदरामेण । पुत्र नान्हूं रामजी खीदूका का सवाई जयपुर में मिति आषाढ़ सुदी १० संवत् १८७० का ।

३७०. सामायिक वचनिका

Opening : देखें—क्र० ३६६ ।

Closing : देखें,—क्र० ३६६ ।

Colopnon : इति सामायिक वचनिका संपूर्णम् ।

३७१. शासन प्रभावना

Opening : निबद्धमुख्यमंगलकरणानंतरं परापरगुरून् शास्त्राणिपूर्वाचार्यविरचितग्रंथा: उपदेशा: गुर्वाद्युक्तरहस्य प्रकाशका: ··· व्यवहार: कर्मप्रयोग जिनप्रतिष्ठाया. शास्त्राणि चोपदशाश्च व्यवहारश्च तेषा दृष्टि: सम्यक् प्रतिपत्तिरतथा · · · ।

Closing : प्रकृत्या सहोदरत्वजिनेन्द्रप्रमाणशास्त्र जैनेन्द्रव्याकरण च पडित महावीरात् जयवर्मनाममालवाधिपति पडितदेवचद्रादीन् श्लोके— नोपस्तुत: वादीप्रविशालकीर्त्यादय. उपति स्म वालसरस्वतीमहाकविमदनादय: सत्यविराधेपुमध्ये भट्टारक विनयचद्रादय: अर्हत्प्रवचन मोक्षमार्गे स्वयक्रतनिबधेन स्फुट प्रतिभाम सिद्धिशब्दोकचिद्द्रुसर्गप्रांतेषु यस्य तत् जिनागमनिर्यासभूत आराधनासारभूपालचतुर्विशतिस्तवनाद्यर्थ: प्रतिष्ठाचार्य सबधिनं वसुनदिसैद्धांत्याद्याचार्यविरचितानि स्पष्टीकृत्य पंचकल्याणा (का) दिविधानकथनात् शासनप्रभावना अभ्यर्चनम् ।

३७२. शास्त्र-सार-समुच्चय

Opening : श्री विबुधवंद्यजिनरंकेवलिचित्सुखदसिद्धपरमेपितगलम् ।
भावजजयसाधुगलं भविसिपोडवपटुपडवेनक्षमसुखमम् ॥ १ ॥

Closing : अनुपलब्ध ।
देखें—जि० र० को०, पृ० ३८३ ।

३७३. सिद्धान्तागमप्रशस्ति

Opening : सिद्धमणंतमणिंदिय मणुवममप्पुत्थ सोक्खमणवज्जं ।
केवल पहोह णिज्जियदुण्णय तिमिरं जिण णमह ।।१।।

Closing : सर्वज्ञ प्रतिपादितार्थ गणभृत्सूत्रानुटीकामिमां।
यभ्यस्यन्ति बहुश्रुताः श्रुतगुरु संपूज्य वीर प्रभु ।।
ते नित्योज्वल पद्मसेन परम श्री देवसेनार्चिता ।
भासन्ते रविचद्र भासिसुतपः श्री पाल सत्यकीर्तियः ।।३६।।

Colophon : These two Prashastees of Shri धवल सिद्धान्त and जयधवल सिद्धान्त are personally Copied from श्री सिद्धान्त शास्त्र at गुरुवस्ति in moodbidri for the sake of the Central Jain Oriental Library alias श्री सिद्धान्त भवन at Arrah, on the 30 th August 1912 at 10 30 am. to 12.30 am.

By the most humble
जिनवाणी सेवक
तात्या नेमिनाथ पांगल
बार्शी–टौन

३७४. सिद्धान्तसार

Opening : जीवगुणट्ठाणसण्णापज्जत्ती पाणमग्गणणवूणं ।।
सिद्धंतसारमिणमो भजामि सिद्धेणमूसित्ता ।। १ ।।

Closing : सिद्धन्तसारवरसुत्तगुत्ता साहंतु साहू मयमोहचत्ता ।
पूरंतु हीणं जिणणाहभत्ता वीरायचित्तासीवमग्ग जुत्ता ।। ।।

Colophono : सिद्धान्त सारसमाप्तः । श्रीवर्धमानाय नमः । कृपेन जिनेन्द्रदेवाचार्यनिन्दगता ।।

— संपूर्ण —

देखें—जि० र० को०, पृ० ४४० ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 709.
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 312

३७५. सिद्धान्तसार दीपक

Opening : श्रीमंतं त्रिजगन्नाथं सर्वज्ञसर्वदर्शिनम् ।
सर्वयोगीन्द्रवद्यां ह्रि वंदे विश्वार्थ दीपकम् ।। १ ।।

Closing : ग्रथेऽस्मिन् पंचचत्वारिंशच्छतश्लोकपिंडिता: ।
षोडशाग्र बुधैर्ज्ञेया सिद्धांतसार शालिनि ।। ११६ ।

Colobpon : इति श्री सिद्धांतसारदीपकमहाग्रंथसंपूर्णं समाप्तम् । अशुभ-संवत्सरे संवत् १८३० वर्षे मासोतममासे कृष्णपक्षे ।

देखें—जि० र० को., पृ. ४४० ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 702.
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 320.

३७६. सिद्धान्तसार दीपक

Opening : नहीं है ।
Closing : नहीं है ।

३७७. सिद्धिविनिश्चय टीका

Opening : अकलंक जिनभक्त्या गुरुदेवी सरस्वतीम् ।
नत्वा टीकां प्रवक्ष्यामि शुद्धा सिद्धि विनिश्चये ।।

Closing : यत् एव तस्मात् नैरात्म्यं सकलशून्यत्व बहिरन्तर्वा इत्येव प्रलयता इत्यादिना सम्बन्ध: स्याद्वादमन्तरेण तदप्रतिपत्ते: इतिभाव:।

Colophon : इति श्री रविभद्रपादोपजीवि अनन्तवीर्य विरचितायां सिद्धि-विनिश्चय टीकायां प्रत्यक्षसिद्धि: प्रथम: प्रस्ताव: ।

देखें—जि० र० को, कृ० ४४१ ।

३७८. श्लोकवार्तिक

Opening : श्री वर्द्धमानमाध्याय घाति संघातघातनम् ।
विद्यास्पदं प्रवक्ष्यामि तत्वार्थश्लोकवार्तिकम् ।।

Closing : अनुपलब्ध ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखें – जि. र. को., पृ. १५६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 698.

३७९. श्रावक प्रतिक्रमण

Opening : जीवे प्रमादजनिताः प्रचुराप्तदोषाः,
यस्मात्प्रतिक्रमणतः प्रलय प्रयान्ति ।
तस्मात्तदर्थममलं मुनिबोधनार्थम्,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ॥

Closing : अक्कर पयथ हीनं मत्ता हीनं च जमए भाणिय ।
त खु मउणाणदेवयमक्खभविदु खु खु वंदिनु ॥

Colophon : इति श्रावक प्रतिक्रमण सम्पूर्णम् ।

३८०. श्रावकाचार

Opening : प्रणम्य त्रिजगत्कीर्ति जिनेन्द्र गुणभूषणम् ।
संक्षेपेणैव संवक्ष्ये धर्म सागारगोचरम् ॥

Closing ; श्रीमद्वीरजिनेशपादकमले चेतः षडंघ्रि सदा,
हेयादेयविचारबोधनिपुणा बुद्धिश्च यस्यात्मनि ।
दानं श्रीकरकुड्मलेगुणततिर्देहोशिरस्युन्नती,
रत्नानां त्रितय हृदि स्थितमसौ नेमिश्चिरं नदतु ॥

Colophon : इति श्रीमद्गुण भूषणाचार्य विरचितेभव्यजनवल्लभाभिदान श्रावकाचारो साधुनेमिदेवनामाङ्किते सम्यक्त्वचारित्रवर्णनम् तृतीयोद्देशसमाप्तः । ग० रत्नेन लिखितम् । श्री संवत् १५२६ वर्षे चैत्र-सुदी ५ शनिदिने ।

जैनसिद्धान्त भवन, आरा में रोशनलाल लेखक द्वारा लिखी । शुभ सवत् १९९२ वर्षे आषाढ़ शुक्ला १५ मंगलवासरे ।

देखें – दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४२, ७७ ।
रा० सू० III, पृ० ३६ ।

३८१. श्रावकाचार

Opening : श्रीमज्जिनेन्द्रचन्द्रस्य सांद्रवाक्चन्द्रिकांगिनाम् ।।
हृषीकदुष्टकर्माष्टघर्मसंतापनभृभम् ।।१।।
दुराचारचयाक्रान्त दुःख संदोह हानये ।।
ब्रवीजियुपासकाचारं चारुमुक्ति सुखप्रदम् ।।२।।

Closing : जीवन्तं मृतकं मन्ये देहिनं धर्मवर्जितम् ।।
मतो धर्मेण संयुक्तो दीर्घजीवी भविष्यति ।।१०१।।
शरीरमंडनं शीलं स्वर्णखेत्दावहं तनोः ।।
रागोवक्तस्य ताम्बूलं सत्येनैवोज्वलं मुखम् ।।१०२।।

Colophon : इति श्री पूज्यपाद स्वामि विरचितं श्रावकाचारं समाप्तं ।। शुभंभवतु सं १६७६ भादो वदी ३ लिखितं पं० मूलचन्द्रेण जयपुरे ।
देखे—जि. र. को., पृ. ३९५ । (X)
Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 696.

३८२. श्रावकाचार

Opening : राजत केवलज्ञान जुत, परमौदारिक काय ।
निरखि छवि भवि छकत हैं, पीरस सहज सुभाय ।।

Closing : ऐसैं ताका वचन के अनुसारि देवगुरुधर्म का श्रद्धान करै । इति कुदेवादिक का वर्णन संपूर्ण ।

Colophon : इति श्री श्रावकाचार ग्रंथ समाप्त । श्रीरस्तु लेखकपाठकयोः लिपि कृतं पंडित शिवलाल नगर भालपुरा मध्ये मिति आषाढ़ वदी ३ भूमि (भौम) बासरे पूर्णीकृतं सम्वत् १८८८ का ।

३८३. श्रावकाचार

Opening : देखें—क्र० ३८२ ।

Closing : ... ... सर्वज्ञ वीतराग का वचन ताने तू अंगीकार कर और ताके अनुसार देव गुरु धर्म का सरूप अंगीकार कर श्रद्धान कर ।

Colophon : इति कुदेवादिक का वर्णन पूर्ण । इति श्री श्रावकाचार ग्रन्थ पूर्ण । संवत् १८५६ फाल्गुन शुक्ल अष्टमी ।

३८४. श्रुतस्कन्ध

Opening : वूहलियलालहरं माणुस जम्मस्स थाणियंदिन्नं ।
जीवा जेहिं णाणाया ना कुण नारकिया जेहिं ॥

Closing : जो पढइ सुणइ गाहा, अथं (अरथं) जाणेइ कुणइ सद्दहणं ।
आसण्णभव्वजीवो सो पावइ परम णिव्वाण ॥

इति ब्रह्महेमचन्द्र विरचित श्रुत स्कंध समाप्तम् । श्रीरस्तु । शुभमस्तु ।

देखे—जि० र० को०, पृ० ३९१ ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms, P. 697.

३८५. श्रुसागरी टीका

Opening : अथ श्रुतसागरी टीका तत्वार्थसूत्रस्यइ शास्त्रस्य प्रारम्यते ॥
सिद्धोमास्वामिपूज्य जिनवरवृषभ वीरमुत्तीरमानं
श्रीमत पूज्यपाद गुणनिधिमधियन्सत्प्रभाचन्द्रमिंदु ॥
श्री विद्यानदर्षीणंगनः समन्तं कार्यम नस्यरम्यम्
वक्ष्ये तत्त्वार्थवृत्ति निजविभवतगाहश्रुतादन्वताख्य ॥१॥

Closing : श्रीवर्द्धमानमकलकममतभद्र. श्रीपूज्यपादसदुमारनि
पूज्यपादम् ।
विद्या दिनदि गुणरत्नमुनीन्द्रमन्य भक्त्या नमामि
परित श्रुतसागरादयं ॥१॥

Colophon : इत्यनवद्यगद्यपद्यविद्याविनोदनोदितप्रमोदपीयूषरसपानपावन मतिसभासरल राज मतिसागर यतिराज राजितार्थनसमर्थेन तर्कव्याकरण छंदोलंकारसाहित्यादिशास्त्र निशितमतिना यतिनादवेन्द्र कीर्त्ति भट्टारक-प्रशिष्येण सकलविद्वज्जनविहितचरणसेवस्य श्री विद्यानंदिदेवस्य सघा-यितमिथ्यामत ? देण श्रुतसागरेण मुनिना विरचिताया। श्लोकवार्त्तिक राजवार्त्तिक सर्वार्थसिद्धि न्याय कुमुदचन्द्रोदय प्रमेयकमलमार्कण्ड प्रचण्डाप्रवंसहस्रीप्रमुख ग्रन्थ संदर्भ निर्भरावलोकनबुद्धिवि राजि I I तत्त्वार्थटीकायां दशमो ऽध्यायः ॥ इति तत्वार्थस्य श्रुतसागरी टीका समाप्ता चक्षुपतुकमिते वर्षे द्विनसे माशते माघेवदि पक्षे पचम्या संवत्सरे ॥१॥
सहारणपुरे मध्ये लिषितं मदबुद्धिना।
भव्यानां पठनार्थाय सीयारामकर शुभम् ॥२॥

देखे— जि० र० को०,पृ० १५६ (१५) ।

३८६. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : .... जानियै ।
मनवचनतनत्रय सुद्धकरिकै सदा तिनहि प्रनामियै ॥

Closing : संवत् अष्टादश शतक, फिर ऊपरि अड़तीस ।
सावन सुदि एकादशी, अर्धनिश पूरणकीन ॥

Colophon : इति श्री सुदृष्टि तरंगिणी नाममध्ये व्यालीसमी संधि संपूर्णम् । इति श्री सुदृष्टि तरंगिणी नाम ग्रन्थ सम्पूर्णम् ।
धर्मकरत संसारसुख, धर्मकरत निर्वान ।
धर्मपथ साधन बिना, नर तिर्यञ्च समान ॥
शुभं भवतु मंगलं दद्यात् । मिती ज्येष्ठ सुदी १० संवत् १६६१ ।

३८७. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : श्री अरहंतमहंत के, वंदो जुग पदसार ।
ग्रन्थ सुदृष्टितरंगनी, करो स्वपर हिदकार ॥

Closing : ऐसें समुद्घातनका शामान्य सरूप कह्या विशेष श्री गोम्मटसार जीतें जानना तहां ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

३८८. सुखबोध टीका

Opening : ''' न सम्यक्त्वपर्याय उत्पद्यते तदैव मत्यज्ञानश्रुताज्ञानाभावे मतिज्ञानं श्रुतज्ञानं चोत्पद्यत इति '' ।

Closing : .... संख्येयगुणा पुष्करद्वीपसिद्धाः संख्येयगुणाः एवं कालादिविभागेऽल्पबहुत्वमागमाद्बोद्धव्यम् ।

Colophon : अथप्रशस्ती । शुद्धोद्धतः प्रभाव पवित्रपादपद्मराज: किंजल्प-पुंजस्यमन: कोणैकदेशक्रोडीकृताखिलशास्त्रार्थांतरस्य पंडित श्री बंधु-देवस्यगुण प्रबन्धानुस्मरणजातानुग्रहेण प्रमाणनमनिर्णीताखिलपदार्थप्रपंचेन श्रीमद्भुजबलभीमभूपालमार्त्तउसभायामनेकधा लब्धतकंचक्रांकल्केनावलब-रादीनामात्मनश्चोपकारार्थेन पांडित्यमदविलासात्सुखबोधामिधां वृत्तिं कृतां महाभट्टारकेन कुभनगग्वाम्तव्येन पंडित श्री योगदेवेन प्रकटयंतु संशोध्य बुधायदत्तायुक्तमुक्तं किञ्चिन्मति विभ्रममभवादिति । प्रचंड पंडित-मडलीमौनदीक्षागुरोर्यो योगदेव विदुषः कृती सुखबोधनत्वार्थवृत्तौ दशमः पादः समाप्तः ।

जैन सिद्धान्त भवन आरा मे शुभमिति आषाढ शुक्ल ५ वृहस्पतिवार सं० १९९२ वी० स० २४६१ । ह० रोशनलाल जैन लेखक ।

देखें –जि० र० को०, पृ० १५६ (१३) ।

३८९. स्वस्वरूप स्वानुभव सूचक (सचित्र)

Opening : अथ अनादि अनन जिनेश्वरमुख गरम सुंदर बोध मयिपरं ।
परम मंगलदायक है सही, नमनत्तम कारण शुभ सही ।।

Colsing : ... ... बहुत क्या कहूं ज्ञान अज्ञान सूर्य प्रकाशवत् नय कहू बात है न होवेगा ।

Colophon : इति श्री क्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास रचित स्वरूपस्वानु-भव सूचक समाप्त । सं० १९४६ आ० सु० १० ।

विशेष—(आठो कर्मों की प्रकृतियो को आठ चित्रों द्वारा दिखाया गया है) ।

३९०. स्वरूप स्वानुभव सम्यक् ज्ञान

Opening : देखे – क्रम ३८९ ।

Closing : ... ... मेरे अर तेरे बीच मे कर्म है, सो न मेरे न तेरे कर्म कर्म ही मे निश्चय है ।

Colophon : नहीं है ।

विशेष—(१) क्र० ३८९ की ही प्रतिलिपि है ।
(२) मात्र नामकरण मे थोड़ा सा अन्तर है ।
(३) पेज न० २, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३ और १४ में बने हुए हैं ।

३६१. स्वरूप सम्बोधन

Opening : मुक्तामुक्तैकरूपो यः कर्मभिस्सविदादिना ।
अक्षयं परमात्मानं ज्ञानमूर्ति नमामि तम् ॥

Closing : इति स्वतत्वं परिभाव्यवाङ्मयं,
य एतदाख्याति शृणोति चादरात् ।
करोति तस्मै परमार्थसंपदम्,
स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति ॥२५॥
अकरो दार्हिनो ब्रह्मसूरि पंडित सद्विजः ।
स्वरूपबोधनाख्यस्य टीकां कर्णाटभाषया ॥

Colophon : नहीं है ।
देखें--जि० र० को०, पृ० ४५८ ।

३६२. तत्त्वरत्न प्रदीप

Opening : श्री निधिसमन्तभद्र नव ···· ? पूज्यपादनजितनज,
विद्यानंद नत्त्र मत्थान मनेमगीजे .मवयसारं वीरम् ॥

Closing : साक्षाद्राक्षाफलानां सुरमधुरनाधूरमास्तां निरस्ता मौधी-माधुर्यं गीति. परमतिमिदुरा कर्कशावर्करापि वीचां वीचिविचार-प्रचुरनररमा मारनिष्पन्विनीना येहाकृतप्रबंधप्रणयनसुहृदां श्रूयते धर्मकीर्ते ॥
श्री श्रुतमुनये नमः ।
तत्त्वसार ।

३६३. तत्त्वसार

Opening : झाणग्गिदड्ढकम्मे णिम्मलसुविसुद्धलद्धसब्भावे ।
णमिऊण परमसिद्धे सुतच्चसारं पवुच्छामि ॥१॥

Closing : सोऊण तच्चसारं रइयं मुणिणाहदेवसेणेण ।
जो सद्दिट्ठी भावइ सो पावइ सासयं सुक्खं ॥७४॥

Colophon : इति तत्त्वसार समाप्तम् ।
देखें—जि० र० को०, पृ० १५३ ।
Catg. of skt. & Pkt. Ms., peag. 648,

३६४. तत्वसार भाषा

Opening : आदि सुखी अतज सुखी, सिद्धसिद्ध भगवान।
निज प्रताप प्रलाप विन, जगदर्पण जग आन ॥

Closing : सत्रहसैं एकावने, पौष सुकल तिथि चार।
जो ईश्वर के गुन लखै, सो पावै भवपार ॥

Colophon : । नही है ।

३६५. तत्वसार वचनिका

Opening : प्रणमि श्री अर्हंत कूँ सिद्धनिकूँ शिरनाय।
आचार्य उवझाय मुनि पूजूं मनवचकाय ॥

Closing : - - - पन्नालाल जु चौधरी विरचि जो कारक दुलीचंदजी।

Colophon : इति ग्रन्थ वचनिका बनने का संबंध समाप्तम्। संवत् १९३८ का महावदि १२ सोमवार।

३६६. तत्वानुशासन

Opening : सिद्धस्वार्थान शेषार्थ स्वरूपस्योपदेशकान।
परापरगुरून्नत्वा वक्ष्ये तत्वानुशासनम् ॥

Closing : तेन प्रसिद्धविषणेन गुरूपदेश,
मासाद्य सिद्धिसुखसंपदुपाय भूतम्।
तत्वानुशासनमिद जगते हिताय,
श्री रामसेन विदुषाव्यरचि स्फुटोऽर्थम् ॥

Colophon : इद पुस्तक परिधावि संवत्सरे उत्तरायणे अधिक आषाढ़मासे कृष्णपक्षे एकादश्यायां सौम्यवासरे द्वाविंश घटिकायां दिवा च वेणू-पुरस्त पन्नेचारीरित्तल विद्वत् वामनशर्मणा पंचम पुत्र भगदीति केशव शर्मणेन लिखित समाप्तमित्यर्थ: श्री जिनेश्वराय नमः।

देखें,--जि० र० को०, पृ० १५३।

३९७. तत्वार्थसार

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतारं भेतारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ॥

Closing : वर्णाः पदानां कर्त्तारो वाक्यानां तु पदावलिः ।
वाक्यानि चास्य शास्त्रस्य कर्तृणि न पुनर्वयम् ।।

Colophon : इति श्री अमृतसूरीणांकृतिः तत्वार्थसारोनाम मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।

देखें--(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ७६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १५३ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १५० ।
(४) आ० सू०, पृ० ६६ ।
(५) रा० सू० II, पृ० १३३ ।
(६) रा० सू० III, पृ० १७६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 648.

३९८. तत्वार्थसार

Opening : देखें, क्र० ३९७ ।
Closing : देखे, क्र० ३९७ ।
Colophon : इति श्री अमृतचंद्रसूरीणां कृतिस्तत्वार्थसारोंनाममोक्षशात्र-समाप्तम् । लिपिकृतम् बालमोकुन्दलाल अग्रवाला आरानग्र । श्रीरस्तु।

१९९. तत्वार्थसार

Opening : देखें, क्र० ३९७ ।
Closing : देखें, क्र० ३९७ ।
Colophon : इति अमृतचंद्र सूरीणां कृतिः तत्वार्थसारो नाम मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।

श्री काष्टासंघे श्री रामकीर्तिदेवामुन्कन्दकीर्त्ति । ग्रंथश्लोक सख्या ७२४ । संवत् १५५३ वैशाख सुदी सोमे श्री काष्ठासघे मापुर-गच्छे पुष्करगणे आर्गलपुरमध्ये लिखाप्तं ताड़ ? कीर्तिदेवा. ।

४००. तत्वार्थसूत्र (श्रुतसागरी टीका)

Opening : देखें, क्र० ३८५ ।
Coing : देखें, क्र० ३८५ ।

Colophon : इत्यनवद्यगद्यपद्यविद्याविनोदेनोदितप्रमोदपीयूषरसपानपावन-मतिसभाजरत्नराराजमतिसागर यतिराजराजितार्थनसमर्थेन तर्कव्याकरण छंदोलंकारसाहित्यादि शास्त्रनिशितमतिना यतिना श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति भट्टारकप्रशिष्येण चशिष्येण सकलविद्वज्जन विरचितचिरसो सेवस्य श्री विद्यानंदिदेवस्य मच्छदित मिथ्यामतदुर्गरेण श्रुतसागरेण सूरिणा विरचितायां श्लोकवार्तिक राजवार्तिकसर्वार्थसिद्धिन्यायकुमुदचन्द्रोदय प्रमेय-कमलमार्तण्ड प्रचडाष्टसहस्त्री प्रमुखग्रंथ संदर्भनिर्भरावलोकनबुद्धिविराजितायां तत्वार्थटीकायां दशमोध्यायः समाप्तः। इति तत्वार्थस्य श्रुतसागरी टीका समाप्ता। सवत् १७७० माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ सप्तम्या रविवासरे पाटलिपुरे लिखितम् अमीसागरेण आत्मार्थे। श्री। श्री।

देखें - दि. जि. ग्र. र., पृ ८५।
जि. र. को., पृ. १५६ (१५)।
आ० सू० पृ० ६७।
रा० सू० III, पृ. १३।
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० १८१।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P 649.

८०१. तत्वार्थसूत्र

८०१

Opening : सम्यग्दर्शन ज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः।

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं शुक्ल पक्षोपलक्षितम्।
वदे गणेन्द्र सजातमुमास्वामि मुनीश्वरम्॥

Colophon : इति दसध्याय सूत्र सम्पूर्णम् लिखितं पंडित कस्तुरी चंद तारलोलमध्ये पठनार्थम् लाला सोदयाल का बेटा मनुलाल के वास्ते सवत् १९४६ का मिति आसोज सुदी पूर्णमासी के दिन समाप्तम्……

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ८१।
(२) जि० र० को०, पृ० १५४ (२)।
(३) प्र० जै० सा०, पृ १५१।
(४) रा. सू. II, पृ. २८, ८३।
(५) रा. सू. III, पृ. ११, १२।
(6) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 70

४०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opneing : त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्या ॥
पंचान्यचास्तिकाया व्रत समिति गति ज्ञानचरित्रभेदा: ॥
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः ॥
प्रत्येतिश्रद्दधाति स्पृशति च मतिमानय सवैशुद्धदृष्टि ॥१॥

Closing : णवमे संवर निजर। दसमे मोक्ख वियाणेहि।
इयसत्त तच्च भणिम। दहसूत्रे मुणिदेहि ॥७॥

Colophon : इति श्री उमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्र समाप्तं। लिखित पंडित किसनचद सवाई जयपुर का वासी ॥ धर्ममूर्ति धर्मात्मा कवरजी श्री दिलसुखजी पठनार्थं ॥

४०३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : .... ससारिणस्त्रसस्थावरा:।

Closing : देखें--क्र० ४०१।

Colophon : इति उमास्वामीकृत तत्त्वार्थसूत्रं समाप्तम्।

४०४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं ... ... शुद्धदृष्टि: ॥

Closing : तवयरणं .... निवारई ॥

Colophon : इति श्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशाध्यायसूत्र जी समाप्तम्।

४०५. तत्त्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४०२।

Closing : .... आनयन, प्रेष्यप्रयोग, पुद्गलक्षेप ... ...।

Colophon : अनुपलब्ध।

४०६. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें—क्रम ४०४ ।

Closing : देखें—क्र० ४०४ ।

Colophon : इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम् ।
श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ १ (एक) चन्द्रवासरे संवत् १६५५ श्री ।

४०७. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं ... ... शुद्धदृष्टिः ॥

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं ... ... मुनीश्वरम् ॥

Colophon : इति उमास्वामीकृत तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

४०८. तत्वार्थसूत्र (मूल)

Opening : त्रैकाल्यंद्रव्यषट्कं ... शुद्धदृष्टि ॥

Closing : तत्वार्थसूत्र ... ... उमास्वामिमुनीश्वरम् ॥

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्यायः संवत् १६ ८ चैत्रकृष्णपक्षे नवम्यां बुद्धवारे ।

४०९. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्य द्रव्यषट्क ... शुद्धदृष्टिः ॥

Closing : पहिले अनुके जीवपंचमे जाणि पुग्गलत च ।
छहमसतमेत्रआश्रव अष्टमे जानि वध ॥
नवमे संवरनिर्जरा, दशमे ज्ञानकेवलं मोक्ष ॥

Colophon : इति तत्वार्थसूत्रम् ।
पुरन सुतर जी ।

४१०. तत्वार्थसूत्र

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ।

Closing : भयो सिद्धकारज यह मंगल करता सोई।
इहकथा बंधराधर्मजिन परभव मिलियो मोह ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

४११. तत्वार्थसूत्र टिप्पण

Opening : देखें—क्र० ४१०।

Closing : संवत् उगणीसैदशशुद्ध।
फाल्गुण वदि दशमी तिथि वुद्ध॥
लिख्यो सूत्र टिप्पण गुणथान।
नमैं सदा सुख निति धरिध्यान॥

Colophon : इति श्री तत्वार्थ सूत्र का देशभाषामय टिप्पण समाप्तम्। संवत् १९१० मिति फाल्गुण कृष्ण १४ दीत वार समाप्तम्।

४१२. तत्त्वार्थवृत्ति

Opening : जयन्ति कुमतध्वांतपाटने पटुभास्वरा:।
विद्यानंदास्सतां मान्या: पूज्यपादा: जिनेश्वरा:॥

Closing : तस्यास्सुविशुद्धदृष्टिविभव: सिद्धान्त पारंगत:,
शिष्य: श्रीजिनचन्द्रनामकलित: चारित्रभूषान्वित:।
वाशिष्टैरविनदिनामविबुधस्तस्याभवत्तत्वविद्,
तेनाकारिसुखादिबोधविषया. तत्वार्थवृत्ति: स्फुटम्॥

Colophon : परमत महासैद्धान्तिजिनचन्द्रभट्टारकस्ताच्छिष्य पंडित श्रीभास्करनंदिविरचितमहाशास्त्रतत्वार्थवृत्तौ सुखबोधायां दशमोऽध्याय: समाप्त:।

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदयशालिवाहनशकाब्दा: १७५० ने सर्वधारिसंवत्सरद्कार्तिकसुद्ध १४ गुरुवारदिन तत्त्वार्थसूत्रक्के सुखबोधयं व वृतियन्नु तगडूरु सिद्धान्तिब्रह्मसूरि ज्येष्ठपुत्रनादंता, चंद्रोपाध्यसिद्धातियुवरे दुडु संपूर्णवादुदु। जयमंगलं। शोभनमस्तु॥

देखें—जि० र० को, पृ० १५६।

४१३. तत्वार्थबोध

Opening : निरमग दाइकभान, कर्मतिमिर गिरके हरनै।
सर्वतत्वमय ग्यान, वदू जिणगुण हेतकूं ॥

Closing : संवत्ठारासै विषै, अधिक गुन्यासी देस।
कातिकसुद सासिपचमी, पूरनग्रथ असेस ॥
मगल श्री अरिहत, सिधमगलदायक सदा।
मगलसाधमहत, मगल जिनवर धर्मवर ॥

Colophon : इति श्री तत्वार्थबोध ग्रंथ सपूर्णम्। इति शुभ मिति आषाढ़ सुदी १२ संवत् १६८२।
जैसी प्रत पाई हती, तैसी दई उतार।
भूलचूक जो होय सो, बुधजन लियौ सुधार ॥
हस्ताक्षर प० चौबे लक्ष्मीनारायण के।

४१४. तत्वार्थसूत्र टीका

Opening : देखें०—क्र०, ४१०।

Closing : इह भांति करि घणांही भेदास्यौ सिद्ध हुआ सो सिद्धान्त से समझि लीज्यौ।

Colophon : इति श्री तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय: ।१०। श्री उमास्वामी विरचित सूत्र बालाबोध टीका पांडे जैवतकृत सपूर्ण:। सवत् १६०४ वैशाख शुक्ल १२ लिपि कृतं इदम्।

४१५. तत्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४१०।

Closing : ऐसैं ही कालादिक का विभागतैं अल्पबहुत्व जानना। ऐसैं द्वादश अनुयोगनि करि सिद्धनि मैं भेद है और स्वरूप भेद नहीं है।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय: ॥१०॥
देखें—क्र० ४११।

इति श्री तत्त्वार्थसूत्र का देशभाषामय टिप्पण समाप्त । लिखतं दौलतराम बड़ारावसामती मध्ये गुरु बकस के बेटा ने। संवत् १६२५ शुक्ल ६ गुरुवासरे सम्पूर्ण । शुभमस्तु ।

४१६. तत्त्वार्थसूत्र टीका

Opening : शुद्धतत्त्व की अर्थ में, लह्यो सार जिनराय ।
तिनपद नमों त्रियोगिकरि, होहु इष्ट सुखदाय ।।

Closing : आदि अंत मंगल करत, होत काज हितकार ।
तातैं मंगलमय नमौं, पंच परम गुरु सार ।।

Colophon : इति तत्त्वार्थसूत्र दशाध्याय की तत्त्वार्थसार नामा भाषा टीका समाप्ता। संवत् १९७० शक: १८३५ चैत्र शुक्ला ५ भृगुवासरे लिपिकृतम् प० सीताराम शास्त्री निजक ण संशोधिता: ।

४१७. तत्त्वार्थाधिगम सूत्र

Opening : पूज्यपादं जगद्वंद्यं नत्वोमास्वामीभाषितम् ।
क्रियते बालबोधाय मोक्षशास्त्रस्य टिप्पणीम् ।।

Closing : रत्नप्रभाकरा सर्वार्थसिद्धिराजवार्तिका: ।
श्रुताभोधिकृतयाश्चश्लोकवर्तिकसंज्ञिका ।।
ताश्च विशेषज्ञानाय ज्ञेया विस्तारमंजसा ।
अल्पज्ञानाय सर्वेषां रचिता बोधचंद्रिका ।।

Colophon : इति तत्त्वार्थ सिद्धान्त सूत्रस्य टीकासमाप्तेयम् । श्रीरस्तु । सम्वत् १६१६ मिती फाल्गुन शुक्लदशम्यां स्वहस्तेन लिपिकृतम् इन्द्रप्रस्थे पं० शिवचन्द्रेण ।

४१८. तत्त्वार्थ वार्तिक

Opening : अनुपलब्ध ।

Closing : इति तत्त्वार्थसूत्राणां भाष्यं भाषितमुत्तमै: ।
यत्रसंनिहितस्तर्कन्यायागम विनिर्णय: ।।

Colophon : इति तत्त्वार्थवार्तिकव्याख्यानालंकारे दशमोध्यायः समाप्तः ॥
जीयाज्जगति जिनेश्वरनिगदितधर्मप्रकाशकः सूरिः
अभयेंदुरितिख्यातः परवादिपितामहः सततम् ॥
वंदे बालेंदु मुनितममदबुधाग्रणि गुणैर्निनिधिम्
यस्य वचस्तोऽशस्त स्वांतध्वंतं दुरस्तमपि नश्येत् ॥

श्रीपंचगुरुभ्यो नमः मंगलमहा । शके २२६२ वर्तमान परिधावी सवत्सरे भाद्रपदशुक्लएकादश्यां भानुवासरे समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥ दक्षिणकर्नाटदेशे उडुपी कार्ककप्रांत्यदुर्गग्रामनिवासस्थरामकृष्णशास्त्रिणः पुत्रो रंगनाथ भट्टेन लिखित पुस्तकम् ॥

शुभ मंगलानि भवतु ॥

देखें—जि० र० को०, पृ० १५६ ।

४१६. त्रैकालिकद्रव्य

इस ग्रंथ में मात्र "त्रैकाल्य द्रव्यषट्कं ············ इत्यादि" अर्थ सहित लिखा गया है ।
अन्त में एक भजन भी है ।

४२०. त्रैलोक्य प्रज्ञप्ति

Opening : अष्टविहकम्मवियला णिट्ठिय कज्जा पणट्ठ संसारा ।
दिट्ठसयलत्थसारा सिद्धासिद्धि मम दिसंतु ॥१॥

Closing : सूरि श्री जिनचन्द्राङ्घ्रि स्मरणाधीन चेतसा ।
प्रशस्तिर्विहिता चासौ मेधाव्येन सुधीमता ॥१२३॥
यत्रयत्काप्यवद्यं स्यादर्थे ············ पाठ यथाक्रम ।
तदाशोध्यं बुधैर्वाच्यमनंतः शब्दवारिधिः ॥१२४॥

Colophon : इति सूरि श्रीजिनचन्द्रान्तेवासिना पंडित मेधाविना विरचिता प्रशस्ता प्रशस्ति समाप्ता ॥ श्री सिंहपुरी जैनतीर्थ समीप सथवा ग्राम निवासी कायस्थ बद्रुकप्रसाद ने श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा में लिखा ॥ सं० १९८८ विक्रम ॥

४२१. त्रैलोक्य प्रज्ञप्ति

Opening : देखें— क्र० ४२० ।

Closing : देखें,—क्र० ४२० ।

Colopnon : देखें—क्र० ४२० ।

४२२. त्रिभङ्गी

Opening : श्री पंचगुरुभ्यो नम: ॥
पणमियसुरिन्दद पूजियपयकमल वड्ढमाणममलगुणं ।
पच्चयपत्तावण्णं वोच्छेह सुणह भवियजणा ॥१॥

Closing : अह चक्केण य चक्की छक्खड साहये अविग्घेण ।
तहमइ चक्केण मया छक्खड सद्दियं संमं ॥

Colophon : इति श्री कनकनंदि सैद्धांतिकचक्रवर्तिकृत विस्तरसत्वत्रिभंगी समाप्ता ॥

४२३. त्रिभंगीसार टीका

Opening : सर्वज्ञं करुणार्णवं त्रिभुवनं श्रीमाच्चर्यपाद विभुम्,
यं जीवादिपदार्थसार्थकलने लब्धप्रशमं सदा ।
त नत्वाखिलमंगलास्पदमहं श्रीनेमिचन्द्रं जिनं,
वक्ष्ये भव्यजनप्रबोधजनक टीका सुबोधाभिधाम् ॥

Closing : श्री मर्त्यां हि युगे जिनस्य नितरां लीन: शिवासाधरः,
सोमः सद्गुणभाजन सविनयः सत्पात्रदाने रत: ।
सद्रत्नत्रययुक् सदा वृष मनोल्हादीचिरं भूतले,
नंद्याच्चेन विवेकिना विरचिता टीका सुबोधाभिधा ॥

Colophon : इति त्रिभंगीसार टीका समाप्ता । सवत् १६१५ । विक्रमादित्यगताब्दबाणैकरद्धाचंद्रं वर्षे ज्येष्ठवदि तृतीयायां ३ सुरगुरुवासरे पूज्य श्री अर्यानीऋषिशिष्य. दुर्गू नाम्नेति ऋषिलिख्यतं आत्मावबोधनार्थं जलमार्गसंज्ञाभिधानेन नगरे लिख्यतमिदं पुस्तकम् ।

यहप्रतिलिपि श्रावणकृष्णा १३ गुरुवार वि० स० १९९४ को लिखी गई । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १६२।
दि. जि. ग्र. र., पृ. ८७।
जै. ग्र. प्र. सं. १, पृ. २८, प्रस्तावना, पृ. २६।

४२४. त्रिलोकसार

Opening : वलगोविंदसिहामणि किरणकलावरुणचरणमाहकिरणं।
विमलयरमणेमिचंदं तिहुवणचंद णमसामि ॥

Closing : अरहंतासिद्धआयरिय उवज्झायासाहु पंचपरमेट्ठी।
इयपंचणमोयारो भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥१०१०॥

Colophon : इति श्री त्रिलोकसारजी श्रीनेमिचंद आचार्यकृत मूलगाथा सपूर्णम्। शुभ मस्तु ॥

देखे -जि० र० को०, पृ० १६२।
Catg. of Skt.& pkt Ms, P. 162.
Catg. of Skt. Ms, P. 320.

४२५. त्रिलोकसार

Opening : देखें क्र० ४२४।

Closing : ... महाध्वज प्रशयारस्वारध्वज १०८।
महाध्वज द १०८०। ल दि १ ... ११६६२०।

४२६. त्रिलोकसार भाषा

Opening : ... समान ही सिन्धु नदी है सो सर्व वर्णन सिंधु विषै भी तैसे ही जानना।

Closing : तातैं परमवीतराग भावरूप शुद्धात्म स्वरूप जनित परम आनद की प्राप्ति करहु।

Colophon : इति श्री त्रिलोकसार जी श्री नेमिचंद्र आचार्यकृत मूलगाथा ताकी टीका संस्कृत कर्त्ता आचार्यमाधवचंद्र ताकी भाषा टीका टोडरमल जी कृत संपूर्ण।

४२७. त्रिलोकसार

Opening : त्रिभुवनसार अपारगुन, ज्ञायक नायक संत ।
त्रिभुवन हितकारी नमों, श्री अरहंत महंत ।।

Closing : अर्थको जानता संता रागादिक त्यागि मोक्षपद कों पावै है । अब संस्कृत टीका अनुसार लिए मूलशास्त्र का अर्थ लिखिए है ।

Colophon : इति श्री त्रिलोकसार का टीका का पीठबंध सम्पूर्णम् ।
विशेष—अन्त मे पीठबंध सम्पूर्ण ऐसा लिखा है, लेकिन ग्रंथ की भाषा टीका लिखी जा चुकी है ।

४२८. त्रिलोकसार

Opening : मंगलमय मंगलकरन बीतराग विज्ञान ।
नमो ताहि जाते भये अरिहंतादि महान ।।

Closing : इति श्री अरिष्ट नेम पुराण ···· ··· ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

४२९. त्रिलोकसार भाषा

Opening : देखे—क० ४२७ ।

Closing : अब संस्कृत टीका अनुसार लिए मूलशास्त्र का अर्थ लिखिए है ।

Colophon : इति श्री त्रिलोकसारभाषाटीका का पीठबंध सम्पूर्ण । संवत् १८६६ वर्षे मिती सावन वदी दो लिखतं भूपतिराम तिवारी, लिखी मोहोकमगंज मध्ये ।

४३०. त्रिवर्णाचार (५ पर्व)

Opening : अथोच्यते त्रिवर्णानां शौचाचारविधिक्रमः ।
शौचाचारविधिप्राप्तौ देहं संस्कर्तुमर्हसि ।।१।।
संस्कृतो देह एवासौ दीक्षणाद्यभिसम्मतः ।
विशिष्टान्वयजोऽप्यस्मै नेष्यतेऽयमसंस्कृतः ।।२।।

Closing : तत्रोपनयादारभ्य समावर्तनपर्यन्तमुपनयनब्रह्मचारी । स्त्री-सेवां कुर्वाणो जुगुप्सया गुरुसमक्षे तन्निवृत्तः आलम्बनब्रह्मचाचारी । विवाहपूर्वकं त्रिभुवनपरिग्रहारम्भाद् क्रियाप्रवृत्तो गृहस्थः । परिग्रहानु-

मत्युद्विष्टनिवृत्ता वाणप्रस्था: । वैराग्यशीक्षितो महाव्रती भिक्षु: । इत्याश्रमलक्षणम् ।

Colophon : इति ब्रह्मसूरि विरचिते जिनसंहितासारोद्धारे प्रतिष्ठातिलकनाम्नि त्रैवर्णिकाचारग्रंथे (संग्रहे) गर्भाधानादिविवाह-पर्यन्तकर्मणां मन्त्रप्रयोगो नाम पञ्चम पर्व समाप्तम् । फाल्गुनशुद्ध द्वितीयाया तिथौ समाप्त: ॥

देखें— जि० र० को०, पृ० १६३ ।

४३१. त्रिवर्णाचार (५ पर्व)

Opening : देखें, क्र० ४३० ।

Closing : देखे, क्र० ४३० ।

Colophon : इति श्री ब्रह्मसूरिविरचिते जिनसंहितासारोद्धारे प्रतिष्ठाति-लकनाम्नि त्रैवर्णिकाचारसंग्रहे गर्भाधानादि विवाहपर्यन्तकर्म्मणां मन्त्र-प्रयोगो नाम पञ्चमं पर्व्व । नम: सिद्धेभ्य: । श्री चंद्रप्रभजिनाय नम ॥

४३२. त्रिवर्णाचार (१३ अध्याय)

Opening : श्री चंद्रप्रभदेवदेवचरणौ नत्वा सदा पावनौ,
संसारार्णवतारकौ शिवकरौ धर्मार्थकामप्रदौ ।
वर्णाचार विकाशकं वसुकरं वक्ष्ये सुशास्त्रं परम्,
यच्छुत्वा सुचरंति भव्यमनुजा. स्वर्गादिसौख्यार्थिन: ॥

Closing : श्लोकानां यत्र संख्यास्ति शतानिसप्तत्रिंशत्ति: ।
तद्धर्मरसिकं शास्त्रं वक्तु श्रोतृ: सुखप्रदम् ॥

Colophon : इति श्री धर्मास्तिकशास्त्रे त्रिवर्णाचारप्ररूपणे भट्टारक श्रीसोम-सेनविरचिते सूतकशुद्धिकथनीयो नाम त्रयोदशमोध्याय: ॥ इति त्रिवर्णा-चार: समाप्त: ॥ संवत् १७५६ वर्षे फाल्गुन सित पक्षे त्रयोदशी गुरु-वासरे इयं संपूर्णा जाता । अहमदाबादमध्ये इदं पुस्तकं लिखितमस्ति । शुभं भूयात् । श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती ग ···· कुन्दकुन्दान्वये श्रीभट्टारक विश्वभूषण जी देवास्तत्पट्टे श्रीभट्टारक जिनेन्द्रभूषणजी देवास्तत्पट्टे श्रीभट्टारक महेन्द्रभूषण जी देवा तेनेदं देवेन्द्रकीर्ते: दत्तम् ।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ८८ ।
जि०र० को०, पृ० १६३, I ।

प्र० जै० सा०, पृ० २५६ ।
रा० सू० II, पृ० ७, १५५ ।
रा० सू० III, पृ० १८४ ।
जै० प्र० प्र० सं० १ प्रस्तावना पृ. २६ ।
Catg. of skt & pkt. Ms., P. 651.

४३३. त्रिवर्णाचार

Opening : तज्जयति परं ज्योतिः समं समस्तैरनंतपर्यायैः ।
दर्पणतल इव सकला प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र ॥
(पद्य पुरुषार्थ सिद्धयुपाय का है ।)

Closing : धर्मार्थकामाय कृतं सुशास्त्रं, श्री जैनसेनेन शिवार्थिनापि ।
गृहस्थधर्मेषु सदारता ये कुर्वन्तु तेऽभ्यासमहोजनास्ते ॥

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविन्दविनिर्गते श्री गौतमर्षि पादपद्माराधकेन श्री जिनसेनाचार्येण विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययनसारोद्धारे सूतकशुद्धि कथनीय नाम अष्टादश पर्व. ॥१८॥ इति त्रिवर्णाचार समाप्तम् । सवत् १६७० । मिती पौष वदी ५ बुधवासरे लिखितमिदं पुस्तकं गुलजारीलाल शर्म्मणा । भिण्डाग्रनगरवासोस्ति । रिग्वालियर ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १६३ ।
Catg. of skt. & Pkt. Ms., p. 651.

४३४. त्रिवर्णाचार

Opening : देखें—क्र० ४३३ ।

Closing : देखें—क्र० ४३३ ।

Colophon : देखें—क्र० ४३३ ।

मिति श्रावण कृष्ण ११ संवत् १६१६ । सुभं भूयात् ।]

४३५. त्रिवर्णाचार

Opening : देखें—क्र० ४३३ ।

Closing : देखें—क्र० ४३३ ।

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविन्दविनिर्गते श्री गौतमर्षि-पदा

पद्माराधकेन श्री जिनसेनाचार्येण विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययन-सारोद्धारे सूतकशुद्धि कथनीय नाम अष्टादश पर्व ॥१८॥ संवत् १९१९ ···· ··· वार मगलवारे लि. कोठारी मोहनलाल मुंगरशी ॥ रहैबाशी बडवाण शे हेरना ॥ श्लोक संख्या ८५२५ ॥

४३६. त्रिवर्णाचार वचनिका

Opening : देखे - क्र० ४३२ ।

Closing : जयवतो यह शास्त्र शुभ भूमंडल में नित्त ।
मंगलकर्ता हूजियो सुखकर्ता भविचित्त ॥

Colophon : इति त्रिवर्णाचार ग्रन्थ की वचनिका समाप्तम् । ज्येष्ठ शुक्ला १५ शनिवासरे संवत् १९५६ ।

४३७. त्रिवर्णा शौचाचार (७ परिच्छेद)

Opening : देखे क्र ४३० ।

Closing : आर्षं यद्यच्च तेषामुदितखनघानूननापुण्यभाजः ।
सेनत्रैवर्णिकाद्याचरणविधिमहाकण्ठिका कण्ठमेति ॥

Colophon : इत्यार्षसंग्रहे त्रैवर्णिकाचारे नित्यनैमित्तिकक्रमो नाम सप्तम परिच्छेदः ॥ श्रीमदादिनाथाय नमः ॥ श्रीमद्विदयागुरु श्री मदनन्तमुनये नमः ॥पुस्तकमिद श्री वेणुपुरस्थगीर्वाणपाठशालाध्यापकनेमिराजस्याज्ञानुसारेण सक्रमणात्मजेन पद्मराजनाम्ना मया प्रणीतमस्ति मंगलमस्तु चिर भूयात् । करकृतमपराध क्षन्तुमर्हन्ति सन्तः इति विरम्यते ।

श्रीरस्तु ।

४३८. उपदेश रत्नमाला

Opening : तिहुवण परमेसरेहइवमीसरे अनंतचतुष्टय सहियो ।
वंदमि श्रुतसारणे कनुपसारणे सुरनरेन्द्र अहिमहियो ॥

Closing : मौ अवियाणिधरौ अणलगत्त अथहुछंद हीणयं ।
संवारहु सुबुधिपंडित जनतुमतौ जगि पमाणयं ॥

Colophon : इति श्री महापुराणसम्बन्धिनिकलिका समाप्ता । शुभमिति फाल्गुन शुक्ला २ बृहस्पतिवार वीर सं० २४६० वि० सं. १९९० ।

४३६. उपदेश रत्नमाला (१८ परिच्छेद)

Opening : वंदे श्री वृषभं देवं, दिव्यलक्षणलक्षितम् ।
प्रीणितं प्राणिसद्वर्गं, युगादिपुरुषोत्तमम् ।।१।।
अजितं जितकर्मारिं, संतानं शीलसागरम् ।
भवभूधरभेत्तारं, शंभवं च भवे सदा ।।२।।

Closing : सहस्त्रत्रितयं चँदो परि असीत संयुतम् ।
अनुष्टप् छंद सा चास्य, प्रमाणं निश्चितं बुधैः ।।

Colophon : इति भट्टारक श्री शुभचंद्र शिष्याचार्य श्री सकलभूषण विरचितायामुपदेशरत्नमालायां पुण्यषट्कर्मप्रकाशिकायां तपोदानमाहात्म्यवर्णनो नामाष्टदशः परिच्छेदः ।१८। समाप्तः । श्री साहिजहनावादे पृथ्वीपति मुहम्मद साह शुभराज्ये संवत् वेदनभगजशशि वैशाख शुक्ल सप्तम्या ।
सकलगुणधारिणो भव्यजीवतारणो,
परोपकारिणो गुरुगुण अनुचारिणो ।।
श्री भट्टारकपदधार देवेन्द्रकीर्ति विस्तारं
तत्पट्टे सुखकारं श्री जगकीर्तिबहुश्रुतं धारम् ।।
एषा प्रति प्रमुदितया लिखापिता शिष्यपरपराचार्थे
मेरु शशि भानु यावत् तावदियं विस्तरतां यान्तु ।। (१११४)

देखें—दि. जि. ग्र. र., पृ. ८६ ।
जि. र. को., पृ. ५१ (VI)।
रा. सू. II, पृ. १४६ ।
रा. सू. III, पृ. २३ ।
आ० सू० पृ० १६ ।
जै० प्र० प्र० सं० १, पृ० १६ ।
प्र० सं० (कस्तूरचन्द), पृ० २–४
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ. २४ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 628.
Catg. of Skt Ms., P. 312.

४४०. उपदेश रत्नमाला

Opening : देखें—क्र० ४३६ ।

Closing : देखें—क्र० ४३६ ।

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री शुभचन्द्र शिष्याचार्य्य श्री सकलभूषण विरचितायमुपदेशरत्नमालायां पुण्यषटकर्म्मप्रकाशिकायां तपोदान माहात्म्यवर्णनोनामष्टादश: परिच्छेद: ।।१८।। मितीफागुनसुदी ।।३।। भृगुवासरे ।। सम्वत् ।।१९७०।। लिखितमिदं पुस्तकं मिश्रोपनामक गुलजारीलालशर्म्मणा भिंडाग्रनगरवासोस्ति ।। इस ग्रन्थ की श्लोक संख्या ।।३६००।। प्रमाणम् ।।

४४१. वैराग्यसार सटीक

Opening : इक्कहि घरेवधामणा अण्णहि घरि धाहहि रोविज्जइ ।
परमत्थई सुप्पउ भणई किमवइ सयभाउण किज्जइ ।।

Closing : .... अमी जीव. चतुर्गतिषु अमतदु:खानि भुंजति । कदाचित् सुख न प्राप्नोति ।

Colophon : इति सुप्रभाचार्यकृत वैराग्यसार प्राकृत दोहाबंध सटीक सपूर्ण । सवत् १८२७ वर्षे मिति पौष वदि ३ बुधवारे यमवानगरमध्ये श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये पंडित जी श्री परमराम जी तत्शिष्य प० अणतराम जी तत्शिष्य श्रीचंद्र स्ववाचनार्थं वा उपदेशार्थं लिपिकृत । लखकपाठकयो: शुभमस्तु । श्रीजिनराजसहाय । तत्लिपे. संवत् १९८९ विक्रमाये मासोत्तमेमासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्या गुरुवासरे आरानगरे स्व० देवकुमारेण स्थापित श्री जैनसिद्धान्तभवने श्री के० भुजबलीशास्त्रिण: अध्यक्षतायां इद प्रतिलिपि पूर्तिमभवत् । इति शुभ भूयात् ।

देखें—जि० र० को, पृ० ३६६ ।

४४२. वसुनन्दि श्रावकाचार वचनिका

Opening : वंदूं मैं अरिहंतपद, नमूं सिद्ध शिवराय ।
सूरि सु पाठक साधुके, चरण नमूं सुखदाय ।।१।।
वंदूं श्री जिनवैन कूं, वदूं श्री जिनधर्म ।
जिनप्रतिमा जिनभवन कूं नमूं हरण वसुकर्म ।।२।।

Closing : ऋषि पूरण नव एक फुनि, माधव फुनि शुभ स्वैत ।
जया प्रथमकुजवार मम, मंगल होऊ निकेत ।।

Colophon : इति श्री वसुनन्दि सिद्धान्ती चक्रवर्ति विरचित श्रावकाचार की वचनिका संपूर्णम् ।

बेदषष्ठाब्द चन्द्रेब्दे वैशाखे पूर्तिगे सिते ।
सीतारामाभिधेयेन लिखितं शोधितं मया ॥

भग्न पृष्टिकटिग्रीवा ऊर्ध्वदृष्टि अधोमुखम् ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिकल्पयेत् ॥

४४३. वसुनन्दि श्रावकाचार

Opening : देखें—क्र० ४४२ ।

Closing : देखें—क्र० ४४२ ।

Colophon : इति श्री वसुनन्दि सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित श्रावकाचार की वचनिका सम्पूर्णम् । संवत् १६०७ वैशाख शुक्ल ३ भौमवासरे । पुस्तक लिखी ब्राह्मण श्री गौणमालवी ज्ञाति साप्रदाय पड़ा भैरव लाले सू ।

४४४. वसूनन्दि श्रावकाचार वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४४२ ।

Closing : अपठनीय (जीर्ण) ।

Colohpon : अपठनीय (जीर्ण) ।

४४५. विदग्धमुखमण्डन (४ परिच्छेद)

Opening :

सिद्धौषधानि भवदुःख महागदानां,
पुण्यात्मनां परम कर्णरसायनानि ।
प्रक्षालनैकसलिलानि मनोमलानां,
शौद्धोदनेः प्रवचनानि चिरं जयन्ति ॥

Closing :

पूर्णचन्द्रमुखीरम्या कामिनी निर्मलांबराः ।
करोति कस्य न स्वांतमेकान्तमदनोत्तरम् ॥

Colophon : च्युतदत्ताक्षरजातिः । इति धर्मदासविरचिते चतुर्थपरिच्छेदः समाप्तं शास्त्ररत्नमिदं विदग्धमुखमंडनारगम् ।

...　　...

४८० ग्रंथश्लोका: ।

देखें—जि० र० को., पृ. ३५५ ।

दि. जि. ग्र. र., पृ.

Catg. of Skt. & Pkt. Ms , P. 691

४४६· विश्वतत्त्वप्रकाश (१ अध्याय)

Opening : विश्वतत्त्व प्रकाशाय परमानदमूर्तये ।
अनाद्यनंतरूपाय नमस्तमै: परमात्मने ॥

Closing : चार्वाकवेदांतिकयोगभाट्टप्राभाकरार्पक्षणिकोक्ततत्त्वम् ।
य ोत्युक्त्याविततं समस्य सम्यापितोऽत्र प्रथमाधिकार ॥

Colophon : इति परवादिगिरिसुरेश्वर श्री ावनत्रैविद्यदेवविरचित मोक्षशास्त्रे विश्वतत्त्वप्रकाशे अशेषपरमततत्त्वविचारे प्रथम. परि . समाप्त. । शुभसवत १६८८ फाल्गुण शुक्ला १० गुरुवासरे ।

विशेष -प्रथम परिच्छेद के अतिरिक्त एक पत्र में प्रमाण के विषयमें थोड़ा सा लिखा है, जिसमें विभिन्न मतों में स्वीकृत प्रमाण सख्या दी गई है। जिनरत्नकोष में भी पृष्ठ ३६० पर इसका एकही अधिकार होने की सूचना है।

देखें दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६० ।

Catg. of Skt & Pkt. Ms , P. 692.

४४७. विवाद मत खण्डन

Opening : किं जापहोमनियमैः तीर्थस्नानैश्च भारत ।
यदि स्वादति मांसानि सर्वमेव निर्थकम् ॥

Closing : मद्वयं मद्वयं चैव व त्रियं व चतुष्टय ।
अनया कुम्कलिंगानि पुराणानष्टादशानि च ॥

Colophon : इति विवादमत खंडन सम्पूर्णम् ।

४४८. विवादमत खन्डन

Opening । अहिंसासत्यमस्तेयं त्यागो मैथुनवर्जनम् ।
यं च स्वे तेषु धर्मेषु सर्वधर्मा: प्रतिष्ठिता: ।।

Closing । अष्टादशपुराणानां व्यासस्य बचनद्वयम् ।
परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम् ।।

Colophon : इति भारते इति तांबूलाद्यानकाधिकार: एकविंशतितम: २१ इति संपूर्णम् ।

४४९. विवेक विलास

Opening । शाश्वतानंदरूपाय तम: स्तोमैक भास्वते ।
सर्वज्ञाय नमस्तस्मै कस्मैचित्परमात्मने ।।

Closing : सश्रेष्ठ। पुरुषाग्रणी स सुभटोंतं स: प्रसंसास्पदं स,
प्राज्ञ: सकलानिधि स च मुनि सक्ष्मातले योगविश ।
सज्ञानी सगुणि व्रजस्यतिलको जानातिय:स्वांभृति,
निर्मोह: समुपार्जयत्यथा पदं लोकोत्तरं सास्वतम् ।।

Colophon । इति श्री जिनदत्त (सू) रि विरचिते द्वादसोल्लासे विवेक विलासे जन्मचर्यायां परमपदप्रापणोनाम द्वादसमोल्लास: ।

यह ग्रंथ करीब विक्रम सं० १६०० से कम का है ।

देखें—जि० र० को, पृ० ३५६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 692.

४५०. वृहद्दीक्षाविधि

Opening : पूर्वदिने भोजनसमये भोजनतिरष्कारविधि विधाय··· ···

Colsing । स्वान्येषां ज्ञानसिद्धयर्थं शास्त्राण्यालोच्य युक्तित:
गुरुमार्गानुयायीति प्रतिष्ठासारसंग्रहम् ।।

Colophon । लिलेखेमं फतेलालपंडितो हितकाम्यया ।
संशोधयंतु विद्वांस: सद्धर्मस्मिग्धमानसा ।।३।।

४५१. योगसार

Opening : भद्रं भूरिभवाम्भोधि शोषिणी दोषमोषिणी ।
जिनेशशासनायालम् कुशासनविशासिने ॥१॥

Closing : श्रीनन्दनन्दिवत्स श्रीनन्दीगुरुपादाब्जषट्चरण: ।
श्रीगुरुदासो नन्धान्मुग्दमति श्री सरस्वति सूनु ॥

Colophon : इति श्री योगसारसंग्रह समाप्तम् । संवत् १६८६ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे नवमीतिथौ रविवासरे जैन-सिद्धान्त भवने इद पुस्तके पूर्णमगमत् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ३२४ (१) ।

४५२. योगसार

Opening : देखें-- क्र० ४५१ ।

तस्याभवच्छ्रुतनिधिर्जिनचंद्रनामा
शिष्योनुतस्यकृति भास्करन(द)नाम्ना ॥
शिष्येण संस्तवमिम निजभावनार्थ
ध्यानानुग विरचित सुविता विदतु ॥

Colophon : इतिध्यानस्तवः समाप्तः ।

विशेष—अर्वाचीन लेख—

यह ग्रन्थ करीब १६५० विक्रम सं० का ज्ञात होता है ।

४५३. योगसार सटीका

Opening : णिम्मलझाण परट्ठिया कम्मकलंक डहेवि ।
अप्पा लद्धउ जेण परु ते परमप्पणवेवि ॥

Closing : ससारह भयभीयएण जोगचंद मुणिएण ।
अप्पा सबोहणकया दोहा इक्कमणेण ॥

इति श्री जोगसारग्रथ समाप्त. ।

जैनसिद्धान्त भवन आरा में लिखा । हस्ताक्षर रोशमलाल जैन । शुभमिति कार्तिक शुक्ला १२ शनिवार श्री वीर सम्वत् २४६१ श्री विक्रम संवत् १६६२ । इति संपूर्णम् ।

विशेष—ढूढारी हिन्दी में ग्रन्थ की टीका भी गाथाओं के साथ दी गई।
देखें—जि. र. को., पृ. ३२४ (II)।
Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 685.

४५४. आप्तमीमांसा

Opening : देवागमनभोयान् चामरादिविभूतयः ।।
मायाविष्वपि दृश्यंते नातस्त्वम सिनो महान् ।।१।।

Closing : जयति जयति केशावेष प्रपंचहिमांशुभान ।।
विहित विषमैकांतध्यात प्रमाणनया शुमान ।।
यतिपति रजोमस्याधृष्पन्मता वुनिश्चेतवान ।।
स्वमत मतयस्तीर्ध्या नानापरे समुपासते ।।११५।।
देखें—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 625.

४५५. आप्तमीमांसा

Opening : नहीं है।

Closing : येनादोष····भोक्तवृतिसरितः प्रेक्षावतां शोषिता
यद्व्याख्येप्यकलंक नीतिरुचिरा तत्त्वार्थसार्थद्यु तः ।।
स श्री स्वामिसमन्तभद्रयतिभूद्‌याद्‌विषुर्भानुमान्।
विद्यानंदफलप्रदोनघधियां स्याद्‌वादमार्गाग्रणी ।।

Colophon : इत्याप्तमीमांसालकृतौ दशमः परिच्छेदः।
श्रीमदकलंकशशधरकुलविद्यानंद संभवा भूयात्
गुरुमीमांसालंकृतिरष्टसहश्री सतामृध्य ।।
वीरसेनाख्य मोक्षगेचारुगुणानर्ध्यरत्नसिंधुगि सततम् ।।
सारतारारममृरानिमेमारसवांभोदपवनगिरि गह्लरियलु ।। ।।
कपटसहश्री सिद्धा सापट सहश्रीय मच मे पुष्यात्
शश्वदभीष्ट सहश्री कुमारसेनोक्तवर्द्धमानार्याः ।।१।।
स्वस्ति श्री मूलामलसंघमंडलमणि श्री कुंदकुंदानवये
गीर्गच्छेच्चवलाच्चकारकगणे श्री नंदिसंघाग्रणी
स्याद्वादेतरवादिवंतिदवणोधस्पाणि पंचाननों
बोभूत्सोस्तु सुमेधसानिह मुदे श्री पद्मनंद्री गणी ।।

श्रीपद्मनंद्यधिपपट्टपयोजटंसश्वेवातपचितयश:
स्फुरदात्मवंश: ।
राजाधिराजकृतपादपमोजसेव: स्यान्न: श्रिये कुवलये
शुभचंद्रदेव. ॥२॥
आर्याशीदार्यवर्येयादीक्षिता पद्मनंदिभि: ।
रत्नश्रीरितिविख्याता तन्नाम्नैवास्तिदीक्षिता ॥
शुभचंद्रार्यवर्येया श्रीमद्भि: शीलशालिनी
मलयश्रीरितिख्याता क्षांतिका गर्वगालि ॥
तयैषा लेखिता स्वस्थ ज्ञानावरजशातये
लिखिता राजराजेन जीयादष्टसहस्रिका ॥
संवत् १८४२ कर्तिक शुक्लसप्तम्यां गुरुवारे इदं पुस्तका लिपिकृता महात्मा सीतारामेण जयनगरमध्ये । लेखकपाठक चिरजीयात् शुभ भवतु कल्याणमस्तु ॥

४५६. आप्तमीमांसा

Opening : श्रीवर्द्धमानमभिवंद्य समन्तभद्रमुद्भूतबोधमहिमा-
नमनिंद्यवाचम् ।
शास्त्रावतार रचितस्तुतिगोचराप्त मीमांसितं कृतिरलं
क्रियते मयास्य ॥

Closing : अनुपलब्ध ।

देखें--(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १७६ (VI) ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०४ ।
(४) रा० सू० II, पृ० १६६ ।
(५) रा० सू० III, पृ० ४७ २४० ।

४५७. आप्तमीमांसा भाष्य

Opening : उद्दीपीकृतधर्मतीर्थमचलं ज्योतिर्ज्वलत्केवलालोकालोकित-
लोकलोकमखिलिंद्रादिभि: वंदितम् ।
वंदित्वापरमार्हतां समुदयं गां सप्तभङ्गीविधिं,
स्याद्वादामृतगर्भिणीं प्रतिहृति कांताधकमरादयम् ॥

Closing : श्रीवर्द्धमानमकलंकमनिंद्यवंद्यं पादारविन्दयुगलं प्रणिपत्य-मूर्द्धना ॥
भाव्यैकलाकनयनं परिपालयंतं स्याद्वादवर्त्मपरिणोमि समन्तभद्रम् ॥

Colophon : इत्याप्तमीमांसाभाष्यदशमा: परिच्छेद: । इति श्री भट्टकलंकदेवविरचिताप्तमीमांसावृत्तिरष्टशतीयं परिसमाप्ता । संवत् १६६५ वर्षे कार्तिकवदि ८ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री-कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री विजयकीर्तिदेवा: तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्तिदेवा: तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तच्छिष्येण ब्र० सधारणाख्येन स्वहस्तेन लिखितमिदं शास्त्रम् । शुभं भवतु ।

देखें— (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६३ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १६, १७८ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ ६७ ।
(4) Catg. of Skt. Ms. P. 306.

४५८. देवागम स्तोत्र

Opening : देवागमनभोयान् ...... नो महान् ।
Closing : जयति जगति क्लेशा ..... समुपासते ॥
Colophon : इति श्री समन्तभद्रपरमर्हता विरचिते देवागमापारनाम अष्ट-मीमांसा स्त्रोत्रम् ।

४५९. देवागम स्तोत्र

Opening : देवागमनभोवान .... नो महान ॥
Closing : जयति जगति ...... समुपासते ॥
Colophon : इति श्रीसमन्तभद्रपरमर्हताचार्य विरचितं देवागमस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

४६०. देवागम वचनिका

Opening : वृषभ आदि चउवीसजिन, वंदौ शीश नवाय ।
विघनहरन मंगलकरन मनवांछित फलदाय ॥

Closing : सुखी होऊ पाठक सदा, श्रवणकरै चितधारि।
बुद्धि विरधि मगल कहा, होउ सदा विस्तारि ॥

Colophon : इति श्री देवागमस्तोत्र वचनिका सम्पूर्णम्। शुभ भवतु १८६८ मासोत्तमे मासे अधिक आश्विनमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां चन्द्रवासरे पुस्तकमिदं संपूर्णम्। लेखाकाक्षर रघुनाथशर्मा पट्टनपुरमध्ये आलमगंज निवसति। शुभमस्तु।

४६१. देवागम वचनिका

Opening : देखें—क० ४६० ।

Closing : अष्टादश सत साठि षट् विक्रम संवत् जानि।
चैत्र कृष्ण चतुर्थी दिवस, पूर्ण वचनिका मानि ॥

Colophon : इति श्री देवागम स्तोत्र की वचनिका सम्पूर्ण।

४६२. आप्त परीक्षा

Opening : प्रबुद्धाशेषतत्त्वार्थ बोधदीधितिमालिने ॥
नम. श्रीजिनचन्द्राय मोहध्वांतप्रभेदिने ॥१॥

Closing : स जयतु विद्यानन्दो रत्नत्रयभूरिभूषणस्सततम्।
तत्त्वार्थार्णवतरणे सदुपाय: प्रकटितो येन ॥ ॥

Colophon : इति श्री आप्त परीक्षा विद्यानन्दिस्वाचार्य ॥
समाप्तम्। संपूर्ण.। शुभम् ॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ. ८१।
(२) जि० र० को०, पृ० ३०।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०३।
(४) रा० सू० II, पृ. १६३।
(५) रा० सू० III, पृ० १६६।
(6) **Catg. of Skt & pkt Ms, P. 625.**

४६३. आप्त परीक्षा

Opening : प्रबुद्धाशेषतत्वार्थ बोधदीधितिमालिने ॥
नम श्री जिनचन्द्राय मोहध्वांतप्रभेदिने ॥

Closing : स जयतु विद्यानंदो रत्नत्रयभूरिभूषणस्सतम् ।
तत्त्वार्थार्णवतरणे सदुपायः प्रकटितो येन ।।१२६।।

Colophon : इति आप्त परीक्षा टीका विद्यानन्दि आचार्यकृतसमाप्तम् ।।
श्री गुरुभ्यो नमो नम ।।

नेत्रपट्खेटचंद्रेब्दे माधवस्यासितेशरे ।।
तिथौमृगांकवारेऽयं मूलर्क्षपूर्तिमाप्नुयात् ।। ।।
शिवयोगे शिवं भद्र शास्त्र शिवप्रकाशकम्
सीतारामेण लिपित भव्याः पाठयितु क्षमाः ।।
रामे राज्ये महावीर्ये पौराज्ये जनवार्द्धिके
षड्दर्शनानि प्राप्तानि गुं मरेदानमानतः ।।३।।
इच्छाषड्भिर्गुणिता इच्छार्धा चतुर्गुणेणय इत्रब्धम् ।
पुनरपि तदाटगुणितं तीर्थंकरकदंबकं वन्दे ।।४।।

संवत् १९६२ शकःपट १८२७ वैशाख कृष्ण पंचम्याम् चंदवासरे लिपिकृतम् पं० सीतारामशास्त्री शुभं सहारनपुरनगरे। भव्यजनानां सर्वेषां पठनार्थम् । मंगलं भवतु । शुभं ।।२।।

४६४. न्यायदीपिका

Opening : श्री वर्द्धमानमर्हंत नत्वा बालप्रबुद्धये ।।
विरच्यते मितस्पष्ट संदर्भन्याय दीपिका ।।१।।

Closing : ततो नयप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिरितिसिद्धः सिद्धान्तः पर्याप्तमागमप्रमाणम् ।।

Colophon : इति श्रीमद्वर्द्धमानभट्टारकाचार्य गुरुकारुण्यसिद्धसारस्वतोदय श्रीमदभिनवधर्मभूषणाचार्यविरचितायां न्यायदीपिकायामागमप्रकाशः समाप्तः। संवत् १९१० मिति माघमासे शुक्ल पक्षे प्रतिपद्दिवसे रविवारे। शुभं भवतु ।।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६५ ।
जि० र० को०, पृ० २१६ II
प्र० जै० सा०, पृ० १६४ ।
आ० सू० II, पृ० ८२ ।
रा० सू० II, पृ० १६७ ।

रा० सू० ।।।, पृ० ४७, १६६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 662.

४६५. न्यायदीपिका

Opening : श्री वर्द्धमानमर्हन्तं नत्वा बालप्रबुद्धये ।
विरच्यते मितस्पष्टसंदर्भ न्यायदीपिका ।।

Closing : .... तत्समाप्तौ च समाप्ता न्यायदीपिका मद्गुरोः वर्द्धमादेशोवर्द्धमानदयानिधेः श्रीपादस्नेह-संबन्धात् सिद्धेय न्यायदीपिका ।

Colophon : इति श्री मद्वर्द्धमानभट्टारकाचार्य गुरुकारुण्यसिद्धिसिद्धसारस्वतोदय श्री मदभिनवधर्मभूषणाचार्य विरचितायां न्यायदीपिकायामागमप्रकाशः समाप्तः ।

४६६. न्यायमणिदीपिक

४६६

Opening : श्रीवर्द्धमानमकलङ्कमनन्तवीर्य-
माणिक्यनन्दियतिभाषितशास्त्रवृत्तिम् ।
भक्त्या प्रभेन्दुरचितालघुवृत्तिदृस्टया,
नत्वा यथाविधि वृणोमि लघुप्रपचम् ।।१।।
मदज्ञानमहश्रीतं मलमत्र यदि स्थितम् ।
तन्निष्काश्योर्मिवत्सन्तः प्रवर्त्तन्तामिहाब्दिवत् ।।२।।

Closing : अकलङ्करत्ननन्दिप्रभेन्दुमदवन्तगुणिभक्त्या ।
एतद्विका वालो निरुद्धवारि ने(?)ष किल गुरु भक्त्या ।।
स्याद्वादनीनिकान्तामुखलोकनमुख्यसौख्यमिच्छन्तः ।
न्यायमणिदीपिकां हृद्वासागारे प्रवर्त्तयन्तु बुधाः ।।

Colophon : इति परीक्षामुखलघुवृत्तेः प्रमेयरत्नमाला नामधेयप्रसिद्धायां न्यायमणिदीपिकासंज्ञायां टीकायां षष्ठः परिच्छेदः ।

श्रीमत्स्वर्गीयबाबूदेवकुमारस्यात्मजदानवीरबाबूनिर्मलकुमारस्यादेशमादाय आगराप्रान्तगतसकरौलीनिवासिनः रेवतीलालस्यात्मजराजकुमरविद्यार्थिना लिखितमिदं शास्त्रम् ।

इदं लक्ष्मणभट्टेन विलिखितं प्रथमं शास्त्रं लक्षीकृत्य लिखितम् । संशोधयितव्या विद्वज्जनैः । प्रतिलिपिकाल सं० १९८०
श्रावण-शुक्ल- त्रयोदशी ।

४६७. न्यायविनिश्चय विवरण

Opening : श्रीमज्ज्ञानमयोदयोक्षतपदव्यक्तोविविक्तं जगत्
कुर्वन्सर्वतनूमदीक्षामप्ससर्वं विश्वं वचो रश्मिभिः ।।
ख्यातन्वन्भुवि भव्यलोक नलिनी षंडेप्वरखंडश्रियं
श्रेयः शाश्वतमातनोतु भवतां देवोजिनार्हन्यतिः ।।१।।

Closing : व्याख्यानरत्नमालेयं प्रस्फुरन्नयदीधितिः ।
क्रियतां हृदि विद्वद्भिस्तुदतीमानसं तमः ।।

Colophon : श्रीमान्सिंह महीपतेः परिषधि प्रख्यातवादोन्नतिः
तर्कन्यायतमोघ्नतोदयगिरिः सारस्वतः श्री निधिः ।।
शिष्य श्रीमतिसागरस्य विदुषां पत्युस्तपः श्रीभृतां
भर्तुः सिंहपुरेश्वरो विजयते स्याद्वादविद्यापतिः।।
इत्याचार्यवर्यस्याद्वादविद्यापति विरचितायां न्यायविनिश्चय-तात्पर्यविद्योतिन्यां व्याख्यानरत्नमालायां तृतीयः प्रस्तावः समाप्तः ।। समाप्तं च शास्त्रम् । ॐ नमो वीतरागाय ॐ नमः सिद्धेभ्यः । करकृत-मपराधं क्षन्तुमर्हन्ति सन्तः । ६ ।शाके १८३२ वर्तमानसा-धारण नाम संवत्सरे उदगयने वसंतऋतौ चैत्रे मासे कृष्णपक्षे द्वाद-श्यां भार्गववासरे मध्याह्नसमये समाप्तोऽयं ग्रंथः । इदंपुस्तकं ३६ पी प्रांत दुर्ग्रग्रामवासिना फुंडा जेमरावंटे इत्युपनामक रामकृष्णशा-स्त्रीणां लिखितम् ।।
श्री सन् १२१०-५-७ ।।

४६८. परीक्षामुखवचनिका

Opening : श्रीमत् वीर जिनेश रवि, तम अज्ञान नशाय ।
शिव पथ वरतायो जगति, वंदौं मैं तसु पाय ।।

Closing : अष्टादशतसाठिलय विक्रम संवत माँहि ।
सुकल असाड़ सु चोथि बुध पूरण करी सुचाहि ।।

Colophon : इति परीक्षामुख जैनन्यायप्रकरण की लघुवृत्ति प्रमेयरत्न-माला की देशभाषामय वचनिका जयचंद छावड़ा कृत संपूर्ण । संवत् १६२७ मिती पौहोवदी १ । श्री ।

४६९. परीक्षामुखवचनिका

Opening :　　देखें—क्र० ४६४ ।

Closing :　　देखें—क्र० ४६४ ।

Colophon :　　इति परीक्षामुख जैनन्याय प्रकरण की लघुवृत्ति प्रमेयरत्न-माला की देशभाषामय वचनिका जयचंद्र छावड़ा कृता समाप्ता । संवत् १९६२ वैशाख कृष्णा ५ पंचमी सोमवासरे । शुभं भवतु ।

४७०. प्रमाणलक्षण

Opening :　　सिद्धंधर्म महारिमोहहननं कीर्तेः परं मंदिरम्,
मिथ्यात्वप्रतिपक्षमक्षयसुखं संशीति विध्वंसनम् ।
सर्वप्राणिहितं प्रभेदु वचनं सिद्धं प्रमालक्षणम्,
संतश्चेतसि चिंतयंतु सततं श्री वर्धमानं जिनम् ।।

Closing :　　.... .... तत्कालभावी–उत्तरकालभावी वा विज्ञानप्रमाणता हेतुः न भावत्तत्कालभाविक्वचिन्मिथ्यात्वज्ञानेपि तस्य भावात् अथोत्तर-कालभावि–स किं ज्ञातोऽज्ञातो न तावदज्ञा ।।

Colophon :　　नहीं है ।

४७१. प्रमाण मीमांसा

Opening :　　अनन्तदर्शनज्ञानवीर्यानन्दमयात्मने ।
नमोऽर्हते कृत्याकृत्य धर्मतीर्थायितायिने ।।

Closing :　　यतो न विज्ञातस्वरूपस्यारयवलंबनं जयाय प्रभवति न चावि-ज्ञातस्वरूपं परतंत्र भेत्तु शक्यमित्याह ।

Colophon :　　इति प्रमाणमीमांसा ग्रन्थः । मिती श्रावण कृष्णा १० संवत् १९८७ ।

४७२. प्रमाणप्रमेय

Opening :　　तत्त्रिकालवर्त्यशेषवस्तुक्रमव्यापि केवल सकलप्रत्यक्षम् ।।

Closing :　　स्पर्शरसगंधरूपाः शब्दसंख्याविभागसंयोगो परिमाणं च प्रथक्त्वं तथा परत्वापेच ? समाप्तं श्रीरस्तु ।।

Colophon : इदं पुस्तकं परिधाविनाम संवत्सरे दक्षिणायने ग्रीष्मऋतौ निज आषाढ़मासे कृष्णपक्षे दशम्यां गुरुवासरे दिवा दश घटिकायां वेणुपुरस्थित पन्नैचारी मठस्थ श्रीपति अर्चक गौड़सारस्वत ब्राह्मन् विदवत् षट्कर्मी वेदमूर्त्तिवामननाम शर्मणस्य पंचमात्मजः केशवनाम शर्म्मणेन लिखितमिति। समाप्तमित्यर्थः श्रीरस्तु। श्री पंचगुरुभ्यः वीतरागाय नमः।

नयी लिपि में—यह ग्रन्थ वीर निर्वाण संवत् २४४० में लिखा गया।

४७३. प्रमाण-प्रमेय-कलिका

Opening : जयंति निर्जिताशेषसर्वथैकान्तनीतयः।
सत्यवाक्याधिपाः शश्वद्विद्यानंदादिजिनेश्वराः॥

Closing : ननु यद्येवं कथमेकाधिपत्यं न भवतीति चेत्, इत्यत्राप्युक्तं

समंतभद्राचार्यैः।

कालः कलिर्वा कलुषाशयो वा श्रोतुः प्रवक्तुर्वचनात्ययो वा।
त्वच्छासनैकाधिपतित्वलक्ष्मी प्रभुत्वशक्तेरपवादहेतुः॥

Colophon : इति श्री नरेन्द्रसेनविरचिता प्रमाणप्रमेयकलिका समाप्ता। लिप्यकृतशुभचिंतक लेख्यकदयाचंदमहात्मा। शुभमस्तु। मिति भादवा प्रथमशुक्लपक्षे छठि रविवासरे संवत् १८७१ का।

जैन सिद्धान्त भवन, आरा के लिए प्रतिलिपि की गई। शुभमिति मार्गशीर्षशुक्ला द्वादशी १२ चन्द्रवार विक्रम संवत् १९९१। हस्ताक्षर रोशनलाल जैन। इति।

देखें—जि. र. को., पृ. २६८।
दि. जि. ग्र. र., पृ. ९८।
रा. सू. II, पृ. १९८।

४७४. प्रमेयकमल मार्तण्ड

Opening : देखें—क्र० ४७० ।

Closing : इति श्री प्रभाचंदविरचिते प्रमेयकमलमार्त्तण्डे परीक्षामुखालंकारे षष्ठः परिच्छेदः संपूर्ण ॥

Colophon ; गंभीरनिखिलार्थगोचरमलं शिष्यप्रबोधप्रदं
यद्व्यक्तं पदमद्वितीयमखिल माणिक्य नन्दी प्रभोः ।
तद्व्याख्यातमदोयथागमलः किंचन्मया लेशतः
स्वेया(?) द्बुधियां मनोरवतिगृहे चन्द्रार्कतारावधि ॥
मोहध्वांतविनाशनो निखिलतो विज्ञानवृद्धिप्रदो
मेयानंतनभोविसर्पणपटुर्वस्तु ·· विभाभासुरः
शिष्याब्जप्रतिबोधने समुदितो योग्रेपरीक्षामुखा-
ज्जीयात् सोत्र निबंधरावमुचिर मार्तण्डतुल्योमल्पः ॥२॥
गुरुः श्री नंदि माणिक्यनंदिताशेषसज्जन·
नंदता दुरितैकनर जाजैनमती ?वं ॥

श्री पद्मनंदिसिद्धामतिशिष्योनेकगुणालयः प्रभाचंद्राश्चिरं जीया ······ ।
पदेरतः इति श्री प्रमेयकमलमार्त्तण्डः सपूर्णतामगमत् ।
मिति प्रथमजेठ सुदी ६ सनीचरवार सवत् १८६६ का संपूर्ण हुवा ग्रन्थ

विशेष—बाबू श्रीमंधरदास आरेवाले की पोथी है।

देखे -दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६८।
जि० र० को०, पृ० २३८, २६६।
प्र० जै० सा०, पृ० १७७।
रा० सू० II, पृ० १६८।
Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 671.
Catg. of skt. Ms., P. 306.

४७५. प्रमेयकमलमार्त्तण्ड

Opening : सिद्धंधर्ममहारिमोहहननं कीर्त्तेः परं मन्दिरं
मिथ्यात्वप्रतिपक्षमक्षयसुखं संशीतिविध्वंसनम् ॥
सर्वप्राणिहितं प्रभेन्दुभवनं सिद्धं प्रमालक्षणं
सन्तश्चेतसि चिन्तयन्तु सततं श्री वर्द्धमानं जिनम् ॥२॥

Closing : यन्नुणास्त्रान्तरद्वारेणापगतहेयोपादेयस्वरूपो न तं प्रतीत्यर्थः ॥
इति ॥

Colophon : इति श्री प्रभाचन्द्राचार्यविरचिते प्रमेयकमलमार्त्तण्डे परीक्षामुखालंकारे षष्ठः परिच्छेद ॥

४७६. प्रमेयकण्ठिका

Opening : श्रीवर्द्धमानमानम्य विष्णुं विश्वसृजं हरम् ।
परीक्षामुखसूत्रस्य ग्रन्थस्यार्थं विवृण्महे ॥१॥
अथ स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणमिति प्रमाणलक्षणं बाधातीतं नान्यद्युक्तिशतबाधितत्त्वात् । ननु स्वापूर्वार्थेतिलक्षणे यानि विशेषणान्युपात्तानि तानि निरर्थकानीतिचेन्न परप्रतिपादितानेकदूषणवारकत्वेन तेषां सार्थकत्वात् ।

Closing : प्रमेयकण्ठिका जीयात्प्रसिद्धानेकसद्गुणा
लसन्मार्त्तण्डसाम्राज्ययौवराज्यस्य कण्ठिका ॥
सनिष्कलङ्कं जनयन्तु तर्कं वा बाधितर्का मम तर्करत्ने ।
केनानिशं ब्रह्मकृतः कलङ्कश्चन्द्रस्य किं भूषणकारणं न ॥

Colophon : क्रोधन संवत्सरे माघमासे कृष्णचतुर्दश्यायां विजयचंद्रेण जैन क्षत्रियेण । श्री शांतिवर्णिविरचिता प्रमेयकंठिका लिखित्वा समापिता ॥
॥ भद्रंभूयात् वर्द्धतां जिनशासनम् ॥

४७७. प्रमेयरत्नमाला

Opening : अनुपलब्ध ।

Closing : तस्योपरोधवशतो विशदोरुकीर्तिर्माणिक्यनंदिकृतशास्त्रमगाधबोधः ॥
स्पष्टीकृतं कतिपयैर्वचनैरुदारैर्बालप्रबोधकरमेतदनंत विर्यैः ॥

Colophon : इति प्रमेयरत्नमालापरनामधेया परीक्षामुखलघुवृत्तिः समाप्ताः ॥ शुभम् संवत् १९६३ चै० शुक्ल लि० पं० सीतारामशास्त्रि ॥

देखें, Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 671.
Catg. Skt. Ms., P. 306.

४७८. प्रमेयरत्नमाला (न्यायमणिदीपिका)

Opening ।

श्री वर्द्धमानमकलंकमनंतवीर्यमाणिक्यनंदि-
यतिभाषितशास्त्रवृत्तिम् ।।
भक्त्या प्रभेंदुरचिता लघुवृत्तिद्रष्ट्या नता यथा-
विधिवृणोमि लघुप्रपंचम् ।।१।।

Closing ।

स्याद्वादनीतिकांतामुखलोकन मुरगसौख्याभि वंत: ।।
न्यायमणिदीपिकां हृदा सागारे प्रवर्त्तयन्तु बुधा: ।। ।।

Colophon ।

इति परीक्षामुखलघुवृते: प्रमेयरत्नमाला नामधेयप्रसिद्धायां न्यायमणिदीपिकायाम् संज्ञायां टीकायां षष्ठ परिच्छेद: ।। श्री वीत-रागाय नम: । श्रीमद्महाकलंक मुनये नम. । श्रीमद्वेदशास्त्रसंपन्न मूडबिदे दक्षिण कन्नडापन्ने च्चारि (रिधत) वेदमूर्तिवामनमहस्यपुत्र-लक्ष्मणभट्टेन लिखितमिदं पुस्तकं परिधावि संवत्सरे भाद्रपद ५ कुजवासरे संपूर्णश्च ।।

४७९. प्रमेयरत्नमाला-अर्थप्रकाशिका

Opening :

श्रीमन्नेमिजिनेन्द्रस्य वन्दित्वा पादपङ्कजम् ।
प्रमेयरत्नमालार्थ: संक्षेपेण विविच्यते ।।१।।
प्रमेयरत्नमालाया: व्याख्यास्सन्ति सहस्रश: ।
तथापि पण्डिताचार्यकृतिर्ग्राह्यैव कोविदै: ।।२।।

Closing ।

सर्वदाशकपदं शकल्पार्थबोधकमिति ज्ञानमित्यं भूतनया-भासमित्यत्र विस्तर: । सम्पूर्णं मंगलमहा श्री ।।

Colophon ।

स्वस्ति श्रीमत्सुरासुरवृंदव ंदितपाद योज श्री मन्नेमीश्व रममुतर्नि पवित्रीकृत गौतमगोत्र समुद्भूतार्हन् द्विज श्रीब्रह्मसूरि शास्त्रि तनुज श्री महोर्बलिजिन दास शास्त्रिणामंतेवासिना । मेरु गिरि गोत्रोत्पन्न । त्रि । विजय चंद्राभिधेन जैन क्षत्रिणा लेखीति ।। भद्रं भूयात् ।।

४८०. षड्दर्शन प्रमाण प्रमेयानुप्रवेश

Opening ।

साद्यनन्तं समाख्याते व्यक्तानन्तचतुष्टयम् ।
त्रैलोक्ये यस्य साम्राज्य तस्मै तीर्थकृते नम: ।।

Closing : जयति शुभचंद्रदेवः कण्डूगणपुण्डरीकवनमार्त्तण्डः।
चण्डालदण्डदूरो सिद्धान्तपयोधिपारगोबुधाविनुतः॥

Colophon : इति समाप्तः शुभं भवतात् वर्धतां जिनशासनम्। इत्ययंग्रंथः दक्षिण कर्णाटके मूडबिद्री निवासिना राजू० नेमिराजाख्येन लिखितस्स-माप्तश्चस्मिन् दिने॥ रक्ताक्षिसं। माघशुक्ल द्वादशी॥

४८१. चिन्तामणिवृत्ति

Opening : श्रियं क्रियाद्वः सर्वज्ञज्ञानज्योतिरनश्वरीम्।
विश्वं प्रकाशयच्चिंतामणिश्चितार्थसाधनम्॥

Closing : किं भोजको गच्छति तुल्यकर्तृक इति किं इच्छामि बवान् क्रियायां तदर्थामिमिति किं इच्छा न भुक्ते॥

Colophon : इति श्री श्रुतकेवलिदेशीयाचार्य शाकटायनकृतौ शब्दानुशासने चितामणौ वृत्तौ चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तोध्यायश्चतुर्थः॥ स्याद्वादाधिपशाकटायनमहाचार्य प्रणीतस्यय शब्दानुशासनस्य महतीवृत्ति-स्समाहृत्यताम्।

प्रेक्षातिक्षम यक्षवर्मरचिता वृत्तिर्लघीयस्यऽसौ।
श्री चिंतामणिमंजिकाविजयतामाचंद्रतारं भुवि॥

श्रीमते शाकटायनाचार्याय नमः॥श्रीयक्षवर्माचार्याय नमः

दक्षिणकर्नाटदेशे कार्कल दुर्गाग्रामे शके १८३२ स्म वर्तमाने साधारणनाम संवत्सरे मार्गशीर्षे कृष्णे अष्टम्यायां स्थिरवासरे लिखितोऽयं ग्रन्थः। फुंडाजेरामकृष्णशास्त्रिणः पुत्रेण रंगनाथ शास्त्रिणा अस्मद्गुरवे नमः। लक्ष्मीसेन गुरुभ्यो नमः।

देखें—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. **694**.

४८२. धातुपाठ

Opening : श्री विद्याप्रकृतिं नत्वा जिनं शब्दानुशासने॥
मूलप्रकृति पाठोऽयं क्रियार्थगणसिद्धये॥ ''॥

Closing : ... ... एकादशेति शब्दानुशासने धातवो मताः॥
धातुपाठ समाप्तः। श्रीकल्याणकीर्त्तिमुनये नमः

४८३. हेमचन्द्रकोष

Opening : इमनान्तोड इम प्रत्ययांतमन्त प्रयातं नाम पुल्लिंग । इनम् प्रतिधिमा प्रदिमाश्रुतिम्यद्रक्रिमा इत्यादि । तथा निर्वसिद्ध इम न ग्रहण-मावाशदिरिति नपुंसक च बाधनार्थं ।

Closing : यत्रोक्तमत्रसद्भिल्लो कतएव विशेयं लिंगं शिष्या लोकाश्रय चाल्लिगस्येतिज्ञान ता संख्यातिर्यं प्मद्रमस्चस्फर्गं नगका: पदवाग्यमव्य-यंचित्य संख्यं च तछ तुलर विपुला निस्वाय नाम लिमानुशासनान्यमि समीक्ष्य संख्या क्षप्यत । आचार्य हेमचन्द्र समद्रमदनुशासनानि लिंगानां ।

Colophon : इत्याचार्य श्री हेमचन्द्रविरचितं स्त्रोपज्ञलिंगानुशासन विवरण समाप्त: ।।

विशेष—यह ग्रन्थ पूर्णत: जीर्णशीर्ण अवस्था में है । अत: इसके सभी अक्षर स्पष्ट पढ़े नहीं जा सकते हैं ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र र., पृ. १०१ ।
(२) जि. र. को., पृ. ४६२ ।

४८४. जैनेन्द्रव्याकरण महावृत्ति

Opening : प्रारम्भ के ७९ पत्र नहीं है ।

Closing : चतुष्टयं समन्तभद्रस्य ।।१२४।। फरोह इत्यादि चतुष्टय समन्तभद्राचार्यस्य मतेन भवति, नान्येषा, तथाचैवोदाहृतम् ।

Colophon : इत्यभयनंदिविरचितायां जैनेन्द्रव्याकरणमहावृत्तौ पंचमस्या-ध्यायस्य चातुर्थपाद: समाप्त: । समाप्तश्चपंचमोध्याय. । मंगलमस्तु । इति श्री जैनेन्द्रव्याकरणग्रन्थ । आरे मध्ये लिखापितं जैनधर्मीशुभकर्मीबाबू कन्हैयालाल तस्यात्मज बाबू श्रीमन्दिरदास निजपरोपकारार्थं लिपिकृतं देवकुमारलालभक्त कायस्थ शुभ मिति आषाढ़ सुदी सप्तमी सोमवार संवत् १९०७ । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र. र., पृ. १०२ ।
(२) जि. र. को., पृ. १४६ (I) ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १४८ ।
(४) आ० सू० पृ० ६४ ।
(५) रा. सू. II, पृ. २५७ ।
(५) रा. सू. III, पृ. ८७ ।
(६) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 645.

४८५. जैनेन्द्र व्याकरण महावृत्ति

Opening : लक्ष्मीरात्यंतिकीयस्य निरवद्यावभासते ।
देवनंदितपूजेशे नमस्तस्मै स्वयंभुवे ॥

Closing : सरोर्भरि खे २३ ॥

Colophon : इत्यभयनंदिविरचितायां जैनेन्द्रमहावृत्तौ पंचमस्याध्यस्य चतुर्थः पादः समाप्तः । शुभमस्तु मंगलमस्तु ।

४८६/१. जैनेन्द्र व्याकरण महावृत्ति

Opening : Missing.

Closing : कुयोह इत्यादिचतुष्टयं समंतभद्राचार्यस्य मतेन भवति नान्येषां तथाचेवोदाहृतम् ।

Colophon : इत्यभयनंदिविरचितायां जैनेन्द्रव्याकरणमहावृत्तौ पंचमस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः । समाप्तश्चायं पंचमोध्यायः ॥

४८६/२. कातन्त्र विस्तार

Opening : जिनेश्वरं नमस्कृत्य गौतमं तदनन्तरम् ।
सुगमः क्रियतेऽस्माभिरयं कातंत्रविस्तरः ॥

Closing : .... सणे तद्धिते वृद्धिरागमो वा भवति । न्यंकोरिदंन्यांकवं नैयंकवं ।

Colophon : इति श्री मत्कर्णदेवोपाध्यायश्रीवर्धमानविरचिते कातत्रविस्तरे तद्धिते दशमप्रकरणं समाप्तमिति ।

परिसमाप्तोऽयं कातंत्रविस्तरो नाम ग्रन्थो माधवकृष्णाष्टम्यां लिखित्वा मया रानू नामधेयेन । सन् १९२८ ।

४८७. पंचसन्धि व्याकरण

Opening : प्रणम्य परमात्मानं बालधी वृद्धिसिद्धये ।
सारस्वतीमृजुकुर्वेपि क्रियां नातिविस्तराम् ॥

Closing : भ्रमत् अयं क्वप्रत्ययः डित्वादिलोपः स्वरहीनं अत्र तकारस्य नाशः प्रथमैकवचनं सि इकार उच्चारणार्थः इति इकारलोपः स्त्रोर्विसर्गः भ्रमन् सन् रौतिशब्दं करोतीति भ्रमर. इति सिद्धम् ।

Colophon : इति विसर्ग संधिः। पंचसंधि पूर्णं जातम्। इति सारस्वत पंचसंधि संपूर्णम्।

४८८. प्राकृत व्याकरण (२ अध्याय)

Opening : अत्र प्रणम्य सर्वज्ञं विद्यानंदास्पदप्रदम्।
पूज्यपादं प्रवक्ष्यामि प्राकृतव्याकृतस्सताम्॥

Closing : ....एक्केक्कं एक्केक्के एअंगंगस्मिरसेव्वारत. अतः अकारांतात् लिङ्गात् परस्य स्यादि।

Colophon : अनुपलब्ध।

४८९. रूपसिद्धि व्याकरण

Opening : श्री वीरममलं पूर्णश्री दृग्वीर्यसुखात्मकम्।
नत्वा देवमबाधोक्तिं रूपसिद्धिं हितां ब्रुवे॥

Closing : इवन इति दीर्घः। अधिजिगांसते व्याकरणं। इत्यादि समस्तं संप्रपंचं शब्दानुशासनं विद्वद्भिरुन्नेतव्यम्।

Colophon : इति रूपसिद्धिः समाप्तः। श्री कृष्णार्पणं श्री गुंमटनाथाय नमः। इति धातुप्रत्ययसिद्धिः
व्याकरणोद्यमो नीत्वा प्राप्तु ज्ञानसुखामृतम्।
बालानामृजुमार्गोयं संक्षेपेण प्रदर्शितः॥
दयापालकृता सम्वत् रूपसिद्धिं प्रवर्धताम्।
भूमावदिनमो भेत्ति विपुनो (लो) भानु रश्मिवत्॥
जिननाथाय नमः।

४९०. सरस्वती प्रक्रिया

Opening : ... ... आव् भवति स्वरे परे पौ अकः, पावकः ... ...।

Closing : अवताद्वोहयग्रीवः कमलाकरईश्वरः।
सुरासुरनराकारमधुपापीतपत्कजः॥

Colophon : इति श्री सरस्वती प्रक्रिया समाप्ता।
संवत् १८०९ वर्षे मार्ग वदी ४ शुक्रे लिखितं पंडित श्री हेमराजेन स्व पठनार्थम्। शुभं भवतु।

४९१. सिद्धान्त चन्द्रिका

Opening : नमस्कृत्य महेशानं .... ।
वर्णप्रतीतिसूत्राणां, कुर्व्वेसिद्धान्तचन्द्रिका ।

Closing : ... ... ककारादि फो वा रेफः रकारः लोकाछे वषस्य सिद्धिर्यव्वामातरा दे ।

Colophon : इति श्री रामचंद्राश्रम विरचितायां सिद्धान्तचन्द्रिका सम्पूर्णम् ।
अदृष्टिदोषान् मतिविभ्रमाश्च यदर्प्यहीनं लिषतं मयात्र ।
तत्साधुमुख्यैरपि शोधनीयं कोपो न कार्यः खलु लेषकायः ॥
यादृशं पुस्तकं .... ॥
वाचनाचार्यवर्यधुर्यज्ञानकुशलगणिः तत्शिष्यप्रशिष्यपंडितोत्तमपंडित श्री ज्ञानसिंहगणिः शिष्य धनजी लिषतं । श्री मेदणी तटमध्ये ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १०६ ।
(२) रा० सू० II, पृ० २९, २६४ ।
(३) रा० सू० III, पृ० २३१ ।
(४) आ० सू०, पृ० १४२ ।
(५) जि. र. को., पृ. ४३९ (II) ।

४९२. तद्धित प्रक्रिया

Opening : .... आआ एऐ औ एते वृद्धिसंज्ञकाः भवन्ति ।

Closing : ... संख्यायां द्वितयं, त्रितयं, द्वयं शेषानिपात्याः कृत्यान्तयाः इति यति तति ।

Opening : इति तद्धितप्रक्रिया समाप्ता ।

४९३. धनञ्जयकोष

Opening : तन्नमामि परं ज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ।
उन्मूलयत्यविद्यां यत् विद्यामुन्मीलयत्यपि ॥

Closing : अर्हंत्सिद्धमितिद्वावप्यर्हंत्सिद्धाभिधायिनैः ।
अर्हंदादिनापि प्राहुः शरणोत्तममंगलान् ।।

Colophon : नहीं है ।
देखें—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 654.

४६४. नाममाला

Opening : वंदौं श्री परमातमा, वरसावन निजपंथ ।
तसु प्रसाद भाषा करौं, नाम मालिका ग्रन्थ ।।

Closing : संवत् अष्टादश लिखौ, जा ऊपर उनतीस ।
वासों दे भादौं सुदी, वातेचतुरदशीश ।।

Colophon : इति श्री देवीदास कृत नाममालिका सम्पूर्णम् । संवत् १८७३ वैशाख वदी २ आदि वारे ।

४६५. शारदीयाख्यनाममाला

Opening : प्रणम्य परमात्मानं सच्चिदानंदमीश्वरम् ।
ग्रथनाम्यहं नाममालां मालामिवमनोरमाम् ।।

Closing : भूद्वीपवर्षसरिदद्रिनभः समुद्रपातालदिक्,
ज्वलनवायु वनानि यावत् ।
यावन्मुदं वितरतो भूवितरतो भुवि पुष्पदंतो,
तावस्थिरां विजयतां वतु नामालामिमां ।।

Colophon : इति श्री शारदीयाख्यनाममाला समाप्ता ।
संवत् १८२८ वर्षे मासोत्त (मे) मासे वैशाखमासे कृष्णपक्ष-पंचम्यां गुरुवासरे गोपाचलमध्ये लिखितमाचार्य सकलकीर्ति स्वहस्ते । श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । शुभंभवतु ।
एकाक्षर परमदातारो ज्योगुरु नयैव मन्यते ।
स्वानज्योन्यसतं मत्वा चौकालो शुभजायते ।।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १११ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३३५ ।
(३) Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 695.

४९६. शारदीयाख्यनाममाला

Opening : देखें—क्र० ४९३ ।

Closing : देखें,—क्र० ४९३ ।

Colophon : इति श्री सारदीयाख्य लघु नाममाला समाप्तम् । संवत् १९१८ मासानां मासोत्तममासे मार्गशिर मासे शुभेशुक्लपक्षे तिथौ षष्ठी भृगुवासरे लिपीकृतं ब्राह्मण रामगोपालेन वासी मौजपुर को सीखी रामगढ़-मध्ये । शुभमस्तु ।

४९७. शारदीयाख्यनाममाला

Opening देखें—क्र० ४९३ ।

Closing : देखें—क्र० ४९३ ।

Colophon : इति श्री सारदीयाख्य नाममाला समाप्तं । संवत् १९८५ का जेष्ट शुक्ला ८ शनिवासरे ।

४९८. त्रेपनक्रियाकोष

Opening : समवसरण लिछिमी सहित वरधमान जिनराय ।
नमो विबुध वंदित चरन भविजन कौं सुखदाय ।।

Closing : जबलौ धर्मजिनेश्वर साह । जगत मांहि वरतै सुखकार ।।
तबलों विसतरिजो ईह ग्रन्थ । भविजन सुर शिव दायक पंथ ।।

Colophon : इति श्री त्रेपनकिया भाषा ग्रन्थ सिंघई किसनसिंघ (सिंह) कृत संपूर्णम् । मिती फूंस (पौष) सुदी ११ संवत् १९६१ ।

४९९. त्रेपनक्रिया कोष

Opening : देखें—क्र० ४९६ ।

Closing : देखें—क्र० ४९६ ।

Colophon : इति श्री त्रेपनक्रिया कोस विधान का छंद की जाति का अंक २६१५ एक अधिकार का अंक १०८। श्लोक संख्या टीका शुद्ध । ३००० । तीन हजार के ऊन मान ।

इति श्री क्रियाकोस भाषाग्रन्थ सिंही किसनसिंघ कृत सपूर्णम् श्रीरस्तु ॥

५००. उर्वशीनाममाला

Opening : श्री आदिपुरुष कहियै जगत, जाकी आदि अनंत ।
अगम अगोचर बिम्बपति, सो सुमिरो भगवंत ॥

Closing : वक्तासुरगुरुसौ हुतो श्रोता हो सुरराज ।
तहुमवन पारन लह्यो कहा औरको काज ॥

Colophon : इति श्री शिरोमणि कृता उर्वशीनाममाला संपूर्ण । शुभंभवतु ।

५०१. विश्वलोचन कोष

Opening : जयति भगवानास्ता धर्म्मः प्रसीदतु भारती,
वहन्तु जगतीप्रेमोद्गारतरंज्वशुभं जनाः ।

अयमपि ममश्रेयानगुं स्तनोन्नमनोमुदं
किमधिकमितस्त्यक्तावेगान् भवन्तु विपश्चितः ॥१॥

Closing : हेहे व्यस्तौ समस्तौ च स्मृत्या मंत्र हूतिषु ॥
हौच हौव समस्तौ व संबुद्धया ध्यानयोर्म्मतौ ॥६६॥

Colophon : इति श्री पंडित श्री श्री धरसेन विरचितायां विश्वलोचन-मित्यपराभिधानायां मुक्तवल्यां नामार्थकांड समाप्तः ॥ संवत् ॥१६६१॥ वर्षे ~ ? मासे शुक्लपक्षे .... शेदासा ? आनंतीयो १३ दिने गुरुवारे ॥

५०२. अलंकारसंग्रह

Opening : जगद्वैचित्र्यजनन जागरूकपद्वयम् ।
अवियोगरसाभिज्ञमाद्यं मिथुनमाश्रये ॥१॥

Closing : सर्वदोषरहितं सगुणं यत् काव्यमव्ययशकरमूर्ध्याम् ।
स्वच्चारित्रमि वसादुनिषिध्यं गवितारियमगं इरगं इए ।

Colophon : इत्यमृतानंदयोगी प्रवरविरचितेऽलंकारसंग्रहे दोषगुणनिर्णयो नाम षष्ठः परिच्छेदः ।।५२४।।
कुल्ला श्लोक ६६० ।
देखें—जि० र० को०, पृ० १७

५०३. अलंकारसंग्रह

Opening : देखें, क्र० ५०२ ।

Closing : रसोक्तस्यान्यथाव्याख्यारावीचार्या बुद्धिशालिभिः ।।

Colophon : इत्यमृतानंदयोगि प्रवरविरचिते अलंकारसंग्रहे वसुनिर्णयो नामाष्टमो अध्यायः ।

करकृतमपराधं क्षंतुमर्हन्तिसंतः ।।
अयमलंकारसंग्रहो नाम ग्रंथः रानू नेमिराजाख्येन लिखितः
रत्काक्षिसं माघमासे शुक्लपक्षे द्वितीयां तिथौ समाप्तश्च ।।

५०४. बारहमासा

Opening : अलिरी वर नेमपिया विनमैं नर होरी ।
प्रथ(म)लियो नहि मन समुकाय ।
नाहक पठ्यो है लगन लिषाय ।।

Closing : जेठ संपूरन बारहमास, नेम लियो सिवथान नेवास ।
रजमति सुरपद पाई विख्यात, सागरबुध कहत यह बात ।।

Colophon : बारहमासा संपूरनं ।

५०५. चन्द्रोन्मीलन

Opening : चंद्रप्रभं नमस्कृत्य चंद्राभं चंद्रलांच्छनम् ।।
चंद्रोन्मीलनकं वक्ष्ये, सकलाद्यं चराचरम् ।

Closing : यत्तु लभ्यते तत्तत्संवत्सर आदित्य वद्वितप्रश्ना-
दित्यं लभ्यते ।

चंद्रवद्वितप्रश्ना चद्रं लभ्यते,
क्षितिजवद्वित प्रश्ना भौमं लभ्यते ।।

Colophon : इति चंद्रोन्मील्नं समाप्तं ।

देखें--जि० र० को० पृ०, १२१

५०६. चन्द्रोन्मीलन

Opening : देखें, क्र० ५०५ ।

Closing : .... एव चन्द्रमा से चन्द्रलोक की प्राप्ति और भौम से भौम लोक की प्राप्ति कहना चाहिए ।

Colophon : इति चन्द्रोन्मीलन समाप्तम् । शुभ भवतु ।
शुभमिति फाल्गुन शुक्ला ५ सं० १९९० ।

देखें--जि० र० को०, पृ० १२१ ।

५०७. चन्द्रोन्मीलन

Opening : देखें, क्र० ५०५ ।

Closing : देखें, क्र० ५०६ ।

Colophon : इति चन्द्रोन्मीलनं समाप्तम् ।

५०८. दोहावली

Opening : जिनके वचन विनोद ते प्रगटे शिवपुर राह ।
ते जिनेन्द्र मंगल करो नितप्रति नयो उछाह ।।१।।

Closing : सो सम्यक्त सहित बने व्रत संयम सम्बन्ध ।
तो उपमा सांची फवे सोना और सुगन्ध ।।

Colophon : नहीं है ।

विशेष—यह ग्रन्थ कालिदास रचित है, किन्तु इसकी प्रशस्ति में अजितसेन रचित लिखा है।

देखें—(१) दि० जि. ग्र. र., पृ. १०८।
(२) जि० र० को०, पृ० ३९८।
(३) रा० सू० III, पृ० ८६, २३३।

१ . श्रुतबोध

Opening : देखें—क० ५१७।

Closing : देखें—क० ५१७।

Colophon : इति श्री कालिदासविरचितं श्रुतबोधाख्यं छंदस्संपूर्णम्। माघवदा बल पंचम्यां लिलेख शङ्कनाथिद्यो द्विजन्मा।

५१९. श्रुतपंचमीरासा

Opening : ....सुनहु भव्य एक चित देय सबही सुखकारी ॥१॥

Closing : नरनारी जे रास सुनैइ मन वच रुचिगाय।
सुख संपति आनंद लहै वंछित फल पावइ ॥

Colophon : नहीं है।

५२०. सुभद्रा नाटिका

Opening : आहन्तीमतुलामवाप्य तपसामेकं फलं भूयसाम्,
यो नैराश्य प्रशस्त्रमस्य जगतामभ्यर्हणाया: पदम्।
स्वीचक्रे स्तबमालिवर्तिविभवां सिद्धिश्रियं शाश्वती-
मायस्तीर्थकृतां कृति: स वृषभ: श्रेयांसि पुष्णातु न: ॥

Closing : ... . भद्रं चिरात्र भवतां जिन शासनात्र। नान्दि: एवमस्तु। इतिनिष्क्रान्ता: सर्वे।

Colophon : इति श्री भट्टारगोविन्दस्वामिन: सुनुना श्रीकुमारसत्यवाक्यदेव वरवल्लभोदयभूषणानामार्यमिश्राणमनुजेन कवेर्वद्ध मानस्याग्रजेन महाकविना हस्तिमल्लेन विरचितायां सुभद्रानामनाटिकायां चतुर्थोऽङ्कः।
हस्तिमल्लस्य गोविन्दनन्दनस्य महीयस:।
सूक्ति-रत्नाकरस्यैषा सुभद्रानामनाटिका ॥
समाप्ता चेयं सुभद्रा नाटिका। भद्रं भूयात्।

सत्यवत्वस्य परीक्षार्थं मुक्तं मत्तमतंगजम् ।
यः सरण्यापुरेजित्वा हस्तिमल्लेनिर्कीलितः ।।१।।
कविकुलगुरुणा तेन हि रचितेयं नाटिका सुभद्राख्या ।
'लिखिता' सुमार्यरम्या बुधजनपदसेविना 'शशिना' ।।२।।
समाप्तश्चायं ग्रन्थः वैशाख शुक्ला प्रतिपत् वीर नि० सं० २४५८ ।

देखें—जि० र०, को० पृ० ४४५ ।
Catg. of skt. Ms., P. 304.

५२१. सुभाषित मुक्तावली

Opening : अर्हंतो भगवंतइन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्री सिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंचै ते परमेष्ठिनः प्रदिदिनं कुर्वंतु ते मंगलम् ।

Closing : सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता,
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा ।
पुराकृत कर्म तदेव भुज्यते,
शरीरतो निस्तृपयत्वया कृतम् ।।

Colophon : नही है ।

विशेष—प्रारंभ का श्लोक मंगलाष्टक का है ।

५२२. सुभाषितरत्नसंदोह

Opening : जनयति मुदमंतर्भव्यपाथोरुहाणां हरति तिमिर राशिं या प्रभामानवीव
कृतनिखिलपदार्थद्योतनाभारतींद्रा वितरतु धृतदो षामार्हतीभारतीवः ।।१।।

Closing : आशीर्विध्वस्तकंर्तोर्विपुलशमभृतः श्रीमतः कांतकीर्तिः
सूरेर्यातस्य पारं श्रुतसलिलनिधे देवसेनस्य शिष्यः ।
विज्ञाताशेषशास्त्राव्रतसमितिभृतामग्रणीरस्तकोपः
श्रीमान्मान्यो मुनीनाममितगति मुनिस्त्यक्त निःशेष संगः ।। ।।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २८ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४४५ ।

(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५० ।
(४) आ० सू०, पृ० २१४ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २८८ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २३६ ।
(७) भ० संप्र०, पृ० २१३ ।

५२३. सुभाषितरत्नसंदोह

Opening : कोपंनतं नृपतयो रिपवोपि रुष्टाः ।
कुर्वंति केशरि करीद्रमहोरू गावा ।
धर्म्मं निहत्य भवकानन दाव वन्हि ।
संदोयमत्र विदधाति नरस्य शेषः ॥३॥

Closing : यावच्चंद्रदिवाकरौ दिविगतौ भिन्नस्तमः शार्वरं
यावन्मेरू तरंगिणी परिवृढोनोमुंचत:
स्वस्थितिं यावद्याति तरंग भगुर तनुर्गंगाहिमा-
द्रेर्ध्रुवं
तावच्छास्त्रमिदं करोतु विदुषां पृथ्वीतले सम्मद ॥६॥

Colophon : इत्यमितगति विरचितः सुभाषितरत्नसंदोह संपूर्णतां । संवत् १७८४ वर्षे कात्तिकमासे कृष्ण चतुर्दसी दीपोत्सव दिने श्री युगल मंदिरे लिषतोमं ग्रंथः शुभं भूयात् ।

५२४. सुभाषितावली

Opening : जिनाधीशं नमस्कृत्य संसारांबुधितारकम् ।
स्वान्यस्पहितमुद्दिश्य वक्ष्ये सद्भावितावलीम् ॥

Closing : जिनवरमुखजातं ग्रथितं श्री गणेन्द्रैः,
त्रिभुवनपति सेव्यं विश्वतत्वैकदीपम् ।
अमृतमिव सुमिष्टं धर्मबीजं पवित्रं,
सकलजनहितार्थं ज्ञानतीर्थं हि जीयात् ॥

Colophon : इति श्री सुभाषितावली संपूर्ण ।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० २७ ।
जि० र० को०, पृ० ४४६ ।

आ० सू०, पृ० १४७ ।
रा० सू० II, पृ० ४४, ७४,२८८ ।
रा० सू० III, पृ० ६६, ३३७ ।
Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 701, 712.

५२५. सुभाषितावली

Opening : देखें—क्र० ५२४ ।

Closing : नाभेयादिजिनेश्वराश्चविमला: ख्याता परे ये जिना: ।
त्रैकाल्ये प्रभवा व्यतीतगणना: सौख्याकरा: सौख्यदा: ।।
.... ।

Colophon : नहीं है ।

५२६. सुभाषित रत्नावली

Opening : देखें, क्र० ५२४ ।

Closing : देखें, क्र० ५२४ ।

Colophon : इति श्रीमद्दाचार्य श्री सकलकीर्तिविरचिता सुभाषितावली समाप्ता । संवत् १८३६ मिति आश्विन शुक्ला तृतीया भौमवासरे पुस्तकं लिपिकृतम् दिनसुखब्राह्मणस्य फरकनग्रमध्ये पठनार्थं लालचंदजी स्वपठनार्थम् ।

विशेष—" ॐ नमो सुग्रीवाय हनवंताय (हनुमंताय) सर्व कीटका नक्षायपिपीलका बिलेप्रवेशाय स्वाहा ।"

५२७. सूक्ति-मुक्तावली

Opening : तक्रादिवत् नवनीतं पंकादि च पद्ममृतमिव जलात् ।
मुक्तामणिरिव वंशात् धर्मं सारंमनुष्यभवात् ।।

Closing : नगरे वससि त्वं बाले, अटव्या नेव गच्छसि ।
व्याघ्ररीछमनुष्याणां, कथं जानासि भाषितम् ।।

Colophon : Missing.

५०६. फुटकर कवित्त

Opening : भी (भव) जल माहि परयो चिर जीव सदीव
अतीत भवस्थिति गाठी ।
राम विरोध विमोह उदै वसु कर्मप्रकृति लगि
अति गाठी ॥

Closing : ... . ? अस्पष्ट ।

Colophon : इति कवित्तानि ।

५१०: फुटकर कवित्त

Opening : देखे, क्र० ५०६ ।

Closing : कहूं लताहूं फूल्यी कहूं फूलहूं फूल्यो कहूं,
भौंरहूं भूल्यो कहूं रूप कहूं दिष्ट है ।
सकल निवासी अविनाशी सर्वभूतवासी,
गुपत प्रकासी आपै सिष्ट आपै मिष्ट हैं ।

Colophon : इति श्री तिलोकचंदकृत फुटकर कवित्त सम्पूर्णम् ।
संवत् द्वादशषष्ठहै, अवर असी परमानि ।
माघशुक्ल द्वितीया तिथौ, वार चंद्र शुभ जानि ॥१॥
कच्छेलाल आरे बसै, लिखवायो जिन ग्रंथ ।
नदलाल लेखक सही, समीचीन यह पंथ ॥२॥
गंगातट छपरा नगर, दवलत गंज सुधाम ।
तहां लिखि पूरन कियो, सुंदर रचि विश्राम ॥३॥

५११. नीतिवाक्यामृत

Opening : सोमं सोमसमाकारं, सोमाभं सोमसंभवम् ।
सोमदेवमुनिं नत्वा, नीतिवाक्यामृतं ब्रुवे ॥

Closing : ... ... अनस्याकृतविप्रियस्य हि बालकस्य जनन्येव जीवितव्यकारणम् ।

Colophon : इति सकलतार्किकचक्रचूड़ामणिचुंबितचरणस्य रमणीयपंचपंचाशन्महावादिविजयोपार्जितोर्जितकीर्ति मंदाकिनीपवित्रित त्रिभुवनस्य परमतपश्चरणरत्नोदन्वत: श्रीनेमिदेवभगवत: प्रियशिष्येण वादीन्द्रकालानल श्रीमन्महेन्द्रदेवभट्टारकानुजेन स्याद्वादाचलसिंह तार्किकचक्रवर्तिवादिभयं चाननवाक्कल्लोलपयोनिधि के कुलराजकुंजरप्रभृतिप्रशस्तिप्रशस्तालंकारेण षण्णवतिप्रकरणयुक्तिचिंतामणि त्रिवर्गमहेन्द्रमातलिसजल्पयशोधरमहाराज चरित्र महाशास्त्रवेधसा श्रीमत्सोमदेवसूरिणा विरचितं नीतिवाक्यामृत नाम राजनीतिशास्त्रं समाप्तम् ।

मिति पौष कृष्णदशम्ययां रविवासरान्वितायां शुभसंवत्सर १६१० का मध्ये समाप्तम् । लिखितं ब्राह्मण रामकवारकेन, लिखायतचिरंजीवसाह जी श्री सदासुख जी कासलीवाल जयनगरमध्ये लिखि ।

देखें—जि. र. को., पृ. २१५ ।
Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 660.

५१२. नीतिवाक्यामृत

Opening : देखें—क्र० ५११ ।

Closing : अथाप्तलक्षणमाह । यथानुभूतानुमतश्रुतार्थाविसंवादिवचन पुमानास: यथाभूतं सत्यं अनुमतं लोकसंमत यथाश्रुतार्थ: भुतार्थो यस्य वचनस्य स आप्तपुरुष: ।

५१३. रत्नमंजूषा

Opening : यो भूतमव्यमवदर्थयथार्थवेदी, देवासुरेन्द्रमुकुटपादपद्म: ।
विद्यानदीप्रभवपर्वत एक एव, तं क्षीणकल्मषगणं
प्रणमामि वीरम् ॥

Closing : संकामेकगणोज्ज्वलामभिमतच्छन्दोऽक्षरागारिका-
मेकां श्रेणिमुपक्षिपन्नधरतोऽप्येकैकहीनाश्च का: ।

उर्ध्वं द्विद्विगुह्यांकमेलनमशेषः स्थानकेष्वालिखे-
देकच्छन्दसि खण्डमेरुरमलः पुंनागचन्द्रोदितः ॥१॥

Colophon : एतस्यौक्तक्रमेण प्रस्तारे कृते विवक्षितछन्दसः लगक्रियया सह ततः पूर्वस्थितसकलछन्दसां लगक्रिया. सर्वाः समायान्तीत्यर्थः ॥

देखें— जि० र० को०, पृ० ३२७ ।

५१४. राघवपाण्डवीयम् सटीक

Opening : श्रीमान् शिवानंदनयीशवंशो
भूयादिभूत्यै मुनिसुव्रतो वः ॥
सद्धर्मसंभूतिनरेन्द्रपूज्यो
भिन्नेन्दुनीलोल्लसदंगकांतिः ॥१॥

Closing : केन गुरुणा किमाख्येन दशरथेनेति

Colophon : इति निरवद्यविद्यामंडनपंडितमंडलीजितस्य षट्तर्कचक्रवर्तिनः श्रीमद्विनयचंद्रपंडितस्य गुरुरंतेवासिनो देवनंदिनाम्नः शिष्येण सकल-कलोद्भवचारुचातुरीचंद्रिकाचकोरेण विरचितायां द्विसंधानकवेर्धनंज-यस्य राघवपांडवीयाभिधानस्य महाकाव्यस्य पदकौमुदीनामदधानायां टीकायां नायकाभ्युदयरावणजरासंधवधमावर्णनं नामष्टादशः सर्गः ॥१८॥

देखें—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 654.

५१५. शृंगारमञ्जरी

Opening : श्री मदादीश्वरं नत्वा सोमवंशभुवाधिपः ।
राजाख्य जैनभूपेन वक्ष्ये शृंगारमञ्जरीम् ॥१॥

Closing : तद्भूमिपालपाठार्थमुदितेयमलङ्क्रिया ।
संक्षेपेण बुधैर्ह्येषा यद्यत्रास्ति विशोध्यताम् ॥

Colophon : इति शृंगारमञ्जर्यां तृतीयः परिच्छेदः । श्री सेनगणाग्र-गण्यातपोलक्ष्मीविराजिताजितसेनदेवयतीश्वरविरचितः शृंगारमञ्ज-रीनामालङ्कारोऽयम् । संवत् १९८९ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिक-मासे शुभशुक्लपक्षे चतुर्दश्यां शुक्रवासरे आरानगरे श्रीयुत स्व० देव-कुमारेण स्थापित जैनसिद्धान्तभवने श्री के० भुजबलिशास्त्रिणः अध्य-क्षतायां इदं पुस्तकं पूर्तिमगमत् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ३८६ ।

५१६. शृंगारवर्णव चन्द्रिका

Opening :

जयति संसिद्धकाव्याशापयशाकरैयम् (?)
बहुगुणयुतजीवन्मुक्तिपुंस .... ।
रवाणीसारनिवकाणरम्यो—
जिनपतिकलहंसस्वारसंनीति(?) वक्ष्ये ॥१॥
अमन्दानन्दसन्दोहपीयूषरसदायिनीम् ।
स्तवीमि शारदं दिव्यां सज्ज्ञानफल-
शालिनीम् ॥२॥

Closing :

कीर्तिस्ते विमला सदा वरगुणा वाणी जयश्रीपरा,
लक्ष्मीः सर्वहिता सुखं सुरसुखं दानं विधानं महत् ।
ज्ञानं पीनमिदं पराक्रमगुणस्तुङ्गो नयः कोमलः
रूपं कान्ततरं जयन्तमिव(?)भो श्रीरायभूमीश्वर ॥११७

Colophon : इति परमजिनेन्द्रवदनचन्द्रिरविनिर्गतस्याद्वादचन्द्रिकाचकोर-विजयकीर्त्तिमुनीन्द्रचरणाब्जचञ्चरीकविजयवर्णिविरचिते श्रीवीरनर-सिंहकाभिरायनरेन्द्रशरदिन्दुसन्निभकीर्त्तिप्रकाशके शृङ्गारार्णवचन्द्रिका-माम्नि अलङ्कारसंग्रहे दोषगुणनिर्णयो नाम दशमः परिच्छेदः समाप्तः ।
श्रवणबेलुगुलक्षेत्र निवासि वि० विजयचंद्रेण जैन क्षत्रियेण इदं ग्रंथं समाप्तं लेखीति मगल महा ॥

५१७. श्रुतबोध

Opening :

छन्दसां लक्षणं येन, श्रुतमात्रेण बुध्यते ।
तमहं संप्रवक्ष्यामि श्रुतबोधमविस्तरम् ॥

Closing :

चत्वारो यत्रवर्णाः प्रथमलघवः षष्टकस्सप्तमोऽपि,
द्वौतावत्षोडशाद्यौ मृगमदमुदिते षोडशान्त्यौ तथान्त्यौ ।
रम्भास्तम्भोरुकाण्डे मुनि मुनि मुनिभिर्यत्रकान्ते विरामः,
बाले वन्द्यं कवीन्द्रैःस्सुतनु निगदिता स्रग्धरा सा प्रसिद्धा ॥

Colophon : इति श्रीमदजितसेनाचार्य विरचित श्रुतबोधाभिधानच्छन्दो-लक्षण ग्रन्थः समाप्तः ।

५२८. सूक्ति मुक्तावली

Opening : देखें, क्र० ५२१ ।

Closing : लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये किंचित् किंचित् कर्षणे ।
.... ।

Colophon : **Missing.**

५२९. सूक्ति मुक्तावली

Opening : सिदूरप्रकरस्तप: करिशिर: क्रोडे कषायाटवी
दावार्च्चिर्निचय: प्रबोधदिवसप्रारंभसूर्योदय: ।
मुक्तस्त्रिकुचकुंभ कुंकुमरस: श्रेयस्तरोपल्लव · · ।
प्रोल्लास: क्रमयोर्नखद्युतिभर: पार्श्वप्रभो पातुव: ।।१।।

Closing : अभजदजितदेवाचार्यपट्टोदयाद्रि
द्युमणिविजय-सिंहाचार्य पादारविंदे ।।
मधुकरसमतां यस्तेन सोमप्रभेण
विरचि मुनिपराज्ञा सूक्तिमुक्तावलीयम् ।।

Colophon : इति श्री सोमप्रभसूरि विरचितं सूक्तिमुक्ता वली सपूर्णम् । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३०-३१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४४१, ४४८, ४४९ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५१ ।
(४) आ० सू० पृ. २१४ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २९ ।
(६) रा० सू III, पृ० १००, २३७ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 710, 712.

५३०. सूक्ति मुक्तावली (सिन्दूर प्रकरण)

Opening : देखें—क्र० ५२९ ।

Closing : देखें—क्र० ५२९ ।

Colophon : इति सूक्तिमुक्तावली सिन्दूरप्रकरण: संपूर्ण: । लिखतं मुन्यषेतसी जी तस्य शिष्य ······· तस्य शिष्य सेवक आज्ञाकारी मून्य: चन्द्रभाण गढं रणस्थंभोर मध्ये संवत् १८१३ का ।।श्री।।

५३१. सिन्दूरप्रकरण

Opening : देखें क्र० ५२६ ।

Closing : सोमप्रभाचार्यमभाषयन्न पुंसातम: पंकमपाकरोति ।
तदप्यमुस्मिन्नुपदेशलेशे निशम्यमाने निशमेति नाशम् ।।

Colophon : इति श्री सोमप्रभाचार्यकृत सिंदूरप्रकरण काव्य समाप्त-मिदम् । स्वस्ति श्री काष्ठासघे लोहाचार्याम्नाये भट्टारकोत्तमभट्टारक जी श्री १०८ ललितकीर्त्तिदेवा: तद्पट्टे भट्टारक श्री १०८ राजेन्द्रकीतिदेवा: तेषा पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ मुनीन्द्रकीर्त्तिदेवा. महातपांसि तेषां पठनार्थम् । संवत् १६४७ मध्ये कातिकमासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्यां बुधवासरे आदिनाथबृहज्जिनमंदिरे लक्ष्मणपुरमध्ये प्रात: काले पडितपरमानन्देन रचितमिद शुभ भूयात् । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । शुभं भूयात् लेखक पाठकयो. ।

सन्दर्भ के लिए---क्र० ५२६ ।

५३२. अक्षर केवली

Opening : ॐकारे लभते सिद्धि प्रतिष्ठां च सुशोभना ।
सर्वकार्याणि सिद्धयंति मित्राणां च समागम: ।।

Closing : क्षकारे क्षेममारोग्यं सर्वसिद्धिर्नसंशय: ।
पृछकस्यमहालाभं मित्रदर्शनमाप्नुते ।।

Colophon : इति अक्षरकेवली शकुन: समाप्त: ।

५३३. अक्षरकेवली प्रश्नशास्त्र

Opening : ओं चिलि चिलि मिलि मिलि मातंगिनि ! सत्यं निर्दशय निर्दशय स्वाहा । ककारादि हकारान्तं वर्णमात्रकं विलिखेत् । तत्र

स्वकार्यं चिंतितं यस्त्वया पश्यन् सर्वेषां वर्णमेकं पृच्छय, सफलाफल शुभाशुभं निवेदयति ।

Closing : ह-हकारे सर्वसिद्धिश्च द्रव्यलाभश्च जायते ।
तस्मात्कर्मप्रकर्त्तव्य सफल तस्य जायते ॥४८॥

Colophon : इति अक्षरकेवली प्रश्नशास्त्रम् ।
श्री वेणुपुर (मूडविद्रि) स्थ श्री वीरवाणी विलाससिद्धान्त भवनस्य तालपत्रग्रंथादुद्धृतं श्री लोकनाथशास्त्रिणा आरा 'जैनसिद्धान्त-भवनं कृते' श्री महावीर निर्वाण शक २४७० तमे मार्गशीर्षं शुक्लपक्ष-पूर्णिमायां तिथौ परिसमापितं च । इति मंगलमहः । ११-१२-१९४३ ।-

५३४. अरिष्टाध्याय

Opening : पणमंत सुरासुरमउलि रयणवरकिरणकंत विछुरियं ।
वीरजिनपाय जुयल णमिऊण भणेमि रिट्ठाइं ॥

Closing : अट्ठुट्ठारहछिण्णे जे लद्धहितक्खरे हाऊ ।
पढमो हि रेह अंकं गविज्जए याहिणं तछ ॥

Colophon : इत्यारिष्टाध्याय शास्त्रं जिनभाषितं समाप्तम् । मरणकाण्ड-निमित्तसारशास्त्रं सम्पूर्णम् । संवत् १८३५ मास आषाढ़ वदि ३ शनीवार । शुभं भूयात् । लिखापित पंडित रामचन्द ।

५३५. द्वादसभावफल

Opening : अथ द्वादसभावमध्ये रविफलम् ।

Closing : .... उच्च कन्या को सुग्रीव धन को नीच । इति उच्चनीच सुग्रीव ।
साथ में उच्चनीच चक्र भी है ।

Colophon : नहीं है ।

५३६. गणितप्रकरण

Opening : यत्राप्यक्षरसंदेहं तत्र स्थाप्यं तु दैवरम् ।
त्यजेत्तद्गतवाक्यानि अन्य वाक्यानि शोधयेत् ॥

Closing : .... भिन्ना खविर्जानि रत्न भा नु.मुनिर्णय ... । इत्यपूर्णोऽयं ग्रन्थ. ।

Colophon : श्री वेण्पुरनिवासिना लोकनाथशास्त्रिणा मूडविद्रिस्थ-श्री वीरवाणी विलास-नामक जैन सिद्धान्तभवनस्य ग्रन्थसंग्रहादुद्धृत्य ज्योतिर्ज्ञानविधि आरा जैनसिद्धान्त भवनकृते श्री महावीर शक २४७० पौषमासस्य अमावस्याया दिने लिखित्वा परिसमापितमिति भद्रं भूयात् ।

५३७. ज्ञानतिलक सटीक (२४ प्रकरण)

Opening : नमिऊण नमिय नमिय दुत्तरससारसायरुत्तिन्न ।
सव्वन्न वीरजिणं पुलिदिणि सिद्धसघ च ॥

Closing : . . . अतश्चेतो वसति ११ महादेवान्मात्री (१२)

Colophon : इति श्री दिगम्बराचार्य पंडितश्रीदामनंदिशिष्य भट्टवोसरि विरचिते सायश्री टीकाया ज्ञानतिलके चक्रपूजाप्रकरणम् समाप्तम् ।
शुभमिति आषाढकृष्णा ३ सं० १९९० विक्रमीय । लिपि कर्त्ता रोशनलाल जैन कठूमर (अलवर) निवासी ।
देखे—जि० र० को०, पृ० १४७ ।

५३८. ज्योतिर्ज्ञानविधि

Opening : प्रणिपत्य वर्धमान स्फुटकेवलदृष्टतत्वमीशानम् ।
ज्योतिर्ज्ञानविधानं सम्यक्स्वायभुवं वक्ष्ये ॥

Closing : ललाटलोके कलमा सुधी समा,
खनोरि खिन्नोरिव चेरि दी नवा. ।
कापालिकोपागमसाधुसमि
गाच्छायाहि, मध्यान्हनिमेषमुख्यत: ॥ १३ ॥

Colophon : इति श्री घराचार्य विरचिते ज्योतिर्ज्ञानविधौ श्रीकरणे लग्नप्रकरणं नाम अष्टम: परिच्छेद: ।

५३९. ज्ञानप्रदीपिका

Opening : मद्वीरजिनाधीशं सर्वज्ञं त्रिजगद्गुरुम् ।
प्रातिहार्याष्टकोपेतं प्रकृष्टं प्रणमाम्यहम् ॥

द्वितीये वा तृतीये वा शुक्रश्चेन्नो समागमः ।
अनेन च क्रमेणैव सर्व बक्ष्मि वदेत् स्फुटं ।।

Colophon : इति ज्ञानप्रदीपिका नाम ज्योतिषशास्त्रं समाप्तम् । मंगलमस्तु।।
श्री भारत्यै नमो नमः ।। अयमपि रानूः नेमिराजनामधेयेन लिखितः ।।

देखें—जि० र० को०, पृ० १४८ ।

५४०. केवलज्ञानप्रश्न चूडामणि

Opening : अं क च ट त प य श वर्गाः ।
आ ए क च ट त प य शाः इति । प्रथमः ।।१।।

Closing : जो पढमो सो मरओ, जो मरओ सो होइ अत्ति आ ।
अत्तिल्लेशा पढमो जतण्णामं णत्थि संदेहो ।।

Colophon : समाप्ता केवलज्ञानप्रश्न चूडामणिः ।

५४१. केवलज्ञानहोरा

Opening : अनन्तविद्याविभवं जिनेन्द्रं निधाय नित्यं निरवद्यबोधम् ।
स्वान्तेदुहभिन्दुप्रममिन्द्रवन्द्यं वक्ष्ये परां केवलबोधहोराम् ।।१।

Closing : X X X X हसरे ९५ । हरियट्टि ९६ । हुक्केरि ९७ ।
हरिगे ९८ । हिप्परिगे ९९ । हुरुमुंजि १०० । कोडन–
हुब्बल्लि १०१ । होसदुर्ग १०२ । हिजयिडि १०३ ।
हुबल्लि १०४ । हुणिसिगे १०५ । हनगवाडे १०६
हामाल्लि १०७ । सम्पूर्णम् ।

Colophon : यादृशं पुस्त .... दीयते ।।१।।

देखें—जि. र. को., पृ. ९६ ।
Catg. of Skt. Ms., P. 318.

५४२. निमित्तशास्त्र टीका

Opening : सो जयउ जाए उसहो अणंत ससार सायरुत्तिणो ।
कणाणलेण जेणं लीलाइ निउज्जइ मयणो ।।

Closing : एवं बहुपायारं उप्पायपरंपरायणाऊण ।
रिसिपुत्तेणामुणिणा सर्वाप्पय अप्पगथेण ।।

Colophon : इति श्री एव रिखिपुत्तिकेय संपूर्ण । इति श्री गाथा निमित्त शास्त्र की संपूर्णम् ।

५४३. महानिमित्तशास्त्र

Opening : नमस्कृत्य जिनं वीरं, सुरासुरनतक्रमम् ।
यस्य ज्ञानांबुधेः प्राप्य, किंचिद्वक्ष्ये निमित्तकम् ।।

Closing : चत्तारि एक चत्ता मासावरणे चोत्तमंमदावतमा ।
णाऊण विह विहिणा ततो विवियारण कुणह ।।

Colophon : इति श्री भद्रबाहु विरचिते निमित्त परिसमाप्तम् । शुभं भवतु कल्याणमस्तु । श्री । इति श्री भद्रबाहु विरचिते महानिमित्त-शास्त्रे सप्तविंशतिमाध्यायः समाप्त. ।

देखें - (१) जि. र. को., पृ. २१२, २९ । (भद्रबाहुसंहिता)
(२) दि. जि. ग्र. र., पृ. ११५ ।

५४४. महानिमित्तशास्त्र

Opening : देखें—क्र० ५४३ ।

Closing : देखें—क्र० ५४३ ।

Colophon : देखें—क्र० ५४३ ।

संवत् १८७७ कार्तिकमासे कृष्णपक्षे १ रविवासरे लिखित-मिदं पुस्तकम् । श्रीरस्तु । शुभ भूयात् ।

५४५. निमित्तशास्त्र टीका

Closing : देखें—क्र० ५४३ ।

Closing : देखें—क्र० ५४३ ।

Colophon : देखें—क्र० ५४३ ।

५४६. षट्पञ्चाषिका सूत्र

Opening : प्रणिपत्य रविमूर्ध्ना वराहमिहिरात्मजेन पृथु यशसा ।
प्रश्नेकिथातार्थ ग्रहानां परार्थमुद्दिश्य सद्यशा ॥

Closing : जीवसितौ विप्राणां क्षेत्र: स्यारोप्लगुविशाचंद्र: ।
शूद्राधिपं शशि स्तुत: शनीश्वरशंकरो भवानाम् ॥

Colophon : इति श्री षट्पंचासिकायां मित्रकानाम सप्तमोऽध्याय । इति श्री षट्पंचासिकासूत्र नाम ज्योतिष संपूर्णम् । संवत् द्वीपनयनमुनिचंद्र वत्सरे शालिवाहन गताब्द अंबकमंदभूत कौमदी प्रवर्त्तमाने पौषमासे कृष्णपक्षे चतुर्दशी पोषणवासरे मैत्री नक्षत्रे श्री उग्रसेनपुरे लिखितम् ।
देखें—जि. र. को., पृ. ४०१

५४७. सामुद्रिकाशास्त्रम्

Opening : आदिदेव नमस्कृत्य सर्वज्ञं सर्वदर्शनम् ।
सामुद्रिक प्रवक्ष्यामि शुभांगं पुरुषस्त्रियो: ॥

Closing : पद्मिनी पद्मगंधा च मदगंधा च हस्तिनी ।
शंखिनी क्षारगंधा च शून्यगंधा च चित्रिनी ॥

Colophon : इति सामुद्रिकाशास्त्रे स्त्रीलक्षणं कथनं नाम तृतीय: पर्व: समाप्तोऽयं ग्रन्थश्च ।
देखें जि० र० को०, पृ० ४३३ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 708.

५४८. व्रततिथिनिर्णय

OPening : श्रीमंतं वर्द्धमानेशं भारतीं गौतमां गुरुम् ।
नत्वा वक्ष्ये तिथिनां वै निर्णयं व्रतनिर्णयम् ॥

Closing : क्रममुल्लंघ्य यो नारी नरो वा गच्छति स्वयम् ।
स एव नरक याति बिनाज्ञा गुरुलोपत: ॥७॥

Colophon : इति आचार्य सिंहनंदि विरचित व्रततिथिनिर्णयं समाप्तम। सम्वत् १९६६ चैत्रशुक्ल ६ को लिखी हुई सरस्वती भवन बम्बई की प्रति से श्री ५० के० भुजबली जी शास्त्री की अध्यक्षता में श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए प्रतिलिपि की गई। शुभ मिति ज्येष्ठ शुक्ला १२ रविवार विक्रमसम्वत् १९९१ वीर स. २४६० । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक ।

देखे--जि. र. को, पृ. ३६८ ।

५४९. यात्रामुहूर्त्त

इसमें ग्यारह मुहूर्त्त बोधक चक्र है।

५५०/१. आकाशगामिनी विद्या विधि

Opening : जहां गंगा तथा और नदी के संगम के निकास पर वट का वृक्ष होइ ....।

Closing : - - - णमो लोए सव्वसाहूण । एहा मंत्रराज को एक सो आठ बार जपै ।

Colophon : इति आकाशगामिनी विद्या विधि ।

५५०/२. अम्बिका कल्प ।

Opening : वन्देऽहं वीरसन्नाथम् शुभचंद्रजगत्पतिम् ।
येनाप्यतमहामुक्तिवधूस्त्रीहस्तपालनम् ॥१॥

Closing : समसामधन भरभारंभरं धरधारमरः पुरतः सुखकारम् ।
अतएव भजध्वमतिप्रथितं प्रथित सार्थकमेव जनैः ॥

Colophon : इत्यंबिकाकल्पे चार्ये शुभचंद्रप्रणीते सप्तमोऽधिकारः समाप्त :॥७॥
नाम्नाधिकारः प्रथितोयं यन्त्रसाधनकर्मणः
समाप्त एष मंत्रोऽयं पूर्णं कुर्यात् शुभ वनः ॥१॥
इत्यम्बिका कल्पः ।
... . - शुभमिति कार्तिक कृष्णा ७ मंगलवार विक्रम-सम्वत् १९९४ वीर सम्वत् २४६३ । इति शुभम् । ह० रोशनलाल ।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२१।
जि० र० को०, पृ० १५।
जै० ग्रं० प्र० सं०, I, पृ० १७१।

५५१. बालग्रह चिकित्सा

Opening : श्रीमत्पंचगुरुन्नत्वा मंत्रशास्त्रसमुद्धृत:।
बालग्रहचिकित्सेयं मल्लिषेणेन रच्यते ॥

Closing : ... — ... रक्षामंत्रस्य संजयात् — — ... सन्ध्यायां विक्षिप्तानि पावके।

Colophon : इत्युभयभाषाकविशेखरश्री मल्लिषेणसूरि विरचिते बाल-चिकित्सा दिन-मास-वर्ष संख्याधिकारसमुच्चये द्वितीयोध्याय:।
देखें—जि० र० को०, पृ० २८२।

५५२. बालग्रह चिकित्सा

Opening : अथास्य प्रथमे दिवसे मासे वर्षे बालं वा गृहकातिनन्दना नाम माता तस्य प्रथमं जायते ज्वर: ....।

Closing : ... ...एतेषां चूर्णीकृत्य विजयचूर्ण बालकस्य कुर्यात्।
विशेष—यह प्रति अपूर्ण है।

५५३. बालग्रह शान्ति

Opening : प्रणिपत्य जिनेन्द्रस्य चरणांभोरुहद्वयम्।
ग्रहाणां विकृतेः शांति वक्ष्ये कालनिरोधिनाम्।

Closing : ॐ नमो कुजनीग्रहि-२ बलिग्रस्त २ मुंच २ बालकं स्वाहा।

Colophon : इति बलिविसर्जनमंत्र: इति षोडशोवत्सर: ।१६।
पूज्यपादमिदं लिख्य शिशोर्बलिविधानकम्।
शान्तिकं पौष्टिक चैव कुर्यात्क्रमसमन्वितम् ॥
इति सम्पूर्णम्।
देखें—जि० र० को०, पृ० २८२।

५५४. बालकमुण्डन विधि

Opening : मुन्डनं सर्वजातीनां बालकेषु प्रवर्तते ।
पुष्टिबलप्रदं वक्षे, जैनशास्त्रानुमार्गतः ।।

Closing : ... ... ततः कुमारं स्थापयित्वा वस्त्राभूषणैः अलंकृत्वा गृह-मानीय यक्षादीनां अर्धदत्वा पुण्याहवचनैः पुन संचयित्वा सज्जनान् भोजयेत् इति ।

Colophon : नहीं है ।

५५५. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र

Opening : भक्तामरप्रणत ... ... जनानाम् ।।

Closing : ... ... अंजनातस्कर वंत निर्मक सत्य जानें तौ सर्वसिद्ध होइ सत्यमेव ।।४८।।

Colophon इति श्री गौतमस्वामी विरचिते अड़तालीस ऋद्धिमंत्रगर्भित स्तोत्र भक्तामरमूलमंत्र सम्पूर्णम् ।

५५६. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र

Opening : देखे, क्र० ५५५ ।

Closing : देखे—क्र० ५५५ ।

Colophon : इति श्री गौतमस्वामीविरचिते अड़तालीस ऋद्धिमंत्रगुणगर्भित-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।
सम्वत् १९५० मी० वै० कृ० १० ।

५५७. भूमिशुद्धिकरण मंत्र

Opening : ॐ क्षी भूः शुद्धयत् स्वाहा ।

Closing : ... ... तालुरंध्रेण गतं तं श्रवंतममृतां सुभिः ।

Colophon : नहीं है ।

५५८. बीज मंत्र

Opening : मन वचन काय के जोग की जो क्रिया सो जोग ताके दोय भेद एक शुभ एक अशुभ ।

Closing : वक्तु लालविनोदेन श्री गुरुणां प्रभावतः ।
श्लोकसंख्यामिति ज्ञेयं अष्टाधिकशतद्वयी ॥

Colophon : लालविनोदी ने रचा सस्कृतवानी मांहि ।
वृंदावन भाषा लिखी कछु इक ताकी छाह ॥१८६॥
भूलचूक सब क्षिमा करि लीजो पंडित सोध ।
बालक बुद्धी जानि मोहि मत कीजो उर क्रोध ॥१९०॥
सम्वतसर विक्रमविगत चन्द्ररंध्रदिगचंद ।
माघ कृष्ण आठैं गुरु पूरण जयति जिनंद ॥१९ ॥
इति भाषाकारनामकुलाग्रनामसमस्त लिखितं सम्वत् १८६१ माघवदी ८ गुरौ वार कूं नवीन भाषा वनी सो यही मूल प्रति है कर्त्ता के हाथ की लिषी ।

५५९. बीजकोश

Opening : तेजो भक्तिर्विनयः प्रणवः ब्रह्मप्रदीपवामाश्च ।
वेदोब्जदहनध्रुवमादि (?) ओमितिख्यातम् ॥
मायातत्वं शक्तिर्लोकेशो ह्रीं त्रिमूर्तिबीजेशो ।
कूटाक्षरं क्षकारं मलवरयूं पिण्डमष्टमूर्तिश्च ॥

Closing : सर्वधान्यकृतैर्लाजैस्तद्रजोभिगुंडान्वितैः ।
चन्द्रनागुरुकर्पूरगुग्गुलाज्यघृतादिभिः ॥
पायमाशाक्षतैर्मिश्रैर्ब्रह्मवृक्षोद्भवादिभि· ।
समिद्भिश्च चरेद्धोमं प्रतिष्ठाशान्तिपौष्टिके ॥

Colophon : ॥ इति षट्कर्मविधिः समाप्तः ॥

५६०. ब्रह्मविद्याविधि

Opening : श्रीमद्वीरं महासेन ब्रह्माण पुरुषोत्तमम् ।
जिनेश्वरं च तं वंदे मोक्षलक्ष्म्यैकनायकम् ॥

चन्द्रप्रभं जिनं नत्वा सर्वज्ञं त्रिजगद्गुरुम् ।
ब्रह्मविद्याविधिं वक्ष्ये यथाविद्योपदेशतः ॥

Closing : धेनुमुद्रया सर्वोपचारं कृत्वा पूजाविधि परिसमापयेत् ।

Colophon : नहीं है ।

५६१. चन्द्रप्रभमंत्र

Opening : ॐ चद्रप्रभो प्रभाधीश-चंद्रशेखरचन्द्रभू ।
चन्द्रलक्ष्मंकचन्द्रांग चन्द्रबीजनमोऽस्तु ते ॥

Closing : .... — नित्य जपने ते सर्वमंगल होय है ।

Colophon : नहीं है ।

५६२. चौबीस तीर्थङ्कर मंत्र

Opening : आदिनाथमंत्र । ॐह्रीं श्रीं चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे .. . सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : .... नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्ध होय ।

Colophon : इति श्री मत्र सम्पूर्णम् ।

५६३. चौबीस शासन देवी मंत्र

Opening : मंत्र के अन्त में मरन माहू नवसा अरणं विद्वेषण आकर्षनए सब .... ।

Closing : .... धनार्थी आकर्षन करे ता धन बहुत पावे ।

Colophon : नहीं है ।

५६४. गणधरवलयकल्प

Opening : देवदत्तस्य नामाहंकारेण वेष्टयेत् ।
ततोऽआह्वनेन तस्याध कर्मक्षयार्थं अर्थप्राप्त्यर्थं पद्मासनम् शांतिकपौष्टिक-सारस्वता र्थीवाराम र्नु शत्रुविनाशार्थं क्रूरप्राणिवश्यार्थं च हूंकारासनं।

Closing : अंतश्चन्द्रावृतं हंस इति युतमतो दिक्षु पं वं विदुक्षु।
नालाग्रे भवी तदादावमृतमतिसितं सप्तपत्रं द्विपद्मम् ॥
सं पीताम्भोजपत्रे मुखकमलदले वं घटीरूपयन्त्रम्।
क्षं प्रमं ह्रः ठः पोह्रोग्रे गतमुखवपुः संक्षमेतत्प्रशस्तम् ॥

Colophon : प्रशस्ति संग्रह (श्री जैन सिद्धान्तभवनद्वारा प्रकाशित) पृ० ६८ में सम्पादक भुजवली शास्त्री ने लिखा है कि इसके कर्त्ता अज्ञात हैं, पर निम्नलिखित तीन विद्वान 'गणधरवलय पूजा' के कर्त्ता अब तक प्रसिद्ध हैं :—

(१) भट्टारक धर्मकीर्ति (२) शुभचन्द्र (३) हस्तिमल्ल।

देखें—जि० र० को०, पृ० १०२।

५६५. घंटाकर्ण

Opening : घंटाकर्णमहावीरं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विस्फोटकभयं प्राप्ते. रक्ष रक्ष महाबलम् ॥

Closing : तानेन काले मरण तस्य सर्पेन डस्यते।
अग्निचोरभयं नास्ति घंटाकर्णं नमोऽस्तु ते ॥४॥

Colophon : इति घंटाकर्ण सम्पूर्णम्।

विशेष—साथ में कुछ अन्य मंत्र भी लिखे हैं।

५६६. घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : प्रणम्य गिरजाकान्ता रिद्धिसिद्धिप्रदायकम्।
घंटाकर्णस्य कल्पं वारिष्टकष्टनिवारणम् ॥

Closing : आह्वाननं न जानामि नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि त्वं क्षमस्व परमेश्वरः।

Colophon : इति घंटाकर्णविधि कल्प सम्पूर्णम्। मिति आषाढ़ शुक्ला अष्टमी संवत् १९८५ वर्षे।

देखें—जि० र० को०, पृ० ११३।

५६७. घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : देखें—क्र० ५६६ ।

Closing : देखें—क्र० ५६६ ।

Colophon : इति घंटाकर्णवृद्धि कल्प सपूर्णम् । मिति अगहन कृष्णामावस्यां लिखतं रूपनप्रसाद अग्रवाल अपने पठनार्थम् । सम्वत् १६०३ ।

५६८. घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : देखे, क्र० ५६६ ।

Closing : देखें, क्र० ५६६ ।

Colophon : इति घटाकर्णवृद्धि कल्प सम्पूर्णम् ।
विशेष-सात मंत्रचित्र (मंत्र [illegible]) भी है ।

५६९. हाथाजोड़ीकल्प

Opening : रविभौमशनिवारं, हस्तपुष्य पुनर्वसु ।
दीपोब्दवं होलिकां च, गृहीत्वा हस्त जोडीका ॥

Closing : अदोसो दासतां ज्योति, मनोवाञ्छितदायकम् ।
मस्तके कंठव्याप्तं च, पार्श्वे रक्षं गुणाद्विक ॥

Colophon : इति हाथाजोड़ीकल्प शिवोक्तं सम्पूर्णम् ।

५७०. इष्टदेवताराधन मंत्र

Opening : वश्यकर्मणिपूर्वाङ्ग. कालश्च स्वस्तिकाशनम् ।
उत्तरादिक् सरोजाख्या मुद्राविद्रुममालिका ॥

Closing : .... मोहस्य संमोहनं पापात्पंचनमस्क्रियाक्षरमयी माराधना देवता ॥

Colophon : इति मंत्र इष्टदेवता के आराधना का समाप्तम् ।

५७१. जैनसन्ध्या

Opening : ॐ क्ष्मां भू शुद्धयतु स्वाहा ।

Closing : ॐ भूर्भुवः स्व असिआ उसा हं प्राणायामं करोति स्वाहा । अनामिकां गृहीत्वा त्रिवारं जपेत् ।

Colophon : इति प्राणायाममंत्रः । इति जैनसन्ध्या सम्पूर्णम् ।

५७२. जैन विवाह विधि

Opening : स्वस्ति श्रीकारकं नत्वा वर्द्धमानजिनेश्वरं ।
गौतमादिगणाधीशं वाग्देविं च विशेषतः ॥

Closing : मंगलमय मंगलकरण परमपूज्य गुणवृन्द ।
हम तुम को मगल करो नाभिराय कुलचन्द ॥

Colophon : इति जैनविवाह पद्धति समाप्तम् ।
मिती असाढ वदी १० सं० १९७८ । सहारनपुर ।

५७३. जैनसंहिता

Opening : विज्ञानं विमलं यस्य भासते विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चितांघ्रये ॥

Closing : इक्षोर्धनुः कुसुमकाण्डधनु. शरं च, खेटासिपाशवरदोत्पलमक्ष-सूत्रं । द्वि. षड्भुजाभयफलं गरुडादिरुढा, सिद्धायिनी धरति हेमगिरिप्रभाः श्री ॥

Colophon : इति श्री माघनन्दिविरचितायां जिनसंहितायांयक्षयक्षी प्रतिष्ठा विधानम् ।

इति श्री माघनन्दिविरचित जिनसंहिता समाप्ता ।

उक्त सन्हिता वैदर्भदेशस्थ पूज्य प्रातः स्मरणीय बालब्रह्मचारी-रामचन्द्रजी महाराज का परमप्रिय शिष्य दिगम्बर बालकृष्ण टाकल-कर सईतवाल जैन चम्पापुरी निवासी ने सोलापुर (महाराष्ट्र प्रान्त) में वर्धमान जिनचैत्यालय में अत्यन्तभक्तिपूर्वक लिखकर पूर्ण की । मिती कार्तिक वदी ६ बुधवार शके १८६० वीर सं० २४६५ विक्रम सम्वत् १९९५ सन् १९३८ । कल्याणमस्तु ।

५७४. कर्मदहन मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं सर्वकर्मरहिताय सिद्धाय नमः ॥१॥
Closing : ॐ ह्रीं वीर्यान्तिराय रहिताय सिद्धाय नमः ॥१६४॥
Colophong : इति कर्म्मदहनमन्त्रसम्पूर्णम् ।१६४। श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ १२ रविवासरे सम्वत् १९६५ ।

५७५. कलिकुण्ड मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड ···· ।
Closing : पापात्पंचनमस्कारक्रियाक्षरमयी साराधनादेवता ।
Colophon : इति मंत्र इष्टदेवता के आराधन का समाप्तम् ।

५७६. मंत्र यंत्र

Opening : अघताज के षोडशी जोग सुवर्णमासी सोरा की ढेरी ऊपर धरिये अग्नि देई तब ········· ।
Closing : ········· सिद्धि गुरु श्रीराम आज्ञा काली करि वर एही तेल पलाय अमुकी नरश्वहे घर । मत्र ।
Colophon : नहीं है ।

५७७. नमोकार गण विधि

Opening : रेषयाष्ट गुणं पुन्यं पुत्रजीवेफलैर्दस ।
सतं स्यात्संखमणिभिः सहस्वं च प्रवालकैः ॥
Closing : अंगुल्यग्रेनुयज्जप्तं यज्जप्तंमेरुलंघनात् ।
संख्यासहितं जप्तं सर्व तन्निफलं भवेत् ॥
Colophon : इति जाप्य विधि: समाप्तम् ।

५७८. णमोकार मंत्र

Opening : णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं ॥
णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं ॥
णमो लोए सव्व साहूणं ॥

Closing : समस्त लोकयश्च प्रभु खसतापकैनिर्वस्त्र ॥
मग्नंही करिवार १०८ जपणं जपक्षेवण ॥
पद्मासन पूर्वदिशि शुभरायणु
ओ विचारें सोही वश्यहोवै मंत्रदीन जपणं ॥

५७६. पद्मावती कवच

Opening : ॐ अस्य श्री मंत्रराजस्य परमदेवता पद्मावती चरणांबुजेभ्यो नमः ।

Closing : पाठालं कवर्ता .... — .... परमेश्वरी ॥३३॥

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २३५ ।

५८०. पंचपरमेष्ठी मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं निःस्वेदगुणसंयुक्त श्री जिनेभ्यो नमः स्वाहा ।

Closing : ॐ ह्रीं दंतपवनत्यागमूलगुणसहितसर्वसाधुभ्यो नमः — ।

Colophon : नहीं है ।

५८१. पञ्चनमस्कार चक्र

Opening : येनास्यामंवसंसिण्वामादावुत्पाद्यकेवलम् ॥
कृत्स्नो मन्त्रविधिः प्रोक्तस्तस्मै तंत्राण्ययोक्तवान्,
तस्मै सर्वज्ञदेवाय देवदेवात्मने नमः ॥

Closing : सम्यग्दृष्टिजनस्य एषा विद्या दातव्या । निन्दासूयानास्तिक्ययुक्तानां धर्मद्वेषिणां मिथ्यादृशामपुष्टधर्माणाञ्च न दातव्या । कदाचिद्दत्ते (?) सति (?) तदा महाघातकं अनुरतं भवति ।

Colophon : एवं पञ्चनमस्कारचक्र प्रयाप्तमिति

५८२. पीठिका मंत्र

Opening : ॐ नीरजसे नमः। ॐ दर्पमथनाय नमः।

Closing : ॐ ह्रीं अर्हं नमो भयवो महावीरवड्ढमाणाणम् ।

Colophon : नहीं है।

५८३. सरस्वती कल्प

Opening :
बारहअगं गिज्झा दंसणनिलया चरित्तट्ठहरा ।
चउदसपुव्वाहरण ठावे दव्याय सुखदेवी ।।
आचारशिरसं सूत्रकृतवक्त्रां (सरस्वती) सकण्ठिकाम् ।
स्थानेन समयोद्ध (स्थानांगसमयांघ्रितां) व्याख्याप्रज्ञप्तिदोर्लताम्

Closing :
परमहंसहिमाचलनिर्गता सकलपातकपंकविवर्जिता ।
अमितबोधपयः परिपूरिता दिशतु मेऽभिमतानि सरस्वती ।।
परममुक्तिनिवाससमुज्जवलं कमलया कृतवासमनुत्तमम् ।
वहति या बदनाम्बुरुह सदा दिशतु मेऽभिमतानि सरस्वती।।

Colophon :
मलयकीर्ति कृतामिति संस्तुति सततं मतिमान्नर. ।
विजयकीर्ति गुरुकृतमादरात् समति कल्पलता फलमश्नुते ।।
इति सरस्वति कल्पः समाप्तः

५८४. शान्तिनाथ मंत्र

Opening : ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष .... ।

Closing : चक्रादिसंपदका दाता अचिन्त्य प्रतापी हैं ।

Colophon : नहीं है ।

५८५. सिद्ध भगवान के गुण

Opening : ॐ, ह्रीं मतिज्ञानावरणीकर्मरहित श्री सिद्धदेवेभ्यो नमः स्वाहा।

Closing : ॐ ह्रीं सम्य .... ।

Colophon : नहीं है ।

५८६. सोलह चाली

Opening : श्री जिन नमि फुनि गुरु कों नमो, मन धरि अधिक सनेह ।
सोलह चाली मंत्र की रचौं सुविधि कर एह ।।

Closing : .... — और जो एक घटाईये तो एक-एक घटाइ लिखै ८ के अंक तहीं ।

Colophong : इति श्री १६ चाली पूर्णम् ।

५८७. विवाह विधि

Opening : स्वस्ति श्री कारकं नत्वा वर्द्धमान जिनेश्वरम् ।
गौतमादि गणाधीशं वाग्देवं विशेषतः ।

Closing : ... ... विपुलं नीलोत्पलालं कृतं स्वस्येकोचन,
भूषितैरूपचितैः विद्युत्प्रभा भासुरैः ।

Colophon : Missing.

५८८. यन्त्रमंत्र संग्रह

Opening : यस्तु कोटिसहस्राणि मन्त्रतन्त्राण्यनेकशान् ।
तस्मै सर्वज्ञदेवाय देवदेवात्मने नमः ।।

Closing : अपुष्टधर्माणां च न दातव्यं इदं दृष्ट्वा यदि कदाचिद्ददाति तदा महापातक प्रयुक्तो भवति एवं पंचनमस्कारचक्रं नानाक्रियासाधन स ... यसारं समाप्तमिति ।

Colophon : समाप्तमभूत् ।

५८९. अकलंक संहिता (सारसंग्रह)

Opening : श्री मच्चातुर्निकायामरखचरव रं नृत्यसंगीतकीर्तिम्
व्याप्ता ....शालं सुरपटहादि सत्प्रतिहार्यम् ।
नत्वा श्री वीरनाथं भुवि सकलजनारोग्यसिद्धयै समस्तै-
रायुर्वेदोक्तसारैरिहममल(?) महासंग्रहं संलिखामि ।।

Closing : नालियेय दोष २० बमेय प्रमेह प्रदर चैत्य कामाले पांडु सह सह परिहर । इच्छा पथ्य ।

Colophon : वैद्यग्रंथं परिसमाप्तम् ।

५६०. आरोग्य चिन्तामणि

Opening : आरोग्यं भवरोगपीडितनृणां यच्चिंतना जायते
सं सर्गादिविधायिनं सुरनुतं नत्वा शिवं शाश्वतम् ॥
आयुर्वेदिमहोदधेर्लघुतरं सर्वार्थदं सुप्रभं
वक्ष्येहं चरकादिसूक्तिनिचयैरारोग्यचिंतामणिम् ॥ ॥

Closing : बालादिह प्रमाणेन पुष्यमाला सदीपकम् ॥
प्रगृह्य मुष्टिका भक्तं बलिहृ यं सुमंत्रिणा ।। ॥

इति सूतिका बालरोगाध्याय: स्त्रिंश: बालतंत्रम् ॥ इति श्री भट्टारविष्णुसुतपंडितदामोदरविरचितायामारोग्यचितामणिसंहितायामुत्तर-स्थानं षष्ठं समाप्तम् ॥ एवं ग्रंथसंख्या शत: ॥ १२०० ॥ परिधावि संवत्शरद माघ शुक्लपक्ष १४ चतुर्दशीयु गुरुवारदल्लु । मूडविद्रेयल्ले च्यारि श्रीधरभट्टरुबरदशा आरोग्यचितामणिसंहितेये मंगलमहा ॥ श्री वीतरागाय नमः ॥ करकृतमपराध क्षंतुमर्हति संत: ॥ विजयापुरीश्च भवनस्वर्गावलरोजिन: ॥ श्रीमन्मंदरमारत-कायसदन: श्रीमत्तपोधासन: लोकालोक विभासि बोधनघनोलोकाग्र-सिंहासन: ॥ संधानैक्यकमुद्दुमाणिकजिन: पयातु पायात्सन: ॥

श्रीजिनार्पणमस्तु ॥ श्री शुभमस्तु । श्री वीतरागार्पणमस्तु ॥ ॐ श्री वासुपूज्याय नम: ॥ सिध्यदिनदलूबंजेठु माडुवागल कंदम प्रात: का लदलूमौनदि पांगि ॥

ॐ नम: औषधेभ्य: उज्जावतोमतिषययवीर्य्यं मंकेकम्मिन् कुरुध्वं पच दह दहन धारय तुभ्य नम: कांचीपुरवासिन: । दिमंत्रदि-मंत्रि सिद्धम दुतं छायाशुष्क कमंठं भाडि अजमूर्थदिनस्य जये सर्व्व ग्रहं ॥

देखें— जि० र० को, पृ० ३४ ।

५६१. कल्याण कारक

Opening : श्रीमत्सुरासुरनरेन्द्रकिरीकोटि–माणिक्यरश्मि निकरार्चि-पादपीठ: ।
तीर्थादिपूजितवपुर्वृषभो बभूव साक्षादकारयजग-त्रितयैकबन्धु: ॥१॥

Closing : इति जिनवक्त्रनिर्गत सुशास्त्रमहाम्बुनिधेः सकलपदार्थविस्तृततरंगकुलाकुलतः ।
उभयभवार्थसाधनतट द्वयभासुरतो निसृतमिदं हि शीकरनिभं जगदेकहितम् ॥२॥

Colophon : इत्युग्रादित्यचार्यकृत कल्याणकोत्तरे नानाविधकल्पककल्पनासिद्धये कल्पाधिकारः पंञ्चमोऽध्यायोऽप्यादितः पञ्चविंश परिच्छेदः ।

देखें—जि० र० को., पृ. ७६ ।

५६२. मदनकामरत्न

Opening : मृतमृतमोहाभ्ररोप्यं समांशम्
.... मृतस्वर्णगन्धं (?)
समवं विनिक्षिप्य खल्वे विमर्द्येत्ततः स्वर्णतैलोद्भवेन त्रिवारम् ॥१॥

Closing : अहन्येव रजः स्त्रीणां भवन्ति प्रियदर्शनात् ।
वीर्यवृद्धिकरश्चैव नारीणां रमते शतम् ॥

Colophon : पञ्चबाणरसो नाम पूज्यपादेन निर्मितः ॥

५६३. निदान मुक्तावली

Opening : रिष्टं दोष प्रवक्ष्यामि सर्वशास्त्रेषु सम्मतम् ।
सर्वप्राणिहितं दृष्टं कालारिष्टञ्च निर्णयम् ॥१॥

Closing : गुरौ मंत्रे देवेऽप्यगदनिकरैर्नास्ति भजनम्
तथाप्येवं विद्या अतिनिगदिता शास्त्रनिपुणैः ।
अरिष्टं प्रत्यक्षं सुश्रवमनुमानाद्धसुभगम् विचार्य्यैन्तच्छास्त्रन्निपुणमतिभिः कर्मणि सदा ॥
विज्ञाय यो नरः काललक्षणैरेवमादिभिः ।
न भूयो मृत्यवे यस्माद्विद्वान्कर्म समाचरेत् ॥

Colophon : इति पूज्यापादविरचितायां स्वस्थारिष्ठनिदानं समाप्तम् ।

५६४. रससार संग्रह

Opening : भद्रं भूयात् जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थध्वान्तसंघातप्रभिन्नघनभानवे ॥१॥

Closing : ... ... एवं रत्नत्रयारी ... ... ।

५९५. वद्यकसार संग्रह

Opening : सिद्धोषधानि पश्यानि रावद्वेषरुजां जये ।
जयन्ति यद्वचांशत्र तीर्थकृन्छ्रेस्तुव श्रिये ।।

Closing : पथ्यायोग प्रदीपोऽस्ति पूर्वयोगा शत तथा ।
तथैवाय विजयतां योगन्तिामणिश्चिरम् ।।
नागपूरि यतयो गणराज श्रीहर्षकीर्ति संकलिते ।
वैद्यकसारोद्धारे सप्तमोमिश्रकाध्याय: ।।

Colophon : इति श्रीमन्नागपुरि पतपातया गच्छाय श्रीहर्षकीर्ति संकलिते वैद्यकसारमग्रहे योगचिन्तामणौ मिश्रकाध्याय: समाप्त: । इति योगचिन्तामणि सपूर्ण ।

देखें, जि. र. को., पृ. ३६५ ।

५९६. वैद्यकसार संग्रह

Opening : यत्र चित्रा समयांति सेजासिजतमांसिच
मटीयस्तादय वद चिदानदमयमह ।।१।।

Closing : नागपूरियतयो गणराज श्रीहर्षकीर्ति मकलिते ।
वैदकसारोद्धारे सप्तमकोमिश्रकाध्याय ।।३०।।

Colophon : इति श्रीमन्नागपुरियतपायतपागछाय श्री हर्षकीर्ति संकलिते वैद्यकसारसंग्रहे जोगचितामणौ मिश्रकाध्याय समाप्तम् ।। यादृशं पुस्तक दृष्टा तादृशं लिखतं मया । यदिशुद्धं अशुद्धं वा मम दोषो न वियते ।। मिति भाद्रवा शुक्ल १० भोमवासरे: सवत् १८५० साके १७१५ शुभं भूयात् कल्याणमस्तु ।।

५९७. वैद्य विधान

Opening : मज्ञारस सिंदुर विधि: शुद्धं पारद षड्गुणीक सुरभी जीर्णीतद्र संयुत गंधि नवसरक मणिशिला पवाल टकणं वज्र क्षारकलांश

कैविमलितं मंधार्यमार्थं क्रमात् सर्वं खल्वतले विमर्द्य ममलं योगादि-ष्वसे शुभे कथ्या भास्कर हंस पादि मनलं ।

Closing : स्यात्स्वेदनं तदनुमर्दन मूउनेन, स्यादुत्थिता पतन रोद नियाममानि । संदीपनं गगन भक्षण मानमात्राः सज्जारणा तदनुगर्भगता घृतिश्च ।। बाह्या घृतिः सूतक जारमस्याद्रागस्तथा सारण कर्म पश्चात् । संक्रामणावेद विधिः शरीरा योगः किलाष्टादश वेति कर्म ।।२।।

विशेष—वैसाख कृष्ण द्वितीयायां समाप्तश्च शाली वाहन शक् १८४८ ।।
सन् १९२६ ईश्वी ।

५६८. विद्याविनोदनम

Opening : प्रप्रणम्य जिनं देवं सर्वज्ञं दोषवर्जितम् ।
सर्मवंशीति चतुरं वाराकल्पमकल्पकम् ।।

Closing : व्याध्युर्वीजकुठाररोगदण्ड णाति क्रूरदात्र
भूह्यं वंरूपम वावगाहनमिदं
भूपैरलं सेव्यताम् ।।

Colophon : इति श्रीमदर्हत्परमेश्वर चारु चरणारविन्द गन्धगुणानन्दित मानसाशेषकला शास्त्र प्रवीण परमागमत्रयवेदि प्राणापायागमान्तर समुदित वैद्य शास्त्राम्बुनिधिपारगम सर्व विद्यानन्द मानस श्रीमदकलङ्क स्वामि विरचित महावैद्यशास्त्रे विद्याविनोदाख्ये अवगाहन लक्षणं समाप्तम् ।।

देखें, जि. र. को., पृ. ३५६ ।

५९१: योगचिन्ता मणि

Opening : यत्र विश्वासमायाति, तेजांसि च तमांसि च ।
महीयंस्तदहं वंदे, चिदानंदमव्ययम् ।।

Closing : यथावोगमत्रयायोस्ति पूर्वं योगसतं यथा ।
सर्वेषां विजयतां योगचिन्तामणिश्चिरम्

Colophon : इति श्री नागारावयो गणराजः । श्री हर्षकीर्ति संकलितैः वैद्यकसारो,द्धारे सप्तको मिश्रकाध्यायः ७ । इति श्री योगचिंतामणिवैद्यकशास्त्रं संपूर्णम् ।
संवत् १८६६ मिती ज्येष्ठ शुक्ल ३ शुक्रवार कु सम्पूर्णम् ।
देखें, जि० र० को०, पृ० ३२१ ।

६००. योगचिन्ता मणि

Opening : देखें—क्र० ५६६ ।

Closing : देखें —क्र० ५६६ ।

Colophon : इति श्री योगचिन्तामणिवैद्यकशास्त्र संपूर्णम् । संवत् १६८५ का साल जेष्ट शुक्लमासे एकादशी वृहस्पति । लेखक भुजबलप्रसाद जैनी मुकाम आरा नगरे श्री मनेजर भुजवली शास्त्री के संप्रदाय में लिखा गया । इत्यलं भवतु शुभः ।

६०१. आचार्य भक्ति

Opening : सिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धूतरुषाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसंपूर्णान् मुक्तियुतः सत्यवचनलक्षितभावान् ॥१॥

Closing : ... ... जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।

इति आचार्यभक्तिः ।

देखें—जि. र. को., पृ. २५ ।

६०२. अंकगर्भषडारचक्र

Opening : सिद्धिप्रियैः प्रतिदिन प्रतिभासमानैः,
जन्मप्रबंधमथनैः प्रतिभासमानैः ।
श्री नाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,
प्रायजनैर्वितनुभूपदवीक्षणेन ॥

Closing : तुष्टिः देमनया जनस्य मनसे येन स्थितिविस्तता,
सर्व वस्तुविजानता समवता ये नक्षता कुश्मता ।
भव्यानदकरेण येन महता तत्वप्रणीतिः कृता,
तापं हन्तु जिनः समेयुभविया ततः शतामीशिता ॥

Colophon : इति देवनंदि कृतिरियं कमलबंधडारचक्रं सम्पूर्णम् ।
देखें—जि० र० को०, पृ० १ ।

६०३. अष्टगायत्री टीका

Opening : ॐभूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गोदेवस्य धीमहि धीयो यो नः प्रचोदयात् ॥१॥

Closing : श्री तीर्थराजः पदपद्मसेवा हेवाकिदेवासुरकिन्नरेशः ।
गंभीरगीम्तारतण्वेरेण्य प्रभावदातादददतां शिवं वः ॥१॥

Colophon : इति जैनगायत्री षट् दर्शन अष्टमतयेन वेदात रक्षस्येन तीर्थराजस्तुति समाप्तां ॥ इति अष्ट गायत्री टीका समाप्तं ॥ श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ ६ भौमवासरे श्री सम्वत् १६६२ ।

६०४. आत्मतत्वाष्टक

Opening : अनुपमगुणकोषं छिन्न लोभोरुपाशम् ।,
तनुभुवन समानं केवलज्ञानभानुम् ।
विगमदमरवृंदं सच्चिदानंदकंदं,
जिनबलसमतत्वं भावयाम्यात्मतत्वम् ॥

Closing : त्रिदशनुतमनिद्यं मदभयमलदूरं,
शास्वतानंदपूरं चिदमलगुणमूर्ति
बालचंद्रोरुकीर्ति विदित सकलतत्वं
भावयाम्यात्मतत्वम् ॥

Colophon : नहीं है ।

६०५. आत्मतत्वाष्टक

Opening : यद्वीतराग वरचिन्मय बोधरूपम्,
एत्स्वर्णटंकसदृशं घनसारभूतम् ।
यल्लोकमात्र कथितं नय निश्चयेन,
तच्चिन्तयामि निजदेहगतात्मतत्वम् ॥

Closing : ये चिन्तयंति पदपिंड स्वरूपभेदम्,
सालम्बनं तदपितं मुनयो वदन्ति ।
यन्निर्विकल्प कवलेन समाधिजातम्,
तच्चिन्तयामि निजदेहगतात्मतत्वम् ॥

Colophon : नहीं है ।

६०६. आत्मज्ञान प्रकरण स्तोत्र

Opening : नमोभिः क्षीणपापानां शांतानां वीतरागिणाम् ।
मुमुक्षुणामपेक्षायमात्मबोधो विधीयते ॥१॥

Closing : दिग्देशकाला ···· ··· अमृतो भवेत् ॥६८॥

Colophon : इति श्री गुरुपरमहस श्री दिगम्बराम्नायपद्मसूरिभिः कृते आत्मज्ञानमहाज्ञानप्रकरणं स्तोत्रं समाप्तम् ।

६०७. भक्तामर स्तोत्र

Opening : भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्योतिक दलितपाप तपोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगदा
वाल वनं भवजले पततांम् जनानां ।

Closing : स्तोत्रस्रजं तवजिनेन्द्र गुणैर्निबद्धाम्
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पा ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्त्र
तं मानतुङ्गमवशाः समुपैति लक्ष्मीः ॥

Colophon : यह ग्रंथ वीर सं० २४४० में लिखा गया ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२२ ।
(२) जि. र. को., पृ. २८७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १०६ ।
(४) रा० सू० II, पृ० ४६, ८२ ।
(५) रा० सू० III, पृ० ११, ३५, १०५, २४१ ।
(६) प्र० जै० सा०, पृ० १६० ।
(7) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 676.

६०८. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

इति श्री मानतुंगाचार्यविरचिते भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।
संवत् १८८२ श्रावण द्वितीक वदी ।

युग्म सिद्धि गजमेदनी, संवत्सर इह सार ।
द्वितीक मास नव तिथि, मुनि यक्ष रुक्मिण भरतार ॥१॥
सूर्य सूत शुभवार कहि प्रथम नक्षत्र यही बांण ।
मंड योग पटयत्र मैं, लिख्यो स्तोत्र हित जांण ॥२॥
आदि ५ दोहे ।

६०९. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें क्र० ६०७ ।

Colophon : इति भक्तमर स्तोत्र संपूर्णम् ।

६१०. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुंगाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्रं समाप्तम् ।
संवत् १७६३ भादव वदी ४ दिने लिखतं अमरलो नगरमध्ये ।

६११. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुंगाचार्यकृत भक्तामरस्तोत्रं समाप्तम् ।

६१२. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क० ६०७ ।

Colophon : इति श्री मानतुङ्गाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ।

६१३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क० ६०७ ।

Closing : ... .मंत्र का थोडा थोडा फल विध सुय लिखा ऐसा जानना ।

Colophon : इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाथ स्वामी का स्तोत्र श्री मानतुंगाचार्यविरंचित समाप्तम् ।

६१४. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखे, क० ६०७ ।

Closing : भाषा भक्तामर कियौ हैमराज हितहेत ।
जे नर पढ़े सुभाव सो ते पावै सिवषेत ॥४६॥

Colophon : इति श्री भक्तामर सस्कृतभाषा समाप्तम् ।

६१५. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६०७

Closing : देखे, क० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुङ्गाचार्यविरिचित भक्तामर आदिनाथस्तोत्र संपूर्णम् ।

६१६. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६०७ ।

Closing : देखें, क० ६०७ ।

Colophon : इति भक्तामरसस्कृतसमाप्तम् ।

६१७. भक्तामर स्तोत्र सटीक

Opening : देखें क० ६०७ ।

Closing : ....उस लक्ष्मी को विवश होकर इस स्तोत्र के पठन अध्ययन करने वाले पुरुष के पास आना ही पड़ता है ॥२८॥

Colophon : इति भक्तामरसमाप्त: ।
हस्ताक्षर बालकृष्ण जैन पालम निवासी ।
मिती मार्गशीर्ष शुक्ला ९ गुरुवासरे सम्वत् विक्रम १९७१ इति शुभम् । मङ्गलमस्तु ।

६१८. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।
Closing : देखें क्र० ६०७ ।
इति मानतुङ्गाचार्यकृत भक्तामरस्तोत्रं समाप्तम् ।

१९. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें क्र० ६०७ ।
Closing : देखें, क्र० ६०७ ।
Colophon : इति श्री मातुङ्गाचार्यविरचितं श्री भक्तामरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

६२०. भक्ताम स्तोत्र टीका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।
Colsing : देखें क्र० ६२६ ।
Colophon : इति भक्तामरस्तोत्रस्य टीका पंडित हेमराजकृत संपूर्णम् । संवत् १६१६ तत्र माघकृष्ण ६ बुधवासरे लिखितं अंबाशंकर ।

६२१. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening : चंदन अगर लवंग बालछड़ शालीतिल अरलु
मिठाई दूध घृत इनकी आहुति दशांश होमैन

चक्रेश्वरी प्रसन्नं भवति तत्काल सिद्धि:
चतुष्कोण कंडे मध्ये ह्रीं पंचदश द्वितीये
इर तृतीये लोकपाल चतुर्थे नवग्रहा: पंचमे ।।

Closing : अष्टदलकमलवत् गोलाकारं कृत्वा मध्य ।
ॐह्रीं लक्ष्मी प्राप्त्यै नमः लिखेत् पुन. चतुस्र कृत्वा ।
षोडश श्री कारेणवेष्टि तत्रद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् ।।

Colophon : संवत् १६६७ फाल्गुन शुक्ला १२ रविवासरे लिपिकृतं पं० सीताराम शास्त्री ।।

६२२. भक्तामर ऋद्धि मंत्र

Opening : यः सस्तुत: ····· प्रथमं जिनेन्द्रं ।।२।।

Closing : अष्टदलकमल कृत्वा तन्मध्ये ॐह्रीं लक्ष्मी प्राप्ति नमः लिखित्वाय श्वादसोडश श्रीकारेण वेष्टित तदुपरिमृद्धि मत्र वेष्टित अयंत्र पूजावाय की एकाव्यमृद्धि मत्रवार १०८ नित्य जपवाथी दिन ४८ सर्वसिद्धि मनोवांछित कार्य सिद्धि होय जिह नैव सिकरणो हाय-तिको नाम चितिज मनोवांछित सिद्धि होय ।। इति काव्य सपूर्णम् ।

Colophon : इद पुस्तक लिखित नीलकठदासेन ऋषभदास नामधेय अस्य अर्थ लेखनीकृत ।। सवत् १६३० मिति आश्विन शुक्ल अष्टम्या वासर शुभं भूयात् ।

६२३. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening : देखें क० ६२२ ।

Closing : देखें क० ६२२ ।

Colophon : देखें क० ६२२ ।

६२४. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें—क० ६०७ ।

Closing : देखें—क० ६०७ ।

Colophon : नहीं है ।

विशेष—इसमें सभी काव्यों के मंत्रचित्र (मंडल) बने हुए हैं ।

६२५. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening : ॐ णमो अरिहंताणं ।१। नमो जिणाणं ।२। ॐ णमो तुहिजिणाणं ।३। ॐ नमो परमोहि जिणाणं ।४। ॐ णमो तु सब्बों हि जिणाणं ।५।

Closing : अयं मत्रो महामंत्र: सर्वपापविनाशक: । अष्टोत्तरशतं जप्तो धत्ते कार्याणि सर्वश: ॥

Colophon : नहीं है ।

६२६. भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening : देखें—क्र० ६०७ ।

Closing : देखें—क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुङ्गाचार्यविरचिते भक्तामरस्तोत्र सिद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान संपूर्णम् ।

विशेष—इसमें सभी ऋद्धिमत्रचित्र रगीन हैं ।

६२७. भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening : ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ।

Closing : ईप्टार्थसंपादिनी समोपातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ।१२। इत्याशीर्वाद: ।

Colophon : इति पद्मावती पूजा चारूकीर्तिकृत संपूर्णम् । मिती माघ-बदी ३० वार बुध सवत् १६६६ आरा नगरमध्ये लिखतं भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति अंगरेजी राजधानी मैं काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुस्करगणे लोहाचार्याम्नाये भट्टारक राजेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० मुनीन्द्रकीर्ति समये ।

विशेष—इसमें पद्मावती पूजा भी है ।

६२८. भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening : ... ... ति जन सहसा ग्रहीतुं । अथ रिद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं नमो हिति माणं ... ... ।

Closing : यह चौवालीसमा काव्य मंत्र जपै पढ़ै तै मपुद्र जिहाज न डूबै पारलगै आपदा मिटै काव्य उद्धृत ... ... ।

Colophon : अपूर्ण ।

६२६. भक्तामर टीका

Opening : देखे, क्र० ६०७ ।

Closing : भक्तामर टीका सदा, पढ़ै सुनै जो कोई ।
हंसराज शिवसुख लहै, तसमनवंछित होई ॥

Colophon : इति श्री भक्तामरटीका समाप्ता ॥
देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२३ ।

६३०. भक्तामर टीका

Opening : श्री वर्द्धमानं प्रणिपत्य मूर्ध्ना दोषैर्व्ययेतं ह्यविरुद्धवाचम् ।
वक्ष्ये फल तत् वृषभस्तवस्य सूरीश्वरैर्यत् कथित क्रमेण ॥

Closing : वर्णितः कूर्म्मार्म्मसीनाम्नः वचनात्मयकारि च ॥
भक्तामरस्य सद्वृतिः रायमल्लेन वर्णिता ॥
त्रिभिः कुलकम् ।

Colophon : इति श्री ब्रह्म श्री रायमल्लविरचित भक्तामरस्तोत्रवृत्तिः समाप्ताः ॥

६३१. भक्तामर स्तोत्र टीका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६२९ ।

Colophon : इति श्री भक्तामर जी का टीका उक्त वार्तिक मया बालाबोध हेमराजकृत सपूर्णम् । संवत् १९०८ माघसुदी १० बुधवार लि० पं० जमनादास दिल्ली मध्ये धर्मपुरा आरहमल का मंदिर में ।

६३२. भक्तामर स्तोत्र वचनिका

Opening : देव जिनेसुर बंदिकरि, वाणी गुरु उरलाय ।
स्तोत्र भक्तामर तणी, करूं वचनिका भाय ।।

Closing : संवत्सर शतअष्टदश, सत्तरि विक्रमराय ।
कातिकवदिबुधद्वादशी, पूरण भई सुभाय ।।

Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्य कृत भक्तामर स्तोत्र की देशभाषामय वचनिका समाप्ता । संवत् १६४४ मिति फागुण सुदी १० ।

६३३. भक्तामर स्तोत्र सार्थ

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें क्र० ६२६ ।

Colophon : इति श्री भक्तामर जी की टीका सयुक्त समाप्तम् ।

६३४. भक्तामर स्तोत्र का मंत्र संग्रह

Opening : बुद्धया विनापि ··· ···· सहसा ग्रहीतुम् ।।

Closing : बहु भक्ता ···· ···· ।

६३५. भैरवाष्टक

Opening : अतितीक्ष्णमहाकायं ··· ···· मानमद्रतमोहरः ।।१।।

Closing : अपुत्रो लभ्यते पुत्रं बंधी मुञ्चति बंधनात् ।
राजाग्नि हरिभयं: भैरवाष्टककीर्तिनात् ।।११।।

Colophon : इति भैरवाष्टकम् ।

६३६. भैरवाष्टक स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६३५ ।

Closing : देखें क्र० ६३५ ।

Colophon : इति भैरवाष्टकस्तोत्रसम्पूर्णम् ।

६३७. भैरवपद्मावती कल्प

Opening : ॐकरिविष्टिसंयुक्तैः छ्वजैः यंत्र समामकं
लिखित्वा परिवृक्षाणां बद्धमुच्चाटनं रिपोः ॥१॥

Closing : यावद्वारिधिभूधरतारागणगगनचंद्रदिनपतय
तिष्टतु भुवितावदयं भैरवपद्मावती कल्पः ॥५६॥

Colophon इत्युभय भाषा कविशेखर श्री मल्लिषेण सूरि विरचितै भैरवपद्मावती कल्प समाप्ताः ॥ श्रीरस्तुवाचकानां मिति फाल्गुण कृष्ण चतुर्दश्यां १४ बुधवासरे श्री नीलकंठदास स्व पठनार्थम् संवत् १९५६।

६३८. भैरवपद्मावती कल्प

Opening । श्री मच्चातुर्निकायाऽमर ··· वक्ष्यते मल्लिषेणी. ॥१॥

Closing । जब तक समुद्रपर्वत तारागण आकाश चंद्र और
सूर्य रहें तब तक यह भैरव पद्मावती कल्प भी रहे ॥

Colophon : इति उभयभाषा कविशेखर श्री मल्लिषेणसूरि विरचितै भैरवपद्मावती कल्प की साहित्यतीर्थाचार्य प्राच्य विद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखरशास्त्रीकृत भाषाटीका में गारुडाधिकार नामका दशमपरिच्छेद समाप्तम् । इति संपूर्णम् । शुभमिति कार्तिकशुक्ला ४ वीर-संवत् २४६४ विक्रम संवत् १९९३ ।

देखें—(१) जि. र. को., पृ. २९९ ।
(2) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 678.

६३९. भजन संग्रह

Opening । हो वो सिले मौहे तेरि सगरी ॥टेक॥

Closing । तुम सुमिरत वत रिधि निधि पसरी,
अजितहि वत कर घर पेकरी ॥नि० ॥४॥

Colophon । इति सम्पूर्णम् ।

६४०. भक्तिसंग्रह टीका

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्म्मप्रकृतिसमुदयान् साधितात्मस्वभावान् ।
वंदे सिद्धि प्रसिद्धयै तदनुपम गुणप्रग्रहाकृति तुष्टः ।।

Closing : दुक्खकरकउ कम्मरकउ वोहिलाओ सुगइगमणं समहिमरण जिणगुण संपति होउ मष्टम् ।

Colophon : इति नंदीश्वर भक्तिः । मूल श्लोक ४७० संख्या ।
इति दशभक्ति पाठ की अक्षरार्थ भाषा बालवबोधार्थ पंडित शिवचंद्र कृत समाप्तम् । सवत् १९४८ मार्ग० वदी ६ शनौ शुभं भूयात् ।

६४१. भाषापद संग्रह

Opening : दरसन भयो आज शिखिर जी के ।
बीस कोस पर गिरवर दीसे,
भाजे भरम सकल जी के ।।

Closing : कुंदन ऐसी अनर्थ माया, विधिना जगमें विस्तारी ।
अजठारह नाते हुए, जहां एक नहीं जारी ।

Colophon : इति संपूर्णम् ।

६५२. भूपालचतुर्विंशतिकामूल

Opening : श्री लीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदम्,
वाग्देवी रतिकेतनं जयरमा क्रीडानिधानं महत् ।
स· स्यात्सर्व महोत्सवैकभवनं यः प्रार्थतार्थप्रदं,
प्रातः पश्यति कल्पपादपदमं छाया जिनांघ्रिद्वयम् ।।

Closing : दृष्टस्त्वं जिनराजचंद्रविकसद्भूपेन्द्र नेत्रोत्पले,
स्नातस्त्वन्नुति चंद्रिकांभसि भवद्विद्विच्चकारोत्सवे ।
नीतश्चाद्य: निदाघजः क्लमभरः शांतिमया गम्यते,
देवत्वद्गत चेतसैव भवतो भूयास्पुनर्दर्शनम् ।।

Colophon : इति भूपाल चौबीसी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२५ ।

(२) जि० र० को०, पृ० २६८ ।
(३) रा० सू० III, पृ० १०६, २४२ ।
(४) आ० सू० पृ. १०६ ।
(५) जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ६ ।

६४३. भूपाल स्तोत्र

OPening : देखें—क्र० ६४२ ।

Closing : उपशम इति मूर्तिलंलित चद्राग्मुनीन्द्रा
दजनि विनयचद्रः सच्चकोरैकचन्द्रः ।
जगदमृत सगर्भाः शास्त्रसंदर्भ गर्भा.,
शुचि चरित चरिष्टमोर्यस्पधिन्वति वाच ।।

Colophon : इति श्री भूपालस्तोत्र संपूर्णम् । मिति प्रथमभाद्रपद कृष्णा प्रतिपक्षभृगो संवत् १६४७ शुभ भवतु ।

सन्दर्भ के लिए देखें - क्र० ६४२ ।

Catg. of Skt & Pkt. Ms , 678

६४४. भूपालस्तोत्र टीका

Closing : देखें—क्र० ६४२ ।

Closing : ...... ग्रीष्मभवः प्रस्वेदभर: शांतिनीतः समाप्तिं प्रापित भो देव मया त्वगद्‌तचेतसारावगम्यते भवनः तवपुनर्दर्शनं भूयात् अस्तु इत्येवस्तवनकत्रयि चित्रं त्वय्येवगतं चेतो यस्य सः तेन ।

Colophon : इति भूपालस्तोत्र टीका सम्पूर्णम् ।

६४५. भावनाष्टक

Opening : मुनिस्तुत्य चिन्त्तत्वनीरेजभृंगम्,
परित्यक्त रागादिदोषानुसंगम् ।
जगद्वस्तु विद्योतज्ञानरूपम्,
सदा पावनं भावयामि स्वरूपम् ।।

Closing : स्वचिद्भावना संभवानन्तशक्ति,
निरासं निरीस परिप्राप्यमुक्तिम् ।

त्रिलोकेश्वरं निश्चलं नित्यरूपम्.
सदा पावनं भावयामि स्वरूपम् ॥

Colophon : नहीं है ।

६४६. चन्द्रप्रभ स्तोत्र

Opening : शशांकशंखगोक्षीरहारधवलगात्राय ' ' ' इत्यादिना ।

Closing : ... ' ' घेघे आं क्रो क्षी क्षूं क्षी क्षां ज्वालामालिनिज्ञापतये स्वाहा ।

Colophon : इति चंद्रप्रभस्तोत्र ज्वालामालिनि स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १२० ।

६४७. चन्द्रप्रभशासनदेवी स्तोत्र (ज्वामामालिनी स्तोत्र)

Opening : देखें --क्र० ६४६ ।

Closing : घे घे, खः खः खः खः ह्रां ह्रीं ह्रां-४ आं क्रौं ह्रौं क्षां क्षीं क्ष्वीं क्ली क्लूं ह्रीं ह्री क्ष्वी ज्वालामालिन्या ज्ञापयति स्वाहा ।

Colophon : इति श्री चद्रप्रभुशासनदेव्या स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० १४१ ।
(२) रा० सू० III, पृ० २३६ ।

६४८. चतुर्विंशति जिन स्तोत्र

Opening : आद्योवर्षसहस्त्रमौनमगमत्प्राप्तो जिनो द्वादशः,
द्विसप्तैव च संभवोष्ट च दशः श्री नंदनो विंशतिः ।
छद्मस्थो सुमतिश्चषष्ठजिनपः षण्मा समासत्रस्थितिः,
वर्षाण्यत्रनवैव सप्तमजिनो मासत्रयं चद्रमः ॥

Closing : एते सर्वेजिना शतक्रतुसमभ्यर्च्यक्रमांभोरुहाः ।
तद्दाम्यविरूद्वबाध्यरहिताः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशतिस्तोत्र संपूर्णम् ।

६४६. चतुर्विंशति जिन स्तोत्र

Opening : आदिनाथं जगन्नाथं अरनाथं तथा नमि ।
अजितं जितमोहारि पार्श्वं वन्दे गुणाकरम् ॥१॥

Closing : तद्गृहे कोटिकल्याणश्रीविलसति लालया ।
क्षुद्रोपद्रवभूतादि, नश्यति व्याधिवेदना ॥७॥

Colophon : इति चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रं समाप्तम् ।

६५०. चतुर्विंशति जिन स्तुति

Opening : सद्भक्त्यानतमौलिनिर्जरवरभ्राजिष्णुमौलिप्रभा,
समिश्रारुण दीप्ति शोभिचरणा भोजद्वय: सर्वदा ।
सर्वज्ञ: पुरुषोत्तम: सुचरिते धर्मोथिनां प्राणिनां,
भूयाद्भूरिविभूतये मुनिपति: श्री नाभिसूनुर्जिन: ॥

Closing : यस्या: प्रसादात्परिपूर्णभावं भूत: सुनिर्विधूतयास्तबोधं ।
जगत्त्रयी जगुहितैकनिष्टा वाग्देवतासाजयतादजस्त्र ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिनस्तुति: ।

६५१. चरित्र भक्ति

Opening : येनेन्द्रान् भुवनत्रयस्य — ·· रभ्यर्चनम् ॥१॥

Closing : ···· — समाहिम णं जिणगणमपत्तिहोउ मज्भ ।

Colophon : इति चारित्रभक्ति: सम्पूर्णम् ।

६५२. चौबीस तीर्थङ्कर स्तोत्र

Opening : सिद्धप्रियैंप्रतिदिन प्रतिभासमानै: — ···· ··· ।
— ···· ···· प्राप्तेजनैर्विनुतनुपदवीक्षणेन ॥

Closing : तुष्टिं देशनया जनस्य मनसे येनस्थितिदत्सिता ।
········· शुभधियाताल सतामीशित: ।

Colophon : इति श्री देवनंदयाचार्यं कृत चौबीस महाराज आजमक काव्यमई महास्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि० जि. ग्र. र., पृ. १२८।
(२) जि० र० को०, पृ० ११४।

६५३. चिन्तामणि अष्टक

Opening : वंदावनि सुरेन्द्रनमौलिसुधामवदांभोनिधिमौक्तिकचारुमणि-
प्रजधृष्टपदम्।
श्री चिंतामणिमेत्यमहाभि सुराब्धिजलैर्कनसुधाकरचंद तदाप्त-
यशो विमलै: ॥

Closing : स्याद्वादामृतासिक्तफणि ... ... सुवांछितभावभृतैः ॥

Colophon इत्यष्टकम्।

६५४. चिन्तामणि स्तोत्र

Opening : श्री सुगुरु चिंतामणि देवसदा मुझसकल मनोरथपूर्णमुदा।
कुलकमला दूरन होयकदा जपता प्रभुपारस नाम यदा ॥

Closing : अमचोप्रभु पारस आसफलो भणतापसवासर वास भलो।
मन मित्र सुकोमल होयमिलो कीरति प्रभु पारसनाथ किये ॥

Colophon : चिंतामणि स्तोत्र संपूर्णम्।

६५५. चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : जगद्गुरुं जगद्देवं जगदानंददायकं।
जगद्वंद्यं जगन्नाथं श्री पार्श्वसंस्तुवे जिनं ॥१॥

Closing : धर्मस्वस्तिकनैवेद्य ... ... अर्चयाम्यहम्।
इति दिग्कालार्चनविधानम्।

Colophon : इति चिंतामणिपूजाविधि सम्पूर्णम्।
संवत् १८५३ वर्षे कार्तिककृष्णा एकादशी कौं सम्पूर्णं भये।
लिखतं धारावीत जैसवाल पठनपाठन निमित लिपी।

६५६. दशभक्त्यादि महाशास्त्र

Opening : नमः श्री वर्द्धमानाय चिद्रूपाय स्वयम्भुवे ।
महज्जात्मप्रकाशाय सप्तसमार भेदिने ।।

Closing : वर्द्धमानमुनीन्द्रेण विद्यानन्दार्यसूनुना ।
लिखित दशभक्त्यादिदर्शन जनतार्थं [illegible] ।।

Colophon : इत्यय समाप्ता ग्रंथ । अस्तु ।

६५७. देवी स्तवन

Opening : श्री मद्दे प्यतिप्रसन्नमुकुट प [illegible] रत्नप्रभा,
माला [illegible] निनादपक्षप मोत्कृष्टप्र [illegible] भासुरा ।
या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावती भारती,
मन्त्रागमशेषविस्तरगत सेवागमीताम्यितम् ।।

Closing : इदमपि भगवर्त्तिवृत्तपुरालकारलकृतम् ।
स्तोत्र कठ करोति यश्च दिव्य श्रीस्त समाश्रयेति ।।

Colophon : इति देव्याः स्तवनम् ।

६५८. एकीभाव स्तोत्र

Opening : एकीभावं गत इव · ··· प्रगतापहेतुः ।।१।।

Closing : वादिराजमनु ·· ··· मनुभव्यसहाय. ।।२६।।

Colophon : इति श्री वादिराजेविरचित एकीभाव महास्तवन समाप्तः ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३० ।
(२) जि० र० को०, पृ० ६२ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० ११० ।
(४) रा० सू० II, पृ० ४६, १०७, ११२, २७४ ।
(५) रा० सू III, पृ० १०१, १२३, २३८, ३०८ ।
(६) आ० सू०, पृ० १६ ।
(7) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 630

६५९. एकीभावस्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon : इति वदि (राज) मुनि कृत एकीभाव स्तोत्र सम्पूर्णम्।

६६०. एकीभाव स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—ख० ६५८ ।

Colophon : इति श्री वादिराजकृतं एकीभावस्तोत्रं संपूर्णम् ।

६६१. एकीभावस्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : शब्दिकानां मध्ये तार्किकानां मध्ये कवीश्वराध्णां मध्ये भव्यसहायानां मध्ये वादिराज प्रधान इत्यर्थः ।

Colophon : इति वादिराज कृतं एकीभाव टीका संपूर्णम् ।

६६२. एकीभाव स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon : इति श्री एकीभावस्तोत्रं समाप्तम् ।

६६३. एकीभाव स्तोत्र सटीक

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : भव्यसहायः तं वादिराजं अनुवर्तते भव्यानां सहायः संघातः वादिराजा न्यून इत्यर्थः । वादिराज एव शब्दिकः नान्यः, वादिराज एव तार्किकः नान्यः, वादिराज एव काव्यकृत. नान्यः, वादिराज एव भव्यसहायः नान्य; इति तात्पर्यार्थः अनुयोगे द्वितीया ।

Colophon : इति वादिराजसूरि विरचितं एकीभावस्तोत्रटीका सम्पूर्णम् । भूयात् ।

६६४. गौतम स्वामी स्तोत्र

Opening : श्रीमद्देवेन्द्रवृंदा ... ... पार्श्वनाथोऽनिशम् ।।१।।

Closing : इति श्री गौतमस्तोत्रमंत्रं ते सारतोन्हवम् ।
श्री जिनप्रभसूरिस्त्वं भवसर्वार्थसिद्धये ।।६।।

Colophon : इति श्री गौतमस्वामी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६६५. गीतवीत राग

Opening : विद्याव्याप्तसमस्तवस्तुविसरो विश्वैर्गुणैर्भासुरो,
दिव्यश्रव्यवचः प्रतुष्टनृसुरः सद्ध्यानरत्नाकरः ।
यः संसारविषाब्धिपारसुतरो निर्वाणसौख्यादरः
स श्रीमान वृषभेश्वरो जिनवरो भवत्याशरान् पातु नः ।।१।

Closing : गगेयवशाम्बुधिपूर्णचन्द्रो यो देवराजोऽजनि राजपुत्रः ।
तस्यानुरोधेन च गीतवीतराग-प्रबन्ध मुनिपश्चकार ।।१।।
द्राविड़देशविशिष्टे सिंहपुरे लब्धशस्तजन्मासौ ।
बेलगोलपण्डितवर्यश्चकार श्रीवृषभनाथवरचरितम् ।।२।।
स्वस्तिश्रीबेलगुले दोर्बलिजिननिकटे कुन्दकुन्दान्वये
नोऽभूत्स्तुत्यः पुस्तकाङ्कश्रुतगुणाभरणः ख्यातदेशीगणार्यः
विस्तीर्णाशेषरीतिप्रगुणरसभृतं गीतयुग्वीतरागम्,
शस्तादीशप्रबन्धं बुधनुतमतनोत् पण्डिताचार्यवर्य ।।

Colophon : इति श्रीमद्रायराजगुरुभूमण्डलाचार्यवर्यमहावादवादीश्वरराय-वादिपितामहसकलविद्वज्जनचक्रवर्त्तिबल्लालरायजीवरक्षापाल (?) कृत्या द्यनेकविरुदावलिविराजच्छ्रीमद्बेलगोलसिद्धसिंहासनाधीश्वर श्रीमद-भिनवचारुकीर्त्तिपण्डितार्चवर्यप्रणीतगीतवीतरागाभिधानाष्टपदी समाप्ता

६६६. गोम्मटाष्टक

Opening : तुभ्यं नमोऽस्तु शिवशंकरशंकराय,
तुभ्यं नमोऽस्तु कृतकृत्यमहोन्नताय ।
तुभ्यं नमोस्तु घनघातिविनाशकाय,
तुभ्यं नमोस्तु विभवे जिनगुम्मटाय ।।

Closing : तुभ्यं नमो निखिललोकविलोकनाय,
तुभ्यं नमोस्तु परमार्थगुणाष्टकाय ।
तुभ्यं नमो वेलुगुलाधिसाधनाय,
तुभ्यं नमोस्तु विभवे जिन गुम्मटाय ।।

Colophon : नहीं है ।

६६७. गुरुदेव की विनती

Opening : जयवंत दयावंत सुगुरुदेय हमारे ।
संसार विषमसार ते जिन भक्त उद्धारे ।।टेक।।

Closing : इहलोक का सुख भोग सुरलोक में जावे,
नरलोक में फिर आयकैं निर्वान कों पावै ।।
.... जयवंत दयावंत ।।३२।।

Colophon : इति गुरावली संपूर्ण ।

६६८. जिनचैत्य स्तव

Opening : वंदौं श्रीजिन जगतगुरु, उपदेशक शिवपंथ ।
सम श्रुतिशासन तें रचूं, जिन चैत्यस्तव ग्रन्थ ।।

Closing : अठारै सै के ऊपरैं, लग्यो वियासीसाल ।
गुरु कातिग वदि अष्टमी, पूरण कियो सुकाल ।।

Colophon : इति श्रीजिनचैत्यस्तव ग्रन्थ दिवान चंपाराम कृतो समाप्ता शुभमस्तु। संवत् १८८३ मिति कार्तिक कृष्ण अष्टमी गुरुवार लिखतम् खरगराय श्री वृंदावन मध्ये लिखाइतं श्री दिवान चंपाराम जी ।

६६९. जिनदर्शननाष्टक

Opening : अद्याखिलं कर्मजितं मयाद्यमोक्षो न भूतो ननुभूतपूर्वः ।
तीर्णोभवार्णोनिधिरद्यघोरो जिनेन्द्रपादांबुजदर्शनेन ।।

Closing : अद्याष्टकं निमितमुक्तसारैः,
कीर्तिस्वनांतैरमलैर्मुनीन्द्रैः ।

यो धीयते नित्यमिदं प्रकीर्त्तं,
पद्मामवो ते परमालभंते ॥

Colophon : इति जिनदर्शष्टकं समाप्तम् ।

६७०. जिनेन्द्र दर्शन पाठी

Opening : णमो अरिहंताणं .... णमो लोए सव्वसाहूण ॥

Closing : जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्मरोगं जरातंकं हन्यते जिनदर्शनात् ॥

Colophon : इति दर्शन समाप्तः ।

६७१. जिनेन्द्र स्तोत्र

Opening : दृष्टं जिनेन्द्रभवनं .... विराजमानम ॥१॥

Closing : श्रेय: पदं ... . प्रमानुष. ॥११॥

Colophon : इति दृष्टं जिनेन्द्रस्तोत्रं संपूर्णम् ।

६७२. जिनवाणी स्तुति

Opening : माधुरी जिनेसुर वानी, गुरु गनधर करत बखानी हो ॥

Closing : चारों जोग प्रयोग कौ, औ पुरान परमान ।
अब नमत नरिंद्रप्रीतनित, सदा सत्य सरधान ॥

Colophon : इति संपूर्णम् । माघशुक्ल १ सं० १६६३ सोमवार शुभं ।
हरीदास प्यारा ।

६७३. जिनगुण स्तवन

Opening : तवगतभवतापादौ प्रणम्य सम्यग्जिनेन्द्रवरपादौ ।
भक्तागुणमम्बुदधे: विर्मजिरपिरपि स्तुतिमहं विदधे ॥१२॥

Closing : इत्यर्हन्तं स्तुत्वा स्वानालोचयतिय. सुधी दोषान्
तद्भवमेनस्तस्मिन्बंधनोपैति रज इवास्निग्धे: ॥

Colophon : इति जिनगुणस्तवनपूर्विकालोचना समाप्तम् ।

६७४. जिनगुण सम्पत्ति

Opening : विबुधपति खपतिनरपति धनदोरगभूतयक्षपति महितम् ।
अतुलसुखविमलनिरूपमशिवमचलमनामयम् ॥

Closing : इक्षो विकाररसप्राप्त गुणेन लोके,
पिष्टादिक मधुरतामुपयाति यद्वत् ।
तद्वच्च पुण्यपुरुषैरुषितानि नित्यम्,
जातानि तानि जगतामिह पावनानि ॥
इत्यर्हतांश भवतां च महामुनीनां,
प्रोक्ता ममात्र परिनिर्वृति भूमिदशा. ।
ते मे जिनाजत मया मुनयश्च शान्ता,
दिश्या सुराशुसुगति निवद्यसौख्यम् ॥

Colophon : नही है ।

६७५. जिनस्तोत्र

Opening : उपकनेमुनेर्श्वस भवनत्रयमान्वित: ।
विरतो विषयासये प्रविष्ट: कैकसीसुत: ॥

Closing : मासमात्रदशोस्योपि स्थिस्त्वाकैलाशमर्हत्ते ।
प्रणिवसतिमदेशं प्रपपावमि वांछितम् ॥

Colophong : नहीं है ।

६७६. जिनपंजर स्तोत्र

Opening : परमेष्ठिनमस्कारं सारं नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्र पंजराभं स्मराम्यहम् ॥

Closing : श्री रूद्रपल्लीय वरेण्य गण्ये देवप्रभाचार्य पदाजहं स: ।
वादीन्द्रचूडामणिराष जैनी जीयाद श्री कमलं प्रभाख्य: ।।

Colophon : इति श्री जिनपंजरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६७७. जिनपंजर स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्री अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नम: ।।

Closing : यस्मिन्गृहे महाभक्त्या यंत्रोय पूजते बुध: ।
भूतप्रे .... ।।

Colophon : Missing.

६७८. जिनपंजर स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रा श्री ह्रू अर्हद्भ्यो नमो नम: ।

Closing : प्रात्तमपुच्छीय लक्ष्मीमनोवछितपूरानाय ।।२४।।

Colophon : इति जिनपंजर संपूर्णम् ।

६७९. ज्वालामालिनी स्तोत्र

Opening : ॐ नमो भगवते श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशांकशंखगोक्षीर-
हारधवलगात्राय घातिकर्मनिर्मूलछेदनकराय .... ।

Closing : .... हरू हरू स्फुत स्फुट: घे घे आं क्रो क्षी क्षूं क्षूं क्षी क्षीं
ज्वालामालिनि ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति श्री ज्वालामालिनि स्तोत्रं संपूर्णम् । शुभमस्तु ।

६८०. ज्वालामालिनी देवी स्तुति

Opening : देखें--क्र० ६७९ ।

Closing : देखें—क्र० ६७९ ।

Colophon: इति श्री चंद्रप्रभतीर्थङ्कर की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल-
दु:खहर मंगलकर विजयकरस्त स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६८१. ज्वालामालिनी कल्प

Opening : चंद्रप्रभजिननाथं चंद्रप्रभमिंद्रसंविमहिमानम् ।
ज्वालामालिन्यर्चितचरणसरोरुहद्वयं वंदे ॥१॥

Closing : ... उरगक्रूरग्रहशांतिं कुरु—अनेन मंत्रेण पुष्पान् क्षिपेत् ।

Colophon : संपूर्णं ।

देखें—Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 647.

६८२. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिंदितमंङ्घ्रिपद्मं ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु ।
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥

Closing : जननयनकुमुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया: अचिरात् मोक्षं प्रपद्यंते ॥

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिरस्तोत्रम्

देखें —(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३७ ।
(२) जि० र० को, पृ० ८० ।
(३) रा० सू० II, पृ० ४६, ६७, १०६ ।
(४) रा० सू० III, पृ० १०१, ११२ ।
(५) आ० सू०, पृ० २४ ।
(६) प्र० जै० सा०, पृ० ११३ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 633

६८३. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें क्र० ६८२ ।

Closing : देखें क्र० ६८२ ।

Colophon : इति कल्याणमंदिरजीसंस्कृतसमाप्त म् ।

६८४. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति कल्याणमंदिर स्तोत्रं संपूर्णम् । संवत् १७३१ वर्ष मार्गशीर्षमासे कृष्ण चतुर्दशां(श्यां) चंद्रवासरे लिपिकृता केशवसागरेण ।

६८५. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तवनं संपूर्णम् । पं० हेममंडनगणियोग्यं चंद्रजय गणिना लिखितम् ।

६८६. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्रं समाप्तम् । लिखतं जमनादास सुश्रावककुले हसार नगरे स्थानं संवत् १८८७ मगशिर सुदी १२ सोमवारे ।

६८७ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति श्री कुमुदचन्द्राचार्य कृत श्री कल्याणमंदिर स्तोत्रम् ।

६८८. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : .... पुनः किं भूताः भव्या विगलितमलनिचयाः स्फुटितपापसमूहाः ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर टीका समाप्ता सम्वत् १६२३ ।

६८९. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६८२ ।
Closing : देखें, क० ६८२ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिर स्तोत्र संपूर्णम् ।

६९०. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६८२ ।
Closing : देखें, क० ६८२ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिर स्तोत्रं समाप्तम् ।

६९१ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६८२ ।
Closing : इह कल्याणमंदिर कियो कुमुदचन्द्र की बुद्धि ।
भाषा करत बनारसी कारणसमकित सुद्धि ॥
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र भाषा समाप्तम् ।

६९२ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६८२ ।
Closing : देखें क० ६८२ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिरस्तोत्रसंपूर्णम् ।

६९३ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६८२ ।
Closing : देखें, क० ६८२ ।
Colophon : इति श्री कुमुदचंद्रमुनि विरचितं कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

६९४ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : परम जोति परमात्मा परम ज्ञान परवीन ।
वंदू परमानंदमय घट घट अंतरलीन ॥१॥

Closing : प्रगटरलगिनं तैं ... . ।

Clophon : अनुपलब्ध ।

६९५ कल्याणमंदिर वचनिका

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : .... मल कहिये पाप के निचया: समूह ही तैं भव्य जैसे हैं।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र भाषाटीका समाप्ता ।

६९६. कल्याण मन्दिर सार्थ

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६९५ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर जी की टीका सहित समाप्तम् ।

६९७. क्षमावणी आरती

Opening : उनतीस अंग की आरती, सुनो भविक चितलाय ।
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर भो (भव) पाय ।।

Closing : दोष न कहियो कोई, गुणग्राही पढ़े भावसो ।
भूल चूक जो होइ, अरथ विचारि के सोधियो ।।२३।।

Colophon : इति क्षमावणी की आरती भाषा सम्पूर्णम् ।

६९८. क्षेत्रपाल स्तुति

Opening : जिनेन्द्र धर्म के सदैव रक्षपाल जी ।
बड़े दयाल भक्तपाल क्षेत्रपाल जी ।।टेक।।

Closing : जिनेन्द्र द्वार रक्षपाल क्षेत्रपाल जी,
तुम्हें नमें सदैव भव्यवृंद भाल जी ।
कृपा कटाक्ष हेरिए अहो कृपाल जी
हमे समस्त रिद्धि सिद्धि द्यो दयाल जी ।

Colophon : इति क्षेत्रपाल जी की सैर पूर्ण ।

६९९ काष्ठासंघ गुर्वावली

Opening : सम्प्राप्तसंसारसमुद्रतीरं, जिनेन्द्रचन्द्रं प्रणिपत्य वीरम् ।
समीहितार्थं सुमनस्तरूणां, नामावलिं वक्ष्मित मां गुरुणाम् ।।

Closing : ....सुसदि विचित्यार्थवस्त्रं महिमातटिमारोपि निपुणम् ।

Colophon : नहीं है ।

७००. लघु सहस्त्र नाम

Opening : नमः श्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञाय महात्मने ।
वक्ष्ये तस्य नामानी मोक्षसौख्याभिलाषया। ।१।।

Closing : नामाष्टसहस्राणि ये पठंति पुनः पुनः ।
ते निर्वाणपदं यान्ति मुच्यते नात्रसंशयः ।।४०।।

Colophon : इति लघुसहस्रनाम संपूर्णम् ।

७०१. लघु सहस्त्र नाम स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७०० ।

Closing : देखें, क्र० ७०० ।

Colophon : इति श्री. वीतराग सहस्रनामस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

७०२. लक्ष्मी आराधन विधि

Opening : ॐ रीं श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मी सर्वसिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

Colsing : इस मंत्र सो चावल अक्षत मंत्रिके जिस्मे राखै तरे वस्तु घटै नहीं ।

७०३. महालक्ष्मी स्तोत्र

Opening : आद्यं प्रणवलक्ष्मींमायाकामाक्षरं तथा ।
महालक्ष्मी नमस्यांते मंत्रोऽयं दशवर्णकः ।।१।।

Closing : ताराराशिरसौ प्रसूय भवती.... ...मध्येमहत्वं संस्थितं ॥१२॥

Colophon : इति श्री महालक्ष्मीस्तोत्रसंपूर्णम् ।

७०४. महालक्ष्मी स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७०३ ।

Closing : न कस्यापि हि मंत्रीयं कथनीयं विपश्चिता ।
यशोधर्मधनप्राप्त्यै. सौभाग्य भूतिमिच्छिता ॥

Colophon : इति श्री महालक्ष्मीस्तोत्रसंपूर्णम् ।

७०५. मंगलाष्टक

Opening : श्री मन्नम्रसुरासुरेन्द्र — ''' कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥१॥

Closing : जीर्ण-शीर्ण ।

७०६. मंगल आरती

Opening : मगल आरती कीजै भोर । विघन हरन सुखकरण किसोर ॥
अरहंतसिद्ध सुरि उवझाय । साधु नाम अपिय सुखदाय ॥

Closing : मंगलदान शील तपभाव, मंगल मुक्तवधू को चाव ।
द्यानत मंगल आठों जाम, मंगल महा भक्ति जिन स्वाम ॥

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

७०७. मणि भद्राष्टक

Opening : अपठनीय ।

Closing : — — — —
धर्मकामार्थ लक्ष्मीस्तुष्टदेवोस्त्ववर्य,
धरणिधरकवेभरिती वक्ति: सत्यम् ॥

Colophon : इति श्री मणिभद्र यक्षादि राज स्तोत्रमंत्रयुतं महाप्रभावीकं सम्मतम् ।

विशेष— अन्त में दिया गया मंत्र अपूर्ण है ।

७०८. नंदीश्वर भक्ति

Opening : त्रिदशपतिमुकुट ··· विरहितनिलेयान् ॥
Closing : ··· जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झं ।
Colophon : इति नंदीश्वरभक्तिसंपूर्णम् ।

७०९. णमोकार स्तोत्र

Opening : ॐ परमेष्ठि नमस्कारं सारं नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्रं पंजराभि स्मराम्यहम् ।
Closing : यश्चैनां कुरुते रक्षां परमेष्ठि पदैः सदा ।
तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि न कदाचनः ॥
Colophon : इति नवकार स्तोत्रम् ।

७१०. नवकार भावना स्तोत्र

Opening : विशिलष्यन् घनेकर्मस्य ··· संजीवनं मंत्रराट् ॥१॥
Closing : स्वपन् जाग्रन् ··· स्तोत्र सुकृती ॥११॥
Colophon : इति नवकार मंत्रस्य स्तोत्र समाप्त । मिति पूसवदी १० दिन रवि संवत् १६५४ दं० नीलकंठदास ।

विशेष—ह०।२ संख्या ग्रन्थ एक गुटका है, जिसमें ५३ पूजास्तोत्र आदि संकलित हैं । इसका लेखनकाल विक्रम सं० १६५४ है ।

७११. नेमिजिन स्तोत्र

Opening : कश्चित्कांता विरहगुरुणा स्वाधिकारप्रमत्तः,
स्नोतापारं सहगपितषयादगुणाब्धेर्जनोत्र ।
प्रामेषोदन्वत्समधिकतरस्येति तुष्टावमोदात्,
कुल्लामाय दिशतु सशिवं श्री शिवानंदनो वः ॥
Closing : इति स्तुतः श्रीमुनिराज ··· दीर्घदर्शिताम् ॥८॥
Colophon : इति रघुनाथकृतं श्रीमन्नेमिजिनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

विशेष—इसके १-४ श्लोक कालिदास एवं भारवी के श्लोकों का आश्रय लेकर बनाये गए हैं । प्रथम चरण यथावत् मिलता है ।

७१२. निजात्माष्टक

Opening : णिच्चन्तेलोकचक्काहिव सयणमिया ओजिणिन्दाय सिद्धा ।
अण्णेगम्यस्थसम्या गमणमियमण उक्खल्ला मया ।
सूरि साहू सव्वे सुद्धणियाद अनुसरत्न प्रणामोखसम्मे ।
ति तम्हासोऽहंज्झायेमिणिञ्चपरमपयगओ णिविषप्पोणियप्पो ।१।

Closing : रूवे पिंडेपयत्थेण कलपरिचये जोयिविदेण णादे ।
अत्थे गन्थे ण सत्थेण करण किरि या णावरे भंगचारे ।
साणन्दाणन्द रूओ अणुमहू सुसुमंवयेणा भावप्रभ्वो ।
सोहंझाये मिणिञ्च परमपयगओ णिविपप्पोणियप्पो ।।

Colophon : इति योगीन्द्रदेवविरचितं निजात्माष्टक समाप्त शुभ भूयात्।

७१३. निर्वाण कण्ड

Opening : वर्द्धमानमहं स्तोष्ये वर्द्धमानमहोदयम् ।
कल्याणैपंचभिर्देव मुक्तिलक्ष्मीस्वयंवरम् ।।१।।

Closing : इत्यर्हतां शमवतां··· – निरवद्यसौख्यम् ।।१२।।

Colophon : इति निर्वाणकांड सम्पूर्णम् ।

७१४. निर्वाण काण्ड

Opening : अट्ठावयम्मि उसहो — महावीरो ।।१।।

Closing : जोपट्ठे इतियालं ··· लहइ णिव्वाणं ।।२८।।

Colophon : इति निर्वाण कांड समाप्तम् ।

७१५. निर्वाण काण्ड

Opening : वीतराग वंदौं सदा, भाव सहित सिरनाय ।
कहूं कांड निर्वाण की भाषा विविध बनाय ।।

Closing : संवत् सत्रह सै तैताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।
भैया वंदन करैं त्रिकाल जय निर्वाण कांड गुनमाल ।।२१।।

Colophon : इति निर्वाण कांड भाषा समाप्तम् ।

७१६. निर्वाण काण्ड

Opening : देखें—क० ७१५ ।

Closing : देखें—क० ७१५ ।

Colophon : इति निर्वाण कांड समाप्तम् । संवत् १८७१ ज्येष्ठ वदि ८ लि(खा) आलमचंद्रेण ।

७१७. निर्वाण भक्ति

Opening : त्रिभुवनपति खगपनरपति ··· मनामयं प्राप्तम् ।।

Closing : · · · · जिगमुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

Colophon : इति निर्वाणभक्तिसंपूर्णम् ।

७१८. पद्मावती कवच

Opening : श्रीमद्गीर्वाणचक्रं स्फुटमुकुट तटीदिव्यमाणिक्य माला ।
ज्योतिज्वालाकराला स्फुरित मुकरिका घृष्टपादारविंदे ।।
व्याघ्रोल्लकासहस्रज्वलदनल शिखा लोकं पाशांकु शाद्यं ।।
आंक्रोंह्रीं मंत्ररूपे क्षपितदलमल रक्ष मां देविपद्मे ।।१।।

Colsing : इदं कवचं ज्ञात्वा पद्मायास्तोति ये नरः ।।
कल्पकोटिशतेनापि न भवेत् सिद्धिदायिनी ।१८।
देखें, जि० र० को०, पृ० २३५ ।

७१९. पद्मावती कल्प

Opening : कमठोपसर्गदलनं त्रिभुवननाथं प्रणम्यपार्श्वं जिनम् ।।
वक्षेभीष्टफलप्रदं भैरवपद्मावतीकल्पम् ।१।

Closing : यावधारिभुवनशरावरामगगनचन्द्रदिनपतयः ।।
तिष्ठतु भुवि तावदयं भैरवपद्मावती कल्पः ।५६।

Colophon : इत्युभयभाषाकविशेखर श्री मल्लिषेणसूरिविरचिते भैरव-पद्मावतीकल्पे गरुडाधिकारो नाम दशमः परिच्छेदः ।।
देखें, जि० र० को०, पृ० २३५ ।

७२०. पद्मावती वृहत्कल्प

Opening : देखें क्र० ७१८ ।

Closing :
जगभक्त्याम्कृत्ये क्रौं भक्त्या मां कुरुते सदा ।
वांछितं फलमाप्नोति तस्य पद्मावती स्वय ।।

Colophon : इति पद्मावत्या वृहत्कल्प समाप्तम् ।

७२१. पद्मामाता स्तुति

Opening :
जिनसासनी हंमासनी पद्मावती माता ।
भुज चार ते फल चार दे पद्मावती माता ।

Closing :
जिनधर्म से डिगने का कहु आपरे कारन ।
तो लीजियो उबार मुझे भक्त उद्धारन ।।
निज कर्म के सयोग से जिस यौन मे जाओ ।
तहा ही जियो सम्यक्त को सिवधाम को पावो ।।

Colophon : जिनशासनी इति पूर्ण ।

७२२. पद्मावती स्तोत्र

Opening :
श्री पार्श्वनाथजिननायकरत्नचूडापाशांकुशोमयफलांकित-
दोश्चतुष्का ।।
पद्मावतीत्रिनयना त्रिफणावतंसा पद्मावती जयति शासन-
पुण्यलक्ष्मी: ।।

Closing :
पठितं भणितं गुणितं जयविजयरमानिबंधनं परमम्
सर्वाधिव्याधिहर त्रिजगति पद्मावतीस्तोत्रम् ।।
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्
विसर्जन न जानामि क्षमस्व परमेश्वरी ।।२८।।

विशेष — आरा में पद्मावतीमंदिर चढ़ायो आरा वाला गुलाल चंद जी मुलु-
लाल जी ।।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० २३५ ।
(2) Catg. of Skt. & pkt. Ms., 665.

७२३. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें क्र० ७१८ ।

Closing : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पद्मावती सकल चराचर त्रैलोक्यव्यापी ह्रीं क्लीं ब्लूं ह्रां ह्रीं ह्रों ह्रौं ह्रौं ह्रः ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र को १२०००० जपे तो सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त होय।

Colophon : षड्‌विंशति श्लोक विधानम् सम्पूर्णम्। समाप्तम्।

७२४. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क० ७१८।

Closing : देखें, क० ७२२।

Colophon : इति श्री पद्मावती स्तोत्रं समाप्तम्।

७२५. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क० ७१८।

Closing : देखें, क० ७२२।

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र संपूर्णम्।

७२६. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क० ७१८।

Closing : ॐ णमो गोयमस्स सिद्धस्स आनय आनय पूरय पूरय मम कुरु कुरु वृद्धि कुरु कुरु ह्रीं भास्करी नमः।

Colophon : नहीं है।

७२७. पद्मावती सहस्रनाम

Opening : प्रणम्य परमा भक्त्या देव्या पादांबुजं त्रिधा।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये तद्भुक्तिसिद्धये॥

Closing : भो देवि भीमा ! — ···सम्पतिनीतिततापने किं॥

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्रं समाप्तम्।
देखें—(१) दि. जि. ग्र. र., पृ. १४२।
(२) जि. र. को., पृ. २३५।

७२८. परमानंदस्तोत्र

Opening : परमानंदसंयुक्तं निर्विकारं निरामयम् ।
ध्यानहीना तु नश्यंति निजदेहे व्यवस्थितम् ॥१॥

Closing : पाषाणेषु यथा ... ... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

७२९. परमानन्दस्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ३२८ ।

Closing : काष्ठमध्ये ······· जानाति स पण्डित: ॥२४॥

Colophon : इति परमानदस्तोत्रसमाप्तम् ।

(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४४ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २३८ ।
(३) रा० सू० III, पृ० ११२, १३३, १५७, २८८ ।
(4) Catg. of Skt & Pkt. Ms., 665.

७३०. परमानन्द चतुर्विंशतिका

Opening : देखें, क्र० ७२८ ।

Closing : स एव परमानंद: स एव सुखदायक: ।
स एव परचिद्रूप: स एव गुणसागर: ॥

Colophon : परमानंद चतुर्विंशति(का) समाप्ता ।
देखें—जि० र० को०, पृ० २३७ । (पञ्चविंशतिका)

७३१. पार्श्व जिनस्तवन

Opening : देवेन्द्रा: शतश: स्तुवंति — ···· स्तौमि भक्त्या निशम् ॥

Closing : इति पार्श्वजिनेश्वर. ··· — सौख्यकरम् ॥

Colophon : इति यमकबंध श्री पार्श्वनाथ स्तवन सम्पूर्णम् ।

७३२. पार्श्वनाथ स्तवन

Opening : नमिऊण पणयसुरगण चूडामणिकिरणरंजियं मुणिणो ।
चलणजुयलं महाभयं पणासणं संथुवं वुच्छं ॥

Closing : जो पठइ जो अनिसुणइ ताणं कइणो अमाणतुंगस्स ।
पासो पावं समेऊ सयलभुवणच्चिअचलं ।।२१।।

Colophon : इति पार्श्वनाथस्तवनं सम्पूर्णम् ।

७३३. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : धरणोरगसुरपतिविद्याधरपूजितं नत्वा ।
क्षुद्रोपद्रवशमनं तस्यैव महास्तवमं वक्ष्ये ।।

Closing : भक्तिर्जिनेश्वरे यस्य गंधमाल्याभिलेपनैः ।
संपूजयति यश्चैनं तस्यैतत् सकलं भवेत् ।।

७३४. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : यः श्री पादंतवेश श्रयति सपदि सःश्रीपुरं संश्रयेत् ।
स्वामिन् पार्श्वप्रभोस्त्वत्प्रवचनवचनोद्दीप्रदीपप्रभावैः ।।
लब्ध्वामार्गं निरस्ताखिलविपदमतो यत्वधीशैस्तु ।।
धीभिर्वन्द्यःस्तुत्यो महास्त्वं विभुरसिजगतामेक
एवाप्ततायः ।।१।।

Closing : एभिः श्रीपुरपार्श्वनाथ विलसन्माहात्म्य पुस्यत्सुधा ।
कूपारोर्हिनिदर्शितः प्रविसरद्वामागिचतुर्यैनः ।।
तस्मात्स्तोत्रमिदं सुरत्नमिवयद्यत्नाद्गृही ।।
तं मया विद्यानन्द महोदयाय नियतं श्रीमद्भिरासे-
व्यताम् ।।३०।।

Colophon : इति श्रीमदमरकीर्ति यतीश्वर प्रियशिष्य श्रीमद्विद्यानन्द स्वामी विरचितं श्री पुरपार्श्वनाथ स्तोत्रं समाप्तमभूत् ।

७३५. पार्श्वनाथ स्तोत्र (सटीक)

Opening : लक्ष्मीर्महस्तुल्यसतीसतीसती प्रवृद्धकालो विरतोरतोरतो।।
जराहजाजन्महताहताहता पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौगिरौ ।।१।।

Closing : — — कोषतेश्वीजगतुरे अतः कारणात् ।।

Colophon : इति पद्मनंदीमुनिविरचितं श्री पार्श्वनाथस्तोत्रटीकासहितं सम्पूर्णम् ।१।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र० पृ० १४० ।
(२) जि० र०, को०, पृ० २४७ ।

७३६. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७३५ ।

Closing : त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं नित्यमाप्नोति संश्रियम् ।
श्रीपार्श्वपरमात्मैं ससेबघ्नं भो वुधा सुकृत् ॥

Colophon : इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम् ।

७३७. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७३५

Closing : तर्कव्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौशले,
विख्यातो भुवि पद्मनंदमुनयः तत्वस्य कोशं निधिः ।
गंभीरं यमकाष्टकं भणितयं संस्तूय सा लभ्यते,
श्री पद्मप्रभदेवनिर्मितमिदं स्तोत्रं जगन्मंगलम् ॥६॥

Colophon : इति श्री लक्ष्मीपतिपार्श्वनाथस्तोत्रसमाप्तम् ।

७३८. पंचस्तोत्र सटीक

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : दृष्टस्तत्वं जिनराजचंद्रविकसद्भूपेन्द्र नेत्रोत्पले ।
स्नातं त्वन्नुति चंद्रिकाभसिमबद्विद्वच्चकारोत्सवे ॥
नीतश्चाद्य निदाघजः क्लमभरः शांतिमयाशम्यते ।
देवत्वद्गतचेतसैव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥२६॥

Colophon : संवत् १९६७ फाल्गुण शुक्ला १२ रविवासरे लिपिकृतं पं० सीताराम शास्त्री ।

७३९. पंचासिकाशिक्षा

Opening : करि करि आतम हित रे प्राणी ।
जिन परिणामनि तजि बंध होत है ।
सो परिणति तजि दुखदानी ।। करि० ।।

Closing : यह शिक्षापंचासिका, कीनी द्यानतराय ।
पढ़ै सुनें जो मनधरैं, जन जन कौं सुखदाय ।।

Colophon : इति श्री पंचसिका शिक्षा सम्पूर्णम् । मिती भाद्रपद सुदी ६ सुभवार गुरु सम्वत् १९८७ ।

७४०. पंचपदाम्नाय

Opening : भक्तिभरामरप्रणतं प्रणम्य परमेष्ठी पंचकम् ।
श्रीर्षण नमस्कारसारस्तवनं भणामि भव्यानां भयहरणम् ।।

Closing : ---- .... अनेन ध्यानेन पायोच्चाटनताडननिपुणाः साधवः सदा स्मरतः ।

Colophon : इति पंचपदाम्नायः ।

७४१. प्रभावती कल्प

Opening : हरिद्रानिंबपत्राणि पिप्पली मरिचानि च ।
भद्रामुस्ता विषंगानि सप्तमं विषभेषजम् ।।

Closing : ॐ अर्हदेवी स्वाहा गुटिका प्रयुञ्जनमंत्र: ।

Colophon : इति प्रभावती कल्पः । श्रीरस्तु ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २६६ ।

७४२. प्रार्थना स्तोत्र

Opening : त्रिभुवनगुरो जिनेश्वरपरमानंदैककारणम् ।
कुरुष्वमपि किंकरेत्रककरुणां तथा यथा जायते मुक्तिः ।।१।।

Closing : जगदेकशरणं भगवन्नसमश्रीपद्मनंदितगुणौघ किं ।
बहुना कुरु करुणामत्रजने शरणमापन्ने ।।८।।

Colophon : इति प्रार्थनास्तोत्र सम्पूर्णम् ।

७४३. रक्त पद्मावती कल्प

Opening : ... ... सन्निधापयेत् विसर्जना विसर्जयेत् । गद्यादि-ग्रहणानंतरं पटमचलं कृत्वा ततो जापं कुर्यात् ... — ।

Closing : — ... भवतोऽस्माभिर्दत्तो मंत्रोऽयं परंपरायात: साक्षिणो-रव्यादिदेवता ।

Colophon : इति रक्तपद्मावती कल्प समाप्तम् । संवत् १७३८ वर्षे कार्तिकसुदी १३ रवौ श्री औरंगाबाद नगरे श्री खरतर श्री बेगमुगच्छे भट्टारक श्री जिनसमुद्रसूरिविजयराज्ये तत् शिष्यसौभाग्यसमुद्रेण एषा प्रतिलिपि कृता; ।

७४४. ऋषभस्तवन

Opening : सिद्धाचल श्रीललनाललामं, महीमहीयो महिमाभिरामं ।
असारसंसार पयोपरामं नवामि नाभेय जिनं निकामम् ।।

Closing : एवं श्रुतो यमकभेद परंपराभि:,
राभिर्मयाविमल शैलपति: पराभि: ।
आदीश्वरो दिशतु मे कुशलं विलासम्,
वाचां विचक्षण चकोरसुधांशु भारम् ।।

Colophon : इति श्री शत्रुंजयालंकरण श्री ऋषभस्तवनमेकादशयमकभेदै: समर्थितम् श्री जिनकुशलसूरिभि: सम्पूर्णम ।

७४५. ऋषिमंडलस्तोत्र

Opening : प्रणम्य श्रीजिनाधीशं लब्धिसामैस्तसयुतं ।।
ऋषिमंडलयंत्रस्य वक्ष्ये पूज्यादिमल्पमम् ।।१।।

Closing निःशेषामरशेखरंचितपदं इंद्रोल्लसत्सख ।।
ध्वांतप्रौढतकांति संहृतिहतप्रव्यक्त भक्त यासव

निर्वाण समहोत्सवागमकृत प्रस्फुरंम झूगराद्गढि
वृद्धिमनारतं जिनरतं; जिनवरा: कुर्वन्तु व:सर्वदा ॥

७४६. ऋषिमंडल स्तोत्र

Opening : आन्ध्यंताक्षर — — समन्वितम् ॥१॥

Closing : शतमष्टोत्तरं प्रप्तर्षे पठन्ति दिने दिने ।
तेषां न व्याधयो देहे प्रभवं ··· ··· ॥

Colophon : नहीं है ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४७ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 629.

७४७. ऋषिमंडल स्तोत्र

Opening : देखें—क० सं० ७४६ ।

Closing : मे वधिल ··· — रक्षतु सर्वतः ॥६३॥

Colophon : नहीं है ।

७४८. त्रिकालजैन सन्ध्यावंदन

Opening : ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मा ठः ठः उपवेशनभूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा ।

Closing : ·· ·· मंत्र श्री जैनमंत्र जपजपजपितं जन्मनिर्वाणमंत्रम् ॥

Colophon : इति त्रिकालजैनसंध्यावंदन सम्पूर्णम् ।

७४९. सहस्रनामाराधना

Opening : सुरासुरपूजितं पूज्यं सिद्धं शुद्धं निरंजनम् ।
जन्मदाहविनाशाय नौमि प्रारब्ध सिद्धये ।१।
सर्वकर्मा मलमुखे शारदां विश्वशारदाम् ।
गौतमादि गुरुन् सम्यक् दर्शनज्ञानसंश्रितान् ।२।

Closing : विशालकीर्तिर्वं रघुवंशसूरिः सार्द्ध ··· र्पितपावकाः ।
श्रीवर्जितर्वं मुद्रेसहस्रनामा जिनेश्वरः पातु सा भव्यलोकान् ।

इत्थं पुरोत्थं पुरूदेवयंत्रं संभाव्यमध्ये जिनमर्चयामि ।
सिद्धादिधर्मादि जिनालयांतं पत्रेषु नामांकित तत्पदेषु ।।

विशेष—प्रशस्ति संग्रह (श्री जैन सिद्धान्त भवन) द्वारा प्रकाशित पृ० ६४ में सम्पादक भुजबली शास्त्री ने ग्रन्थ कर्त्ता के बारे में लिखा है। इसके कर्त्ता देवेन्द्रकीर्ति हैं और इन्होंने जिनेन्द्र भगवान के विशेष रूप में अपना, अपने गुरु का एवं प्रगुरु का क्रमशः—धर्मचन्द्र, धर्मभूषण, देवेन्द्रकीर्ति इन नामों से उल्लेख किया है। देवेन्द्रकीर्ति के नाम से कई व्यक्ति हुए हैं, इसलिये नहीं कहा जा सकता कि अमुक देवेन्द्रकीर्ति ही इसके प्रणेता हैं।

७५०. सहस्रनामस्तोत्र टीका

Opening : ध्यात्वा विद्यानंदं समन्तभद्रं मुनीन्द्रमर्हन्तम् ।
श्रीमत्सहस्रनाम्नां विवरणमावस्मि संसिद्धौ ।।

Closing : अस्ति स्वस्तिसमस्तसंघ तिलकं श्रीमूलसंघोनघम्,
वृत्तं यत्र मुमुक्षुवर्गशिवदं संसेवितं साधुभिः ।।
विद्यानंदिगुरुस्त्विह गुणवद्गच्छे गिरः सांप्रतम्,
तच्छिष्यश्रुतसागरेण रचिता टीका चिरं नंदतु ।।

Colophon : इत्याचार्य श्री श्रुतसागरविरचितायां जिनसहस्रनामटीकायामंतकृत्वतविवरणो नाम दशमोध्यायः समाप्तः। इति जिनसहस्रनामस्तवनं समाप्तम्। संवत् १७७५ वर्षे वैशाख सुदी ५ गुरौ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवास्तदंतेवासिनः ब्रह्म श्री विनयसागर तदंतेवासिनः पंडित श्री हरिकृष्ण तदंतेवासिनः (पंजीचनि) गंगारामेन लिखित भेदग्रामे आदिनाथचैत्यालये लिखितमिदं पुस्तकम्।

७५१. सहस्रनाम स्तोत्र

Opening : स्वयंभुवे नमस्तुभ्यं —......... चित्तवृत्तये ।।१।।

Closing : अमोघवाघमोघाज्ञो निर्मलोमोघशासन ।
.... — — ।।

Colophon : Missing.

देखें, Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 707.

७५२. सहस्रनाम

Opening : देखें, क० ७५० ।

Closing : देखें, क० ७५० ।

Colophon : इत्याचार्य श्री श्रुतसागर विरचितायां जिन सहस्रनामटीकायां दशमोध्याय: समाप्त: ।

संवत् १९८५ वर्षे आषाढ़मासे सुदी ३ गुरौ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवा: तदंतेवासिन: ब्रह्म जी विनयसागर तदंतेवासिन: भुजबल प्रसाद जैनी लिखितम् । श्री मैनेजर भुजबली जी शास्त्री की सम्मति आदेशानुसार आरा स्थाने ।

७५३. सहस्रनाम टीका

Opening : ··· श्रुतिवचनविरचितचित्तचमत्कार· स्वर्गापवर्गमार्गस्यंदन· चारुचारित्रचमत्कृतसक्रंदन: ···· ।

Closing : ···· नाम्नामष्टसहस्त्रेण स्मृतिमात्रेण स्मरणमात्रेण प्रमाणेन सेवां कर्तुं इच्छाम: प्रमाणेयेंद्रयसदद्भुत् मात्रट् प्रन्यया भवंति । इत्यार्षे भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीते श्रीमहापुराणे श्री वृषभस्तुतेस्टीका सम्पूर्णा कृता सूरिश्रीमदमरकीर्तिना ।

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनामटीका । इदं पुस्तिकं पं० चिमनरामेण लिपि कृतंम फतेपुरमध्ये सं० १८६७ अश्विन शुक्ल तृतीयायां शुभं भूयात् ।

७५४. सत अष्टोत्तरी स्तोत्र

Opening : ओंकार धुनि अति अगम, पंच प्रविष्ट निवास ।
प्रथम ताहु वंदन किये, लहिये ब्रह्म विलास ॥

Closing : यह श्री सत अठोतरी, कीनी निजहित काज ।
जे नर पढ़ै विवेक सौं, ते पावहि मुनिराज ॥

Colophon : इति श्री सत अठोतरी कवित्त बंध सम्पूर्णम् ।

७५५. शक्रस्तवन

Opening : ॐ नमो अर्हते परमात्मने, परमज्योतिषे परमपरमेष्ठिने परमवेधसे परमयोगिने ― " ।

Closing : ― ― तथाय सिद्धसेनेन लिलिखे सपदां पदम् ।

Clolophon : इति शक्रस्तवः समाप्तः । संवत् १७७४ वर्षे पौष वदि ८ दिने लिखत श्री कास्मावाजारमध्ये ।

७५६. सत्तरिसय स्तवन

Opening : तिजयपहुत्तपयासय अट्ठमहापाडिहारजुत्ताण
समयखित्तविघाणं सरेमि चक्कजिणंदाण ॥

Closing : इय सन्तरिसयं जंतं समम तं दुवारिपडि लिहिय ।
दुरियारि विजयतं तं निजात्मानं निच्चमचेह ॥१४॥

Colophon : इति सत्तरिसयस्तवन सम्पूर्णम् ।

७५७. सम्मेदाष्टक

Opening : एकैक सिद्धकूट .... राजते स्पृष्टराजकैः ॥१॥

Closing : आधिव्याधिःप्रबाधिः .... जगद्भूषणानाम् ॥६॥

Colophon : इति श्री जगद्भूषणकृतं सम्मेदाष्टकं सम्पूर्णम् ।

७५८. समवशरण स्तोत्र

Opening : वृषभादयानभिवंद्यार्थवंदित्वा वीरपश्चिमजिनेन्द्रान् ।
भक्त्या नतोत्तमांगः स्तोष्टोतत्समवशरणानि ॥

Closing : अनम्यगुणनिबद्धामर्हतां मागृणंदि,
अतिरचित सुवर्णानेकपुष्पप्रजानाम् ।
स भवति नुति माला यो विधत्ते स्वकंठे,
प्रियपतिरमली मौक्षलक्ष्मीवधूनाम् ॥

Colophon : इति श्री लघुसमवशरण स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

७५६. संकटहरण विनती

Opening : सारद दीजे ग्यान अपार । मुझ भरमन छूटे संसार ।।
वर्द्धमान स्वामी जिनराय । करों बीनती मनचित लाय ।।

Closing : इह बीनती नित भणे प्राणी, सिवधाम पावै घरै ।
सुभ भावधर मन सदा गुणियें, सुद्ध चेतन सो तरै ।।३७।।

Colophon : इति संकटहरण बीनती सम्पूर्णम् ।

७६०. शान्तिनाथ आरती

Opening : शांत जिनेसर स्वामि बीनती अवधार प्रभु ।
सेवक जंनसाधार, पापपनासन शांति जिनो ।।

Closing : पाटन नगर मंझार, शांतकरण स्वामी शांत जिनो ।।

Colophon : इति शांतिनाथ बीनती (विनती) ।

७६१. शान्तिनाथ स्तोत्र

Opening : नानाविचित्रं भवदुःखराशिः नानाप्रकारं मोहाग्निपाशिः
पापानि दोषानि हरंति देवाः इह जन्मशरणं तुबशान्ति-
नाथम् ।

Closing : जपति पठति नित्यं शान्तिनाथाष्टिशुद्धम्,
स्तवनमधुगिरामा पावतापापहारम् ।
शिवसुखनिधिपोतं सर्वसत्वानुकंपम्,
कृतमुनिगुणभद्रं भद्रकार्येषु नित्यम् ।।९।।

Colophon : इति श्री शान्तिनाथस्तोत्रगुणभद्राचार्यकृत समाप्तम् ।

७६२. शान्तिनाथ प्रभातिक स्तवन

Opening : सुरेन्द्रं सदासंजरद्धानतोयं वरं हारचन्द्रोज्वलं सोरभेयम् ।
यथातुच्यकं शांतिनाथो जिनो नौ यदं वंशतालं सदा
सुप्रभातम् ।।१।।

Closing : श्री शान्तिनाथस्य जिनेश्वरस्य प्रभातिकं स्तोत्रमिदं पवित्रम् ।
पुमानधीते भवती हृयोपि श्री भूषणस्याङ्कुरचंद्र ॥६॥

Colophon : इति श्री शान्तिनाथप्रभातिकस्तवनं समाप्तम् ।

७६३. शान्तिनाथ स्तवन

Opening : ॐ शांतिशांति · शांतये स्तौमि ॥१॥

Closing : यश्चैनं पठति सदा श्रृणोति भावयति वा यथायोगं ।
शिवशांतिपद भयात् सूरिश्रीमानदेवस्य ॥१७॥

Colophon : इतिशांतिस्तवनं समाप्तम् ।
देखें—दि० जि. ग्र. र., पृ. १५० ।

७६४. शान्तिनाथ स्तवन

Opening : अयशाच्च गृहस्यास्य मध्ये परमसुन्दरम् ॥
भवनं शांतिनाथस्य युक्तविस्तारतुंगतम् ॥

Closing : कृत्वा स्तुतिं प्रणामं च भूयोभूयः सुचेतसः ।
यथासुखं समासीना प्रथमे जिनवेश्मनः ॥

Colophon : नहीं है ।

७६५. सरस्वती कल्प

Opening : जगदीशं जिनं देवमभिवंद्याभि नन्दनम् ।
वक्ष्ये सरस्वतीकल्पं समासादल्पमेधसाम् ॥

Closing : कृतिना मल्लिषेणेन श्रीषेणस्य सूनुना ।
रचितो भारतीकल्पः शिष्टलोकमनोहरः ॥
सूर्यचन्द्रमसा यावत् मेदिनीभूधरार्णवः ।
तावत्सरस्वतीकल्पः स्थेयाच्चेतसि धीमताम् ॥

Colophon : इत्युभयभाषाकविशेखर श्री मल्लिषेणसूरिविरचितो भारतीकल्पः समाप्तोऽभूत् ।

७६६. सरस्वती स्तोत्र

Opening : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मंत्ररूपे विबुधजननुते देवदेवेन्द्रवंद्ये,
चंच्चचंद्रावदाते क्षपितकलिमले हारनुं गारवीरे।
भोमे भीमाट्टहास्ये भवभवहरणे भैरवे भेरूधारे,
ह्रां ह्रूं कारनादे मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवी ॥

Closing : करबदनसदृशमखिलं भुवनतलं यत्प्रसादतः कवयः।
पश्यन्ति सूक्ष्मनतयः सा जयतु सरस्वती देवी ॥

Colophon : इति सरस्वती स्तुतिः।

विशेष—अन्त में सरस्वती मन्त्र भी लिखा है।

देखें— **Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 706.**

७६७. सरस्वती स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६६८।

Closing : देखें—क्र० ६६८।

Colophon : इति सरस्वती स्तोत्र समाप्तम्।

७६८. सरस्वती स्तोत्र

Opening : नमस्ते शारदादेवी जिनस्याँबुजवासनीं।
त्वामहं प्रार्थये मातं विद्यादानं प्रदेहुमे ॥

Closing : सरस्वती महाभागे याहृष्टा देवी कमललोचना,
हंसस्कंधसमारूढा वीणापुस्तकधारणी।
सरस्वती महाभागे वरदे कामरूपनी,
हंसरूपी विशालाक्षी विद्यादे परमेस्वरी ॥

Colophon : इति संपूर्णम्।

७६९. सरस्वती स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं अर्हन्मुखाम्बुजवासिनी नमः। ह्रां ह्रीं पापलोपीक्षी-णित्रिविकमले कल्पविद्यदं धये— —।

Closing : अनुपलब्ध ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

७७०. सिद्धभक्ति

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृति ···· ··· यथा हेमभावोपलब्धिः ।

Closing : ··· बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं
जिणगुणसंपत्ति होउमुज्झं ॥

Colophon : इति सिद्धभक्तिः ।

७७१. सिद्धप्रिय स्तोत्र टीका

Opening : सिद्धिप्रियैः प्रतिदिनं ···· ···· भूप रोमणेन ॥ ॥

Closing तुष्टि देशनया ··· सतोमीशितम् ॥२५॥

Colophon: इति श्री सिद्धिप्रियै स्तोत्र टीका संपूर्णम् ।

विशेष—२४ श्लोकों की संस्कृत टीका है, २५ वें श्लोक की टीका नहीं है ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४३८ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ४६, ५३, ११२, ३३२ आदि
(४) रा० सू० III, पृ० १०६, १४१, १५६, २४४ ।
(५) प्र० जै० सा०, पृ० २४६ ।

७७२. सिद्ध परमेष्टी स्तवन

Opening : अनन्तवीरयोगिन्द्रः सम्प्रकस्यपुण्मुना ।
एवयोनात्मनो मृत्युः परिपृष्टः समादिशत् ॥१॥

Closing : परिकार्यमहावीर्यं रामलक्ष्मणसंगतम् ।
किष्किवनगरं प्रापुः विविम्मुस्तैमहर्द्धया ॥३५॥

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्यकृत पद्मपुराण संस्कृत ग्रन्थ लक्ष्मणजी कृत सिद्धपरमेष्ठी स्तवनं समाप्तम् ।

७७३. श्रुतभक्ति

Opening : स्तोष्ये संज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।
लोकालोकविलोकन-लोलितसल्लोकलोचनानि सदा ॥१॥

Closing : ··· दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउमुज्झं ।

Colophon : इति श्रुतज्ञानभक्ति सम्पूर्णम् ।

७७४. स्तोत्र संग्रह

Opening : यस्यानुग्रहतो दुराग्रहपरित्यक्तात्मरूपात्मनः
सद्द्रव्यं चिदचित्त्रिकालविषयं स्वैः स्वैरभिन्नं गुणैः ॥ ॥
सार्थं व्यंजनपर्ययैस्समसमवयज्जानातिबोधस्समं
तत्सम्यक्त्वमशेषकर्मभिदुरं सिद्धाः परं नौमि वः ॥१॥

Closing : तुभ्यं नमो केवलगुणाधिपपावनाय ।
तुभ्यं नमोस्तु विभवे जिनगुंमटाय ॥८॥

७७५. स्तोत्रावली

Opening : नहीं है ।

Closing : ···· सुप्रसन्नचित्तनी चिंताटली श्री सार जीनगुणगावतां हिव सकलमन आस्या फली ।

Colophon : इति श्री रोहिणी स्तवन संपूर्णः ।

७७६. स्तोत्रावली

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : जइए एसं भावाओ, कम्माण विभाग तह भावा ॥
·········अपूर्ण ।

Colophon : नहीं है ।

७७७. स्तोत्र संग्रह गुटका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : दरसन कीजै देवको आदिमध्यअवसान ॥
सुरगन के सुखभुगत के पावैं पद निर्वाण ॥२०॥

Colophon : इति विनै संपूर्ण ॥

७७८. स्तोत्र संग्रह

Opening : देखें—क्र० ६८५ ।

Closing : भाषा भक्तामर कियो हेमराज हित हेत ।
जे नर पढ़ै सुभावसों ते पावैं शिवखेत ॥

Colophon : इति भक्तामर स्तवन सम्पूर्णम् ।

विशेष—लगभग एक सौ स्तोत्र, पाठ, पूजा आदि का संग्रह इस गुटका में है ।

७७९. स्तोत्र संग्रह

Opening : प्रणम्य परयाभक्त्या देव्याः पादाम्बुजं त्रिधा ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये तद्भक्ति सिद्धये ॥१॥

Closing : --- इति पुनः मंत्र ॐ ह्रीं क्लीं क्सूं श्रीं ह्रीं नमः । लक्ष जापते सिद्ध होय ।

Colophon : इति शारदा स्तुति सम्पूर्णम् ।

विशेष—इस ग्रन्थ में ३७ स्तोत्र मंत्रादि का संग्रह है ।

७८०. स्तोत्र

Opening : श्री नाभिराजतनुजः सवर्याबिहारी,
देवोजितो जयतु कौसवंयाबिहारः ।
श्री शंभवो हृतभवोविततारसारः,
श्री शोभिनंदनजिनोविततारसारः ॥१॥

Closing : विश्वातकं विदितबंधरसावतारम् ।
संसारवासविरलं हृतकाण्डभूतम् ।
वंदे नवं ववमकं अधुलाकसाधम्,
भिन्न जिनंभिदजिरं भवहारभावम् ॥

Colophon : अस्पष्ट ।

७८१. सुप्रभात स्तोत्र

Opening : विद्याधरामर नरोरगयातुधान-
सिद्धासुरादिपति संस्तुत पादपद्मम् ।
हेमद्युते वृषभनाथ युगादिदेव-
श्रीमज्जिनेन्द्र विमलं तव सुप्रभातम् ॥

Closing : दिव्यां प्रभातमणिका वलिकां स्वरूप-,
कंठेन शुद्धगुणसग्रथितां क्रमेण ।
ये धारयन्ति मनुजा जिननाथभक्त्या,
निर्वाणपादपफलं खलु ते लभंते ॥

Colophon : इति सुप्रभातस्तोत्रं समाप्तम् ।

७८२. स्वयंभू स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७८५ ।

Closing : — इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

Colophon : इति श्री स्वामीसमन्तभद्राचार्य विरचित वृहत्स्वयम्भूस्तोत्रसम्पूर्णम् ।

७८३. स्वयंभू स्तोत्र

Opening : येन स्वयंबोधमयेन लोका,
आश्वासिता केचन वित्तकार्ये ।
प्रबोधता केचन मोक्षमार्गे,
तमादिनाथं प्रणमामि नित्यम् ॥१॥

Closing : यो धर्मं दसधा करोति ··· स्वर्गापवर्गास्थितम् ॥२५॥

Colophon : इति स्वयम्भूस्तोत्र समाप्तम् ।

७८४. बृहत्स्वयंभू स्तोत्र

Opening : मानस्तभाः संरासि ···· पीठिकाग्रे स्वयंभूः ॥१॥

Closing : तथ्याख्यानमदो यथावगमतः किंचित्कृत लेशतः
स्थेयाच्चन्द्रदिवाकरावधिबुधप्रह्लादिचेतस्यलम् ॥

Colophon : इति श्री पंडित प्रभाचंद्रविरचितायां क्रियाकलापटीकायां समंतभद्रकृतबृहत्स्वयंभू स्तोत्रस्यटीका समाप्ता । सवत्सरे आषाढशुक्ल-पूर्णिमायां सं० १९१६ लिपिकृतम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५३ ।
(2) Catg. of Skt. & Pkt Ms., P. 714.

७८५. विषापहार स्तोत्र

Opening : स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्त
व्यापारवेदीविनिवृत्तसगः ।
प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्यः,
पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥

Closing : वितिरति विहिता यथाकथंचिद्-
जिनविनतायमनीषितानि भक्तिः ।
त्वयि नुति विषयां पुनर्विशेषा-
दिशतु सुखनियसो धनजय च ॥

Colophon : इति युगादिजिनं विषापहारस्तोत्रम् ।

देखें —(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५४ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३६१ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २१७ ।
(४) आ० सू०, पृ० १२७ ।
(५) रा० सू० II, पृ० ५१, ६६, १०७, ११३, ३०२ ।
(६) रा० सू० III, पृ० १०६, १०७, १५७, २३४, २७८ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 693.

७८६. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क० ७८५ ।

Colophon : इति श्री विषापहारस्तोत्रसमाप्तः ।

७८७. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क० ७८५ ।

Closing : देखें, क० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्रं समाप्तम् ।

७८८. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क० ७८५ ।

Closing : देखें, क० ७८५ ।

Colophon : इति धनञ्जयकृतं विषापहारस्तोत्रं समाप्तम् ।

७८६. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क० ७८५ ।

Closing : देखें, क० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहारस्तवनंसमाप्तम् ।

७६०. विशापहार स्तोत्र (टीका)

Opening : देखें, क० ७८५ ।

Closing : ••• विषं निर्विषीकृत्य पुनरनतसौख्यरूप लक्ष्मीं वशीकरोति इति तात्पर्यर्थम् ।

Colophon : इति श्री नागचन्द्रकवि विरचितायां श्री श्रेष्ठी धनजय प्रणीत जिनेन्द्रस्तोत्रपंजिकायां विषापहारनामातिशय दिव्य मंत्र: समाप्त: ।

७६१. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क० ७८५ ।

Closing : देखें, क० ७८५ ।

Colophon : इति श्री धनंजय कृत विषापहार स्तोत्रं संपूर्णम् ।

७९२. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : स्तोत्र जु विषापहार, मूलचूक कछु वाक्य ही ।
ज्ञाता लेहु सँवार, अखैराज अरजंत हम ।।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्रमूल कर्त्ता श्री धनञ्जय तस्य उपरि भाषा वचनिका करी शाह अखैराज श्रीमालनैं अपनी बुद्धिमनुसारे ।

७९३. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहार स्तवन: समाप्त: । संवत् १६७२ वर्षे जेष्ट (ज्येष्ठ) वदी ७ शुभदिने भट्टारक श्री हेमचंद तत्पट्टे भ० श्री पदमनंद तत्पट्टे भट्टारक जसकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री गुणचंद्र तत्पट्टे-भट्टारक श्री सकलचंद्र तत्शिष्य पंडित मानसिंघ (ह)लिखापित आत्मपठनार्थम् । लिखित कायस्थ माथुरमेवरिया दयालदास तत्पुत्र सुदर्शनेन शुभं भवतु लेखक पाठकयो: ।

७९४. विषापहार स्तोत्र मूल

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

७९५. विनती संग्रह

Opening : मंत्र जप्यो भवसागर तिरियो, पाई मुकति पियारी ।
ज्याका० ।।

Closing : देवा ब्रह्ममुकुट्यां पद पावैं, तौ दरसण ग्यान बधावैं होनैं रैं ।
बाणी बोलै केवल ग्यानी ।।८।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

७९६. विनती

Oponing : बंदौं श्री जिनराय मनवचकाय करौं जी।
तुम माता तुम तात तुमही परमधनी जी।

Closing : कनककीर्ति रचिभाव श्रीजिण भक्ति रची जी।
पढ़ें सुनें नरनारि स्वर्गसुख लहै जी॥

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम्।
संवत् १८५२ वर्षे पौषकृष्णा चतुर्दशीसनिवार।

७९७. वीतराग स्तोत्र

Opening : त्वांदेवं सन्नुमी ······· नादयन्त्यूर्ध्वलोके॥१॥

Closing : सो अयउ मयणराओ ···· विम्भयोमोसणामेषा॥

विशेष—एक मंत्र यंत्र भी बनाया गया है।

देखे—Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 693.

७९८. वृहत् सहस्रनाम

Opening : प्रभोभवागभोगेषु निर्विण्णोदु:खभीरुक:।
एष: विज्ञापयामि त्वां शरणं करुणार्णवम्॥

Closing : एकविद्योमहाविद्योमहा ····।

७९९. यमकाष्टक स्तोत्र

Opening : विद्यास्पदार्हन्त्य पदं पदं पदम्,
प्रत्यग्रसस्यत्मपरं परं परम्।
हेयेतराकारबुधं बुधं बुधम्,
करंस्तुवे विश्वहितं हितं हितम्॥१॥

C'c : भट्टारकैः कृतं स्तोत्रं यः पठेद्यमकाष्टकम्।
सर्वदा स भवद्भूयो भारतीमुखदर्पण:॥१०॥

Colophon : इति भट्टारक श्री अमरकीर्ति कृतं यमकाष्टकस्तोत्रं समाप्तम्।

८००. योगभक्ति

Opening : थोस्सामि गणधराणं अणयाराण गुणेहिं तच्चेहिं।
अंजलि मउलिय हत्थो अभिवंदंतो सविभवेण॥१॥

Closing : ... जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

Colophon : इति योगभक्तिः सम्पूर्ण ।

८०१. अभिषेक पाठ

Opening : श्री मन्मन्दिरसुन्दरे ... ... जैनाभिषेकोत्सवे ॥

Closing : पुष्प जयकर भगवान के ऊपर चढ़ावनें गंधोदक कीये पश्चात् ।

Colophon : इति शान्तिधारा समाप्त ।
भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे तिथौ ४ रविवासरे सम्वत् १९५५ ।

८०२. अभिषक समय का पद

Opening : प्रभुवर इन्द्रकलश कर लायो,
शैलराज पर सजिसमाज सब जनम समय नह्वायो ॥

Closing : प्रभु केवय प्रमान ... ... जनकल्याणक गायो ॥

Colophon : इति पद पूर्णम् ।

८०३. आकृत्रिमचैत्यालय पूजा

Opening : ॐ ह्रीं असुरकुमारार्च्चितपकमार्गेषु दक्षिणदिगचतु त्रिसतलक्षाकृत्रिम जिनालय जिनेभ्यो ॥१॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophong : नही है ।

८०४. अनन्तव्रत विधि

Opening : एकादशी के दिन पूरतन करैं भगवान की तब व्रत स्थापन है। एक करैं तथा आचाम्ल पाणी भात करैं तथा द्वादशी को भी ऐसे ही करैं ... ।

Closing : अनन्त व्रत के मादक करन के कारने वाग्रे अनंत बनायसो
नीके धारने स्वर्णरजत पट्‌सूत्र भर्द्धव नवाई जी
पुजिभक्ति बहुत ठानि पुण्य उपजाय जी ।

Colophon : चतुर्दश पदार्थ चिंतवन को ब्यौरा जीव समास १४ अजीव १४
गुणस्थान १४ मार्गणा १४ । भूत । १५ ।
इति अनन्तव्रत विधि सम्पूर्णम् ।

८०५. अनन्तव्रतोद्यापन पूजा

Opening : श्री सर्वशं नमस्कृत्य सिद्धं साधू स्त्रिधा पुन. ।
अनतव्रतमुख्यस्य पूजा कुर्वे यथाक्रमम् ।।१।।

Closing : साध्यंश्योगुणचन्द्रसूरिरभवच्चारित्रचेतो हर,
स्तेनेद वरपूजन जिनवरानन्तस्य युक्त्यारचि ।
प्रेत्रक्षयानविकारिणा यतिवरास्तै. सोध्यमेतदबुधम्,
गद्यादारविचंद्रमक्षयतर मघस्य मागल्यकृत् ।।५।।

Colophon : इत्याचार्य श्री गुणचन्द्रविरचिता श्री अनंतनाथ पूजन व्रत-
पूजा उद्यापन सहिता समाप्ता ।।
सी० व्रा० मगाष्टकसपु ? ।।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६० ।
(२) जि० र० को०, पृ० ७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १६६ ।
(४) रा० सू० III, पृ० २०५ ।
(५) जै० ग्र० प्र० सं० I, पृ० ३४ ।

८०६. अंकुर रोपणविधि एवं वास्तुपूजा

Opening : अथ जवारा विधिलिख्यते । जवारा किहदिन दातारघरि देव
गुरु शास्त्र पूजा · · · ।

Closing : कीट प्रवेशादपि वास्तुदेवः,
चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम् ।।

Colophon : इति वास्तु पूजा विधि ।

८०७. अर्हद्देवबृहद शान्तिविधान

Opening : जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु ···· — ।
···· — — लोर सठपसाहूणं ।

Closing : एतद्देशीया महाभिषेकं नवुर्वन्ति तस्मान्मया न लिखितम् ।

Colophon : इत्यर्हद्देवबृहद्शान्ति विधि: समाप्त: ।

८०८. अर्हदेव शांतिकाभिषेकविधि

Opening : देखें क्र० ७५७ ।

Closing : अनेन विधिना यथा विभवमर्हत: स्नापनं विधाय महमन्वहं सृजति य: शिवाशाधर: स चक्रिर्हरितीर्थकृताभिषेक: सूरैः समर्चितपद: सदासुखसुधा बुधौ मज्जति । इति पूजाफलम् ।

Colophon : एवं समुदायाक: ३६० इत्यर्हदेव शांतिकाभिषेक विधि: समाप्ता ।
विशेष—यह ग्रन्थ करीब १८०० वि० सं० का है ।

८०९. अथ प्रकारीपूजा विधान

Opening : जलधारा चंदन पुहुप, अक्षत अरू नैवेद ।
दीपधूप फल अर्घजुत, जिन पूजा वसुभेद ।।

Closing : यह जिनपूजा अष्टविधि, कीजै कर सुचि अंग ।
प्रति पूजा जलधारसूं, दीजै अरघ अभंग ।।

Colophon : इत्यष्टप्रकारी पूजा विधानम् ।

८१०. अतीतचतुर्विंशति पूजा

Opening : १-श्री निर्वाण जी, २-सागर जी, ३-महासाधुजी, ४-विमल प्रभ जी ··· — ।

Closing : मां··· जन्माभिषेकसमये गर्भावतारे भवे,

मांगल्य यः तपश्रेचण भरता ज्ञान च निर्वाणकं ।
मांगल्यं यः सदा भवंति भवता श्री नाभिराजो गृहे,
मांगल्यं यत्सदा भवतु भवता श्री आदिनाथैः ॥

Colophon : इति जन्मपूजा संपूर्णम् । सं० १६६६ का ।

८११. बारसीचौबीसी पूजा वा उद्यापन

Opening : बारसि चुवीसातुवेरू । चतुर्दश जीवसमासा ।

Closing : कीर्तिस्फूर्ति --- --- सेवाफलात् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री शुभचन्द्र विरचित बारसि चुवीसा नूं उद्यापन मंत्रपाठ सम्पूर्णम् । श्री सूरतिबिंदिरे लिखापितम् । --- -- लालचन्द गुणवंत सघरैमनकर वाचियै भल भावै भगवंत । सं० १६४६ ।

८१२. भावना बत्तीसी

Opening : अतुलसुखनिधानं सर्वकल्याणवीजं,
जननजलधिपोतं भव्यसत्वैकपात्रम् ।
दुरिततरूकुट्ठारं पुण्यतीर्थप्रधानं,
पिवतु जितविपक्षं दर्शनाक्षं सुधांबु ॥१॥

Closing : इति द्वात्रिंशतावृत्तैः परमात्मातमोक्षये ।
योनन्ययतचेतस्कैयात्यसो परमव्ययम् ॥३३॥

Colopon : इति भावना बत्तीसी समाप्तम् ।

८१३. बीस भगवान पूजा

Opening : श्रीमज्जंबूधातकी -- --- नित्यं यजामि ॥

Closing : तुमको पूजा बन्दना करै धन्य नर जोय ।
सरदा हिरदै जोधरै सो भी धरमी होय ॥

Colopon : इति श्री बीसविहरमानपूजा जी समाप्तम् ।

८१४. बृहत्सिद्धचक्र पाठ

Opening : प्रणम्य श्री जिनाधीशं लब्धिसामस्त्यसंयुतम् ।
ओं सिद्धचक्रयंत्रस्याष्टसिहस्त्रगुणं स्तुवे ।।

Closing : श्री काष्ठासंघे ललिताविकीर्तिना भट्टारकेणैव विनिर्मित वरा
नामावलीपद्यनिबद्धरूपिका भूयात्सतां मुक्तिपदाप्तिकारणम् ।।

Colopon: इति श्री बृहत्सिद्धचक्रपाठ समाप्तम् । संवत् १९६१ चंद्रनाङ्क
चंद्रेब्दे माधवे सितगेमुनौ स्वनिमित्तं लिखेत्सीतारामनामकरेणशं ।

८१५. बृहत्सिद्धचक्रविधान

Opening : ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिंदुसपरं ब्रह्मस्वरावेष्ठितम्
वर्गा: पूरितदिग्गतांबुजदलं मृतत्वंधितत्त्वान्वितम् ।
अन्त. पत्र तटेष्वनाहतयुलं ह्रींकार संवेष्टितम्
देवं ध्यायति य: स्वमुक्तिसुभगो वैरिभकठण्ठे ख: ।।

Closing : निरवशेषनिरसनाय विव्यमहार्घ्यम् निर्वपामि
स्वाहा पूर्णार्घ्यम् । एवं शांतिधारादि । पुष्पाञ्जलि: ।।

Colophon : इति सर्वदोषपरिहार पूजा ।।

८१६. बृहत्शान्ति पाठ

Opening : भो भो भव्या शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् ।
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोराहंतां भक्तिभाज: ।।

Closing : अहं तित्थयरमाया सेविआमी तुह्म नयरनिवासिनी, अह्म
शिवं तुह्मशिवं अशिवोपशामं शिवभवंतु स्वाहा. ।

Colophon : इति बृहद् शांति समाप्तम् । सकल पंडित शिरोमणि पंडित
श्री दानकुशलमणि गणिराज कुशल शिष्य गुमानकुशल लिखितम् ।

८१७. चन्द्रशतक

Opening : अनुभव अभ्यास में निवास शुद्ध चेतन को,
अनुभव सरूप शुद्धबोध को प्रकाश है ।

अनुभव अनूप उपरकृत अनंत (ज्ञान) ग्यान,
अनुभव अतीत त्याग ग्यान सुखरास है ॥

Closing : सपत सेष गुनथान यौं छूटै एक गत देवकी ।
यौं कही अरथ गुरु ग्रन्थ मैं सति बचन जिनसेवकी ॥

Colophon : इति श्री चंद्रशतक संपूर्णम् । मिती माघशुक्ल द्वितीया सोमवासरे सम्वत् १८९० साल मध्ये । लिखापित श्री धर्ममूरति बाबू अक्छेलाल जी जातिअग्रवाल वसैया आराके । लिपिकृतं नंदलाल पांडे छपरा के दौलतगंज मध्ये । श्रीजिनं भजतु ।

८१८. चैत्यालय प्रतिष्ठाविधि

Opening : सुकनासस्य पर्यन्तं वेदिकास्तरंतरे ।
गर्भे प्रनरकं कृत्वा वेदिकां तत्र विन्यसेत् ॥

Closing : शांतिकपौष्टिकं इति षटकर्मविधि — .... ।
... ... मुक्तिकांतापिवश्या ॥

Colophon : इति यंत्रार्चन विधि समाप्ता: ।

८१९. चतुर्विंशति पूजा

Opening : ऋषभ अजित .... — पुष्प चढाव ॥

Closing : भुक्ति मुक्ति दातार ... ... सिव लहै ॥

Colophon : इति श्री समुच्चय चौबीसी पूजा संपूर्णम् ।
इह पूजन जी की पोथी चढाया व्रत के उद्यापन में बाबू धरमेसरी सहाय की भार्या बनसीकुँवर ने । मोक्ष गमिस । मिती फागुन बदी २२ । सन् १२८१ साल ।
विशेष—इसकी १४ प्रतियाँ है ।

८२०. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर पूजा

Opening : प्रणम्य श्री जिनाधीशं लब्धिधामस्तिसंयुतम् ।
चतुर्विंशति तीर्थेशं वक्ष्ये पूजां क्रमागताम् ॥

Closing : — — पश्चात् चतुर्विंशति जिनमातृकास्थापनम् ।

Colophon : मिति भाद्रव। कृष्णपक्षे तिथौ च आज ११ तेरस: शनिश्चरवासरे संवत् १२६२ का । शाके १७५७ का प्रवर्त्तमाने लिप्यकृत मधेन राधा की सनवासल्पनग्रममध्ये पोथी लिखी।. श्रीरस्तु मंगल क्रियात् । श्री गुरुभ्यो नमः ।। पोथी चोइस महाराज की पूजा संपूर्ण समाप्ता ।

देखें—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 640.

८२१. चतुर्विंशति जिन पूजा

Opening : देखें, क्र० ८१६ ।

Closing : देखें, क्र० ८१६ ।

Colophon : इति श्री चतुर्विंशतिजिनपूजा सम्पूर्णम् ।

८२२. चौबीसी पूजा

Opening : अलख लखत सब जगत् के, रखवारे ऋषिनाथ ।
नाभिनंद पदपद्म छवि, तिनहिं नवाऊँ माथ ।।

Closing : ·· — भव रूप में ठग वंदराज शिवतिय के भर्ता,
तिनचरण त्रिकाल त्रिशुद्ध है, नमिनमिनित आनंद भरत ।
जिन वर्तमान पूजन शुभगमनरंग संपूरन करत ।।

Colophon : संवत् विक्रम द्विक सहस, तामें अड़तीस कम ।
पाचि कृष्ण वैशाख की, चंद्रवार रिषरूम ।।१।।
नगर सहारनपुर विषैं, सीताराम लिखंत ।
भविजन बांचो भावसौं, पाठक पाठ पढ़ंत ।।२।।
संवत् १६६२ शक १८२७ वैशाख कृष्णा ५ सोमदिने शुभम् ।

८२३. चौबीसी पूजा

Opening : वंदौ पांचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदित जास ।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकास ।।

Closing : कासीजोनी कासीनाथ नव्वी अनंतराम मूलचंद आठलै
सुराम आदि आनियो ।
सजन अनेक तिहां धर्मचंद जी को नद वृंदावन अग्रवाल
गोलमोती वानियो ॥
तानै रच्यो पाय मनालाल को सहाय बालबुद्धि अनुसार-
सुखी सरधानियो ।
तामैं भूलचूक होय ताहि सोधि सुद्धकीज्यो मोहि
अल्पबुद्धि जानि क्षमा उर आनियो ॥

Colophon : नहीं है ।

८२४. चौबीस तीर्थङ्करपूजा

Opening : देखे क्र० ८२३ ।

Closing : जय त्रिसलानंदन हरि कृत वंदन जगदानंदन चंद वरं ।
भवताप निकन्दन तनकन मदन रहित सवंदन नयन धरं ॥

Colophon : नहीं है ।

८२५. चौबीसी पूजा

Opening : देखें, क्र० ८२३ ।

Closing : चौबीसों जिनराज को जजो अंकसुनाय ।
इच्छा पूरन कर प्रभू, हे त्रिभुवन के राय ॥

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीसी पाठ सम्पूर्णम् । कार्तिक कृष्ण ६ सं० १९६५ वार शनि ।

८२६. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा

Opening : इन्द्रः चैत्यालयं गत्वा वीक्ष्य यशाविसक्जिनान् ।
यागमंडलपूजार्थं कर्माकुर्वेमिदं ॥१॥

Closing : धूपश्रीखण्डदेवदारोयं गुग्गुल रगर्रसिका ।
धूपराजस्य मन्माज्य स्थूलधपसंग्रहाविकम् ॥

Colophon : इति चिंतामणिपार्श्वनाथ पूजा समाप्ता ।
देखें—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 641.

८२७. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा

Opening : जगद्‌गुरुजगद्देवं जगदानन्ददायकम् ।
जगद्वंद्यं जगन्नाथ श्रीपार्श्वं संस्तुवे जिनम् ।

Closing ; जित्वा दाराति भवांतरश्रेष्ठं
... कर्मपिर्वत ।।

Colophon : :—

८२८. चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा

Opening : शान्तं — .... ।
... आयते पुजयेद्यः १ ।।

Closing : आपद विविधहारी संपदा सौख्यकारी,
त्रिभुवन पदधारी सिद्धलोकाग्रसूरी ।
जल बहुविध पूरै गधमाल्यादि साहै,
जिनवर मुख बिम्बं पूजित भावभक्त्या ।।

Colophon : इति पूर्ण ।

८२९. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा

Opening : देखें, क्र० ८२७ ।

Closing : दीर्घायु: शुभगोत्रपुत्रधनिका — .... ।।
... मांगल्यमोक्षोद्यता: ।।

Colophon : इति श्री चिंतामणिपार्श्वनाथवृहत्पूजा समाप्ता ।

८३०. दसलाक्षण उद्यापन

Opening : विमल गुणसमृद्धं ज्ञान विज्ञान शुद्धं,
शमदमन प्रचंडं चिन्मयूख प्रचंडम् ।
अत दसविधसारं संजते श्री विपारं,

प्रथमं जिन बिंबं श्रीस्नात्वा जिनेश्वम् ।।

Closing : दशधर्मं प्रभां पूजां सुमतिसागरोदितम् ।
स्वर्गमोक्षप्रदां लोके, विश्वजीवहितप्रदाम् ।।

Colophon : इति दसलाक्षणोद्यापनं समाप्तम् ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र. र., पृ. १६६ ।
(२) जि. र. को., पृ. १६८ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६०।
(४) रा० सू० III, पृ० ५४
(५) रा० सू० IV, पृ० ७६५ ।
(६) भ० सं०, पृ० १६३, २०० ।
(७) जै० ग्र० प्र० सं० I, पृ० ८७ ।

८३१/१. दशलक्षण उद्यापन

Opening: देखें, क्र० ८३० ।

Closing : देखें, क्र० ८३० ।

Colophon : इति श्रीदशलक्षणोद्यापनपाठ सम्पूर्णम् ।

८३१।२. दशलाक्षणीक व्रतोद्यापन

Opening : देखें, क्र० ८३० ।

Closing : उपवासपरोजातो ... ... विश्वजीवहितप्रदम् ।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणी उद्यापन जी संपूर्णं जेष्ठ कृष्ण ११ एकादश्यां भोमवार १ बजे दोपहर को संवत् १९५५ आरामपुर निजग्रह में बाबू हरीदास पूज्यदादा वृंदावन जी के पोते श्री पुत्र बाबू अजितदास के पुत्र ने लिखा ।

८३२. दसलक्षण पूजा

Opening : उत्तम छिमा मारदव आर्जव भाव हैं,
सत्य शौच संजम तप त्याग उपाव हैं ।

आकिंचन ब्रह्मचर्य धर्मदस सार हैं,
चहुंगति दु:ख तैं काढ़ि मुकति करतार हैं ॥

Closing : करैं कर्म की निर्जरा, भवपींजरा विनाश ।
अजर अमर पद कूं लहै, द्यानत सुख की राश ॥

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा संपूर्णम् ।

८३३. दसलाक्षण पूजा

Opening : उत्तमादि क्षमाद्यंते ब्रह्मचर्य सुलक्षणम् ।
स्थापयद्दशधा धर्ममुत्तम जिनभाषितम् ॥

Closing : कोहानल चक्कउ होइ गुरुक्कउ, आइरिसिद सिद्धइं ।
जगताइ सुहंकरू धम्ममहातरू देइ फलाइ सुमिहुइ ॥

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा आरती संपूर्णम् ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६५ ।

८३४. दसलाक्षण पूजा

Opening : देखें—क्र० ८३३ ।

Closing : देखें—क्र० ८३२ ।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणी पूजा सम्पूर्णम् ।
श्री संवत् १६५१ मिती वैशाखकृष्ण परिवा को सितलप्रसादके पुत्र विमलदास ने चढ़ाया ।

८३५. दशलाक्षण पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३१ ।

Closing : देखें, क्र० ८३२ ।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणी पूजा जी समाप्तम् ।

८३६. दर्शन सामायिक पाठ संग्रह

Opening : चतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यो नमः श्रीसरस्वतिभ्यो नमः ... ॥

विशेष—अनेक पाठों का संग्रह किया गया है ।

८३७. देवपूजा

Opening : सुरपति — ... पूजा रचों ॥

Closing : कीजै सकत समान विन सकते सरधा धरे ।
द्यानत सरधावान अजर-अमर सुख भोगवे ॥

Colophon : इति ।

८३८. देवपूजा

Opening : ॐ अपवित्रःपवित्रो वा सुस्थितो दुस्थितोपि वा ।
ध्यायेत् पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

Closing : श्रीसंघाजविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयंतो नराः,
पुण्याढ्या मुनिराजकीर्तिसहिता भूतातपो भूषणाः-
ते भव्याः सकलाः वित्रोधरूचिरं सिद्धिं लभंते परां॥ "।

Colophon : इतिदेवपूजा समाप्तम् ।

विशेष -- नेमिनाथ का बारहमासा भी इसके बाद में दिया हुआ है ।

८३९. देवपूजा

Opening : जय जय जय नमोस्तु ... ... — ।
.... सव्वसाहूणं ॥१॥

Closing : हरीवंशसमुद्भूतो नरिष्टनेमिजिनेश्वरः ।
ध्वस्तोपसर्गदैत्यारि पार्श्वनागेन्द्रपूजितः ॥४॥

Colophon : — अनुपलब्ध

८४०. देवपूजा

Opening : देखें—क्र० ८३९ ।

Closing : दुःख का क्षय होहु । कर्म का क्षय होहु ।
भली मति विषै गमन होहु । .....

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् ।

८४१. देवशास्त्रगुरु पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३६ ।

Closing : जे तपसूरा संयमधीरा सिद्धिवधूअणुराइया ।
रयनत्तयरंजिय कम्महृगंजिय ते रिसिवर मम भाइया ॥

Colophon : इति देवशास्त्रगुरुपूजा जी समाप्तम् ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ११६ ।

८४२. देवपूजा

Opening : ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्नान स्थान भू शुद्धयतु स्वाहा ।

Closing : तुष्टिं पुष्टिमनाकुलत्वममिल सौख्यश्रियं सपदी ।
दद्यात्पुत्रकलित्रमित्रसहितेभ्यः श्रावकेभ्यः सदा ॥

Colophon : इति न्हवण विधि संपूर्णम् ।
देखें (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६७ ।

८४३. धर्मचक्रपाठ

Opening : आपदागम परारधों के, स्वामी सर्वज्ञ आप ही ।
सुरिंद वृंद सेवै है, आपहीं को इसलोक मे ॥१॥

Colsing : धर्मस्वानंद मोघाः प्रशरतु सततं भद्रमाला विमाला,
.... भोजयुग्मप्रसुते ॥

Colophon : इत्याचार्यवर्य्य धर्म्मभूषणपदाम्भोजदिवाकरायमानैः श्री यशोनंदीसुरिभिः प्रणीत धर्म्मचक्रपाठ आश्विन शुक्ल प्रतिपदा बुद्धवार संवत् १६९२ आरामपुर में हरिदास ने लिखकर पूर्ण किया ।

८४४. धर्मचक्रपाठ

Opening : ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शना नमः स्वाहा, ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ।

Closing : ॐ ह्रीं मिश्रमिथ्यात प्रकृत श्री सिद्धदेवेभ्यो नमः स्वाहा ।

Colophon : अनुपलब्ध

८४५. धर्मचक्र पूजा

Opening : ह्रींकारेणवृतोर्हन् त्रिवलरसदलं तद्वहिः,
बीजजुग्मं तदूर्ध्वंबालसराले सकलशशिनिभ सैकयेत्परमेष्ठीनम् ॥

पूर्वं रत्नत्रयाकं त्रिगुणवरयुतो धर्म्मपंचद्विकेन
तद्वत्त्रिधाष्टकं यद्विकगुणयुतं पूजयेद्भक्तिनम्रः ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं श्री वीरनाथाय नमः ।।२४।।

Colophon : इति धर्मचक्रपूजा विधिः समाप्ता । शुभं भवतु ।

८४६. गणधरवलय पूजा

Opening : जिनान् जितारातिगणान् गरिष्टान,
देशावधीन् सर्वपरावधींश्च ।
सत्कोष्ठवीजादिपदानुसारीन्,
स्तुवेगणेसानपि तद्गुणाप्तौ ।।१।।

Closing : परिगणिदसमरं तहं फिट्टइवाहि असेसलऊ ।
चऊ पावब णासई होइ लवि महासुण सविसदजणण ।।

Clophon : इति ।

८४७. गणधरवलय पूजा

Opening : प्रणम्य शिरसार्हंतं पवित्रिस्तीर्थवारिभिः ।
गणीन्द्रवलयस्यार्चे पूर्णकुंभं न्यासाम्यहम् ।।

Closing : ··· संपूजकानां इत्यादि शांतिधारा ।

Colophon : इति श्री गणधरवलय पूजा समाप्तः

८४८. ग्रहशान्तिपूजा

Opening : अष्टसघन जोधार सबै, रवि सुत पीड़ा देई ।
तब मुनिसुव्रत पूजबे, पातक नास करेय ।।

Closing : सगुण अधिकारी दुःख हरभारी रोगादिक हरनम् ।
शुभ सुल सब आई पाप मिटा (ई) पुष्पदंत पूजत चरनम् ।।

Colophon : इति शुक्रारिष्ट निवारक पुष्पदंत पूजा सम्पूर्णम् ।

८४९. होमविधान

Opening : श्री शान्तिनाथ ममरासुर मर्त्यनाथ,
माभ्यर्चित चैरवधि बीजित पादपद्मम् ।

त्रैलोक्य शांतिकरणं प्रणवं प्रणम्य:
होमोत्सवाय कुसुमांजलिमुक्षपामी ।।

Closing : तिनने लिखदिनो होम को विधान जान,
पंडित सु लक्ष्मीचांद नाम जु बखान है ।
भूल चूक होय ओ भाई तुव सुधारि लिज्यो,
हमपर छिमाभाव मेरी यह आन है ।।

Colophon : इति सम्वत् १९३० मिती चैत्रवदी १० राति आधी गई रोज सोमवार ।

८५०. होमविधान

Opening : शांतिनाथं जिनाधीशं वंदितं त्रिदशेश्वरे ।
नत्वा शांतिकमावक्ष्ये सर्वविघ्नोपशांतये ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं क्रौं प्रशस्ततर: सर्वदेवा ममाभिलषित
सिद्धिं कृत्वा निज-निज स्थानं गच्छतु ॐ स्वाहा ।

Colophon : इत्याशाधर विरचितं शांत्यर्थ होम विधान सम्पूर्णम् ।

८५१. इन्द्रध्वजपूजा

Opening : सकलकेवलज्ञानप्रकाशकं, सकलकर्मविपाटन सद्भवम् ।
सकलचिन्मय ज्योतिविकासकं, सकलधर्मध्वजांकित सद्रथम् ।

Closing : पद्मपुरुषपद्मसमानमति, पद्मालयासजमुक्तिभागी ।
तन्मगलं भव्यजनाय कुर्यात् सुरोजचिन्तांकितविश्व-
दृष्टि: ।।

Colophon : इति रुचिकगिरिउत्तरदिक्, चैत्यालयपूजा समाप्ता । इति श्रीविशालकीर्तित्यात्मज विश्वभूषणभट्टारक विरचितायां इन्द्रध्वजपूजा समाप्ता । मिति माघ कृष्णपक्षे ६ म्यां शुक्रवासरे संवत् १६१० ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र० पृ० १७३ ।
(२) जि० र०, को०, पृ० ४० ।
(३) रा० सू० II, पृ० ५७, ३०६ ।
(४) रा० सू० III, पृ० ५०, १६८ ।
(५) आ० सू०, पृ० १७१ ।

८५२. इन्द्रध्वजपूजा

Opening : देखें, क्र० ८५१ ।

Closing : देखें, क्र० ८५१ ।

Colophon : देखें, क्र० ८५१ ।

श्रीसंवत् १६५१ मी० वैशाख कृष्ण परिवा को सितलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढाया पंचायती मंदिर जी में ···· ···· १६५३ ।

८५३. इन्द्रध्वजपूजा

Opening : सकलमेव कथामृततर्प्पकं, सकलचारुचरित्रप्रभासतम् ।
सकलमोहमहातमघातकं सकलकलासप्रवासकम् ।।

Closing : देखें, क्र० ८५१ ।

Colophon : इति श्री विशालकीर्त्यात्मज विश्वभूषणभट्टारक विरचितायां इन्द्रध्वज पूजां समाप्ता । सम्वत् १८७० ज्येष्ठ शुक्ल एकादस्यां बुधवासरे पुस्तकमिदं रघुनाथ शर्म्मने लेखि पट्टनपुर मध्ये । शुभमस्तु । पुस्तक संख्या ३६०७ । लाला शंकर लाल रतन चंद के माथे के ।

८५४. जन्मकल्याणक अभिषेक जयमाला

Opening : श्रीमत श्री जिनराज ···· पूजा च मेरौ कृतम् ।।

Closing : जिनवर वरमाला ···· लभंते विमुक्ति ।।

Colophon : इति श्री जन्मकल्याणक अभिषेक की जयमाला सम्पूर्णम् ।

८५५. जापविधि

Opening : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा ।

Closing : दर्शन दे चाहै तौ एकै लाख जाप करै दिन तीनि उपवास के पारने चरमोवाहु लाल वस्त्र लाल माला कनेर के फूल करणा तेज प्रताप अपि करै ।

Colophon : इति जाप विधि सम्पूर्णम् ।

८५६. जिनपंचकल्याणक जयमाला

Opening : जिनेन्द्रपंचकल्याणं प्रणम्य स्वर्गापवर्गकिंकरं कराणां ।
सुरासुरेन्द्रादिभिरर्चनीयं तस्यैवभक्त्यास्तवनं करिष्ये ।।

Closing : विद्याभूषणसूरिपादयुगलं नत्वाकृतं सार्थकं,
स्तोत्रं श्री सुखदायकं मुनिनुतैः संगर्भितं सुंदरम् ।
चञ्चारुचरित्रपंचकयुतं श्री भूषणैः भूंषणैः,
तीर्थेशैर्गुणगुंफितं कृतकरं प्रण्यं सदाशंकरम् ॥

Colophon : इति जिन पंचकल्याणक जयमाला सम्पूर्णम् ।

८५७. जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय (विद्यानुवादांग)

Opening : लक्ष्मीं दिशतु वो यस्य ज्ञानादर्शे जगत्त्रयम् ।
व्यदीपि स जिनः श्रीमान्नाभेयो नौरिवाम्बुधौ ॥१॥
माङ्गल्यमुत्तमं जीयाच्छरण्यं यद्रजोहरम् ।
निरहस्यमरिघ्न तत्पञ्चब्रह्मात्मकं महः ॥२॥

Closing : तिथिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रं द्विगुणं भवेत् ।
लग्नन्तु त्रिगुणं तेषां शुभाशुभफलं भवेत् ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

८५८. जिनयज्ञफलोदय

Opening : सर्वज्ञं सर्वविद्यानां विधातारं जिनाधिपम् ।
हिरण्यगर्भं नाभेयं वन्देऽहं विबुधार्चितम् ॥१॥
अन्यानपि जिनान्नत्वा तथागणधरादिकान् ।
कथ्यते मुक्तिसम्प्राप्त्यै जिनयज्ञफलोदयः ॥२॥

Closing : द्विसहस्रमिदं प्रोक्त शास्त्रं ग्रन्थप्रमाणतः ।
पञ्चाशदुत्तरैः सप्तशतश्लोकैश्च संगतम् ॥४२७॥
पञ्चाशत्तिशतीयुक्तसहस्रशकवत्सरे ।
त्पवंगे श्रुतपञ्चम्यां ज्येष्ठेमासि प्रतिष्ठितम् ॥४२८॥

Colophon : इत्यार्षे श्रीमत्कल्याणकीर्तिमुनीन्द्रविरचिते जिनयज्ञफलोदये विप्रभट्टहेमप्रभादिकृत जिनयज्ञाष्टविधानाख्यवर्णनं नाम नवमो लम्बः समाप्तः । अस्मिन् ग्रंथे स्थितानि श्लोकानि ॥२७५०॥ करकृतमपराध क्षतुमर्हंति संत इति प्रार्थयामि ।

अयं जिनयज्ञफलोदयो नाम ग्रंथः वेणुपुर (जैन मूडबिद्री) निवासिना नेमिराजाख्येन लिखितः । रक्ताक्षिसंवत्सरे फाल्गुनशुद्धाष्टम्यां समाप्तश्चाभूत् ।

८५६. जिनप्रतिमा स्थापन प्रबन्ध

Opening : श्रीजिन वंदउं चोवीस, सविगणधर गइं नामु सीस ।
श्री सद्गुरुनां चरण नमेवि, मनि संभारु शारद देवि ॥

Closing : संवत् सोलसतोतरइं कार्तिक शुदि तेरसि बारइ गुरइ ।
भणतां गुणतां अणंद करइ, बदउजा जिन धर्म
विस्तरइं ॥६१॥

Colophon : इति श्रीब्रह्मविरचिते जिनप्रतिमास्थापनप्रबंधे सम्पूर्णम् ।

८६०. जिनपुरंदरव्रतोद्यापन

Opening : श्री मदादिजिनं नौमि पंचकल्याणनायकं ।
इंद्रादिभिर्देवगर्णै पूजितं अष्टधाश्च तैः ॥

Closing : धर्मवृद्धि जयमंगलमालराज ऋद्धिप्रददाति समाजं जंपापताप दुःखरोगविनाश कुर्वते जिनपुरंदरवास: । इत्याशीर्वाद: ।

Colophon : इति श्रीजिनपुरंदरपूजा उद्यापन समाप्तम् । मिति मार्गसिर (शीर्ष) बदी ४ भौमवासरे सम्वत् १९३२ लिखत रामगोपाल ब्राह्मण ।

८६१. कलिकुंड पार्श्वनाथ पूजा

Opening : हूंकारं ब्रह्मरुद्रं ... ... ।
... ... विद्याविनाशे प्रयुक्तम् ॥१॥

Closing : तरलतरो ... . ।
राजहंसोवंसताह ॥

olophon : इति कलिकुंड स्वामी पूजन सम्पूर्णम् ।

८६२. कलिकुंडल पूजा

Opening : ॐकारं ब्रह्मरूद्रं स्वरपरिकलितं वज्ररेखाष्टभिन्नं,
वज्रस्याग्रांतराले प्रणवकमुपमांवाह्नं संपुंभि च ।
वर्णांताद्यानवर्णिकाम् ... ...
... दुष्टविद्याविनाशी ॥१॥

Closing : इति परमजिनेन्द्रं विनुतमर्हिदं यह: कलिकुण्डमरखंड खंडद्वयं ।
पूजयति सजयति स्तुतिकृतिमयति प्रतिसिवं मुक्तमुदयं ।।

Colophon : इति कलिकुंडल पूजा समाप्तम् ।

८६३. कलिण्डाराधना विधान

Opening : सत्पुष्पधाम्ना प्रविराजितेन पुष्पेण पूर्णेन सुपल्लवेन ।
संमंगलार्थं कलिकुंडदेवम् उपाग्रभूमौ समलंकरोमि ।।
शुद्धेन शुद्धह्रदकूपवापीगंगातटाकादिनामावृतेन ।
शीतेन तोयेन सुगंधिनार्हं भक्त्याभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ।

Closing : कलिलदहनदक्षं यौगियौगोपलक्षम्
द्याविकुलकलिकुंडो दंडपार्श्वप्रचंडम्
शिवसुखमभवद्धा वासवल्ली वसन्तम्
प्रतिदिनमहमीडे वर्द्धमानस्य सिद्धयै ।।

विशेष—प्रशस्ति संग्रह (श्री जैनसिद्धान्तभवन) द्वारा प्रकाशित पृ० ६६ में संपादकभुजवली शास्त्री ने ग्रन्थ के बारे लिखा है—इस कलिकुण्डाराधना' के आदि में कलिकुण्डयन्त्र एवं श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा का अभिषेक, भूमिशुद्धि, पञ्चगुरुपूजा और चत्तारि अर्घ्य निर्दिष्ट हैं। बाद पार्श्वनाथ पूजा एवं इन्हीं की मन्त्रस्तुति धरणेन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षी की पूजा तथा इनके मन्त्र स्तोत्र दिये गये हैं। इसके उपरान्त मंत्र लिखने की विधि और फल इत्यादि का निर्देश करते हुए प्रस्तुत मन्त्र की पूजा बतलाई गयी है। अन्तमें यन्त्रीय मंत्र की स्तुति, मंत्रस्थ पिण्डाक्षरोंका अर्घ्य, अष्टमातृका की पूजा, मन्त्रपुष्प और जयमाला लिखी गयी है। इसके कर्ता भी अभी तक अज्ञात ही है।

८६४. कर्मदहन पाठ भाषा

Opening : लोक शिखर तन छांडि अमूरति ह्वै रहैं ।
केवल ज्ञान सुभाव नेहतैं भिन्न भये ।।
लोकालोक सुकाल तीन सब विधिधनी ।
जानै सो सिद्धदेव जजौं बहु थुति ठनी ।।

८६८. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८९५ ।

Closing : देखें—क्र० ८६६ ।

Colophon : इति कर्मदहनपूजा संपूर्णम् ।

इदं कर्मदहनपूजा व्रजपालदासतयात्मज जिनगरदासेन लिखपिता ।।

स्वयं पठनाय ।।

८६९. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें क्र० १५ ।

Closing : देखें, क्र० ८६६ ।

Colophon : आशीर्वाद: । इति कर्मदहनपूजा समाप्ता । ग्रंथ संख्या ३३५ । शुभं भवतु ।

८७०. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८१५ ।

Closing : देखे—क्र० ८६८ ।

इति कर्म दहन पूजा सम्पूर्णम् ।

Colophon : शुभमस्तु ।

८७१. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें— क्र० ८१६ ।

Closing : यो धर्मकर्मनिबन्धनं — --- पूजेयमानन्दया ।।

Colophon : इति सूरि श्री [illegible]कृता श्री कर्मदहनपूजा समाप्ता ।

८७२. क्षेत्रपाल पूजा

Opening : श्री काष्ठासंघे [illegible] सर्वभवयं प्रणिपत्य पूर्वम् ।
श्री क्षेत्रपालोत्तमपूजनस्य, विधिंप्रवक्ष्ये विधि नागमतः ।।

Closing : पुत्रांश्च मित्राणि कलत्रदम्भून, सन्ध्यप्रकीर्तिरमणी सरूपाः ।
श्री क्षेत्रपालोद्धतप्रभावा ददातु ते सर्व समी हितानि ।।

Colophon : इति क्षेत्रपालपूजा समाप्तम् । शुभ संवत् १८३६ पौषशुक्ल चौथचंद्रवासरे लि० चैनसुखेन । शुभ भूयात् ।

विशेष—सबसे अन्त में एक स्तुति भी लिखी गई है ।

८७३. लघु सामायिक पाठ

Opening : पडिक्कमामि भंते इरियाए विराहणाए अणागुत्ते अइगमणे णिग्गमणे ठाणेगमणे चंकमणे ...... ।

Closing : गुरवः पांतु वो नित्यं, ज्ञानदर्शननायकाः ।
चारित्रार्णवं गंभीराः मोक्षमार्गोपदेशकाः ।।

Colophon : इति सामायिक स्तवनं समाप्तम् ।

८७४. महाभिषेक विधान

Opening : श्रीमज्जिनराजजन्मसमये स्नानकर्मप्रक्रिया,
मेरोर्मूर्ध्नि पयः पयोधिविपयः पूर्णैः सुवर्णात्मकैः ।
कामं याममितप्रमाणघटगतैः शक्रादयस्त्वकिरे,
त्वामहार्यजनानुरागजननी जातोत्सवं प्रस्तुवे ।।

Closing : पार्थीभिः पातयामस्त्वदनुतजगतां शांतये शांतिधाराम् ।

Colophon : एवं चार्हं कर्मपरिसमापित महाभिषकं कल्याणमहामह विधानः समाप्तः ।

८७५. महावीर जयमाल

Opening : अमृतसरसिहंसो सुकृतव्योमहंसो,
सचकसनुजहंसो मुक्तिमार्गैकहंसः ।
कनकगिरिवतंसी भावधंसहंसो,
जयतु पृथ्वीसुवीरो भव्यसेव्यासुघार्मः ।।१।।

Closing : अखिलनृसुरनती पंचकल्याणकर्त्ता,
त्रिदशचरणवर्त्ता दुःखसंदोहहर्त्ता ।
भवजलनिधितर्त्ता सिद्धिकांताविवर्त्ता,
भवतु जगतिवीरो नेमीशं मंगलाय ॥१०॥

Colophon : इति श्री महावीर जयमाल समाप्तम् ।

८७६. मंदिरप्रतिष्ठा विधान

Opening : श्री मद्वीरजिनेशार्त प्रणिपत्य महोदयम् ।
अर्हंमध्यविधानस्य शुद्धि वक्ष्ये यथागमम् ॥

Closing : तिर्यग्प्रचारादवनिप्रयाता,
बीजप्ररोहा व मक्षाततातात्
कीटप्रवेशादपि वास्तुदेवाः,
चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम् ॥
अथाग्रे शांतिधारा कुर्यात् ।

Colophon : नहीं है ।

८७७. मृत्युंजयमयाराधना विधान

Opening : चंद्रपुरांबुधिचंद्रं चंद्रार्कं चंद्रकांतिकाशम् ।
चंद्रप्रभजिनमर्चे कुंदेन्दुस्फारकीर्तिकांताकांतम् ॥

Closing : अत्यंतभवयानतदैवचंद्रसूर्याभिषंचाग्रजिनेन्द्रभक्ताः ।
बद्धाणिकाया उररीकृताद्यां सर्वोऽपमृत्युं विनिवारयंतम् ।
अणिमादिगुणैश्वर्यमालिन्येत्यष्टमातरः ।
याजकानां सुसांसर्गं सुप्रसन्ना भवंतु ते ॥

Colophon : नहीं है ।

८७८. मूलसंघकाष्टा संघी

Opening : श्रीसंघूलविर मस्तके --- --- --- ।
--- --- --- जैनानिधिकोरसौ ॥

Closing : चौबीसों जिनदेव प्रभु यह बंधो विचार ।
कुमि पूजों प्रत्येक तुम जो पावो सुखसार ॥
Colophon : इति नवग्रह पूजा सम्पूर्णम् ।

८८२. नवकार पच्चीसी

Opening : … मुषकू ढके बोलइ या परधन के हरइ या काम्नौ न जाके हिये है ।

Closing : यह नवकार सु पच पद जपो सुमनवचकाय ।
सकलकर्मनासकरि पचमगति को जाय ॥२६॥

Colophon : इति श्री नवकारपचीसी समाप्त । मिति ज्येष्ठ शुक्ल चउदश्या सवत् १९१३ साल ।

८८३. नान्दी मंगल विधान

Opening : तनूदरीनिर्मितमगलादिके नांदीविधान क्रियतेत्रशोभनम् ।
पृथग्विनिरर्वाप्य जिनार्च्चनततो जलादिभिर्ग्रविशेष-कमुंदा ॥

Closing : ॐ कपिल बटुकपिंगलाय क्लौ क्लौ स्वा लों ह्रीं पुष्पदंत संवौषट् ।

Colophon : इति नांदीविधान सपूर्ण ।

८८४ नान्दीमंगलविधान

Opening : पातु श्रीपादपद्मानि पञ्चानांपरमेष्ठिनां ।
ललितानि सुराधीश चूडामणि मरीचिभिः ॥

Closing : ओं ह्रीं षण्नवतिव्यं स्वाहा पञ्चस्थापनम् ।

Colophon : इति नांदी मंगलविधानं समाप्तम् । शुभभूयादिति च ।

८८५. नित्यनियम पूजा

Opening : ओंजय्यस्त्रतमभूपत …. …. जिनांसमाश्रितम् ॥

Closing : सुखदेवो दुखमेटिवो …. …. पावँपद निर्वाण ॥

Colophon : इति [illegible] संपूर्णं ।

विशेष—नित्य करने वाली पूजाएं इसमें संकलित हैं ।

८८६. नित्यनियम पूजा

विशेष—प्रारम्भ के पत्र जीर्ण है तथा अन्तिम पत्र अनुपलब्ध हैं ।

८८७. नित्यनियम पूजा संग्रह

Opening : ॐ जय जय जय णमोऽस्तु णमोऽस्तु ... ... ।

Closing : कीजे [illegible] समाव .... सुख भोगवै ।।

Colophon : इति भाषा आरती सम्पूर्णम् ।

८८८. निर्वाण पूजा

Opening : ॐ नमः सिद्धेभ्यः इत्यादि स्थापना ।

Closing : जे पढतिमालं जिदुईकंठ भावसुद्धीये ।
भुंजीवि णरसुरसुक्खं पाच्छा सो लहई णिव्वाणं ।।

Colophon : इति श्री निर्वाणकांड सम्पूर्णम् । कार्तिकशुक्ल २ संवत् १६६४ भौम-शुभम् ।

८८९. पंचमंगल

Opening : [illegible] प्रणमुव गुरु जिन शासनं ।
[illegible] सिद्धि [illegible] सुविघ्नविनाशनं ।।
सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनं ।
मंगल [illegible] संघहि पाप प्रनासनं ।।

Closing : [illegible] सिद्धि ... ... [illegible] ।।

Colophon : इति पंचमंगल सम्पूर्णम् ।

८९०. पंचमीव्रतोद्यापन

Opening : श्री[illegible]सनार्च्चितपाद पद्मं,
[illegible] निधान पद स्वभावाम् ।

यस्तावान् जिनपदे कमलाकृतीर्वं,
संस्थापयँविविधिवर्णसुलेप्युततम् ।

Closing : जयति विदधि कीर्तेरामकीर्तेसुतस्त्री,
जिनपतिपदभक्तो हर्षकायाकुमोर ।
नवविन उदयसुनुनेन कल्याणभूमौ
विविरयमेवर्ना।मामे।ऽसानसौख्यं ददातु ॥

Colophon : इति श्री आशीर्वाद । इति पंचमी व्रत उद्यापन समाप्ता ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २२७ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६४ ।

८६१. पंचमेरु पूजा

Opening : स्‌नेपकाहूय — ... प्रतिमा समस्ता ॥

Closing : पचमेरु की आरती .... सुख होई ॥

Colophon : इति श्री पंचमेरु की पूजा जी सम्पूर्ण ।

विशेष—साथ में नदीश्वर पूजा भी है ।

८६२. पंचपरमेष्ठा पूजा

Opening : कल्याणकीर्तिकमला — ... प्रवक्ष्ये ॥१॥

Closing : सिद्धि बुद्धि समृद्धि प्रथयतु तरणिस्फूर्जद्गुणैः प्रतापं ॥
कांति शांति समाधिं वितरतु भवतामुत्तमानामु भक्तिः॥१६॥

Colophon : पंचपरमेष्ठि पूजाविधान संपूर्णम् ॥६॥ (१८७५) वर्षेचाश्व नगाहिमीत किरणै संख्यामिते कार्तिकस्येतोर्वीवराकम्यका सुतिथौ शीतांशुपुत्राहनि । पूर्णाकारि जिनेन्द्र भूषणयतेः शिष्येण वैराग्यवि-नीपक्ष्माभृतिरअवनर इति क्वाति अठेनाख्यया ॥१॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८७ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २२५ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६४ ३१४ ।
(४) रा० सू० III, पृ० ५७ ।

(५) प्र० जै० सा०, पृ० १७२ ।
(६) भा० म०, पृ० १३२ ।
(7) Catg of Skt. & Pkt. Ms, P. 662.

८६३. पंचपरमेष्ठी पूजा

Opening : देखो, क्र० ८७२ ।

Closing : स्फूर्यंत् मनापसमनःप्रकटीकुर्वाण् श्रीधर्म भूषणपदांबुज-
चु बिताले
कर्त्तव्यमित्युदयता सुयशोभिनदि सूरिः सवंतकदयी करचक-।
हेतुः ॥८॥

Colophon : इति श्री य तेरंदिकृता पंचपरमेष्ठि पूजाविधिः समाप्ता ॥

८६४. पंचपरमेष्ठी पूजा

Opening : मंगलमय मंगलकरन, पंच परम पद सार ।
असरन कौं एही सरन, उत्तम लोक महार ॥

Closing: मार्गशीर्ष वदि अष्टमी, कुज दिन पूरन भाय ।
संवत्सर सत अष्टदस, साठ दोय अधिकाय ॥

Colophon : इति श्री पंचपरमेष्ठि भाषा पूजा संपूर्णं । लिखतं सुगनचंद
श्रावक पाल्मग्राम मध्ये जेष्ठ शुक्ल २ बुधवार संवत् १९२७ ।

८६५. पंचपरमेष्ठी विधान

Opening : मन रंजन भंजन करन, पंच परमगुरु सार ।
पूजित पद सुरनरं खगा, आंपों है भवपार ॥

Closing : चौबीसौं जिनदेव के, कल्यानक हितदाय ।
पूर्जे सो मंगल लहै, पेरवैं शिवपुर पाय ॥

Colophon : इति पंच कल्यानक पूजा पाठ संपूर्णं संवत् १९६३ — पौष-
मासे कृष्ण पक्षे शुक्रवासरे पुस्तकं लिख्यतं आरामपुर मध्ये पंडित हीरा-
लाल जी । लिखापितं श्राविका बुद्दो बी ी ने । शुभमस्तु ।

८९६. पंचपरमेष्ठी पाठ

Opening : देखें, क्र० ८९२ ।

Closing : देखें, क्र० ८९३ ।

Colophon : इति श्री पंचपरमेष्ठी पाठ संस्कृत श्री यशोनंदि आचार्य कृत संपूर्ण ॥ श्री शुभ संवत् १९३५ शाके ॥१८००॥ चैत्रशुक्ल चतुर्थ्यां उपरि पंचम्या रविवासरे मध्यरात्र: शुभ दिने ॥ ... दिन को लिखकर तैयार भया ॥

सन्दर्भ के लिए देखें, क्र० ८९२ ।

८९७. पंचकल्याणक पूजा

Opening :
सिद्धं कल्याणबीजं कलमलहरणं पंचकल्याणयुक्तम् ।
... कुदर्पविध्वंसिदिव्यपादारविंदम् ॥
भक्त्या नत्वा जिनेन्द्रं सकलसुखकरं कर्मवल्लीकुठारम् ।
... शान्तये श्री जिनानाम् ॥

Closing :
त्रैलोक्येषु ... संसारकंचादभुतम् ॥
... जिनवरा सर्वा त्समना सर्वदा ॥१॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपूजा संपूर्णम् ॥
... लिखितरवाशिवप्रसादेन ... ॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८४ ।
(२) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 662.

८९८. पंचकल्याणक पूजा

Opening : देखें, क्र० ८९७ ।

Closing : देखें, क्र० ८९७ ।

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम् । श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ ३ । संवत् १९५३ ।

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपाठसंस्कृत संपूर्णम् ।। चैत्र कृष्ण अष्टमी शुक्रवासरे संवत् १९१४ दोपहर एक ।। शुभं ।।

१०३. पंचकल्याणक पाठ

Opening : ध्यानस्थित मोहविकारदूरं श्रीवीतरागम्
शिव सौख्यहेतुं कठोरकर्मेन्धनवह्निरूपम् ।।७।।

(पृष्ठ ४१) अथ जय केवलमसलसंतपंच ॥

Closing : जयजय मुक्तिवधूमवतर्पण ।।८।।

१०४. पंचकल्याणक पाठ

Opening : देखें, क्र० ८९७ ।
Closing : देखें, क० ८९७ ।
Colopon : इति श्री पंचकल्याणकपाठ सम्पूर्णम् ।

१०५. पंचकल्याणकादि मंडल

Opening : श्रुतस्कन्ध मंडलचित्र ।
Closing : सोलहकारण मंडल ।
विशेष— ३० मंडलचित्र संग्रहीत हैं ।

१०६. पद्मावती पूजा

Opening : श्रीमत्पार्श्वेशमानस्य मोक्षसौख्यप्रदायिकाम् ।
वक्ष्ये पद्मावती पूजां हस्ताक्षरविनिर्मिका ।।

Closing : सकलसौख्यकरा, ... पद्मावती पातु: व: ।।

Colophon : इति श्री पद्मावतीपूजा सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ कृष्ण ११ बुधवार सं० १९५२ वारह वर्ष लिख को लिखकर आजपुर (आराजपुर) निजगृह जन्मभूमि का पन्द हरिदास ने पूर्ण करी है सो जयवंतहोहु
विशेष— इसमें पार्श्वनाथ पूजा भी संग्रहीत है ।

६०७. पद्मावती देवी पूजा

Opening : जनकुसुम कुंकुम ... पद्मावती ॥

Closing : नीरगंध रमनोहर ... ... कुर्वन्तु मंगलम् ॥

Colophon : इतिपद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम् ।

६०८. पद्मावतीदेवी पूजन

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : सनीरगंध सालिपुंज ... ।
...... वृद्धि लोकपाल अर्चनम् ॥

Colophon : श्री ।

६०९. पल्य विधान पूजा

Opening : नत्वा संगोतमं वीरं वांछिततीर्थप्रदायकम् ।
ब्रुवे पल्यविधानस्य यथा सूत्रं हि पूजनम् ॥

Closing : हिएस्ति पापं भविनां कुतारं पूजेयमाप्ता[illegible] च ।
धत्ते सुसौभाग्यपदं सतीत्वं तनोति सर्वत्र यशोभिरामम् ॥

Colophon : नहीं है ।

६१०. प्रतिष्ठा कल्प

Opening : विज्ञानं [illegible] यस्य [illegible] विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेंद्राय सुरेन्द्राभ्यर्चितांघ्रये ॥

Closing : इति प्रतिष्ठा[illegible] कार्तीय विधसक्रियाम्,
यः करोति हि भव्यात्मा स: स्यात्कल्याणभाजनम् ।

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भट्टाकलंकदेव संगृहीते प्रतिष्ठाकल्प नाम्नि ग्रंथे सूत्रस्थाने प्रतिष्ठा द्वितीय तृतीय [illegible] विधि निरूपणीयो नामैकोन-विंश: परिच्छेद: इत्ययं ग्रंथो भाद्रपद शुक्लदशम्यां तिथौ रात्र नेमि-[illegible] लिख्य परिसमाप्तोऽभूद् [illegible] भूयाद्विरतिः । महावीर शक २४५२, १९२६ ईस्वी ।

९११. प्रतिष्ठाकल्प टिप्पण (जिनसंहिता)

Opening : श्रीमाघनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तितनूभव: ।
कुमुदेन्दुरहं वच्मि प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणम् ।।१।।

Closing : इति नियतमिदं यद्देवता अर्चन ये खलु विदधति तेषां भूवरो गापंशांति: ।
जगदखिलमदीप मिवमावं प्रयातिस्वयममित गुणाढ्या मुक्तिकांताविवश्या ।।

Colophon : इति श्रीमाघनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिसुतचतुर्विधपाण्डित्यचक्रवर्ति श्रीवादिकुमुदचन्द्र पण्डितदेवविरचिते प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणो यन्त्राचंनविधि: समाप्त: ।

अयं च श्रावणशुद्धाष्टम्यां लिखित्वा समाप्तोऽभूत् ।। रानू० नेमिराजठय ।। महावीर शक २४५१ क्रोधन संवत्सर: ।।

९१२. प्रतिष्ठा पाठ

Opening : स्फूर्ज्जत्केवलिबोध सिन्धु विमरेयत्रिन्दुवद्भासते,
यस्य श्रीपरमेष्ठिनो जिनपतेर्निमेयसूनोस्त्रयम् ।
लोकानां सकलासुभृतकरुणया धर्मो हितोद्योतिन-, ।
स्तमं श्री मदनंतजिनमय कलासंविभ्रतेस्तात्मन: ।।

Closing : वसुबिंदुरिति ... ... तन्नमोस्तुहितं विजाम् ।।

Clolophon : इति श्रीमत् कुंदकुंदान्वय भूधरचिंतामणि श्री जयसेनाकार्य विरचित: प्रतिष्ठासार संपूर्णम् ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र. र., पृ. १८६ ।
(२) जि. र. को., पृ. २६१ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १७६ ।

९१३. प्रतिष्ठा पाठ

Opening : प्रणम्य स्वस्ति श्रीद्वि श्रीसानिकीर्तिप्रदायिनि ... — ।
जिहां प्रथम मुहूर्तकाया वतिनयौ है — — ।

(४) रा० सू० III, पृ० ५० ।
(५)आ० सू० पृ० १६३ ।

६१६. प्रतिष्ठा विधान

Opening : नमोऽर्हते सदाभूयदरिघातार्यजोऽर्हते ।
रहस्यभावतो लोकत्रयपूजार्हभावतः ।।
नम्रेन्द्रनन्दिमुकुटोत्करः प्रतिष्ठाप्राग्भाविकृत्यमजितस्त्रिजगद्विम्बमूर्तेः।
तीर्थैर्युवं शुभतमैंरभितो विशोध्य पात्राणि तत्र सलिलाद्यपि
संस्थापयित्वा ।।

Closing : स्वस्तिश्रीसुखसिद्धिऋद्धिविभवः प्रख्यातयः पूज्यता,
कीर्तिः क्षेममगण्यपुण्यमहिमा दीर्घायुरारोग्यवत् ।
सौभाग्यं धनधान्यसम्पदमयं भद्रं शुभं मंगलम्,
भूयाद्भव्यजनस्य भास्वति जिनाधीशे प्रतिष्ठापिते ।।

विशेष–प्रशस्ति संग्रह (श्री जैन सिद्धान्त भवन द्वारा प्रकाशित) पृ० १०४ में सम्पादक भुजबलीशास्त्री ने ग्रन्थ के बारे में लिखा है–यह हस्तिमल्ल प्रतिष्ठा विधान मूडबिद्री से प्रतिलिपि कराकर आया है। इसमें कहीं भी ग्रन्थ कर्त्ताका परिचय नहीं मिलता। परन्तु ग्रन्थ के आदि और अन्त में हस्तिमल्ल लिखा मिलता अवश्य है। इसी से इस प्रतिष्ठा ग्रन्थ का कर्त्ता हस्तिमल्ल माना गया है।
"वीराचार्य सुपूज्यपाद जिनसेनाचार्य संभाषितो,
यः पूर्वं गुणभद्रसूरिवसुनन्दीन्द्रादिनन्द्यूर्जितः ।
यश्चाशाधर हस्तिमल्लकथितो यश्चैकसन्धीरित-
स्तेभ्यस्स्वाहृतसारसार्यरचितः स्याज्जैनपूजाक्रमः ।
इस श्लोक से यह बात सिद्ध हो जाती है कि हस्तिमल्ल ने भी एक प्रतिष्ठा पाठ रचा है।

६१७. प्रतिष्ठा विधि

Opening : प्रणम्य स्वस्ति वृद्धि श्री ज्ञानकांति प्रदायिने ।
महावीरस्य बिम्बस्य प्रवेशं विधि लिख्यते ।।

Closing : इन्द्रबिम्बेऽत्रावतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।

Colophon : इति प्रतिष्ठाविधि संपूर्णम् । संवत् १६०६ का मि० चैत्र ब० ६ शनि । श्री ।

९१८. प्राकृत-न्हवण

Opening : श्री इह गंगा पमी च, कुविन वि विमलेण ।
जिण न्हवणेहु आनन्द कु, सुह पावेइ अचिरेण ॥

Closing : आयमतुरंगहणं सरहं रहवरथामरिपरि
वेयालियचक्कमवंयल अहिताव रहियराहि उवविसयो ।
पत्तोसि समवसरणं अवुइ हरणं विषकालवारणम्,
नयरायण विमले मुत्ताहलं मालामुलेय तोरणम् ॥

Colophon : इति संपूर्णम् ।

९१९. पुण्याहवाचन

Opening : श्री शांतिनाथममरासुरपूजितनाथ,
सत्वकिरीटमणिदीधिति-धारपायं ।
त्रैलोक्यशांतिकरणं प्रणम्य,
होमोत्सवाय कुशपावनिमुक्तिपादि ॥

Closing : श्री शांतिरस्तु शिवमस्तु जयोऽस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तवपुष्टि-समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु संतानाभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलं गोत्रं धनं सदास्तु ।

Colophon : इति पुण्याहवाचन सम्पूर्णम् ।

९२०. पुण्याहवाचन

Opening : देखें, क्र० ९१९ ।

Closing : ... कुलगोत्र धनं सदास्तु ।

Colophon : इति पुण्याहवाचनं संपूर्णम् । समाप्ताः ॥ श्री संवत् १८६६ शाके १७३१ प्रमोद नामसंवत्सरे श्रावणमासे शुक्लपक्षे [illegible] लिखितं [illegible] देवराम: राव [illegible]

ज्ञानावणि कम्मं क्षयार्थंम् ।

१२१. पुष्पाञ्जलि पूजा

Closing : जिन संस्थापयाम्यत्राह्वनमादिविधानतः ।
सुवर्णकमलं पुष्पांजलिव्रतविशुद्धये ।।

Closing : पुत्रपौत्रादिकांवृद्धिधनधान्यादिकं ··· ।
··· ···· प्राप्नुयान्नरः ।।

Colophon : इति मेघमाला व्रतपूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

देखें, (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २५४ ।

१२२. पूजा संग्रह

Opening : ॐ जय जय जय नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु । णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

Closing : आरत्तिय ओवइ कम्मइ धोवइ सग्गापवग्गह लहुलहइ ।
जं जं मण भावइ सुह पावई, दीणु वि कासु ण भासुई ।।

Colophon : अष्टान्हिकाया पूजा समाप्तम् । संवत् १६४७ मिति आषाढ़ शुक्ल ६ चंद्रवासरे लिखतं मनोराम पूज इंद्रप्रस्थ नगरे । शुभं भूयात् ।

१२३. रत्नत्रय पूजा

Opening : श्री मंतं सम्मति नत्वा, श्रीमंतः सुगुरूनपि ।
श्रीमदागमंतः श्रीमान्, वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम् ।।

Closing : विरमविरमसंगान्मुंच मुंच प्रपंच,
विसृज विसृज मोहं विद्धि विद्धि स्वतत्वम् ।
कलय कलय वृत्तं पश्य पश्य स्वरूपम्,

कुर्व कुर्व पुरुषार्थं निर्वृतानं वहेतोः ॥

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते चारित्र पूजा समाप्ता ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६२ ।

६२४. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें क्र० ६२३ ।

Closing : देखें, क्र० ६२३ ।

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्रीजिनेंद्रसेन विरचिते रत्नत्रयः पूजा जी समाप्तम् । श्री श्री ।

६२५. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ६२३ ।

Closing : यामें मणि माणिक भंडार, पद-पद मंगल जयकार ।
श्रीभूषण गुरुपद आधार, ब्रह्मज्ञान बोलें सु विचार ॥

Colophon : इति रत्नत्रय व्रत कथा समाप्ता ।

६२६. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ६२१ ।

Closing : एक सरूपप्रकाश निज वचन कह्यो नहिं जाय ।
तीन भेद व्यौहार सब, द्यानत कौं सुखदाय ॥

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

६२७. रत्नत्रय पूजा

Opening : चहुंगति-फनि विषहरनमन, दुःख पावक जलधार ।
शिवसुख सुधा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ॥

Closing : देखें, क्र० ६२६ ।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा सम्पूर्णम् ।

९२८. रत्नत्रय पूजा उद्यापन

Opening : श्रीवर्द्धमानमानम्य गौतमादींश्च सद्गुरून् ।
रत्नत्रयविधि-वक्ष्ये यथाम्नायं विमुक्तये ।

Closing ; इत्थं चारित्रमालां यः कंठे यो विदधाति च ।
शोभाविभिंतरां नूनं शीघ्रं मुक्तिरमापतिः ।।

Colophon : इति विशालकीर्त्यात्मजो भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते रत्नत्रयपाठोद्यापन पूजा समाप्ता । शुभम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६२ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३२७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १२१ ।
(४) रा० सू० III, पृ० १५६, २०६, ३०८ ।

९२९. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ६२८ ।

Closing : इय जदउ सुरगिरि जसि रमिहिं जावतारणरकतर ।
रयणत्तय जलसंच सयल विह मंगल होऊ पवड्ढ ।।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा जयमाल संपूर्णम् ।

विशेष—संवत् १६४० में पंचायती मंदिर आरा में चढ़ाया गया ।

६३०. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ६२८ ।

Closing : तद्विसर्जनद्वार प्रक्षालनातः पुण्याधिक मनुष्ठातृभ्यः
तदनुमोदकेभ्यश्च विलोक्यं शांतीमामथीयान्
समंतात्पुष्पाक्षतं विकरेत् ।।

Colophon : इति श्री चरित्र पूजा संपूर्णम् समाप्ता ।

६३१. रत्नत्रय जयमाल

Opening : पणवे प्पिणु भावें विमलसहावे वीर जिणि दुहुमोह सिहिं ।
गुरु गणहर भाषिउ विबुह पयासिउ रयणत्तय
सुविहाण विहिं ।।६।

अववमासिसेव बारसि विणिएहाइ विसेयकुपहरे वितणि ।
कुल सरि जिनहरि आएप्पिणु पोसह सत्तिपमाण लए-
प्पिणु ॥

Closing : रयणत्तय सारउ भवि उत्तारउ जउपवडइ जो आयरइ ।
सो सुर नर सुबद लहइ असंखइतिहि विलासिणि अणु-
सरइ ॥

Colophon : नहीं है ।

६३२. रत्नत्रय जयमाल

Opening : जय जय सद्दर्शन भव भय निरसन मोहमहातम तरुवारण ।
उपसम कमलदिवाकर सकलगुणकर परममुक्ति सुखकारण ।

Closing : इदं चारित्ररत्नं यः संस्तवोमिव पविनधीः ॥
अभिप्रेतार्थसिद्धयार्थं स प्राप्नोति चिरं नरः ॥

Colophon : इति सम्यक्चारित्रजयमाल संपूर्णम् ।

६३३. ऋषिमंडल पूजा

Opening : कर जुग जोरो आरजा, प्रनमि देवगुरुचर्न ।
ऋषिमंडल पूजा रचो, श्री जिनवर पद सर्न ॥

Closing : संवत् नभ नैन अंक भू, मगसिर चानिव असेत ।
अर्द्धराम पूरन कियो, चंद्रनाथ संकेत ॥

Colophon : इति श्री ऋषिमंडल ... पूजा सम्पूर्णम् । शुभ संवत्
१९०१ मिति श्रावन सुदी सप्तमी पुस्तक लिखी गोरखपुर
नगरे श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यालये पठन हेतु भव्य जीवन
के लिखायो लाला मानिकचंद ।

६३४. ऋषिमंडल पूजा

Opening : देखें, क० ६३३ ।

Closing : देखें, क० ८३३ ।

Colophon : इति श्री रिषमंडल यंत्र संबन्धी पूजा सम्पूर्णम् । शुभ सम्वत्

१६६० मिती जेष्ठ कृष्णा ६ वार रविवार।
सुत श्रीवीरनलाल के,लेखक दुरगालाल।
जैनी आरा में रहै, काशीलगोत्र अग्रवाल॥
अंग्रेजी सरकार बहादुर ११ मई सन् १६०३।

६३५. ऋषिमंडल पूजा

Opening : आद्यंताक्षरसंलक्षमक्षर वाप्ययस्थितम्।
अग्निज्वालासमानाद् विंदुरेखासमन्वितम्॥१॥

Closing : यावन्मेरुमहीशशांक ·· ··· ···· ।
— — ऋषिमंडलस्य तु महापूजा विधिनदनु॥

Clophon : इति श्री ऋषिमडल पूजाविधि समापिताः।

देखें—Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 629.

६३६. रूपचंद्र शतक

Opening : अपनौ पद न विचारहु, अहो जगत के राय।
भव वन छायक हार है, शिवपुर सुधि विसराय॥

Closing : रूपचंद सद्‌ गुरुनिकी जनु बलिहारी जाइ।
आपुन वे शिवपुरि गए, भव्यनु पथ दिखाइ॥१००॥

Colophon : इति श्री पांडे रूपचंद कृत शतक सपूर्णम्।

६३७. सकलीकरण विधान

Opening : देखें, क० ८२६।

Closing : श्रीमद्रमस्तुमलवर्जितशासनाय,
निर्नासितासमवसायकुशासनाय।
धर्मांबुवृष्टिपरिषिक्त य गत्रयाय,
देवादिदेवपरमेश्वरमोजिनाय॥६॥

Colophon : इति स्तवनम्।

देखें, (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६४।

६३८. सकलीकरण विधान

Opening : देखें, क० ८२६।

Closing : अनेन सिद्धार्थाभिमिमं असर्वविघ्नोपशमनार्थं सर्वदिक् क्षिपेत् ।

Colophon : इति श्री सकलीकरण विधानम् ।

विशेष—अन्त में दिग्पाल एवं क्षेत्रपाल की अर्चना तेल, चंदन, गुड़ आदि से करना लिखा है। अन्त में कुछ यंत्र-चित्र भी अंकित है।

६३९. समवसरण पूजा

Opening : प्रणमामि महावीरं, पंचकल्याणनायकम् ।
केवलज्ञानसाम्राज्यं लोकालोकप्रकाशकम् ॥१॥

Closing : श्रीमत्सर्वज्ञ ... ... ।
... ... विबुधारत्नरंजितम् ॥५॥

Colophon : इति श्री समवसरण पूजा बृहत्पाठ सम्पूर्णम् ।

देखें—दि० जि. ग्र. र., पृ. १६५ ।
जि. र. को., पृ. ४१६ ।

६४०. समवश्रुति पूजा

Opening : देखें क्र० ६३९ ।

Closing : श्रीमत्सर्वज्ञसेवा ? सर्वान्दिसति मत: ॥
? :—मृदुस्वर्थं सुधाराशि: विबुधारत्नरंजितम् ॥२॥

Colophon : इति श्री समवश्रुतपूजाबृहत्पीठ संपूर्णम् ॥

६४१. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : पंच परम गुरु को नमौ, दो कर शीश नवाय ।
श्री जिन भाषित भारती, ताको लागो पाय ॥

Closing : रैवासहूर मनोग, बसे श्रावक भव्य सब ।
आदित्य आश्चर्य योग तृतीय पहर पूरणभयो ॥

Colophon : इति सम्मेद शिखरे महात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति लालचन्द विरचिते सुवर कूट वर्णनो नाम एकविंशमो सर्ग: । इति श्री सम्मेदशिखर माहात्म्य जी सपूर्णम् । मिति चैत्र शुक्ल ८ रवीवार दस्तखत दुरगादास सवत् १६३७ साल । शुभमस्तु ।

१४२. सम्मेदशिखर पूजा

Opening : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सुथान।
सिखसम्मेद सदा नमो, होय पाप की हानि ॥

Closing : सिखिर सु पूजै सदा जो मनवचतन चितलाइ।
दास जवाहिर यो कही, जों शिवपुर को जाइ ॥

Colophon : इति श्री सम्मेदशिखरपूजा भाषा संपूर्णम्।

१४३. सम्मेदशिखर पूजा

Opening : परमपूज्य जिन बीस जहां ते शिव लये।
ओरहु बहुत मुनीश शिवाले सुखमये ॥

Closing : इत्यादि घनी महिमा अपार।
प्रणमों ···· ··· सौखधार ॥

Colophon : इति।

१४४. सरस्वती पूजा

Opening : मायातीत मयंक सम, हरन ताप संसार।
ऐसे जिन पद कमलप्रति, नमूं टरन भवभार।

Closing : देखें, क्र० १४५।

Colophon : इति सरस्वती पूजन समाप्तम्।

१४५. सरस्वती पूजा

Opening : देखें, क्र० १४४।

Closing : मंगलकारक श्री अरहंत। सिद्ध जिवातम सूरिमनंत।
पाठक सर्व साधु गुणवंत। सुमरि भव्य शिव सौख्य लहंत ॥

Colophon : इति सरस्वती पूजा समाप्तम्। संवत् १९१२ शक १७२७ वैशाख कृष्ण ५ बद्दरिने। लि० पं० सीताराम स्वकरेण।

१४६. सप्तर्षि पूजा

Opening : त्रिशतीर्थकरं वंदे जिनेशं मुनिसुव्रतम्।
सप्तर्षिमुनीन्द्राणां पूजकर्म सुशांतये ॥

Closing : श्री गच्छे मूलसंघे जतियतितिलको जो भवत् कुंदकुंदा-, तत्पट्टे ज्ञानभूषाश्रुतजलधिरिव श्री जगद्भूषणाख्यः। तत्पट्टे भूरिमायी कविरसरसिक: विश्वभूषणकवेन्द्रः, तेनेदं पाठपूर्वं रचित सुललितं भव्यकल्याणकारी ॥

Colophon : इति सप्तऋषिको पाठ विश्वभूषणकृतसमाप्त:

९४७. सप्तर्षि पूजा

Opening : देखें, क्र० ९४६।

Closing : देखें, क्र० ९४६।

Colophon : इति श्री भट्टारकविश्वभूषणकृत सप्तर्षि पूजाविधान समाप्तम्।

सवत् १९५१ मिति वैशाख कृष्ण परिवा को शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढ़ाया।

९४८. सप्तर्षि पूजा

Opening : देखें, क्र० ९४६।

Closing : देखें क्र० ९४६।

Colophon : इति श्री भट्टारक विश्वभूषण कृत सप्तर्षिपूजन विधान समाप्तम्। चैत्रमासे कृष्णपक्षे तिथौ १४, संवत् १९५६। श्रीरस्तु।

९४९. षट्चतुर्थजिनार्च्चन

Opening : नमोनेकांतरत्नमाविधायिनो जिनेंद्राय नम:। अथ षट्चतुर्थ-वर्तमानजिनार्च्चनं समुदीरयाम: यत: समानंदति विष्टपत्रयं ... ।

Closing : शिवाभिरामायशिवाभिरामं, शिवाभिरामायशिवाभि- रामं:। शिवाभिरामप्रदकं भजत्वं, मुहुर्मुहु: भेविद किं बहुभि:॥

Colophon : इति श्री षट्चतुर्थवर्तमानार्च्चाशिवाभिरामावनिपसुनुकृता-म्नु ततरेवं समाप्त:। संवत् १९३८ साल मिति कार्तिक वदी ११ बुधवार के दिन समाप्त हुवा।

६५०. षण्णवतिक्षेत्रपाल पूजा

Opening : वंदेहं सन्मतिं देवं सन्मतिं मतिदायकम् ।।
क्षेत्रपालानां विधि वक्ष्ये भव्यानां विघ्नहानये ।।१।।

Closing : श्रीमच्छ्रीकाष्ठसंघे यमिपतितिलके रामसेनस्य संघे
गच्छे नंदीतटाख्येतार्यादिनिहुपुखे तुच्छकर्मार्मुनीन्द्रः ।।
ख्यानोसौ विश्वसेनोविमलतरमतिर्यं नगरं चकार्षीन्
सोऽयं सुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपाना शिवाय ।२७।

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृताषण्णवतिक्षेत्रपाल पूजा संपूर्ण ।।

६५१. सार्द्धद्वयदीप पूजा

Opening : देखें, क्र० ६५२ ।

Closing : देखें, क्र० ६५२ ।

Colophon : इति श्री सार्द्धद्वयदीपस्थजिनानां पूजा संपूर्ण ।।
मंगलम् लेखकानां च पाठकानां च मंगलम् ।।
मंगल सर्वलोकानां भूमिभूपति मंगलम् ।।

अग्रवालवंशोद्भवेन लाला वृजपालदास. तस्य पुत्रः जिनवर सुतु रविचक्षण गुण वानतस्य पुत्रः स्वाध्यायहेतवे लिखापितम् ।

६५२. सार्द्धद्वय द्वीपस्थजिन पूजा

Opening : ऋषभाद्यर्द्धमानां, तान् जिनान् नत्वा स्वभक्तितः ।
सार्द्धद्वयद्वीपजिनपूजां विरचयाम्यहम् ।।

Closing : षष्टिर्नद्योविभंगा विषयविरचिताश्चाद्रिवक्षारनाम्ना,
चाशीतिर्व्यंमितास्युः कुनरजलधियोद्वीपभूपश्चवच ।
आगाब्धिकालकाब्धिद्वयमपि जलधिर्मत्रपंचाकतुर्यः,
सद्यासज्योजमानामिति नरचरनीस दिपस्थद्वकानां ।।

Colophon : इति सार्द्धद्वयद्वीपस्थजिनानां पूजा संपूर्णम् । संवत् १८६८ माघमासे कृष्णपक्षे १३ रविवासरे समाप्तम् । लेखकपाठकयोश्चिरं-जीवतो । लिखतं श्रीकाशीमध्ये राजमंदिर शीतलाघाट ब्राह्मणशिव-लाल जाति गौड । लीखाईतं लाला शंकरलाल लाला मनुलाल पठनार्थं परोपकारार्थम् ।

९५३. सामयिक पाठ

Opening : देखें—क्र० ८७३ ।

Closing : देखें—क्र० ८७३ ।

Colophon : नहीं है ।

९५४. शान्त्यष्टक

Opening :

स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्पादद्वयन्ते प्रजाः
हेतुस्तत्रविचित्रदुःख निलयः संसारघोराम्बुधिः ।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्ण भूमंडलो
ग्रैष्मं काल इतिन्दुपादसलिलच्छायानुलागं रविः ॥१॥

Closing :

उत्तमं नवमांगल्यं मध्यमं सप्तमंगलं ।
जघन्यां पंचमांगल्यं यंत्र मंगल लक्षणम् ॥

विशेष—यह ग्रंथ वीर निर्वाण संवत् २४४० में लिखा ।

९५५. शान्तिमंत्राभिषेक

Opening : ॐ नमो अर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराया: द्वादशांगोपरमेष्ठिताया: — — — पवित्राय सर्वज्ञानाय स्वयंभुवे: सिद्धाय परमात्मने .... —- ।

Closing : एकमंत्रस्थितं सिद्ध ··· ···· एकत्रहृपरीक्षा ।

Colophon : नहीं है ।

९५६. शान्तिपाठ

Opening :

शांतिजिनं शशिनिर्मल वक्त्रं । शीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टसतार्चितलक्षणगात्रं । नौमिजिनोत्तमम्बुजनेत्रं ॥१॥

Closing :

मंत्रहीनो क्रियाहीनो द्रव्यहीनो तथैव च ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव क्षमस्वपरमेश्वर ॥

Colophon : वीर संवत् २४३८ का पुस्तक आरावाले जयमोहन चा(भा)इ

मे पालीटाणा जैन दिगम्बर कार्यालय का मुनीम धरमचंद हस्तक लिखवाया।

१५७. शान्ति विधान

Opening : सारासारविचार करि तजि संसृति को भार।
धाराधर जिनध्यान की, ध्यै जिन्द्र भवपार।

Closing : सम्वत् सत उगणीस दश श्रावण सप्तमि सेत।
सरूपचन्द मुनि भक्ति वसि रची स्वपर हित हेत॥

Colophon : इति वृहत गुरांजी पूजा शांतिक विधान सम्पूर्णम्।

१५८. शान्ति विधान

Opening : देखें, क्र० ११६।

Closing : चैत्यादि भक्तित्रयं चतुर्विशतिजिनेन्द्रस्तवनं पठित्वा पश्चात् प्रणम्य न स्नेहाच्चरणमित्यादि शान्त्यष्टकं प... ज्योकार च ओंकार-गबुधं.।

Golophon : इति हवन विधानमासीत्। शुभमस्तु।

१५९. शांति पाठ

Opening : ॐ ह्रीं श्री क्लीं ....।

Closing : सर्वशांति तुष्टि पुष्टि कुरु-कुरु स्वाहा॥

Colophon : इति लघु शांतिमंत्र जाप १०८ नित्यजपे संवत् १९४७। मास वैशाखे शुक्लपक्षे तेरस्याम्॥१॥

१६०. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० ८१५।

Closing : अममसमयसारं ... सौख्येति मुक्ति॥

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा जी सम्पूर्णम्।

देखें, (१) दि. जि. ग्र. र., पृ. २००।

१६१. सिद्ध पूजा

Opening : सिद्ध अनन्त सगुणमयी सुद्ध सरूपी देव।
सुरनर भूप नित ध्यान धरि प्रणमो करि बहु सेव॥

Closing : काल अनत एक समराजे।
सुरनर नृप प्रणमे निज काजे ॥

Colophon : नहीं है।

९६२. सिद्धचक्रव्रताख्यान

Opening : सिद्धार्थं प्रिणम्य नत्वा सिद्धं सिद्धार्थनंदनम्।
सिद्धचक्रव्रताख्यानं, ब्रुवे सूत्रानुसारत. ॥

Closing : परवादी मविदारणके सरिहरि रैजनस्तुतो।
जय .... ॥

Colophon : नहो है।

९६३. शिखर माहात्म्य

Opening : देखें, क्र० ९६१।

Closing : देखें, क्र० ९६१।

Colophon : देखें, क्र० ९६१।
बैशाखमासे कृष्ण पक्षे तिथौ ६ भौमवासरे सवत् १६५५।

९६४. सिंहासन प्रतिष्ठा

Opening : श्री महावीरजिनेशान प्रणिपत्य महोदयम्।
भव्यज्ञानस्य सूत्रेण शुद्धि वक्ष्ये यथागमम् ॥

Closing : मत्क्षम लुतिकोष्टिरोगविषमग्रहक्षय कुर्वते।
श्री मत्पार्श्वजिनेंद्रपादयुगल स्थानस्य गंत्रोदकम् ॥

Colophon : इति शांतिधारा संपूर्णम्। इति सिंहासनप्रतिष्ठा सम्पूर्णम्। शुभमस्तु। पंडितमरवालाम्येन रचितमिदम्। श्री
अथ पुण्याह कलश स्थापनम्।
श्वतेन पीतेन च लोहितेन, धर्मानुरागात् प्रविकल्पितेन।
जिनस्य मत्रेण पवित्रतेन, सूत्रेण कुंभ अतिवेष्टयामि ॥
ॐ नमो भगवते असिआउसा ऐं ह्रीं ह्रां ह्रीं सःसंवौषट्
त्रिवर्ण सूत्रेण शांति कुंभं वेष्टयामि।

९९५. सोलह कारण जयमाला

Opening :

जम्मंबुहितारण कुगइ णिवारण सोलहकारण सिवकरणं
पणविवि थुई भास मिसतिपयासमितिच्छयरतुलद्धिधरणं ।।

Closing :

सोलहमउअं गुणइ य थुणवि अरघु तारइ ।
जो जिण रूपाइ विवसणु आयरवि, तबहो इयुणुविणो-
तियपरू ।।

Colophon : इति श्री सोलाकारण जीकी सोला जयमालसंपूर्णम् । मिती कार (कार्तिक) शुक्ला ३ संवत् १९५२ हस्ताक्षर गोविंद सिंह वर्मा । शुभं भूयात् ।

९९६. सोलहकारण उद्यापन

Opening :

अनन्तसौख्यं पददं विशालं परं गुणौघं जिनदेव्यसेव्यम् ।
अनादिकाल प्रभवं व्रतेश सिद्धाह्वाये षोडषकारणं वं ।।

Closing :

कर्तेपिरोघपूजायामूलसंघविदाग्रणी ।
सुमतिसागरदेवब्रह्मषोडशकारके ।

Colophon : इति श्री षोडशकारणोद्यापनपाठः ।

९९७. सुदर्शन पूजा

Opening :

जंबूदीप मंझार राजत भरतराज अपार है ।
मैं देशपाटलिपुत्र प्रणमौ पुण्य पूजागार है ।।
मोक्ष माला नलहि कारण सेठ सुदर्शन है बली,
ममहृदयसरिता सकलसागर कुंभकरन को चली ।।

Closing :

छन्दशास्त्र जानो नहीं, कर्म सुकविवर जान ।
भावभक्ति पूजन रची आरा शुभ स्थान ।।
शुभ सम्वत् रचना रची, शत उन्नीस पचास ।
मलोमास तिथि पंचमी अषाढ़ कृष्ण शुभरास ।।

Colophon : इति श्री सेठ सुदर्शनपूजा सम्पूर्णम् ।

९६८. सुदर्शन पूजा

Opening : देखें, क० ६६७।

Closing : देखें, क० ६६७।

Colophon : इति श्री सेठ सुदर्शन पूजा सम्पूर्णम् ।

९६९. श्रुतस्कंध विधान

Opening : प्र म मगन वाचक अनुष्टुभ छंद जाति ।
ॐ नमो वीतरागाय. गुरवे च नमो नमः ।
पुनर्नमामि भारत्यै यस्माद्भवति मंगलम् ।।१।।

Closing : स्तुत्वेति बहुधास्तोत्रैर्बहुभक्तिपरायणैः ।
नाना भव्यै मनसोमानर्घ वारि समुद्धरेत् ।।१०।।

Colophon : इति श्री श्रुतज्ञान श्रुतस्कंध पूजा जयमाल संपूर्ण । ।।श्री।।

६७० श्रुतस्कंध पूजा

Opening : ॐ ह्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवतिसरस्वति ह्रीं नमः ।

Closing : सम्यक्तसुरत्नं सद्व्रतयत्नं सकलजन्तुकरुणाकरणम् ।
श्रुतमागमलेखं भजततमेत निखिलजने परित: शरणम् ।

Colophon : इति श्री श्रुतस्कंध पूजाविधि: समाप्तम् ।

६७१. स्वस्ति विधान

Opening : लोकालयाश्चाष्टगुणैर्वरिष्टाः,
कृत्स्नाः स्वबोधेन विनिर्मलेन ।
सिद्धाः प्रध्वस्ताखिलकर्मबंध,
स्वस्तिप्रदाः केवलिनो भवतु ।।

Closing : महापुंडरीक ... ... परिपूरतम् ।।

Colophon : नहीं है ।

९७२. स्वाध्याय पाठ

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे ।
नम श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमान जिनेशिने ।।

Closing : उज्जोवणमुज्जवणं णिव्वहणं साहणं च णिट्ठवणं ।
दसणणाणचरित्त तवाणमाराहणा भणिया ।।

Colophon : इतिस्वाध्यायपाठः सम्पूर्णम् ।

९७३. तेरह द्वीप विधान

Opening : दश जनमत पूरन भइ, अब केवलदरमार ।
तिनको मुनि समुझैं सुधी, परम शुद्धता धारि ।।

Closing : उत्तरदिशि, सुविशाल, रुचिक नाम गिरिवर ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

९७४. तीस चोबीसी पाठ

Opening : श्रीमतं सर्वविद्येशं नत्वा नयविशारदम् ।
कुर्वेहं श्रेयमां नित्यं कारणं दुःखवारणम् ।।१।।

Closing : जयकारवि जिणवर ··· ···· भोरकहो ढाणगुणट्ठहर ।।

Colophon : इति श्री तीस चोबीसी पाठ सम्पूर्णम् ।

९७५. तीस चतुर्विंशति पूजा

Opening : संसारतापतप्तोहं स्वामिन् शरणमागतः ।
विज्ञापया भोगेषु निस्पृहो भगवद्गतः ।।

Closing : देखें, क्र० ८११ ।

Colophon : इति आचार्य श्री शुभचन्द्र विरचिता त्रिंशत्चतुर्विंशतिका पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र. र., पृ. २०३ ।

९७६. तीस चौबीसी पूजा

Opening : श्री अरिहंत नमें सत हुवे सुसिद्ध नमें सिवखेत बसांही,
सूरकरें जिनशासन उन्नत जांमी मिथ्यातम दूरी नसाही ।
द्वादस अंग पढ़ै श्रुत केवलि साध सवै त्रयरत्न ग्रसाही,
पंच इसै परमेष्ठि महागुनि जीवनको नित मंगल दाही ॥

Closing : छंद अरथ गनै अखिल कौ, भेद न जानो सार ।
पंडित गुनी सुधारियौ, छिमा भाव उरधार ॥

Colophon : इति श्री तीसचौबीसी का पाठ सम्पूर्णम् । मासे उत्तममासे माघमासे कृष्णपक्षे शुक्रवासरे संवत् १९११ में लिखो [illegible] मस्त मायमइक्ष्वाकवंसी कास्य गोत्री पल्लीवार नवांवंस के वासी ने लिखी ········· नेमिनाथ चैत्यालये परिपूर्ण करी लछमनपुरी में ।

९७७. त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा

Opening : मूर्तादिका लोहित भव्यपुण्यदाराचितायेन्द्रसुरेन्द्र वृंदैः ॥
तान् पंचकल्याणविभूतिभाजस्तीर्थंकरान् सांप्रतमर्चयामि ॥१॥

Closing : अंतिसमाहि दिज्जंति पहुजिणधम्मेरत्तइ ॥
पुरपडिमसइ भाविय हुसंति करेहु लहु ॥ ॥

Colophon : इति त्रिकाल पूजाविधि समाप्ता ॥६०॥

९७८. त्रिलोकसार पूजा

Opening : [illegible] वानी [illegible] नमि जिनवानी [illegible] ।
तीनलोक [illegible] की पूजा रचौ [illegible] ॥

Closing : जो वह पाठ विचारि अकृत्रिम कृत्रिम गेहन कौं सुखदाई ।
तीनहुं [illegible] करैं बहु भक्ति [illegible]
जो नर [illegible] अनुक्रम पाई ।
[illegible] राजदु भाई ॥

Colophon : [illegible] । इति श्री त्रिलोकसार पूजा पंडित महाचंद्र विरचित समाप्तं । [illegible] तिथौ १२ भृगुवासरे संवत् १९९८ [illegible]

जैन ग्रन्थकर्ता और उनके ग्रन्थ नामक ग्रन्थ तालिका में एक पद्मनंदी (भट्टारक) वि० संवत् १५६२ का उल्लेख मिलता है, साथ ही साथ उनकी कृतियों में आराधनासंग्रह नामक एक आराधना ग्रंथ का जिक भी उपलब्ध होता है।" बहुत कुछ संभव है कि यही पद्मनंदी भट्टारक इस वज्रपंजर राधनाविधान के रचयिता हों। मल्लिषेण और इन्द्रनन्दि के नाम से भी 'वज्रपञ्जराराधना पूजा' प्राप्त होती है।

९८१. वासुपूज्य पूजा

Opening : वासुपूज्य जिन नमौ रत्नत्रय शेखर धारयो।
द्वादश तप शृंगार बहुविध दृष्टि निहारी ॥

Closing : चंपापुर थानं पंचकल्यानं सुरनरखग वंदते सबही।
है पूजूं ध्याबूं गुनगण गावूं वासुपूज्य दे शिव सबही ॥

Colophon : इति वासुपूज्य पूजा सम्पूर्णम्।

९८२. वास्तुपूजा विधान

Opening : अथाहितीबप्रतिमाप्रतिष्ठा-क्रियाननिर्विघ्नसमाप्तिसिद्ध्यं।
ततोंकुरार्पविधसार्वपूर्वं दिने वयाया विदधीत शांती ॥
तथापि पूर्व विपरीत वास्तु विधीकया मेकपदे स्थितानां।
ततः परे वा विविधस्तपर्वा क्रमेण सामान्य विशेष कल्पम् ॥१॥

Closing : संस्थाप्य मध्ये सुविधासु वाह्य बलप्रपूर्वबहिरप्यथापद्।
पुंवस्यमाणेषात्यवसर्यवार्य कुर्व वा वास्तु समृद्धिसिद्ध्यै: ॥

Colophon : इति वास्तुपूजा विधानं समाप्तम्। शुभमस्तु ॥ एम० एस० रायकि।

देखे—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 691.

९८३. विद्यमानचतुर्विंशति जिनपूजा

Opening : .... नौमि वंदाके, संसारार्णवतारकान्।
स्तुतिविधि पुंडरीकाक्षं, शुभंकर: शुभप्रापक: ॥

Closing : एते विंशतितीर्थपाअघहराः कर्मारिविध्वंसकाः,
संसारार्णवतारणैक चतुरा इंद्रादिदेवैर्मिता।
अंतातीतगुणाकरा सुखकरा मोहांधकारापहा,
मुक्ति श्री ललना विलास ललिता रक्षंतु वो भक्तिकाम् ॥

Colophon : इति विंशति विद्यमान तीर्थंकर पूजा सम्पूर्णम् ।
विशेष—[illegible] के बाद विंशति विद्यमान तीर्थंकर पूजा (समुच्चय) भी लिखी गई है।

९८४. विंशतिविद्यमानजिनपूजा

Opening : देखें, क्र० ८१३।

Closing : इह जिणवाणि विसुद्धमई जो भीयणे णियम धरई ।
सो सुरिंद संपयलहई [illegible] केवलणाण विनुत्तरई ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

९८५. विंशतिविद्यमानजिनपूजा

Opening : वंदौं श्रीजिन बीसकौं वरतमान सुखखान ।
द्वीप अढाई खेत में श्री विदेह सुथान ॥

Closing : सम्मतसर विक्रमविगत वसु युग ग्रह ससिकंद ।
जेठ शुद्ध प्रतिपद सुदिन पूरन भयो सुछंद ।

Colophon : इति श्री सीमंधरादि बीस विहरमान जिन पूजा सिखिर चन्द अग्रवाल गोईल मोती काशी वासी कृत समाप्तं । संवत् १९१८ जेठ शुद्ध (सदी) प्रतिपदा को समाप्तम् । लिखा सिखिर चंद यह प्रति लिखि मिती चैत्र सुक्ल प्रतिपदा सुकवार सम्वत् १९४१ को सो जयवंत प्रवर्तो राजा प्रजा सर्व आनंद होउ । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु शुभमस्तु ।

९८६. विमानशुद्धि विधान

Opening : अथ नव्यं विमानं चैत्यस्य संप्रोक्षण क्रिया ।
कार्यासंपठितव्य पूर्वाचार्यमीत्या भवेत् ॥

अष्टदिक्षु विमानस्य भस्तेन घटान् पृथक् ।
ततः पुष्पांजलिं कुर्यात् बाधयो चे समुद्यति ॥

Closing : तपोधनाद्यैर्जिनमार्गबुद्धया संयंन बुद्धेन निरीक्षणीयः ।
देवाधिदेवो भुवनैकसोकल्ल म म कर्त्रे च तथा प्रणम्य ॥
संयता दिवर्शनम् ॥
उपासकैश्चापि ततः समस्तैरभ्यर्चनीयो भुवनाधिनाथः ।
सुधा महेन्द्रो विदधीत शेषाः पुष्पाक्षतक्षेपण माशिषं च ॥
सर्वमस्यर्चनोपदर्शनं ॥

Colophon : इति समाप्तोयं ग्रन्थः ।

९८७. व्रतोद्योतन

Opening : प्रणम्य परमब्रह्माणीन्द्रियज्ञानयोचरम् ।
वक्ष्येऽहं सर्वसामान्य व्रतोद्योतनमुत्तमम् ॥१॥

Closing : कारापित प्रवरसेनमुनीश्वरेण ग्रन्थं चकार जिनभक्तबुद्धा-प्रदेवः
यस्ते शृणोति स्वहितमतिमैकबुद्धया प्राप्नोति सोऽक्षयपद परमं पवित्रम् ॥

Colophon : इति श्री व्रतोद्योतनं श्रावकधर्मनिरूपण अभ्रदेवकृत समाप्तम् मिति आषाढ सुदी १० बुधवासरे सम्वत् १९८७ विक्रमाब्दे समाप्तमिदम् ।

९८८. बृहद्न्हवण

Opening : श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्रयेशं
स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हं ।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु,
[illegible]विधानविधिरेषयाभ्यधायि

Closing : [illegible] ।
कुर्वन्तु जगतः शांति [illegible]जिनोत्तमाः ॥८॥

Colophon : इति बृहत्न्हवन विधि समाप्तम् ।

९८९. [illegible]शान्तिपाठ

Opening : प्रणिपत्य जिनान् सिद्धान् आचार्योपाध्यायकान् यतीन् ।
सर्वशास्त्यर्थमाम्नाय-पूर्वक शांति[illegible] ।।

Closing : यावन्मेरु महिमावत्, याव[illegible]तारकाः ।।
तावद्रुद्रागिरश्यन्तु, शांति[illegible]समुत्कमाः ।।

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य विरचि[illegible] [illegible]देवकृतं शांतिक पाठ समाप्तम् । माघकृष्णपक्ष १० [illegible]त् लिपिकृत ब्राह्मणगगारकस-पुष्कर्ण ।। श्री ।।

९९०. बिम्बनिर्माण विधि

Opening : प्रथम नमों अरहन्त को नमों सिद्ध अरु साध ।
कथन केवली वृष नमों हरो सकल भवव्याध ।।

Closing : — — अथवा जे कृत्रिम होंय ते अरहंत प्रतिमा अकृत्रिम होय ते सिद्ध प्रतिमा कहिये । इति ।

Colophon : श्री शुभ मिति पौष शुक्ल २ शुक्रवार वीर सं० २४६२ विक्रम संवत् १९९२ । जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए लिखा ।
ह० रोशनलाल जैन ।

९९१. चौबीस दण्डक

Opening : अथ चौबीसदंडक चौपाई बंध दौलतरामकृत है ताका अर्थ [illegible] लिखिए है—

Coloing : [illegible] का कथन लिख्या सो त्रिलोकसार-[illegible] करिलेवै ।

Colophon : नहीं है

श्री गणेश ललवानी को श्रद्धांजलि

12 दिसम्बर 1993 को हम सपरिवार कलकत्ता पहुँचे। महामस्तकाभिषेक के लिए श्रवण बेलगोला जा रहे थे।

आरा से चलने के पूर्व श्रद्धेय ललवानीजी को पत्र लिखा था कि मैं उनसे मिलने उनके घर पर आऊँगा। कृपया नीचे के तल्ले में मैं कहाँ मिलूँ मुझे सूचित करें। मैंने कलकत्ता में अपने पुत्र अभय के श्वसुर का पता व फोन न० उन्हे लिख दिया था ताकि मुझे वे कलकत्ता पहुँचते ही फोन से सूचित कर दें, हमलोग कलकत्ता केवल एक दिन ही ठहरने वाले थे।

मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि हमारे पहुँचने के 2 घंटे के अन्दर वे स्वयं हमारे पास पहुँच गये। जैसा मधुर रूप-रंग वैसी ही मधुर वाणी थी और बंगाली धोती-कुर्ता पहने हुए थे। लगभग एक घंटे उनसे बातें हुई। उन्होंने अपनी नई पुस्तक "भगवान वर्द्धमान महावीर" मुझे भेंट की। मुझे वे मधुर क्षण सदा याद रहेंगे।

जैन समाज के जाने माने साहित्यकार, पत्रकार और चित्रकार श्री गणेशजी ललवानी का दिनांक 4 जनवरी 94 को प्रात. 9-30 बजे दुःखद निधन हो गया। आप मात्र 12 दिन से मस्तिष्क रुधिर-श्राव एवं पक्षाघात से पीड़ित थे। आपकी आयु 70 वर्ष की थी। आपका निधन जैन जगत की अपूरणीय क्षति है।

श्री ललवानी जी का जन्म 1८ दिसम्बर 1923 को राजशाही (बगला देश) मे हुआ था। मूलतः बीकानेर के निवासी थे। अपने प्रेसिडेन्सी कॉलेज, कलकत्ता से इतिहास (आनर्स) लेकर स्नातक एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय से बगला में स्नाकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की। आप जैन भवन से सन् 1963 में जुड़े और अन्तिम समय तक व्यवस्थापक पद की गरिमा बनाये रहे। आपने आजन्म अविवाहित रहकर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया।

मधुर भाषी श्री ललवानीजी स्वभाव से सन्त थे, विनम्र थे, सतत् प्रसन्न, समरस और श्रमशील थे। क्रोध, मान, मायादि कषायों से आप कोसों दूर थे। लोभ तो आपको छू भी नहीं गया था। जैन जर्नल की रजत जयन्ती के अवसर पर समाज द्वारा प्रदत्त एक लाख रुपये के पुरस्कार को आपने ग्रहण नहीं किया। अपनी षष्ठी पूर्ति पर मिली पच्चीस हजार रुपये की भेंट को अंग्रेजी में अनुदित कल्पसूत्र और उत्तराध्ययन सूत्र की पुस्तकों के प्रकाशन पर व्यय कर दिया।

आप तीन पत्रों के सफल सम्पादक थे। अंग्रेजी में जैन जर्नल, बगला में "श्रमण" एवं हिन्दी में तित्थयर आपके सफल सम्पादन के परिचायक रहे।

उनकी स्मृति को भास्कर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि अर्पित है।

—सु० कु० जैन

पुस्तक–समीक्षा

(१)

पुस्तक का नाम :— संस्कृत शतक परम्परा और आचार्य श्री विद्यासागर के शतक/

लेखिका–श्रीमती डा० आशालता मलैया ।

प्रकाशन—जयश्री आयल मिल्स, दुर्ग (म० प्र०)

यह गौरव की बात है कि यह लेख सागर विश्वविद्यालय, सागर के द्वारा 1984 ई० में शोध प्रबंध के रूप में स्वीकृत हो गया और 1989 ई० में इसका प्रकाशन भी हो गया ।

मुझे भी पूज्य मुनिश्री के दर्शनों का तथा उन्हें अहार देने का सौभाग्य ही नही उनके वचनामृत पान का भी सौभाग्य पूज्य आचार्यश्री के ईसरी(सम्मेद शिखर) प्रवास के समय मिला दर्शनों तथा आहार देने वाले श्रावकों की भारी भीड़ और उनकी अपारभक्ति को परिलक्षित कर मैं बिभोर हो गया ।

पिछले वर्ष हमारे पास पूज्य आचार्य श्री के संघ से श्री जैन सिद्धांत भास्कर के पुराने अंकों की मांग आई, तो मुझे और भी प्रसन्नता हुई । मैंने अपने शुभेच्छु हजारीबाग वाले सोगानी जी के माध्यम से भास्कर की फाइल भेज दी । इससे ह स्पष्ट हो जाता है कि पूज्य आचार्य श्री के मुनिसंघ में अध्ययन अध्यापन का कितना चाव है ।

इसी प्रवृत्ति के कारण पू० आचार्य श्री द्वारा काव्यों और मूकमाटी जैसे महाकाय का प्रणयन हुआ है ।

शासकीय कन्या महाविद्यालय की अध्यक्षा (संस्कृत विभाग) द्वारा आचार्य श्री विद्यासागरजी के शतक पर शोधप्रबंध लिखा जाना और सागर विश्वविद्यालय द्वारा इसे स्वीकार किया जाना एक ऐसी घटना है, जिसे कभी भुलाया नहीं जाएगा ।

साथ साथ संस्कृत परम्परा का भी विवेचन श्रीमती मलैया ने करके संस्कृत साहित्य का भी मूल्यांकन कर अपनी शोध–प्रवृत्ति को उजागर किया है । जिसके लिए उन्हे धन्यवाद और साधुवाद देना ही चाहिए ।

आचार्य श्री के द्वारा रचित संस्कृत में निम्न5 शतकों का विवेचन महत्त्वपूर्ण बन गया है ।

1 - श्रमण शतकम् 2—भावना शतकम् 3—निरजंन शतकम् 4—परीषह–जये–शतकम् और 5—सुनीन शतकम् ।

उनकी जो 5 कृतियां है, उनका परिचय दिया गया है ।

यह प्रकाशन हर लाइब्रेरी में रहना चाहिए ।

सु० कु० जैन

(२)

महाकवि भूरामल

(आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज,) प्रकाशक—ज्ञानोदय प्रकाशन पिसनहारी, जबलपुर–3 प्रथम संस्करण, महावीर जन्मोत्सव दिवस वी० नि० 2515, ई० सन् 1989 वर्द्धमान मुद्रणालय जवाहरनगर, वाराणसी

जयोदय—महाकाव्य (उत्तरार्द्ध)

प्रकाशकीय पढ़ने पर इस महाकाव्य के विषय में समुचित जानकारियाँ प्राप्त हुई और पुस्तक के लेखक आचार्य श्री ज्ञान–सागर जी महाराज का जीवन वृत्त पढ़कर स्याद्वाद महाविद्यालय वाराणसी के प्रति अत्यन्त श्रद्धा से परिपूर्ण हुआ जहाँ से श्रद्धेय पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी से आरंभ सैकड़ों विश्व प्रसिद्ध जैनागम के विद्वान शिक्षित होकर जनकल्याण में लग गये। मुझे गौरव हुआ कि इस महान संस्था के पूज्य संस्थापकों में हमारे श्रद्धेय पितामह राजर्षि देवकुमार जी आरा ने पारिवारिक निवास स्थान को विद्यालय भवन में परिवर्तित कर दिया और स्वयं इस संस्था के संस्थापक, मंत्री के रूप में भारतवर्ष में जैन धर्म के शिक्षण प्रचार का अद्भुत काम किया। मुझे भी अनेक वर्षों तक इस महान संस्था के मंत्रित्व का भार उठाने का सुअवसर मिला, जबकि इस संस्था के एक अन्य महान् स्नातक सिद्धांताचार्य पंडित कैलाशचन्द जी शास्त्री इस संस्था के प्रधानाध्यापक थे और तत्पश्चात् वे जीवन के अन्त तक इस संस्था के अधिष्ठाता के पद पर आसीन रहे।

इस संस्था के लिए अत्यन्त गौरव की बात है कि ग्रंथ के रचयिता ने आज के सुप्रसिद्ध महान् तपस्वी पूज्य आचार्य विद्यासागर जी को मुनि दीक्षा दी थी। ऐसे महान् गुरु के ऐसे महान् शिष्य ने भी एक महान् कवि के रूप में स्वयं एक महाकाव्य लिखा और गुरु शिष्य परम्परा का निर्वाह किया तो फिर आश्चर्य की क्या बात है?

मैं श्री जैन सिद्धांत भवन की ओर से "जयोदय–महाकाव्य" तथा अन्य महाकाव्य के महान् लेखक को परमसम्मान पूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

यह बड़े प्रसन्नता कि बात है कि इस ग्रन्थ पर दो छात्रों ने पी० एच० डी की उपाधि ग्रहण कर ली है और मुझे विश्वास है कि अनेक वर्षों के बाद जो इस महाकाव्य का उत्तरांश प्रकाशित हुआ है उसका पूर्वांश के साथ और भी अनेक विद्वान अध्ययन करेंगे।

—सु० कु० जैन

(३)

रचनाकार—श्रीमुनि उत्तमसागर जी
प्रकाशक—श्री दिगम्बर जैन वीर विद्या संघ ट्रस्ट, गुजरात।
पृष्ठ—५६, मूल्य—३ रु०

भावाञ्जलि

जैन आगमों में प्राकृत संस्कृत एवं अपभ्रंश भक्ति साहित्य की प्राचीन परम्परा है। आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित प्राकृत भक्तियाँ एवं आचार्य पूज्यपाद

द्वारा रचित संस्कृत भक्तियाँ अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है। मुनि श्री उत्तमसागर जी की रचना 'भावभक्ति' में चौबीस तीर्थंकर स्तवन' भगवान बाहुबलि स्तुति, विद्या वन्दना शतक एवं विद्यावाणी द्वारा देव, शास्त्र, गुरु के प्रति निष्काम भक्ति भावना का समर्पण किया गया है। इस छोटी सी पुस्तक में इतनी विशद सामग्री का सरल, सुबोध एवं भावपूर्ण भाषाशैली में प्रस्तुतिकरण उत्तम कोटि का है। आध्यात्मिकता एवं स्व-पर कल्याण की भावना से ओतप्रोत होने के कारण यह कृति सभी के लिए नित्य स्वाध्याय के योग्य है। आचार्य विद्यासागर जी के प्रति भावाञ्जलि द्वारा इसका महत्त्व और भी बढ गया है। इसके स्वाध्याय एवं मनन द्वारा जैन दर्शन के गूढ़ सिद्धान्तों का ज्ञान सरलता से हो जाता है। विचारो मे निर्मलता आचरण में पवित्रता एवं व्यवहार में सहिष्णुता लाने मे यह कृति विशेष उपयोगी है।

भाव, भाषा एवं प्रस्तुतिकरण सभी दृष्टियों से यह कृति प्रशसनीय है तथा प्रकाशक धन्यवाद के पात्र हैं। डा० सुनीता जैन

(४)

स्तुति-सरोज—रचयिता आचार्य श्री विद्यासागर मुनि महाराज
प्रकाशक—सिंघई ताराचन्द जैन बाझल, राजेश दाल मिल, पथरिया (दमोह) मध्यप्रदेश। प्रथम आवृति—1994।

स्तुति-सरोज

सन्त शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज सिद्धि की साधना में अहर्निश सावधान हैं। आप प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, मराठी, कन्नड आदि भाषाओं के विद्वान हैं। 'मूकमाटी', नर्मदा का नरम कंकर, डुब मत डुबकी लगाओ एवं तोता क्यों रोता' आदि अध्यात्मपूरक रचनाएं विद्वत्जगत मे अत्यन्त सराही गई है। सतत साधना अध्ययन, मनन, चिंतन एवं आत्मानुभूति द्वारा प्राप्त आपका सच्चा ज्ञान भव-भय भीत ससारी प्राणियों के लिए नौका सदृश है। आपके प्रवचन आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व हुई भगवान महावीर की दिव्य ध्वनि का स्मरण दिलाते है।

'स्तुति सरोज' आचार्य श्री द्वारा चरित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्ति सागर जी महाराज, आचार्य श्री वीर सागर जी महाराज आचार्य श्री शिव सागर जी महाराज एव परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञान सागर जी म० के चरणारविन्द में विनम्र श्रद्धांजली समर्पण है।

सरल, सुबोध, सरस एवं अलकार युक्त भाषा-शैली के कारण यह कृति अत्यन्त प्रभावशाली बन गई है। बसन्ततिलका छन्द की गेयात्मकता के कारण इसका सौन्दर्य अधिक बढ गया है। आरम्भ से अन्त तक वात्सल्य एवं शान्तरस की गगा प्रवाहित है। डा० भागचन्द्र जैन 'भास्कर' के प्राक्-कथन एवं आचार्य श्री के सक्षिप्त जीवन परिचय से इस काव्य कृति की उपयोगिता बढ़ गई है। इस कृति

का निरन्तर स्वाध्याय, मनन एवं चिंतन आबाल वृद्ध सभी के लिए कल्याणकारी है। भाव, भाषा, प्रस्तुतिकरण एवं मुद्रण सभी दृष्टियों से यह कृति अनुपम है तथा पठनीय एवं संग्रहणीय है। डा० सुनीता जैन

(५)

बरसात की एक रात—लेखक गणेश ललवानी

अनुवादक—राजकुमारी बेगानी। प्रकाशक प्राकृत भारती अकादमी जयपुर।

मुद्रक—सुराना प्रिंटिंग वर्क्स २०५ रवीन्द्र सरणी कलकत्ता-१

प्रथम संस्करण—अक्तूबर १९९३, मूल्य-४५ रुपये।

बरसात की एक रात

समीक्ष्य कृति 'बरसात की रात' (जैन कथानक) श्री गणेश ललवानी द्वारा रचित एवं सुश्री राजकुमारी बेगानी द्वारा अनूदित एक उत्कृष्ट कथा संग्रह है। श्री गणेश ललवानी जी सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं चिंतक के साथ-साथ कवि, चित्रकार संगीतकार, नाट्यकार तथा प्रखर व्यंग्यकार भी है। इस कथा संग्रह से पूर्व उनकी अनेक रचनाएं जैसे नीलांजना, उपन्यास चंदनमूर्ति तथा त्रिषष्टि शलाकापुरुष-चरित्र के ४ भाग प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं।

'बरसात की रात' में अतीत के गर्भ में छुपे जैन ऐतिहासिक तथ्यों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अद्भुत कल्पनाशीलता एवं ललित शब्द विन्यास द्वारा अभिनव रूप में प्रस्तुत किया गया है। विषय वस्तु का चयन एवं प्रस्तुतिकरण इतना प्रभावशाली है कि कहानी पढ़ते-पढ़ते अतीत की सभी घटनाएं-चलचित्र के समान पाठक के मानस पटल पर अंकित हो जाती हैं। पाठक घटना एवं पात्र के साथ काल-क्रम का अतिक्रमण करते हुए तादात्म्य स्थापित कर लेता है। जैन धर्म के मूलभूत सिद्धांत जैसे सल्लेखना, पुनर्जन्म, कर्म सिद्धान्त आदि कथा संग्रह में प्रारम्भ से अन्त तक प्रतिध्वनित होते हैं। धर्म एवं विज्ञान अतीत एवं वर्तमान तथा कल्पना एवं तर्क का अद्भुत सामंजस्य सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। मानव मन को झकझोर देने वाले अनेक गम्भीर प्रश्न भी उठाये गये हैं। सभी कहानियां अतीत की गौरवगाथा का स्मरण दिलाती हुई धार्मिक आस्था को दृढ़ करती है। विद्वान चिंतक संपादक डा० नेमिचन्द जैन की शोधपरक प्रस्तावना से इस कृति का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

भाव, भाषा प्रस्तुतिकरण, एवं मुद्रण सभी दृष्टियों से कथा संग्रह उच्च कोटि का है। इसके लिए प्रकाशक धन्यवाद के पात्र है।

डा० सुनीता जैन

देव परिवार का एक नक्षत्र अस्त हुआ

देव परिवार के एक उदीयमान नक्षत्र श्री आमोद कुमार जैन (पांचवें सुपुत्र स्व॰ बा० निर्मल कुमार जैन) का अवसान दिनांक 10-10-95 को लखनऊ राजीव गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान में हो गया।

वे लगभग दो वर्ष से बीमार चल रहे थे। माथे मे गिरकर चोट लग जाने से वे मानसिक व्याधि की गहन चिकित्सा करा रहे थे।

सामाजिक कार्यो मे उनकी गहरी रुचि थी। आरा में प्रथमा प्रथम मान्टेसरी स्कूल तथा आरा नागरिक सघ की स्थापना उन्होने की थी। आरा तथा मीरगंज में आलू कोल्डस्टोरेज की स्थापना मे उनका स्मरणीय योगदान था। हथुआ मे बालिका हाई स्कूल तथा मान्टेसरी स्कूल के भी वे संस्थापक अध्यक्ष थे। हिमालय प्रेस की स्थापना मीरगंज मे ही करने के उपरान्त उन्होने वहां से सारण-संदेश नाम की 'साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन और संचालन २५ वर्षो तक अत्यन्त सफलता पूर्वक किया।

आरा, पटना, मीरगंज, लखनऊ, मुरादाबाद, कानपुर, दिल्ली मिर्जापुर और गजियाबाद से उनके स्वजन लखनऊ मे उनके उपचार एव अंतिम सस्कार मे उपस्थित थे।

आमोद बाबु अपने पीछे धर्मपत्नी शारदा देवी, दो पुत्र एवं एक पुत्री, नाती-पोतों से भरा परिवार छोड़ गए हैं।

उनके मरणोपरान्त श्री जैन सिद्धान्त भवन एवं श्री जैन बाला विश्राम में शोक सभाएं हुई और देवाश्रम परिवार के उनके ज्येष्ठ भ्राता श्री प्रबोध कुमार, श्री सुबोध कुमार जैन तथा शोक सन्तप्त देवाश्रम परिवार के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट की गई। साहु जैन हाई स्कूल एव महिला विद्यालय मीरगंज में भी दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना सभाएं हुई।

●

श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का ९२वाँ वार्षिकोत्सव प्रतिवेदन

(सन् १९९५)

श्रुत पचमी के पावन पर्व एवं जैन सिद्धान्त भवन, आरा के ९२वां वार्षिकोत्सव के अवसर पर हम आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

जैन साहित्य के अनन्य अनुरागी राजर्षि बाबू देवकुमार जी, आरा द्वारा संस्थापित इस संस्था की ख्याति एव कीर्ति सर्वविदित है इसके प्रेरणा स्रोत पितामह प० प्रवर बाबू प्रभुदास जी ने घूम-घूमकर घोर परिश्रम एव प्रयत्न करके प्राचीन अनमोल ग्रन्थों का भण्डार एवं प्राचीन मूर्त्तियाँ सन् १८५० में यानी आज से १४५ वर्ष पूर्व शास्त्रोद्धार का व्रत लिया था।

साधु साध्वी, श्रावक श्राविका इन चारो के समूह का नाम जैन संघ है। मध्यकाल में जैन संघ की उन्नति और धर्म के स्थितिकरण जैन तीर्थो मन्दिरों एवं मूर्तियों के निर्माण एवं पूजनादि में लाखों रूपये खर्च हुए और वे तीर्थ प्रधान भक्ति केन्द्र बन गये। वास्तव मे देखा जाय तो इतना ही महत्व जैन शास्त्रों व ज्ञान भण्डारों का भी है। क्योंकि तीर्थंकर एव आचार्यो की वाणी इनमें सुरक्षित है। ज्ञान के बिना क्रियाकाण्ड इच्छित फलदायी नहीं हो सकती। देवगुरु और धर्म का स्वरूप भी शास्त्रों द्वारा ही जाना जाता है।

कौशम्बी में तीर्थंकर पद्मप्रभु के जन्म स्थान पर तथा बनारस में भदैनी घाट पर तीर्थंकर सुपार्श्वप्रभू के जन्म स्थान पर और चन्द्रावती में तीर्थंकर चन्द्रप्रभु के जन्म स्थान पर एव आरा में भी महादेवा रोड स्थित तीर्थंकर शान्तिप्रभु के समोवशरण मन्दिर में छोटी-बड़ी प्राचीन मूर्तियाँ उन्हीं के द्वारा सगृहित है। मन्दिरों तीर्थो और धर्मशालाओं के निर्माण के साथ शास्त्रो की सुव्यवस्था एवं स्वाध्याय की ओर सरस्वती पुत्र एवं लगन के धनी पूज्य प्रवर पं० बाबू प्रभुदास जी का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने कड़ी मेहनत कर सैकड़ों हस्तलिखित ग्रन्थों को इकट्ठा किया।

आचार्य हर्ष कीर्ति भट्टारक जी की प्रेरणा से राजर्षि देवकुमार जी ने सन् १९०३ ई० में आज ही के दिन ९२ वर्ष पूर्व इस ग्रन्थागार की स्थापना कर एक अद्वितिय कार्य सम्पन्न किया और अपने पितामह बाबू प्रभूदास जी द्वारा एकत्रित हस्त-लिखित ग्रन्थों के भण्डार को भी श्री जैन सिद्धान्त भवन को प्रदत्त कर पितामह बाबु

प्रभुदास जी के मनोभाव को साकार रूप दिया। उसी समय भट्टारक जी ने भी अपने शास्त्रों को जो बक्से में बन्द पड़े थे उन्हे भवन में समर्पित कर दिया था। भवन की स्थापना भी उन्होंने अपने कर कमलों से किया। भ० शान्तिनाथ मन्दिर पर इसका शिलालेख दिवाल पर अंकित है।

प्राचीनकाल में लोगों की स्मृति अत्यन्त प्रखर होती थी। शताब्दियों तक मौखिक पठन पाठन होता रहा। किन्तु समय काल एवं परिस्थिति बदलती गयी और लोगों की स्मरण शक्ति क्षीण होती गयी। ऐसी परिस्थिति में जिनवाणी के लुप्त होने की सम्भावना बढ़ती गयी। उस समय श्रुतधर आचार्य धरसेन जी महाराज को जब यह आभास हुआ कि ज्ञान धारा लुप्त होती जा रही है तो जिन आगम को लिपिबद्ध निमित गिरनार पर्वत पर अपने दो शिष्यों पुष्पदन्त और भूतवलि के सहयोग से जैन धर्म के जिनवाणी को लिपिबद्ध कराने का कार्य प्रारम्भ किया उनके प्रथम शिष्य पुष्प-दन्त जी अपने जीवन काल मे इसे पुरा न कर सके। तदुपरान्त द्वितीय शिष्य भूतवलि ने इसे षट्खण्डागम के रुप आज से लगभग १६०० वर्ष पूर्व आज ही के दिन ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को लिपिबद्ध कर पूर्ण किया। इसी कारण आज का दिन अर्थात ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी, श्रुत पंचमी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तत्पश्चात हरवर्ष आज के दिन सम्पूर्ण भारत वर्ष मे षट्खण्डागम की पूजा, आरती एव विभिन्न प्रकार से उत्सव मनाकर सम्पन्न की जाती है।

जैनागम परम्परा में पहले हस्तलिखित ताड़पत्रों पर ये शास्त्र लिखे जाते थे धीरे-धीरे हस्तनिर्मित कागजो का आविष्कार हुआ और कागज पर ग्रन्थो को लिपिबद्ध किये जाने की परम्परा प्रारम्भ हुई। श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा में केवल जैन ग्रन्थ ही नहीं अपितु सभी धर्मों के अनेक ग्रन्थ संग्रहित हैं।

आज इस ग्रन्थागार मे १२५६१ छपी हुई मुख्य रूप से धार्मिक विषयों की हिन्दी, बगला, कन्नड आदि विभिन्न भाषाओं की पुस्तकें हैं। अंग्रेजी की छपी हुई ४४८० दुर्लभ ग्रन्थ एव १७०० ताडपत्रिय एवं ६००० कागज पर हस्तलिखित ग्रन्थ सुव्यवस्थित ढग से संग्रहित हैं।

इस वर्ष १९९४-९५ में ३७१ हिन्दी की छपी पुस्तकें ३१ अंग्रेजी की छपी पुस्तकें एवं ७० विभिन्न भाषाओ की जैन पत्र पत्रिकाएँ Binding कराकर बढ़ाई गई हैं। १९९४-९५ मे १३७ हिन्दी, अंग्रेजी, हस्तलिखित ग्रन्थों को पठन-पाठन हेतु निर्गत किये गये।

समय-समय पर सम्पूर्ण पुस्तकालय के Stock Checking एवं सुरक्षा हेतु दवाएँ भी आलमारियो में डाली जाती हैं। वर्तमान में भी यह कार्य चल रहा है।

इस वर्ष ७०० व्यक्तियों ने इस ग्रन्थागार का अवलोकन किया तथा इस शास्त्र भण्डारों का दर्शन किया।

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थागार द्वारा प्रकाशन कार्य भी किया जाता है। श्री जैन सिद्धान्त भवन द्वारा श्री जैन सिद्धान्त भास्कर एवं Jian Antiquary का प्रकाशन १९१२ ई० से ही प्रारम्भ हुआ है।

इस शोध पत्रिका में जैन साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला सम्बन्धी सैकड़ो महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित किये जाते है।

इसके अतिरिक्त ज्ञानप्रदीपिका, प्रतिमा लेख सग्रह, प्रशस्ति संग्रह, मुनिसुव्रत काव्य, वैद्यसार आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थ, जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली दो भागों मे प्रकाशित हुए है। तृतीय भाग के प्रकाशन कार्य हेतु हम तत्पर है। पुस्तकालयों, विद्वानो, पाठको एवं शोध विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान मे रखते हुए हम इधर कुछ वर्षो से दुर्लभ ग्रन्थो की ज्योरेक्स प्रतियां भी देश विदेश में भेज रहे है।

श्री जैन सिद्धान्त भवन का सदुपयोग अनेक धार्मिक एवं साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु भी किया जाता है जैसे सरस्वती पूजा, श्रुतपंचमी महोत्सव, कवि गोष्ठी, भाषण प्रतियोगिता, महावीर जयन्ती, गणतन्त्र दिवस एवं मुनिवरो के उपदेश आदि आरा नगर के मध्य मे स्थित यह अनुपम, शान्त एवं स्वच्छ वातावरण मे स्थित ग्रन्थागार दर्शनीय एव वन्दनीय है। इसका कण-कण धर्मकला एवं सांस्कृति की त्रिवेणी लोगो मे चेतना का बीज बो रहा है।

शोध कार्य के क्षेत्र में भी श्री जैन सिद्धान्त भवन, श्री देवकुमार जैन शोध संस्थान अपनी निःशुल्क सेवा प्रदान कर रही है। यहाँ की पुष्कल सामग्री प्रकाशित अप्रकाशित ग्रन्थ, पत्र पत्रिकाएं, ताड़पत्रिय ग्रन्थ आदि परिमाण मे ही नही अपितु प्रतिमान की दृष्टि से भी अत्यन्त उपयोग है। यहाँ जैन साहित्य का ही नही जैनेतर साहित्य, प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि विविध भाषा विषयक दुर्लभ ग्रन्थ और कोष आदि शोध कार्य हेतु प्रचुर परिमाण में उपलब्ध हैं। वर्तमान समय मे प्रसिद्ध विद्वान डा० राजाराम जैन के निर्देशन मे ८ शोधार्थी शोध कार्य कर रहे है।

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थागार के तत्वावधान में निमल कुमार चक्रेश्वर कुमार जैन कला दीर्घा भी श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर प्रदर्शनी है। इसमे प्राचीन एवं आधुनिक चित्रकारों द्वारा चित्र के अतिरिक्त प्राचीन सिक्के, सुप्रसिद्ध विद्वानो के पत्रों एवं माइक्रोफिलम एव अन्य विभिन्न सामग्रियो का अनुपम सग्रह है। जिसे देखने हजारों की संख्या में दर्शनार्थी प्रतिवर्ष आते हैं। इसे देखकर लोग इसकी भूरी-भूरी प्रशसा करते नहीं थकते। इसकी शाखा राजगृह मे सरस्वती भवन में भी स्थापित है तथा श्री जैन बाला विश्राम में भी पिछले वर्ष "पैनोरमा ऑफ जैन आर्टस्" के लगभग एक सहस्त्र चित्र, विद्यालय भवन के मुख्य हॉल में स्थायी रूप से प्रदर्शित किये गये हैं।

श्री देवकुमार जैन शोध संस्थान सरकारी आर्थिक सहयोग या यूनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन द्वारा बिना आर्थिक सहायता के बावजूद अपनी शक्ति के अनुसार यथा सम्भव पूर्ण सेवा कर रही है। हमे पूर्ण विश्वास है कि श्री सुरेन्द्र नाथ सिह कुलपति, वीर कुंवर सिह विश्वविद्यालय, आरा के कार्यकाल में यू० जी० सी० के द्वारा Sec 2F द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त होगी और बडे पैमाने पर शोध कार्य चल निकलेगा जिससे अनेको हस्तलिखित ग्रन्थ प्रकाश में आवेगे। सचित्र जैन रामायण के लोकार्पण समारोह के अवसर पर राष्ट्रपति श्री शकरदयाल शर्मा जी के सुझाव के अनुसार सिद्धान्त भवन की शाखा खोलने के लिए इस्टिट्यूट एरिया में आवश्यक भूमि के लिए प्रयत्न किया जा है, अभीतक सरकारी आदेश नही मिला है।

हमे आपलोगो को यह बताते हुए अपार हर्ष हो रहा हैं कि हम प्रत्येक वर्ष आपके सामने भवन की प्रगति की एक झनक प्रदर्शनी द्वारा दर्शाते हैं और इस वर्ष भी आगत् पुस्तकें, पत्रपत्रिकाएँ, वी० डी० ओ०, ऑडियो कॅसेट तथा लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह के दरबारी चित्रकार अब्दुलगनी द्वारा निर्मित प्राचीन चित्रो की प्रदर्शनी प्रदर्शित कर रहे हैं वो आपके सामने अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। इसके अतिरिक्त सुप्रसिद्ध स्टैम्प कलेक्टर द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय पोस्ट ऑफिसो द्वारा जो जैन डाक टिकट एव फर्स्ट-डे-कॉभर निकाले गये है उनकी प्रदर्शनी आपके सामने प्रदर्शित है। इसके लिए हम श्री प्रदीप जैन, पटना को धन्यवाद देते है।

अन्त मे मै भवन की प्रबन्ध कारिणी समिति के सभी पदाधिकारियो एव कार्यकर्ताओं के प्रति अपना अनुग्रह प्रकट करता हूँ। जिनके बहुमूल्य सहयोग से जैनागम की सेवा निरन्तर हो रही है। आज इस अवसर पर उपस्थित सभी माताओं, बच्चो, भाई बन्धुओं के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। जिनकी उपस्थिति से यह कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हो रहा है। हमे पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग भविष्य मे भी प्राप्त होता रहेगा।

श्रुतपचमी ३-५-९५ मानद् मंत्री

परिचय—श्री प्रभा जैन

जन्म २१ फरवरी १६४१ बिहार के आरा नगर में दादा जी देव कुमार जी और पिता श्री चक्रेश्वर कुमार जी के परिवार में जन्म लेने का सौभाग्य।

दादीश्री ब्र० चन्दाबाई जी की छत्र छाया में शिक्षा संस्कृत प्रथमा और विशारद के बाद बी० ए० संस्कृत आनर्स दर्शन शास्त्र के साथ मोक्षशास्त्र और गोम्मटसार जी तक धार्मिक अध्ययन परीक्षा।

दिल्ली के गणमान्य श्री दादा उल्फतराय जी के यहाँ विवाह। अध्ययन को आगे बढ़ाने का सुयोग ध्यान साधना और स्वयं की खोज का सतत प्रयत्न। प्रारम्भ से चिन्तन मनन और गेय रूप में भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत है जिनका एक छोटा सा संकलन प्रथम प्रकाशन के रूप में यह "स्वयं बोध" (८२ कविताओं का संग्रह)

महामंत्र णमोकार

णमोकार मंत्र का प्रणाम हो प्रणाम हो
है अनादि महामन्त्र मंगल निष्काम हो
पहला अर्हन्त नाम
करता है कर्मनाश
जीवों को देता है
ज्ञान सूर्य का प्रकाश
जय हो अर्हन्त देव तुम्हो धर्म धाम हो
दूजा है सिद्ध नाम
जन्म मृत्यु से विहीन
अविनाशी वीतराग
सदा स्वयं आत्मलीन
हे अनन्त शुद्ध सिद्ध सृष्टि के ललामा हो

तीसरे महाव्रती
आचार्य समय सार है।
उपाध्याय ज्ञान ज्योति
उन्हें नमस्कार हो
विनयशील वीतराग साधु ज्ञान-
वान हो
सर्व पाप मुक्त हो
महामंत्र ध्यान से
अन्तर बाहर पवित्र
मंत्र नमस्कार से
नमस्कार मन्त्र मुक्ति सिद्धि के
निधान हो।